₹ 200
समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक पत्रिका

अनुप्रास

www.anuprasprakashan.com
वर्ष 07 अंक 09, 2026

आलेख
प्रो. डा. रामावतार यादव
डॉ. विनीत कुमार लाल दास
डॉ. अभिलाषा

विशेष आलेख
श्रीधरम

कथा
शिवशंकर श्रीनिवास, कुणाल,
प्रदीप बिहारी, रमेश रञ्जन,
डॉ. अशोक कुमार मेहता, मुन्नी कामत

लघुकथा
शंकर मधुपांश, शशि कुमार शशि

कविता
गोपाल झा 'अभिषेक', आभा झा

ललित निबंध
रमण कुमार सिंह

मूक नाटक
डॉ. सुरेन्द्र लाभ

गीत
धीरेन्द्र प्रेमर्षि, अर्जुन प्रसाद गुप्ता 'दर्दिला'

बालबाड़ी
वन्दना झा, कृष्ण मोहन झा 'मोहन'

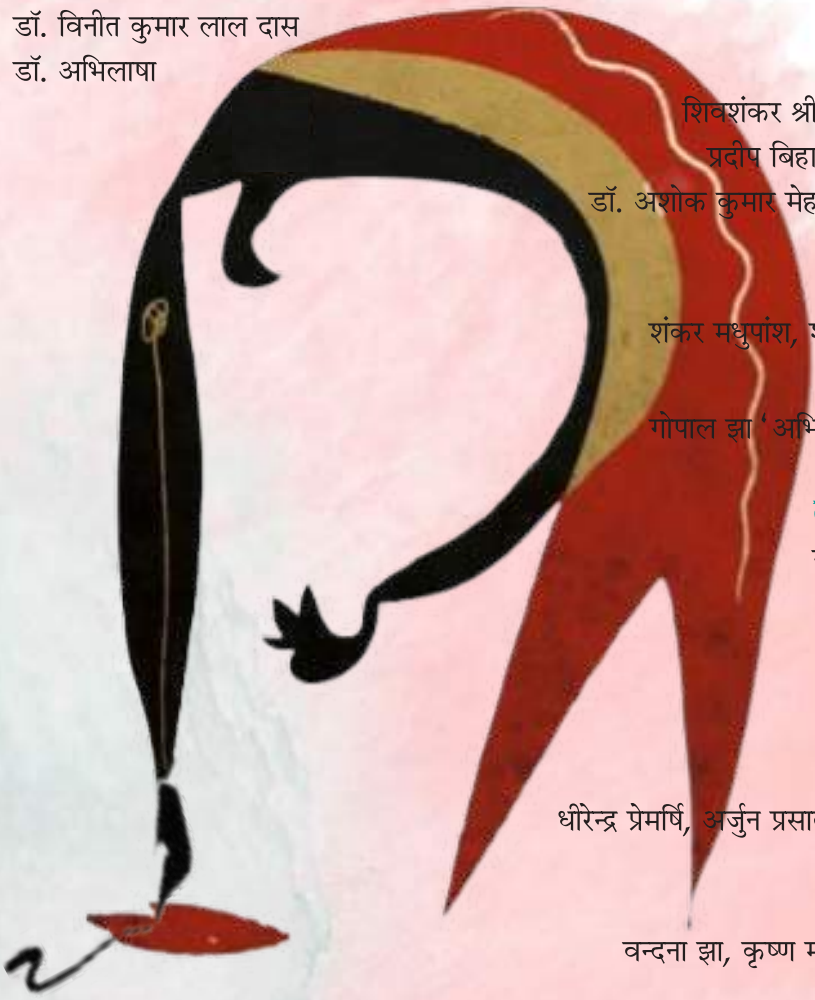

समीक्षा
कैप्टन साहेबक शर्ट : इन्द्रधनुषी रंगमे रंगल कथा : हितनाथ झा

गजल
डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

अनुप्रास प्रकाशन समूह

किताब जाहिसँ नेहाल होइछ जीवन

अनुप्रास प्रकाशन

'धनेश्वरीधाम' इन्द्र परिसर, लहेरियागंज, मधुबनी (मिथिला) बिहार- 847 211
www.anuprasprakashan.com, anuprasprakashansamuh@gmail.com
+91 91559 61356

काव्यांश बुक्स क्रिएशन

पुस्तक सूची : मैथिली

नाटक

1. सिया के सकल देखि : ऋषि बशिष्ठ 108/-
2. हमहूँ जेबै इसकुल : मनोज कामत 100/-
3. मनोरथ : रेवती रमण झा 200/-
4. चोखगर खाँच : डॉ. नरेश कुमार विकल 201/-
5. कमला मे भसियाइत सीता : डॉ. अरविन्द अक्कू 200/-

उपन्यास

1. लय : विभूति आनन्द *(दोसर संस्करण)* 200/- *(अनुपलब्ध)*
2. मृत्युलीला : प्रदीप बिहारी 200/-
3. डीह : दीपा मिश्र 251/-
4. युगांतकारी : मधुकान्त झा 200/-
5. नव प्रभात : मधुकान्त झा 400/-

बाल उपन्यास

1. पिंजरा : वन्दना झा 200/-

कथा-संग्रह

1. एकान्त द्वीप पर डा. मंजुला : श्याम दरिहरे 251/-
2. आशक चंगेरा : अरुण लाल दास 200/-
3. स्मृति-दंश : सुरेन्द्र लाभ 300/-
4. कैप्टन साहेबक शर्ट : डॉ. रंगनाथ दिवाकर HB 500/-
   PB 300/-

लघुकथा-संग्रह

1. स्पीड पोस्ट : ज्ञानवर्द्धन कंठ 200/-
2. भाइरस : ज्ञानवर्द्धन कंठ 200/-

मधुमाछी कथा-संग्रह

1. बिटुआ : शंकर मधुपांश 199/-

बाल कविता-संग्रह

1. सोना हमर बड़ बुधियारि : वन्दना झा 200/-
2. हरियर-कचोर फुलबारी : वन्दना झा 201/-

बाल गीत-संग्रह

1. सुबोध बाल-गीत : डॉ. चन्द्रमणि झा 200/-

गीत-संग्रह

1. पंछी बनी गगन केर... : अशोक कुमार मेहता *(दोसर सं.)* 300/-
2. गीतमालिका : कंचन कुमारी 300/-
3. गीत माधुरी : नीरा दास 200/-
4. चिनबारक फूल : प्रतिमा झा 'प्रांशी' 300/-

मैथिली कविता-संग्रह

1. कोनो टूटल अछि तन्तु : नारायणजी 165/-
2. मुट्ठी भरि सम्वेदना : अंजली कुमारी 150/-
3. संवेदनाक भीत पर : अश्विनी कुमार तिवारी 225/-
4. अभिसारिका : जयंती कुमारी 200/-
5. थिर कएने मोन : अमरनाथ झा 'अमर' 211/- *(अनुपलब्ध)*
6. नमहर हो चद्दरि जतबए : अमरनाथ झा 'अमर' 200/- *(अनुपलब्ध)*
7. आउ स्वप्न साझी करी : गोपाल झा 'अभिषेक' 200/-
8. अधवाराक बदलैत स्वरूप : नंदनी झा 200/-
9. जेना होइत हो भोर : अरुण लाल दास 150/-
10. फुलडाली : शंकर मधुपांश 160/-
11. तोरेसँ : शंकर मधुपांश 201/-
12. शब्द शेष अछि एखन : शंकर मधुपांश 201/-
13. राजर्षि भरत : सतीश चन्द्र झा 200/-
14. भोरक बाट तकैत : खुशबू मिश्रा 'खुशी' 200/-
15. योनिक आत्मबोध : दीपा मिश्र 251/-
16. शतपत्री : दीपा मिश्र HB 800/-
17. जा धरि अछि अक्षर : अरुण लाल दास 200/-
18. हिलकोर : ललित कुमार 200/-
19. छाया : उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' 250/-
20. लोक काव्य कुसुम : डॉ. महेन्द्र नारायण राम 400/-
21. सुखी मीन जे नीर अगाधा : दीपा मिश्र/
    अंबिकेश कुमार मिश्र 350/-
22. घर आएल लक्ष्मी : योगानन्द हीरा 200/-

महाकाव्य

1. चाणक्य : दीनानाथ पाठक 'बन्धु' *(दोसर सं.)* 250/-

अनुवाद

1. कोलरिज एवं अभिनवगुप्त : श्रीकृष्ण मिश्र
   (अ. भैरवेश्वर झा) HB 1000/-

व्यंग्य-संग्रह

1. व्यंग्य मेकिंग इन विलेज : वीरेन्द्र नारायण झा 175/-

यात्रा संस्मरण

2. देश विदेश : डा. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' 500/-

अनुप्रास

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक पत्रिका

वर्ष 07 अंक 09, 2026 ₹ 200

प्रबन्ध सम्पादक

फुलकान्त ठाकुर

सम्पादक

दीप नारायण 'विद्यार्थी'

उप सम्पादक

कुमार आलोक

शशि कुमार शशि

प्रविधि सम्पादक

गजेन्द्र गजुर

सम्पादकीय कार्यालय

'धनेश्वरीधाम' इन्द्र परिसर, लहेरियागंज- 3,
मिथिला, मधुबनी (बिहार) 847 211
मो. +91 91559 61356
www.anuprasprakashan.com
anuprasprakashansamuh@gmail.com
गूगल पे/पे टी एम : +91 8862977228

● सम्पादकीय सहयोग पूर्णत: अवैतनिक।

● पत्रिकामे व्यक्त विचार लेल लेखक स्वयं उत्तरदायी छथि। अनुप्राससँ सम्बन्धित समस्त न्यायिक मामिलाक फरिछौट मधुबनी न्यायालयक अधीन होएत।

● अनुप्रास लेल स्वामी-प्रकाशक श्रीमती गिरिजा नारायण द्वारा केंसिंग्टन प्रेस, दिल्लीसँ मुद्रित।

पग-पग पोखरि माछ मखान, मधुर बोल मुस्की मुख पान।
विद्या-वैभव-शान्ति प्रतीक, ललित नगर ई मिथिला थिक॥

— *आचार्य सोमदेव*

एहि अंकमे...

सम्पादकीय

मैथिली : शास्त्रीय भाषाक प्रश्न 02

आलेख

मैथिलीक पहिल फिरिङ्गी शब्दसङ्ग्रहकार... : प्रो. डा. रामावतार यादव 05

मैथिली उपन्यासक आरंभिक काल : संक्रमण कालमे समाजक चिंता : श्रीधरम 12

'उत्तर जनपद'क भाषा-शैली : डॉ. विनीत कुमार लाल दास 54

चतुरानन मिश्रक 'कला' : एक दृष्टि : डॉ. अभिलाषा 59

ललित निबंध

देखनाय : रमण कुमार सिंह 65

समीक्षा

कैप्टन साहेबक शर्ट : इन्द्रधनुषी रंगमे रंगल कथा : हितनाथ झा 68

मूक नाटक

बौक जनता : डॉ. सुरेन्द्र लाभ 71

कथा

लोक अनमोल : शिवशंकर श्रीनिवास 74

पाथर : कुणाल 78

साकिन : प्रदीप बिहारी 82

स्वाद : रमेश रञ्जन 86

खगता : डॉ. अशोक कुमार मेहता 91

शोणित प्रेम : मुन्नी कामत 94

लघुकथा

शंकर मधुपांशजीक तीनटा लघुकथा 97

पेंशन : शशि कुमार शशि 99

पहिल छाप

कविता : नव पीढ़ीक पुकार : आदर्श भारद्वाज 77

कविता

गोपाल झा 'अभिषेक' केर पाँचटा कविता 101

बकध्यान : आभा झा 104

गीत

परमानन्दक पतझड़ : धीरेन्द्र प्रेमर्षि 106

अर्जुन प्रसाद गुप्ता 'दर्दिला'क तीनटा गीत 107

गजल

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़रीक चारिटा गजल 108

बालबाड़ी

कथा : घमंडी राजू : वन्दना झा 109

कविता : कृष्ण मोहन झा 'मोहन'जीक चारिटा कविता 111

मैथिली : शास्त्रीय भाषाक प्रश्न

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक पत्रिका 'अनुप्रास'क प्रस्तुत अंक अपने लोकनिक हाथ धरि पहुँचैमे एहि बेर बहुत अबेर भेल अछि। तकर पाछाँ बहुत रास हेतु अछि। खैर, जे-से, हमरा बिनु कोनो आशयकेँ कहबाक अछि– जा धरि संभव अछि हमर निरंतर प्रयास रहत जे कनेक अबेरो-सबेर मुदा, 'अनुप्रास'क अंक अहाँ लोकनिक हाथ धरि अवश्य पहुँचैत रहए।

हमरा लोकनि एखन एहन समयमे जीबि रहल छी जाहि समयमे मैथिली साहित्य एकटा ऐतिहासिक आ निर्णायक मोड़पर ठाढ़ अछि। एक दिस भाषा-साहित्य, सांस्कृतिक विरासत तथा शास्त्रीय भाषाक दर्जाक प्रश्न अछि तँ दोसर दिस डिजिटल युगक नवीन प्रवाह, इंटरनेट संस्कृति आ युवा पीढ़ीक आकांक्षा। कोनो भाषा-साहित्यक जीवंतता एहि बातपर निर्भर करैत अछि जे ओ अपन अतीतसँ ऊर्जा ल' क' वर्तमानक यथार्थकेँ कतेक आत्मसात करैत अछि। आइ मैथिलीक संदर्भमे सभसँ पैघ प्रश्न ई अछि– की हमर भाषा आ साहित्य अपन युवा पीढ़ीक सोच आ संवादक माध्यम बनि पाबि रहल अछि? जखन कि हमर विरासत अत्यंत गौरवशाली अछि। प्रश्न इहो ठाढ़ होइत अछि जे आधुनिक युवा मैथिलीसँ दूर भ' हिंदी-अंग्रेजीकेँ बेसी महत्व किएक द' रहल छथि?

हालहिमे हमरा 'काठमाण्डू-कलिङ्ग लिटरेरी फेस्टिवल'मे सहभागी होएबाक सुखद अवसर भेटल। एहि प्रतिष्ठित महोत्सवक एकटा विशेष सत्रमे पैनलिस्ट रूपमे आमंत्रित कएल गेल छल हमरा। सत्रक विषय छलै– 'मैथिली वाङ्मय : गौरवमय विरासत आ वर्तमानक विमर्श'। सत्रमे मैथिली साहित्यक समृद्ध परम्परा, वर्तमान परिदृश्य आ भविष्यक संभावनापर विशद् विचार-विमर्श कएल गेल। उक्त विषयपर हम अपन वक्तव्यमे कहने रहियैक– मैथिली वाङ्मय केर विरासत बहुत गोटे ज्योतिरीश्वर आ बाबा विद्यापतिसँ उद्भूत मानैत छथि, किछु गोटे चर्यापद-सिद्ध साहित्यसँ एहि विरासतकेँ सेहो जोड़ैत छथि मुदा हम मैथिली भाषाक उत्स महाकवि कालिदासक रचनामे पबैत छी। महाकवि कालिदासक रचनामे अभरल प्रकृति चित्रण, विधि-व्यवहार, पावनि-तिहार आ परंपरा-संस्कार शुद्ध रूपसँ मैथिल परंपराक चित्रांकन अछि। मुदा सभसँ महत्त्वपूर्ण अछि महाकविक ग्रंथ 'विक्रमोर्वशीयम्'क चारिम अंकक भाषा!

भाषा वैज्ञानिक दृष्टिसँ ई महाकविक मैथिलत्वक उद्घोष तँ करिते अछि मैथिली अपभ्रंशक आदिस्रोत रूपमे मैथिलीक विरासतकेँ कमसँ कम दू सहस्राब्दी धरि प्राचीन अवश्य ल' जाइत अछि। डॉ. रंगनाथ दिवाकर (हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान, जानकी प्रकाशन, पटना, 2000 ई.) आओर डॉ. रामचन्द्र ठाकुर (मिथिलापभ्रंश का उद्भव और विकास, जानकी प्रकाशन, पटना, 2003 ई.) एहि विषयक गहन शोधसँ प्रमाणित कएलनि जे मैथिली अपभ्रंशक जे परंपरा महाकवि कालिदास विक्रमोर्वशीयम् केर चारिम अंकमे शुरू कएलनि ओकरे अविच्छिन्न रूप चर्यागीत, प्राकृत पैंगलम्, कीर्त्तिलता आ विद्यापति पदावली धरि विकसित भेल। स्पष्ट अछि जे महाकवि कालिदास ओहि समय लोकमे प्रचलिते भाषाकेँ अपन रचनामे स्थान देने होएताह। कहबाक अभिप्राय अछि जे मैथिली अपभ्रंशक अविच्छिन्न परंपरा महाकवि कालिदाससँ पूर्व धरि जाइत अछि। अपन सुविधाक लेल हमसब हुनका मैथिली अपभ्रंशक बीजी पुरुष मानैत छियनि। स्थानाभाव कारणेँ मात्र 'विक्रमोर्वशीयम्' केर एकटा पद (4/8)क उदाहरण देखल जाए–

मइं जाणिइं मिअलोअणि णिसअरु कोइ हरेइ।
जाव ण णवतलि सामल, धाराहरु बरसेउ॥

(हमरा लागल जे कोनो निशाचर हमर मृगनयनी प्रियाकेँ हरिकेँ ल' जा रहल अछि मुदा एतय तँ बिजुरी चमकाबैत कारी मेघ मात्र धाराप्रवाह बरसि रहल छल।)

मैथिली अपभ्रंशक एहन विशुद्ध 14टा पद आ प्राकृत मिश्रित 17टा पद 'विक्रमोर्वशीयम्' केर चारिम अंकमे उपलब्धता आओर बाबा विद्यापति धरि एकर विकास मैथिलीक एहि विरासतकेँ शास्त्रीय भाषा प्रमाणित करबा लेल यथेष्ट अछि। आइ जे 1500 वर्षक रचनाकालक नामपर मैथिलीकेँ एहि गरिमासँ वंचित करबाक षड्यंत्र चलि रहल अछि ओ मात्र महाकवि कालिदासक एहि पदसभक उद्धरणसँ समाप्त कएल जा सकैछ।

मैथिली अपभ्रंशक आदिकवि कालिदास आ अंतिम महाकवि विद्यापतिक मध्य रचित सिद्ध साहित्य सेहो मैथिली अपभ्रंश थिक। उल्लेखनीय अछि जे 84 सिद्धमेसँ सरहपा, शबरपा, भुसुकपा, लुइपा प्रभृति सिद्ध निश्चित रूपसँ मैथिल छलथि आ हुनका सभक भाषामे मैथिलीक उत्स सहजतासँ देखाओल जा सकैछ। राजा धर्मपाल (769-809 ई.)क समकालीन सिद्ध शबरपा, लुइपा आ सरहपासँ एतेक तँ अवश्य कहल जा सकैछ जे मैथिल वाङ्मय केर विरासत महाकवि कालिदासक बादो नि:शेष नहि भेल। गोवर्द्धन, उमापति, ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, गोविन्द दास प्रभृति गुणज्ञसँ मिथिले नहि संपूर्ण पूर्वोत्तर सुवासित भेल। बाबा विद्यापति तँ संपूर्ण विश्व वाङ्मयमे अपना सन एकसरे छथि। अनुपम अद्वितीय! खैर, एहि विषयपर बहुत रास गप कएल जा सकैत अछि। मुदा एखन जाहि विषयपर हमरा जे कहबाक अछि ओतए अबैत छी– की हमर भाषा आ साहित्य अपन युवा पीढ़ीक सोच आ संवादक माध्यम बनि पाबि रहल अछि? सोझ शब्दमे एकर जबाब देब कनेक कठिन अछि।

प्रसिद्ध भाषाविद् प्रो. (डा.) रामावतार यादवजी कहैत छथि– 'जा धरि मैथिली साहित्यक लेख्यरूपमे एकरूपता नहि आओत ता धरि भाषा संकटमे ओझराएल रहत।' परंपरागत रूपसँ मैथिली साहित्यक लेख्यरूपमे

एकरूपताक अभाओ आ अभिजात्य शब्द-चयनपर बेसी जोर देब युवा लोकनिकेँ भाषासँ कनेक दूर करैत अछि। आजुक युवा वर्ग सहजता आ स्वाभाविकताक पक्षधर छथि। दैनिक जीवनमे जे मैथिली बाजल जाइत अछि, जाहिमे आधुनिक जीवनशैली, डिजिटल दुनिया आ वैश्वीकरणक प्रभाओ स्पष्ट देखाइ दैत अछि। एकरा साहित्यमे कतेक स्थान भेटि रहल अछि, की ई सोचबाक विषय नहि थिक?

मैथिली साहित्यक भविष्य ओहि नवांकुरसभक हाथमे अछि जे आजुक समयमे अपन भाषामे लिखबाक आ सोचबाक साहस क' रहल छथि। आवश्यकता एहि बातक अछि जे हम युवावर्गकेँ ई विश्वास दिआ सकी जे मैथिली मात्र अतीतकेँ स्मरण कएल जायबला भाषा नहि, बल्कि भविष्यक सपना देखबाक आ ओकरा गढ़बाक एकटा सशक्त माध्यम अछि। नवांकुर लेखक आ स्थापित साहित्यकारक बीच एकटा दूतरफा स्वतंत्र संवाद भेनाइ आवश्यक अछि, जाहिमे नव विचार आ नूतन प्रयोगकेँ कतिआएल नहि जाए अपितु आगु बढ़ि प्रोत्साहित कएल जाए।

एकर संग-संग डिजिटल मंच– ब्लॉग, पॉडकास्ट, किंडल, सोशल मीडिया आ ई-पत्रिका इत्यादिपर मैथिलीक उपस्थिति बढ़एबाक प्रयोजन अछि। आब युवा पीढ़ी पृष्ठसँ बेसी स्क्रीनपर पढ़ैत छथि। एहि वास्तविकताकेँ स्वीकारब अनिवार्य अछि। जँ हम मैथिलीकेँ आधुनिक, व्यावहारिक आ युवाक आकांक्षाक अनुरूप ढारि सकलहुँ, तँ साहित्यक ई धारा चिरकाल धरि मात्र प्रवहमाने नहि रहत बरु एकटा नवीन आ ओजस्वी रूपमे दुनियाक सोझाँ आओत।

एहि अंकमे प्रो. (डा.) रामावतार यादव, श्रीधरम, डॉ. विनीत कुमार लाल दास, डॉ. अभिलाषाक आलेख संकलित अछि। प्रख्यात कथाकार-समालोचक श्रीधरमजीक विशेष आलेख 'मैथिली उपन्यासक आरंभिक काल : संक्रमण कालमे समाजक चिंता' शीर्षकसँ प्रस्तुत अछि। ई मात्र संयोग अछि जे श्रीधरमजीक एहि विशेष आलेखक अतिरिक्त दूटा आओर आलेख उपन्यासे विधापर अछि। रमण कुमार सिंहजीक एकटा रमनगर ललित निबंध संग रमल जा सकैछ। डॉ. रंगनाथ दिवाकरजीक कथा-संग्रह 'कैप्टन साहेबक शर्ट' केर समीक्षा श्री हितनाथ झाजी द्वारा कएल गेल अछि। 'बौक जनता' शीर्षकसँ सुरेन्द्र लाभजीक मूक नाटक बहुत रोमांचित करत। एहि अंकमे सर्वश्री शिवशंकर श्रीनिवास, कुणाल, प्रदीप बिहारी, रमेश रञ्जन, डॉ. अशोक कुमार मेहता आ श्रीमती मुन्नी कामतजीक कथा पढ़बाक अवसर भेटत। तहिना शंकर मधुपांशजी आ शशि कुमार शशिजीक लघुकथा, श्री गोपाल झा 'अभिषेक' आ श्रीमती आभा झाक कविता, धीरेन्द्र प्रेमर्षिजी आ अर्जुन प्रसाद गुप्ता 'दर्दिला'जीक गीत, डॉ. जियाउर रहमान जाफ़रीजीक गजल अपने लोकनिकेँ आनंदित करत। स्थायी स्तम्भ 'बालबाड़ी'क अंतर्गत श्रीमती वन्दना झाक बाल कथा आ श्री कृष्ण मोहन झा 'मोहन'जीक सुंदर बाल कविता नेना सभक लेल प्रेरक सिद्ध होएत। राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तरपर सम्मानित सातम कक्षाक एकटा मेधावी बाल लेखक आदर्श भारद्वाजक कविता एहि अंकक उपलब्धि अछि। हिंदी आ अंग्रेजीमे आठटा पोथी लिखि चुकल एहि तेजस्वी बालककेँ मैथिली दिस अनबाक आ 'पहिल छाप' स्तम्भ अंतर्गत स्थान द' मैथिलीसँ जोड़ब 'अनुप्रास'क सार्थकता थिक।

जेना कि पहिनहुँ कहने रही, स्तरीय सामग्री सभक विशिष्ट प्रस्तुति 'अनुप्रास'क उद्देश्य रहल अछि। एहि प्रयासमे कतेक सफलता भेटल अछि से अपनेसभ कहब। एकर प्रतीक्षा रहत... सादर!

(दीप नारायण 'विद्यार्थी')

मैथिलीक पहिल *फिरिङ्गी* शब्दसङ्ग्रहकार हेनरी टोमस कोलब्रुक — संक्षिप्त जीवनवृत्त

प्रो. डा. रामावतार यादव

सम्पर्क : काठमाण्डू, नेपाल
ramyadav1942@gmail.com

प्रसिद्ध भाषाविद्, पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, नेपालक पूर्व उपकुलपति, नेपालमे तीनि बेरि प्रज्ञा पुरस्कार विजेता, प्रथम *नेपाल विद्यापति मैथिली अनुसन्धान पुरस्कार*, *डा. धीरेन्द्र साहित्य-संस्कृति पुरस्कार* विजेता आ कतेकहु ग्रंथक रचयिता प्राध्यापक डा. रामावतार यादवक अनेकहु अनुसंधानात्मक आलेखसभ नेपाल, भारत, अमेरिका, विलायत ओ जर्मनीमे प्रकाशित छनि। ब्रिटिश काउन्सिल छात्रवृत्ति, विलायत; फुलब्राइट छात्रवृत्ति, अमेरिका; ब्रिटिश काउन्सिल भीजिटर, लण्डन; सीनियर फुलब्राइट भिजिटिङ्ग स्कौलर, अमेरिका; अलेक्जाण्डर फौन हुम्बोल्ट पोष्टडौक्टोरल सीनियर रिसर्च फेलोशिप, जर्मनी आदि प्राप्त कएनिहार प्रा. डा. यादव *मिथिला रत्न*, *मिथिला विभूति*, *पहिल शब्दकोशकार पंडित भवनाथ मिश्र साहित्य शिखर सम्मान*, *चेतना समिति ताम्रपत्र सम्मान* एवम् *सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान 2024*सँ सेहो सम्मानित छथि।

1. प्राक्कथन

मैथिली भाषा–साहित्यक विशद् वैज्ञानिक वर्णन–विश्लेषण एवम् अध्ययन–अनुशीलनक क्षेत्रमे अपन अप्रतिम अवदानकहेतु जे *फिरिङ्गी* शिखरपुरुष मैथिली–सेवक प्रथमत: दृष्टिपथपर अद्यतन अबैत अएलाह अछि ओ भेलाह ईष्ट इण्डिया कम्पनीक उच्च निजामती कर्मचारी, मैथिलीक परम हितैषी, मैथिलीक स्वतंत्र सत्ताक प्रबल प्रख्यापक–संस्थापक, एवम् अविस्मरणीय विश्वप्रसिद्ध भारतविद्याशास्त्रज्ञ (Indologist) ओ भाषावैज्ञानिक Sir George Abraham Grierson – जनिक 1881 ई.मे कलकत्तासँ प्रकाशित *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihār* शीर्षकक महती व्याकरण–ग्रन्थरत्न प्रथमत: मैथिली भाषाकेँ विलग ओ स्वतंत्र भाषिक सत्तासँ प्रतिष्ठापित कएलक। आ, ततबहि महत्वपूर्ण कृति अछि A. F. Rudolf Hoernleसङ मिलि लिखल हुनक तथाकथित "बिहारी" नामधारी भाषाक तुलनात्मक शब्दकोश (Hoernle & Grierson 1885, 1889)। परञ्च, हुनकहुसँ सत्तरि–पचहत्तरि वर्ष पूर्वहि जे तीनिगोट वरेण्य *फिरिङ्गी* मैथिली–सेवक मैथिली शब्दकोशनिर्माणशास्त्रक प्रारम्भिक भित्ति–निर्माण–कार्यमे नीवक ईंट सदृश अपन पुरोगामी अवदानहेतु स्तुत्य छथि ओ भेलाह क्रमश: (1) Henry Thomas Colebrooke (1807) – देखू (Yadav 2025); (2) Francis Buchanan (पछाति Hamilton) (1810) – देखू: (यादव 2020, Yadav ed. 2021); तथा (3) S. W. Fallon (1879) – देखू: (गोविन्द झा 2010)।

ध्यातव्य इहो जे हेनरी टोमस कोलब्रुक ओएह पहिल व्यक्ति छथि जनिका अङरेजी भाषाक माध्यमेँ मैथिली भाषाक नामक पहिल लिखित सन्दर्भ ***MAIT'HILA***, or *Tirhutīya* (**मैथिल**/तिरहुतीय) रूपेँ प्रस्तुत करबाक श्रेय प्राप्त छनि:

> **MAIT'HILA**, or *Tirhutīya*, is the language used in *Mithīlà*, that is, in the *Sircár* of *Tirhūt*, and in some adjoining districts, limited however

> by the rivers *Cusī* (*Causicī*) and *Gandhac* (*Ghandhacī*,) and by the mountains of *Nepál*; it has great affinity with *Bengálī*; and the character in which it is written differs little from that which is employed throughout Bengal. In *Tirhūt*, too, the learned write *Sanscrit* in the *Tirhutīya* character, and pronounce it after their own inelegant manner. As the dialect of *Mit'hilá* has no extensive use, and does not appear to have been at any time cultivated by elegant poets, it is unnecessary to notice it further. Colebrooke (1801: 225)

पूर्वमे हम ईष्ट इण्डिया कम्पनीक अत्युच्च निजामती सेवा कर्मचारी, पाश्चात्य भारतविद्याशास्त्र (Western Indology) विधाक संस्थापक–प्रतिष्ठापक, संस्कृतक निष्णात विद्वान तथा विश्व–प्रसिद्ध कोषग्रन्थरत्न *अमरकोष:*क अङरेजी व्याख्यासहित सम्पादक–प्रकाशक, एवम् मैथिली–सेवक हेनरी टोमस कोलब्रुकद्वारा मैथिली भाषाक शब्दकोशनिर्माणशास्त्रमे प्रदत्त अतुल्य अवदानद' संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत कए चुकल छी — देखू: *घर-बाहर* (पटना) 20: 73 तथा *अनुप्रास* (मधुबनी) 5: 6मे प्रकाशित हमर मैथिली आलेखद्वय (यादव 2020, 2022) तथा 12th Annual Kathmandu Conference on Nepal & the Himalayaमे प्रस्तुत/वाचित हमर अङरेजी आलेख (Yadav 2023)। तदवत् द्रष्टव्य अछि *मिथिला-भारती:* 12मे प्रकाशित हमर अङरेजी आलेख (Yadav 2025) सेहो।

प्रस्तुत लघु आलेखक प्रतिपाद्य विषय अछि: मैथिलीक आम पाठकजनक अवगतार्थ महान् मैथिली–हितैषी हेनरी टोमस कोलब्रुकक संक्षिप्त जीवनवृत्त प्रस्तुत करब।

2. हेनरी टोमस कोलब्रुक (1765–1837 CE) — जीवन चरित

हेनरी टोमस कोलब्रुकक जन्म 15 June 1765 ई.मे लन्दन शहरक एकटा धनाढ्य परिवारमे सात भाइ–बहिनमे कनिष्ठतम सन्तानरूपेँ भेलनि। हुनक पिता Sir George Colebrooke (1729–1800 CE) प्रसिद्ध उद्योगी, बैङ्कर, तथा Member of Parliament समेत छलाह आ तहिना ईष्ट इण्डिया कम्पनीक चारि वर्षधरि दू–दूबेरि निर्वाचित निदेशक तथा अध्यक्ष पर्यन्त भेल छलाह। हिनक माताक नाम Mary Gaynor छलनि। दुर्भाग्यवश, व्यापार घाटा, बैङ्कक दिवालियापन, फ्रान्सक राजधानी पेरिसमे दीर्घ आप्रवासन आदि अप्रत्याशित घटनाक्रमक कारणेँ धनक प्रशस्त हानि भेलासन्तोँ एवम् पिता जौर्जक मान–प्रतिष्ठामे क्षणिक ह्रास अएलासँ प्रारम्भिक विद्यालयी शिक्षाहेतु हेनरीक नामाङ्कन लन्दन शहरक कोनहु प्रसिद्ध आवासीय विद्यालयमे नहि कराए हुनक प्राथमिक शिक्षा–दीक्षा पिताक आवासहिमे एकगोट निजी शिक्षकक कुशल tutelage ओ अभिभावकत्त्वमे भेलनि। स्वभावसँ कनेक संकोचशील परञ्च अति मेधावी, अध्यवसायी, अत्युत्सुक, ओ अकालपक्व होएबाक कारणेँ 15 वर्षक उम्रहिमे हेनरी टोमस कोलब्रुक ल्याटिन, ग्रीक, फ्रेन्च, जर्मन आदि भाषाक सङ्गहि गणित विषयक अति मनोयोगपूर्वक गम्भीर अध्ययन–अनुशीलनकए ताहि विषयसभमे परम प्रवीण पर्यन्त भ' गेलाह।

आर्थिक सङ्कटक कारणेँ एवम् धनार्जनक तीव्र अभिलाषासँ अभिभूतभए[1] मेधावी हेनरी 15 वर्षक उम्रहिमे ईष्ट इण्डिया कम्पनीक Civil Service of Bengal अन्तर्गत बेङ्गाल प्रेसिडेन्सीक कोनहु मुख्य शहरमे "Writership" पदकलेल प्रतियोगितात्मक परीक्षाहेतु आवेदनकए अपन तीक्ष्ण बुद्धि ओ पिता जौर्जक प्रभुत्वसँ सहजहि चयनित भ' गेलाह। परञ्च, भारत प्रस्थान करबामे किछु अप्रत्याशित विलम्ब भेलनि किएक तँ ताबत ओ अपन माता–पिताकसङ्ग प्रवास जीवनमे फ्रान्सक पेरिस शहरमे रहैत छलाह। अन्ततः 1782 ई.क वसन्त ऋतुमे 17 वर्षक उम्रमे विलायतक पोर्ट्समथ (Portsmouth) बन्दरगाहसँ राजकीय जलसेनाक पानीजहाजसँ प्रस्थानकए हेनरी 1783 ई.क अप्रिल मासमे भारतक मद्रास बन्दरगाह पहुँचलाह, आ तकर पाँच सप्ताह पश्चात् पुनश्च

Tortoise नामक मालवाहक पानीजहाजसँ सामुद्रिक यात्राकए जून मासमे कलकत्ता बन्दरगाहपर उतरि शीघ्रहि Civil Service of Bengal अन्तर्गत कलकत्ता शहरक फारसी अनुवाद कार्यालयमे “Writership”–सन सहायक पदपर नियुक्त भ' गेलाह। कलकत्तामे हेनरी अपन जेठ भाई James Edward Colebrooke (पछाति, Sir Edward) ओतए हुनकहि संरक्षकत्त्वमे तीनि वर्षधरि रहलाह।

ततःपर, 1786 ई.क मई मासमे हेनरीक हस्तान्तरण मोफस्सिलक तिरहुत सरकार अर्थात् तिरहुत जिलाक रेभेन्यू सहायक कलेक्टर (Assistant to the Collector of Revenues in Tirhut) पदपर भेलनि। संस्कृत–ज्ञानगरिमाकलेल सुप्रसिद्ध स्थल ई ओएह तिरहुत सरकार वा जिला अछि जे ताहू कालमे, प्रसिद्ध प्राच्यविद्याविद् Sir William Jonesक शब्दैं “the university of Tirhut” कहि प्रख्यात भ' गेल छल। अही ठाम हेनरी अरबी, फारसी, इस्लामी कानून, खगोलशास्त्र, एवम् हिन्दू ज्योतिषशास्त्रक गम्भीर अध्ययन–अनुशीलन करबामे समर्थ भेलाह।

पुनः तीनि वर्ष पश्चात् 1789 ई.मे हुनक हस्तान्तरण वर्तमान बिहार राज्यक (जकर स्थापना पछाति 1912 ई.मे भेल) उत्तरी–पूर्बी जिला पूर्णियाक रेभेन्यु कार्यालयमे भेलनि आ शीघ्रहि हुनक पदोन्नति प्रमुख सहायक एवम् रेजिष्टर (Head Assistant and Register) पदपर भए गेलनि। पूर्णिया प्रवास कालमे हेनरी अति दत्तचित्तभए ताहि जिलाक **धम्दाहा** गामक **मैथिली–भाषी संस्कृतज्ञ पण्डित चित्रपति उपाध्याय** ओ हुनक ‘nephew’ (भातिज?) **व्रजनन्दन**क साहाय्यसँ संस्कृतक अनेकहु मूल्यवान ग्रन्थसभक गहन अध्ययन–अनुशीलन कएलनि — जाहिमे प्रमुखरूपेण उल्लेख्य अछि भास्करकृत *सिद्धान्तशिरोमणि* (*बीजगणित अध्यायसहित*), *प्रक्रियाकौमुदी* व्याकरण–ग्रन्थक मिथिलाक्षर पाण्डुलिपि, एवम् विश्व–प्रख्यात कोष–ग्रन्थ *अमरकोषः*क अनेकहु टीकासभ। पिता Georgeक भारतीय प्राचीन सभ्यता–संस्कृतिमादैं गम्भीर जिज्ञासासभक तुष्टिहेतु हेनरी केहन परिस्थितिमे ओ कोन विधिएँ संस्कृत सिखलनि तकर सटीक ओ सविस्तर वर्णन Rocher & Rocher (2013) निम्न भाँतिएँ कएल अछि:

> Colebrooke came to Sanskrit without any academic, especially any phililogical background. He learned Sanskrit from the only source available to him, Indian pandits, and, consequently, in the same way those pandits had learnt Sanskrit themselves and taught it to their Indian pupils. Pandit Citrapati and others, whom Colebrooke recruited about 1790 when posted in Purnia and who remained by his side for the remainder of his stay in India, could not have imposed on a western learner the degree of prior memorization demanded of Indian pupils. They nevertheless kept to the method of reading the Prakriyākaumudī, a grammar of the Paninian tradition of linguistics, with existing commentaries and an oral gloss by the instructor, and seeking lexical assistance in the Amarakośa, a monolingual dictionary, and the commentaries. From this experience Colebrooke retained a life–long respect for, and reliance on, the Indian commentarial tradition. (P. 7)

पूर्णिया प्रवास कालहिमे 1792 ई.मे Thomas Grahamक प्रस्ताव ओ Colonel John Murrayक समर्थन–अनुमोदनसँ 27 वर्षक युवा हेनरी टोमस कोलब्रुक विधिवत् Asiatic Society of Bengal–सन सुप्रसिद्ध एवम् गरिमामय संस्थाक निर्वाचित सदस्य नियुक्त भ' गेलाह। प्रारम्भमे हेनरी एहि Societyक बौद्धिक गतिविधिमादैं कोनहु विशेष अभिरुचि नहि लेलनि एवम् 1800 ई.धरि Societyक एकहुटा बैसारमे

सहभागी पर्यन्त नहि भेलाह। परञ्च हिनक गहन ज्ञान, बौद्धिक उँचाइ, तथा मान–प्रतिष्ठाक कारणेँ ओ 1800 ई.मे Asiatic Society of Bengalक Vice–President नियुक्त भ' गेलाह। चोट्टहि 1801 ई.मे कोलब्रुक "On the Sanscrit and Prācrit languages" शीर्षकक अपन सुविख्यात निबन्ध कलकत्तासँ प्रकाशित Asiatic Society of Bengalक प्रसिद्ध जर्नल *Asiatick Researches*मे प्रकाशित कएलनि जाहिमे मैथिली भाषाक पहिल लिखित सन्दर्भ **MAIT'HILA**, or *Tirhutīya* (p. 225) रूपेँ प्रस्तुत भेल — जयकान्त मिश्रद्वारा सन्दर्भित (1949: 39–40) *Mithelee or Mythili* रूपेँ नहि। ताही सालक अन्तमे हेनरीक नियुक्ति *sadr diwani* तथा *nizamat adalat*क Puisne judge पदपर भेलनि। हुनक कुशाग्र बुद्धि, प्रशासनिक कार्यकौशल, ओ अपन ज्येष्ठ भ्राता Edwardकेँ उछटि आगाँ बढि शीघ्र पदोन्नति आदिमादेँ Rocher & Rocher (2012: 60)क मत निम्नानुसार उद्धृत अछि:

> Thus leapfrogging his elder brother and many others, Colebrooke rose straight from district judge to the top echelon of the EIC judicial service. On 23 December Wellesley, who had proceeded to Allahabad, conferred further honours and additional responsibilities on him and fellow superior court judge Harrington: both were made ptofessors and members of the governing council of Fort William College.

तत:पर एकाएक हिनक क्रियाशीलतामे तीव्र वृद्धिभए 1804 ई.धरि Asiatic Societyक बैसारसभमे निरन्तर अपन सृजनात्मक सहभागिता सुनिश्चित करैत रहलासँ हुनक बौद्धिक प्रभुत्व आओरो बेसी बढ़ैत गेलनि। ताही क्रमेँ ओ बनारस संस्कृत कौलेजक प्राध्यापक पं विद्यानन्दकेँ आर्थिक प्रलोभन तथा पदलोलुपताक कारणेँ Wilford नामक एकगोट *फिरिङ्गी* विद्वानकेँ पश्चिमी बौद्धिकता ओ विशेषत: बाइबिलक ज्ञानकेँ अतिरञ्जित रूपेँ महिमा–मण्डित ओ संस्कृतगत ज्ञानकेँ लघुताभास करएबाक अक्षम्य अपराधक अभियोगमे प्राध्यापक पदसँ पदच्युत कएलनि। तत:पर, चित्रपति नामक एकगोट मैथिली–भाषी निष्णात संस्कृतज्ञक साहाय्यसँ कोलब्रुक *प्रक्रियाकौमुदी, सिद्धान्तकौमुदी* ओ पाणिणिक *अष्टाध्यायी* आदि व्याकरण ग्रन्थरत्नक गहन अध्ययन–अनुशीलनकए 1805 ई.मे *A Grammar of the Sanscrit Language*–सन प्रसिद्ध ग्रन्थक प्रकाशन कलकत्ता शहरसँ कएलनि। पुनश्च, 1805 ई.मे हेनरी कोलब्रुक *On the Vedas or Sacred Writings of the Hindus* शीर्षकक एकगोट अति वैदुष्यपूर्ण लघु–ग्रन्थ (Monograph) सेहो प्रकाशित कएलनि। ताही साल 1805 Oct. 17क' हेनरी EICक Supreme Councilक Chief Judge नियुक्त भ' गेलाह आ Harington तथा John Fombelle हिनक Puisne judge भेलाह। एतबहि नहि, 1807 ई.धरि अबैत–अबैत ओ Asiatic Society of Bengalक President सेहो भ' गेल छलाह। Rocher & Rocher (2012: 89)क सम्मति जे:

> Concurrently serving as president of the Asiatic Society, the prestige of which he raised to a pinnacle, Colebrooke was the most prominent administrator–scholar in India, an active patron of learning and a confidant of of Governor–General Minto…

ततबहि नहि, Revenueक क्षेत्रमे कोलब्रुकक वैयक्तिक दक्षता एवम् कार्यकुशलता एहन तीक्ष्ण छलनि जे विद्वानलोकनि हुनका 'the theorist of the Bengal government'क पदवीसँ स्शोभित करए लागल छलाह। Fort William Collegeमे हेनरी कोलब्रुक हिन्दू कानून तथा संस्कृतक प्रोफेसर सेहो छलाह परञ्च ओ कहिओ lecture नहि कएलनि।

अपितु governing bodyक सदस्य ओ पाठ्यपुस्तक निर्माताक हैसियतसँ ओ ईष्ट इण्डिआ कम्पनीक निजामती आ मिलिटरी सेवाक कर्मचारीसबक समग्र शिक्षाक गुणस्तर अभिवृद्धिदिसि अत्यन्त मनोयोग तथा तत्परतासँ काज कएलनि।

तत्पश्चात् हेनरी कोलब्रुक 1808 ई.मे विश्वविख्यात संस्कृत कोषकार अमरसिंह–विरचित *अमरकोष:*क एकगोट विलक्षण संस्करण ‘With an English Interpretation and Annotations’ कलकत्ता शहरसँ प्रकाशित करबाक श्रेय प्राप्त कएलनि — जकर तेसर संस्करण हुनक मृत्योपरान्त अनेकहु वर्ष पश्चात् 1891 ई.मे पुनर्प्रकाशित भेल, देखू: Colebrooke (1808/1891)। शीघ्रहि, तरुण वयसक होइतहु, हेनरीक पदोन्नति राजशाही जिलाक Natore (नाटोर)मे — जे वर्तमानमे बाङलादेश अन्तर्गत अछि — Collectorक उच्च पदपर भ' गेलनि।

हेनरीक विवाह 1810 ई.मे Elizabeth Wilkinsonसँ भेलनि, परञ्च विवाहक किछुए वर्षक पश्चात् हुनक पत्नीक असामयिक देहान्त भ' गेलनि।

बत्तीस वर्षक भारत प्रवास पश्चात्, हेनरी 1815 ई.मे विलायत वापस चलि गेलाह। तकर बाइस वर्ष पश्चात् हुनक निधन 10 March 1837क' 72 वर्षक उम्रमे लण्दन शहरमे भेलनि।

3. उपसंहार

उपसंहार रूपेँ, निष्कर्षवत्, *मिथिला भारती* (पटना): 12 (2025)मे प्रकाशित हमर अङरेजी आलेखमे व्यक्त सारांशीय अभिमत मैथिलीक आम पाठकजन समक्ष राखब श्रेयस्कर बुझि निचाँ उद्धृत कए रहल छी:

> In other words, **if Bhava Nath Mishra is the first *native* lexicographer of the Maithili language, Henry Thomas Colebrooke happens to be the first *firingi* lexicographer of the Maithili language.** Indeed, the onset of the genesis of Maithili lexicography owes its existence to none other than Henry Thomas Colebrooke. Self–evidently, the Maithili literati will ever remain obliged to Colebrooke and will remember the respected, the renowned, and the revered Henry Thomas Colebrooke with pride and fondness and gratitude for his seminal contributions to the virtually non–existent and the newly–emerging genre of Maithili lexicography made through his innovative and pioneering work, *Comparative Vocabulary* (1807).

अन्तत:, पाश्चात्य भारतविद्याशास्त्र (Western Indology) विधाक संस्थापक–प्रख्यापक, संस्कृतक निष्णात विद्वान तथा संस्कृत व्याकरणक रचयिता, अमरसिंहकृत *अमरकोष:* सदृश विश्वविख्यात संस्कृत कोषग्रन्थक प्रथम अङरेजी व्याख्याता, एवम् *अमरकोष:*क 370 प्रविष्टिक मैथिली पर्यायक सुललित हस्तलिखित शब्द–सङ्ग्रह *Comparative Vocabulary* (1807)क प्रथम रचयिता–संकलयिता हेनरी टोमस कोलब्रुकक जीवन चरित तथा वैदुष्यपूर्ण प्रकाशित–अप्रकाशित कृतिसभक विस्तृत विवरण–विश्लेषणमादेँ देखू: हुनक सुपुत्र Thomas Edward Colebrooke (1839, 1873) कृत गरिमामय आलेख एवम् ग्रन्थ; Cowell (ed. 1873); तथा Rocher & Rocher (2012, 2013)।

अन्त्यटिप्पणी

> 1. Service in the eighteenth century was a palliative for embarrassed circumstances or for poor prospects in Britain.
>
> (Rocher & Rocher 2012: 1)

कृतज्ञताज्ञापन

लेखक Professor Dr. Martin Krieger, Chair for the Northern European History Department of the University of Kiel, Germany; Professor Dr. John M. Peterson, Head, Department of Linguistik & Phonetik, University of Kiel, Germany; तथा भवनाथ झा (पटना) प्रति कृतज्ञ छथि – क्रमश: Rocher & Rocher (2012); Rocher & Rocher (2013); एवम् Colebrooke (1808/1891)सन महती ग्रन्थक सुपठनीय PDF उपलब्ध करएबाकहेतु।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

झा, गोविन्द. 2010. "अन्हारमे ठाढ़ एक यूरोपिअन मैथिली भक्त," मे: *अनुचिन्तन,* पटना: नवारम्भ, pp. 7–11।

प्रक्रियाकौमुदी. (रामचन्द्राचार्य–कृत). 1931. बम्बई।

सिद्धान्तशिरोमणि. (भास्कराचार्य–कृत). लखनऊ: नवल किशोर प्रेस।

यादव, रामावतार. 2020."हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* (1807 CE) शीर्षकक हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध *अमरकोष:*क 370 शब्दक मैथिली पर्याय: संक्षिप्त परिचय," *घर–बाहर* (पटना): 20: 73, pp. 14–15।

यादव, रामावतार. 2020. "कखनहु आठ–आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु हौदा–कसल हाथीपर सवार एकगोट फिरिङ्गी मैथिली–सेवक: संक्षिप्त जीवनवृत्त," *अनुप्रास* (मधुबनी): 2: 2, pp. 3–6।

यादव, रामावतार. 2021. "मैथिली भाषाक वर्तमान अवस्थितिद' संक्षिप्त टिप्पणी," *अनुप्रास* (मधुबनी): 2: 2, pp. 3–6।

यादव, रामावतार. 2022. "ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनक Asia, Pacific and African Collectionsमे अनुरक्षित ओ भारतविद्याशास्त्रज्ञ हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* शीर्षकक अद्यतन अपठित, अशोधित, एवम् अप्रकाशित हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध अमरसिंह–विरचित संस्कृतक प्रख्यात कोश–ग्रन्थ *अमरकोष:*क 370 शब्दक मैथिली पर्याय – विहङ्गम दृष्टि," *अनुप्रास* (मधुबनी): 5: 6, pp. 3–8।

Buchanan, Francis. 1810. *Comparative Vocabularies, (MSS EUR G 16)*. India Office Records, British Library, London.

Colebrooke, Henry Thomas. 1801. "On the Sanscrit and Prācrit languages," *Asiatick Researches*: 7, pp. 199–231.

Colebrooke, Henry Thomas. 1805. *A Grammar of the Sanscrit Language, Vol. 1*. Calcutta: Honorable Company Press.

Colebrooke, Henry Thomas. 1805. "On the Vedas or sacred writings of the Hindus," *Asiatick Researches*: 8, pp. 369–476.

Colebrooke, Henry Thomas. 1807. *Comparative Vocabulary (APAC MSS IO/San. 156–157)*. British Library, London. Hand–written MS.

Colebrooke, Henry Thomas. 1808. *Cosa, or Dictionary of the Sanscrit Language by Amarasinha*. Serampore: Mission Press.

[A third edition, edited by Haragobinda Rakshit and titled *Kosha, or Dictionary of the Sanscrit Language by Umura Singha with an English Interpretation and Annotations*. was publihed in Calcutta by Nundo Mohun Banerjee & Co. in 1891]

Colebrooke, Henry Thomas. 1810. *Two Treatises on Hindu Law of Inheritance*. Calcutta: Hindoostanee Press.

Colebrooke, Henry Thomas. 1858. *Essays on the Religion and Philosophy of the Hindus by the late H. T. Colebrooke, Esq*. London: Williams and Norgate.

Colebrooke, Thomas Edward. 1839. "Notices of the life of Henry Thomas Colebrooke, Esq., by his son," *The Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland*, Vol. 5, No. 1, pp. 1–60.

Colebrooke, Thomas Edward. 1873. *The Life of H. T. Colebrooke*. London: Trübner & Co.

Cowell, Edward Byles. (ed.) 1873. *Miscellaneous Essays By H. T. Colebrooke, A New Edition with Notes, Vol. II*. London: Trübner & Co., 57 and 59, Ludgate Hill.

Fallon, S. W. 1879. *A New Hindustani–English Dictionary with Illustrations from Hindustani Literature and Folklore*. Banaras & London: E. J. Lazarus & Trübner. [Second Edition 1884 Bharati Bhandar, Allahabad]

Grierson, George Abraham. 1881. *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihār, Part I*. Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Hoernle, A. F. Rudolf. & George A. Grierson. 1885. *A Comparative Dictionary of the Bihari Language. Part 1*. Calcutta: Bengal Secretarial Press.

Hoernle, A. F. Rudolf. & George A. Grierson. 1889. *A Comparative Dictionary of the Bihari Language. Part 2*. Calcutta: Bengal Secretarial Press.

Miscellaneous Essays By H. T. Colebrooke, Vol. 1. London: Wm. H. Allen and Co., Leedenhall Street, 1837.

Miscellaneous Essays By H. T. Colebrooke, Vol. 2. London: Wm. H. Allen and Co., Leedenhall Street, 1837.

Rocher, Rosane. & Ludo Rocher. 2012. *The Making of Western Indology: Henry Thomas Colebrooke and the East India Company*. London and New York: Routledge.

Rocher, Rosane. & Ludo Rocher. 2013. *Founders of Western Indology: August Wilheim von Schlegel and Henry Thomas Colebrooke in Correspondence 1820–1837*.Wiesbaden (Germany): Harassowitz Verlag.

Yadav, Ramawatar. (ed.) 2021. *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's Comparative Vocabularies: Facsimile Edition of the British Library,London Manuscript*. Darbhanga (Bihar, India): Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation. Kameshwar Singh Bihar Heritage Series—23.

Yadav, Ramawatar. 2023. "Historiography of lexicogenesis in Maithili — With special reference to the hitherto unstudied and unpublished hand–written British Library, London MS. of Henry Thomas Colebrooke's *Comparative Vocabulary* (1807 CE)." Paper presented to **The 12th Annual Kathmandu Conference on Nepal & the Himalaya** organised under the aegis of Social Science Baha at Hotel Shanker in Kathmandu, 2023.

Yadav, Ramawatar. 2025. "Historiography of lexicogenesis in Maithili — With special reference to the hitherto unstudied and unpublished hand–written British Library, London APAC MS. of Henry Thomas Colebrooke's *Comparative Vocabulary* (1807 CE)," *Mithilā–Bhāratī* (Patna): 12: 1–4, pp. 130–173.

●●●

मैथिली उपन्यासक आरंभिक काल : संक्रमण कालमे समाजक चिंता

(काल-विभाजन, नामकरण, आरंभिक उपन्यास आ उपन्यासकार)

श्रीधरम

सम्पर्क : बी-277-ए, वसंतकुंज एंक्लेव, नई दिल्ली-110070
मो. +91 9868325811

मैथिली आ हिंदीमे समान गतिसँ लेखन कएनिहार प्रख्यात कथाकार-समालोचक श्रीधरम केर जन्म 18 नवम्बर, 1974कैं चनौरा गंज, (मधुबनी, बिहार)मे भेलनि। हिनक अनेको कथा आ वैचारिक आलोचनात्मक लेख देशक अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित आ चर्चित भेल छनि। 'स्त्री : संघर्ष और सृजन', 'स्त्री स्वाधीनता का प्रश्न और नागार्जुन के उपन्यास' (आलोचना)। 'चन्द्रेश्वर कर्ण रचनावली' (पाँच खंड मे), 'तुलसीराम: कृतित्व एवं व्यक्तित्व' (संपादन) केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा विदेशी विद्यार्थीक लेल प्रकाशित पाठ्य-पुस्तक 'हिंदी का इतिहास'क सह-लेखन एवं संपादन कएने छथि। हिंदी-मैथिली दुनू भाषाक अनेक महत्त्वपूर्ण चयनित संकलनमे कथा संकलित छनि। किछु कथा आन भारतीय भाषा सभमे सेहो अनूदित-प्रकाशित भेल छनि। सम्प्रति आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय)मे असिस्टेंट प्रोफ़ेसर छथि।

भारतीय साहित्यमे अधिकांशत: उनैसम शताब्दीक उत्तरार्धमे उपन्यास लेखनक आरंभ भ' चुकल छल। मैथिलीमे बीसम शताब्दीक दोसर दशकमे आबि क' उपन्यास लेखन प्रारंभ भेल मुदा तकर केन्द्रमे सामाजिक रूपसँ सबसँ बेसी शोषित स्त्री जीवनक यथार्थ छल। जखन कि हिन्दीक अधिकांश आरंभिक उपन्यास तिलस्मी आ जासूसी दुनियामे औनाइत रहल। किछ आरंभिक उपन्यासमे भारतीय आ पाश्चात्य संस्कृतिक टकराव आ द्वन्द्वक चित्रण सेहो देखा पड़ैत अछि। ओना प्रेमचंदसँ पहिने हिन्दी उपन्यासकैं सामाजिक यथार्थक पटरी पर आन'क श्रेय सेहो एकटा मैथिल लेखक भुवनेश्वर मिश्रकैं जाइत छनि जे 'घराऊ घटना' (1893) आ 'बलवंत भूमिहार' (1901) लिखलनि। 'बलवंत भूमिहार'क प्रतिकैं तँ एक जातिक जमींदार लोकनि गंगामे बहा देने रहय।

मैथिलीमे बीसम शताब्दीक आरंभमे मिथक आधरित आख्यानक लेखन सेहो भेल मुदा ओकरा आधुनिक उपन्यास नहि कहल जा सकैत अछि। जयकांत मिश्र अपन पोथी 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे लिखैत छथि, "स्वतंत्र कृति कहबाक योग्य जे सभसं पुरान आख्यान भेटैत अछि से थिक महामहोपाध्याय परमेश्वर झाक 'सिमंतिनी-आख्यायिका' आओर तुलापति सिंहक 'मदनराजचरित उपन्यास'। एहि दुनू कृतिक रचना अपूर्णे रहल; परंतु प्रथमे किछु वर्णन बड़ विलक्षण उतरल अछि।" जयकान्त मिश्र आरंभिक मैथिली उपन्यासक मुख्य प्रवृत्ति 'उपदेशोन्मुखता'कैं मनैत छथि। 'सुमति', मनुष्यक मोल' आ 'मिथिला दर्पण'कैं ओ अही प्रवृत्तिक अंतर्गत रखैत छथि। जयकान्त बाबू जनार्दन झा 'जनसीदन'क उपन्यासकैं सेहो अही प्रवृतिक अंतर्गत रखैत छथि, मुदा हुनका ओ 'वास्तविक सामाजिक समस्या'कैं पकड़' बला उपन्यासकार साबित करैत छथि। हुनकहि शब्दमे, "पंडित जनार्दन झा सेहो उपदेशात्मक उपन्यास लिखने छथि; मुदा ई उक्त अन्यान्य लेखक सभसँ अधिक कौशल एवं कारयित्री प्रतिभाक परिचय दैत छथि, कारण जे ई निर्दयी सासु, पुनर्विवाह आदि अनेक उपन्यासमे वास्तविक सामाजिक यथार्थकैं पकड़ने छथि।" नि:सन्देह जनार्दन झा 'जनसीदन' मैथिलीक प्रथम व्यवस्थित उपन्यासकार होयबाक संग-संग एहि विधाक मजगूत न्यौ तैयार करैत छथि आ मैथिली उपन्यासकैं जनमिते ओकरा सामाजिक यथार्थसँ जोड़ि दैत छथि।

काल-विभाजन एवं नामकरण

मैथिलीमे उपन्यास विधाक नामे जे प्रथम आख्यान छपल से पुलकित मिश्रक रचना 'मोहिनी-मोहन' (1907-8 ई.) थिक। ओना ई उपन्यास कथ्य आ शिल्पक दृष्टिएँ बहुत काँच अछि तथापि एकरा उपन्यास विधाक नाम पर पहिल रचना कहल गेल अछि। मैथिली उपन्यासक व्यवस्थित आरंभ जनार्दन झा 'जनसीदन'क उपन्यास 'सती सर्वस्व' 1912 ई.सँ मानल जा सकैत अछि। एवं प्रकारें 'सती सर्वस्व' (1912 ई.)सँ प्रारंभ भए कांचीनाथ झा 'किरण'क रचना 'चंद्रग्रहण' (1932 ई.) धरि मैथिली उपन्यासक पहिल चरण पूरा भ' जाइत अछि। दोसर चरण हरिमोहन झाक 'कन्यादान'क प्रकाशन (1933 ई.)सँ शुरू होइत अछि जखन ई विधा प्रौढ़ताक संग उपस्थित होइत मुख्यधाराक विधा बनि जाइत अछि। तेसर चरण 'यात्री'क 'पारो'सँ मानल जयबाक चाही जखन मैथिली उपन्यासमे कथ्य आ शिल्प, दुनू दृष्टिएँ नव नव प्रयोग शुरू होइत अछि जकरा राजकमल चौधरी और आगाँ ल' जाइत छथि। हर दृष्टिएँ मैथिली उपन्यासमे आधुनिकताक प्रवेश ललितक उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र' (1965 ई.)क संगें अबैत अछि जखन मैथिली उपन्यासक परिवेशकेँ विस्तार भेटैत छैक। एहिसँ पहिने जतेक उपन्यास छपल ताहिमे 'आन्दोलन' सन किछ उपन्यासकेँ बेरा दी तँ अधिकांश उपन्यासक कैँद्रमे मैथिल ब्राह्मण आ एहि वर्गक विवाह समस्या रहल। मुदा 1965 ई.मे 'पृथ्वीपुत्र'क संगें आरो दू गोट उपन्यास, क्रमशः 'खोंता आ चिड़ै' (मायानंद मिश्र) आ 'भोरुकवा' (धीरेन्द्र) प्रकाशित भेल जे मैथिली उपन्यासकेँ ब्राम्हण परिवेशसँ निकालि क' पिछड़ल आ दलित समाज धरि पहुंचा देलक। एत' आबि क' मैथिली उपन्यासक जनतान्त्रिक रूप स्थिर भ' जाइत अछि। एहि कालखंडकेँ धूमकेतुक उपन्यास 'मोड़ पर' धरि राखल जा सकैत अछि जाहिमे मैथिली उपन्यास हर दृष्टिएं उत्कर्षकेँ छुबैत अछि। एहि बीच मैथिली उपन्यासमे कथ्यक विविध विस्तारक संगें शिल्पगत सेहो बहुविधि प्रयोग देखल जा सकैत अछि। एकैसम शताब्दीमे उपन्यास विधामे अनेक तरहक विमर्श प्रारंभ भेल आ एहि विधामे नव नव क्षेत्र आ आयाम जुड़ैत गेल जे अद्यतन चलि रहल अछि। एवं प्रकारें मैथिली उपन्यासक सौ वर्षसँ अधिक समयकेँ निम्नानुसारें काल-विभाजन कैल जा सकैत अछि–

1907सँ 1932 (आरंभिक काल)
1933सँ 1945 (विकास काल)
1946सँ 1964 (प्रयोग काल)
1965सँ 2000 (आधुनिक काल)
2001सँ अद्यतन (विमर्श काल)

ध्यानसँ देखी तँ 1907 ई.सँ 1958 ई. (आदिकथा), लगभग पचास वर्ष धरि मैथिली उपन्यास कमबेसी मैथिल ब्राह्मणक विवाह-समस्या, स्त्री-शिक्षा आ स्त्रीक सशक्तिकरण पर केन्द्रित रहल अछि, तैं एहि काल खंडकेँ स्त्री-स्वाधीनताक लेल पुरुष लेखक द्वारा कयल गेल चरणगत प्रयासक रुपैँ सेहो देखल जा सकैत अछि। सत्तरिक दशकमे जखन ललित, मायानंद मिश्र, धीरेन्द्रक संगें 'मणिपद्म'क आगमन उपन्यास लेखनमे होइत अछि, एहि विधाक वितान शास्त्रसँ लोक धरि पहुँचि जाइत छै।

मैथिलीक प्रथम उपन्यास आ उपन्यासकार

समालोचक-कथाकार रामदेव झाक अनुसारें पुलकित मिश्रक रचना 'मोहिनी-मोहन'क (1907-8) प्रकाशन संगे पहिल बेर लिखल छल– "मैथिली भाषाक उपन्यास"। एहि प्रकारें स्पष्ट रुपैँ विधाक घोषणाक संग पहिल मैथिलीक उपन्यास 'मोहिनी-मोहन' कलकत्तासँ प्रकाशित भेल। मुदा उपन्यास विधाक कसौटी पर एकरा

उपन्यास कहब कठिन। विवाह विषय पर लिखल एहि उपन्यासक मादे रामदेव झा लिखैत छथि, "मोहिनी-मोहन'मे विषय यद्यपि औपन्यासिक लेल गेल अछि जकरा विस्तृत ओ व्यापक रूप देबाक पर्याप्त संभावना छल मुदा एकर कथानक अत्यंत सोझ ओ दुर्बल रहि गेल अछि। मोहन ओ मोहिनीक विवाहक उद्येश्यसँ विभिन्न प्रयत्न ओ बाधाक घटना सब विभिन्न स्थान पर ततबा क्षिप्र गतिसँ घटित होइत अछि जे अल्पावधिएमे ने केवल कथानक संपन्न भ' जाइछ अपितु पाठकहुकेँ एकरा पढ़ि संपन्न करबामे बेसी समय नहि लगैत छनि। एक तरहें किछु और जनबा-पढ़बा लेल पाठकक मोन लुलुआयले रहि जाइत छनि। आकारक लघुता, घटना चक्रक क्षिप्रता इत्यादिक कारणें ई निर्णय करबामे तारतम्य होइत रहल अछि जे 'मोहिनी-मोहन'केँ उपन्यास मानल जाय वा नहि।"[1] तथापि ई उपन्यास एहि बातक प्रमाण थिक जे संरचनाक स्तर पर उपन्यास विधाक आगमन मैथिलीमे बीसम शताब्दीक पहिल दशकमे आबि चुकल छल। ओना डॉ. रमानन्द झा 'रमण' एहि उपन्यासकेँ कथा मनैत अपन संपादित पोथी 'मैथिली कथाक धाप'मे संकलित कयने छथि। लगभग पंद्रह पृष्ठ आ चारि अध्यायमे लिखित एहि गल्पक नाटकीयता आ संवाद बहुत स्वाभाविक बनि पड़ल अछि, एकटा उदाहरण द्रष्टव्य अछि, "एक पुनौराक अचल झा नामक घटक आएल छलाह से बाबूकेँ कहैत रहथीन्ह, जे जनिबाड़क बबुआझाक परिचय नहि नीक छैन्ह। तखन जे ई कार्य करब से परम अनुचित थिक। बड़ नीक दोसर ठाम टेबैत छी। ई कथा हम खिड़की लगसैं सुनैत रही। ...आब कहू बेटीचोद भारी लंठ अछि।" *(मैथिली कथाक धाप, संपादक- डॉ. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल प्रकाशन, संस्करण-2020, पृष्ठ-75)*

प्रकाशनक अभावमे कतेक आरंभिक उपन्यास कालकवलित भ' गेल होयत। तकर सद्य: प्रमाण थिक 1914 ई.मे लिखल गेल पुण्यानन्द झाक उपन्यास 'मिथिला दर्पण' जकर पहिल खंड सोलह वर्षक बाद 1925 ई.मे प्रकाशित भेल आ एकर दोसर खंड नष्टे भ' गेल होयत। जेनाकि उपन्यासक भूमिकामे लेखक सूचना देने छथि, "यदि दर्पणसँ किछुओ सेवा भए सकल तँ एकर दोसर खंड जे लिखल प्रस्तुत अछि आर जकरा किछु उच्च विचारक समाजक समावेश छैक, शीघ्र प्रकाशित भए उपस्थित होएत"। पुण्यानन्द झा अपन एहि उपन्यासकेँ 'बनैली राज्याधीश श्रीमान कुमार रामानंद सिंह बहादुर तथा श्रीमान कुमार कृष्णानंद सिंह बहादुरक' आर्थिक सहायतासँ छपौने छलाह मुदा हुनका ई विश्वास रहनि जे दर्पणक पहिल खंडक आमदनीसँ दोसर खंड छपेबाक जोगाड़ भ' जायत। एहि उपन्यासक पहिल संस्करण एक हजार प्रति छपल जकर मूल्य एक रुपैया छल। लेखकक एहि वक्तव्यसँ अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे हुनकर उत्साह आ स्वप्नक की दुर्गति भेल होयतनि, "अंतमे ई लिखब उचित बूझि पड़ैत अछि जे अनेक त्रुटिसँ युक्त ई 'मिथिला दर्पण'क बिक्रयसँ कमीशन आदि देबा पश्चात जे किछु शेष रहत, ओकरा किछु किछु स्वार्थहुक संग संग दर्पणक हिन्दी अनुवाद तथा द्वितीय खंड छपेबामे तथा अन्य लोकहित कार्यमे व्यय करबाक उद्येश्य अछि।"[2]

उपन्यास विधा अपन जन्मक संगें जनताक संगे एहि लेल चलल किएक तँ पाठकक बलें ओ रचनामे लोकतँत्र आनबाक प्रयास केलक आ आर्थिक रुपेँ स्वतन्त्र भेल। जाहि मिथिलाक 'सभा गाछी'मे हर वर्ष एक लाख लोक (ओहि समय भारतक जनसंख्या लगभग तीस-एकतीस करोड़ छल।) मात्र विवाह-मेलामे शामिल होइत छल ताहि मिथिलामे एखनो उपन्यासक हजार पाठक नहि भेटि पबैत अछि। 'चंद्रग्रहण' उपन्यासक समीक्षा 'विभूति' पत्रिकाक जून 1937 ई.क अंकमे छपल छल। एहि समीक्षामे श्रीयुत राजहंस सेहो पाठक लेल टिप्पणी करैत लिखैने छथि जे "पुस्तक 1932 ईस्वीमे छपल, जकर आब 5 वर्षक लगभग भेलैक। सर्वसाधारणक मनोरंजनक वस्तु थिक। कुललक्ष्मी लोकनियहुक पठनीय अछि। दामो थोड़। तथापि आइ धरि झमाइत अछि। ई अपन भाषाक दुर्भाग्य थिक!" तखन जाहि समय लेखककेँ अपन उपन्यास छपेबाक लेल राजा-महाराजा-जमींदार आदिक निहोरा कर' पड़ैत हो, तत' लेखकसँ पाठक-आलोचक ई शिकाइत कोना क' सकैत छथि जे प्रारंभिक उपन्यासमे सामंती-व्यवस्थाक विरोध नहि भेल अछि? प्रेमचंदकेँ अपन पाठक पर विश्वास रहनि तैं ओ 'सोजे-वतन' आ 'गोदान' लिखि सकलाह।

अनेक समस्याक बादो मैथिलीक आरंभिक उपन्यास अदौसँ सवर्ण-सामंतवाद आ पितृसत्ताक जाँतमे पिसाइत स्त्रीक संगे ठाढ़ भेल, ओकर नोर पोछलक, से सामान्य बात नहि। भारतीय नवजागरणक सबसँ ज्वलंत मुद्दा स्त्री जीवनक समस्ये छल जकरा मैथिलीक आरंभिक उपन्यास अपन स्वर देलक। मैथिली उपन्यास अपन जन्मक संगे एक दिस मैथिल-ब्राह्मण-कन्यांक लेल 'जलियाबाला-बाग़' बनि चुकल 'सभा-गाछी' पर प्रश्नचिंह ठाढ़ केलक आ अनेको 'पंडित-डायर'कैँ ललकारलक, तँ दोसर दिस राजाक नामे बनल 'हरिसिंहदेवी' प्रथाक मजाक उड़ा क' तत्कालीन महंथ-सामंतकैँ सेहो अपन पएर पालनेमे देखा देलक। 1912सँ 19326 ई. धरि जनसीदन जी आ पुण्यानन्द झाक कलमसँ मैथिली उपन्यास जाहि प्रकारें 'हरिसिंहदेवी' प्रथाक अप्रासंगिकताकैँ सिद्ध केलक तकर समानांतर मैथिली कविता कत' ठाढ़ छल तकर तुलनात्मक अध्ययन सेहो अपेक्षित। उपन्यास विधाकैँ महाकाव्य जकाँ राजा-महाराजाक आर्थिक सहायता बेसी समय धरि भेटबाको नहि छलै, कारण ई विधा मूलत: अपन चरित्रेमे सामंत विरोधी जे छल।

आन भारतीय भाषाक अपेक्षा मैथिलीमे भने कने देरीसँ उपन्यास विधाक आगमन भेल, मुदा एत' जनमिते ई विधा स्त्री जीवनक यथार्थसँ जुड़ि गेल। 1933मे प्रकाशित हरिमोहन झाक उपन्यास 'कन्यादान'मे एहि विधाकैँ जे गरिमा भेटलै, तकर जड़ि जनार्दन झा 'सनसीदन'सँ शुरू होइत लगभग डेढ़ दशकसँ बेसी समयमे विकसित परंपराक कड़ीक रुपैँ देखल जयबाक चाही। मैथिलीक प्रमुख प्रारंभिक उपन्यासक सूची निम्नवत बनाओल जा सकैत अछि–

(उपन्यास)	**(लेखक)**	**(प्रकाशन वर्ष)**
सती सर्वस्व	जनार्दन झा 'जनसीदन'	1912 ई.
निर्दयी सासु	जनार्दन झा 'जनसीदन'	1914 ई.
शशिकला	जनार्दन झा 'जनसीदन'	1915 ई.
रामेश्वर	जीबछ मिश्र	1916 ई. (रचना काल 1915 ई.)
सुमति	रासबिहारी लाल दास	1918 ई.
मनुष्यक मोल	गंगानंद सिंह	1924 ई.
मिथिला दर्पण	पुण्यानन्द झा	1925 ई. (रचना काल 1914 ई.)
पुनर्विवाह	जनार्दन झा 'जनसीदन'	1926 ई.
चंद्रग्रहण	कांचीनाथ झा किरण	1932 ई.

उपरोक्त सूचीसँ किछ बात स्पष्ट भ' जाइत अछि जे मैथिलीक प्रथम आधुनिक उपन्यास जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'सती सर्वस्व' थिक जकर प्रकाशन 1912 ई.मे भेल।[3] सन 1912मे 'जनसीदन' जीक उपन्यास 'सती सर्वस्व' तथा 1914मे 'निर्दयी सासु' मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रुपैँ प्रकाशित भेल। पुण्यानन्द झाक उपन्यास भने 1925 ई.मे प्रकाशित भेल मुदा एकर रचनाकाल 1914 ई. थिक जाहिसँ एकर महत्त्व बढ़ि जाइत छै। पोथीक रुपैँ पहिल उपन्यासक प्रकाशन जीवछ मिश्र कृत 'रामेश्वर'क 1915 ई.मे भेल। समालोचक रमानंद झा 'रमण' 'रामेश्वर'कैँ मैथिलीक पहिल उपन्यास मानैत छथि। हुनकर संपादनमे छपल पुस्तकक शीर्षक देल गेल अछि- 'मैथिलीक प्रथम उपन्यासकार पंडित जीबछ मिश्रक रचनावली।' मुदा 'रामेश्वर' कोनो दृष्टिएँ मैथिलीक पहिल उपन्यास साबित नहि भ' पबैत अछि। जेना कोनो बच्चाक जन्म घरमे होइ कि अस्पतालमे ओकर 'जन्म भेनाय'मे कोनो अंतर नही अबैत अछि तहिना कोनो उपन्यास पत्रिकामे छपल हो कि पोथीक रुपैँ, पाठकक बीच ओकर आगमन मानि लेबाक चाही। एहिसँ मैथिली उपन्यासक नींवक निर्माणमे जीबछ मिश्रक योगदान कम नहि भ' जायत। एहि प्रकारें उपन्यास विधा कहि मैथिलीक प्रथम रचना भने

'मोहिनी-मोहन' प्रकाशित भेल हो मुदा एहि विधाकेँ मैथिलीमे स्थापित कर'क श्रेय जनार्दन झा 'जनसीदन'केँ जाइत छनि। हुनक उपन्यास 'सती सर्वस्व' आ निर्दयी सासुकेँ मैथिलीक आरंभिक मौलिक औपन्यासिक रचना मानल जा सकैत अछि।

मैथिली उपन्यासक आरंभिक काल : प्रमुख प्रवृत्ति

- सामाजिक याथार्थक चित्रण करबाक प्रयास
- स्त्री शिक्षाक संग अङ्ग्रेज़ी शिक्षा पर जोर
- स्त्रीक प्रति मानवीय दृष्टिकोणक विकास
- बाल-विवाह, बेमेल विवाह, बहु-विवाह आ विधवा-प्रथाक विरोध
- हरीसिंहदेवी पंजी-प्रथा आ बिकौआ प्रथाक अप्रासंगिकताक रेखांकन
- ब्राह्मण-स्त्रीक क्रय-विक्रय केँद्रक रूपमे 'सभा-गाछी'क चित्रण
- प्रसंगवश निम्नजातिक शोषण आ उत्पीड़नक चित्रण
- परंपरा आ आधुनिकताक प्रति द्वंद्व

जनार्दन झा 'जनसीदन' : स्त्री-संवेदनासँ पूर्ण सुधारवादी उपन्यासकार

जनार्दन झा 'जनसीदन' मैथिलीमे उपन्यास विधाकेँ स्थापित कर' बला लेखक छलाह। हुनकर उपन्यासमे भारतीय नवजागरणक अधिकांश तत्व भेटैत अछि। मैथिल ब्राह्मणमे व्याप्त बेमेल-विवाह पर लगातार प्रहार करैत ओ स्त्री-शिक्षा पर जोर दैत छथि। संगहि प्रकारांतरसँ विधवा-विवाहक सेहो समर्थन करैत छथि। जनसीदन जी सुधारवादी लेखक रहथि आ एहि लेल अपन लेखनीसँ ओ कहियो समझौता नहि कयलनि। सुधारक यैह बेचैनी हुनका हिन्दीसँ मैथिली लेखन दिस उन्मुख केलकनि। महावीर प्रसाद द्विवेदी संपादित हिन्दीक 'सरस्वती' पत्रिका अक्तूबर 1909 ईस्वीक अंकमे ओ 'मैथिल समाज की वैवाहिक परिपाटी' शीर्षकसँ एकटा लेख लिखलनि, जाहिमे मैथिल ब्राह्मणमे व्याप्त वैवाहिक रूढ़ि आ कुप्रथाक आलोचना कैल गेल छल। ई लेख प्रकाशित होइते जेना मधुमाँछीक छत्ता पर ढेप मारि देल गे हो, खूब प्रतिक्रिया भेल। 'जनसीदन' जीकेँ धमकायल पर्यंत गेल जे अहाँ मैथिल ब्राह्मणक एहि परिपाटीक विरोध क' जगजाहिर किएक केलहुं? म. म. मुरलीधर झा 'मिथिला-मोद'मे एतेक धरि लिखि देलनि जे "सावधान कान पकडू, फेर कहियो ऐना हिन्दी-फिन्दीमे नहि लिखी।" मुदा एहि आलोचनासँ जनार्दन झा जनसीदन कनेको नहि विचलित भेलाह अपितु जमि क' मैथिलीमे लिखी-लिखि क' यथास्थितिवादी लोकनिकेँ जवाब दैत रहलाह। जकर प्रमाण थिक हुनक निबंध– 'मैथिल समाजसँ निवेदन', 'मिथिलामे स्त्री शिक्षा', 'स्त्री अनादरक दुष्परिणाम', 'प्रेम-विवेचन' आदि।

अपन निबंधमे 'जनसीदन' समाजमे व्याप्त स्त्रीक प्रति पुरुषक उपेक्षित आ क्रूर व्यवहार, शोषण-अत्याचार, बेमेल-विवाह, बाल-विवाह, बहु-विवाह, स्त्री-अशिक्षा आदि समस्या पर खुलि क' पहिल बेर मैथिलीमे लिखैत रहलाह। अपन मैथिलीक प्रथम निबंध 'मैथिल समाजसँ निवेदन'मे ओ स्पष्ट लिखैत छथि जे "सम्प्रति मिथिलामे एखन धरि ताकने एहन व्यक्ति प्राय: बहुत थोड़ भेटताह जे मिथिलाक परिष्कार व सामाजिक दोषोद्धारक हेतु हृदयसँ तत्पर होथि। कृतिम उत्साह देखौनिहार सभासदक संग 'हाँजी-हाँजी' कैनिहारे व्यक्ति अधिक भेटताह।" मैथिलमे व्याप्त अवगुणकेँ देखैत 'मैथिल-महासभाक' स्थापनाकेँ सेहो ओ शंकाक दृष्टिएँ देखैत छलाह, "जाहि सुधारक हेतु सभा संगठित भै रहल अछि से जँ असाध्य नहिं, तँ देशक स्थिति पर लक्ष्य कैने दु:साध्य धरि अवश्ये। मैथिल समाजमे गुण-दोषक तारतम्य कैलासँ दोष असंख्य ओ गुण संख्या अल्पतम दृष्टिगोचर होइत अछि। जाहि रूपें आकाशमे तारागन निमग्न अछि, ताहि प्रकारें

हमरा लोकनिक दोषराशिमे गुण निमग्न अछि।" जनसीदन जी अपन एहि निबंधमे मैथिल ब्राह्मण समाजक पंद्रहटा दुर्गुणक उल्लेख करैत छथि, संगहि तकरा दूर करबाक आह्वान संग लिखैत छथि, "एहन अवस्था मेँ जँ आबहु सुधारक आन्दोलन नहि हो तँ हो कहिया? बाबू ! ई समय आब आँखि मूनि कै चलबाक नहि थिक। एक बेरि आँखि खोलि कै तकबो तँ करू जे पैर कतै पड़ैत अछि, पथसँ कतबा विचलित भेल छी, ताहि दिशि दृष्टि दिअ ओ कर्तव्याकर्तव्यक गुण-दोषकेँ बुझिऔक..."।[4] स्पष्ट अछि जे जनसीदन जी अपन समकालीन बहुतो 'महामहोपाध्याय' जकाँ राज-दरबारक हाँजी-हाँजी करय बला लेखक नहि छलाह। अपितु ओ मैथिल समाजमे सुधारक लेल पुर्णत: कृतसंकल्प छलाह जाहि लेल सर्वप्रथम स्त्रीकेँ समाजमे मनुष्यक स्थान देब पहिल आवश्यकता ओ मानैत छलाह। हुनक एहि दृष्टिक विस्तार हुनक उपन्यासहुमे भेल अछि। जनसीदन जीक एखन धरि प्राप्य कुल पाँच गोट उपन्यास[5] प्रकाशित अछि जाहिमे चारि टा 'मिथिला-मिहिरमे धारावाहिक प्रकाशित भेल छल— 'सती-सर्वस्व' (1912), 'निर्दयी सासु' (1914), 'शशिकला' (1915-16) आ 'द्विरागम-रहस्य' (1945-46)। 'पुनर्विवाह' 1926 ई.मे मिथिला प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनीसँ प्रकाशित भेल छल। भारतीय नवजागरणक जे स्वर भारतीय साहित्यमे उभरल तकर मैथिली गद्यमे सशक्त अभिव्यक्ति जनार्दन झा 'जनसीदन' कयलनि। मैथिलीक बौद्धिक जगत पर ई एकटा प्रश्नवाचक चिन्ह अछि जे पत्र-पत्रिकामे छिड़ियायल हुनकर लेखन-कर्मकेँ आइ धरि किएक नहि समेटि पुस्तकाकार प्रकाशित कैल गेल? जनसीदन जीक रचनाक मूल्यांकनक संदर्भमे डॉ. रामदेव झाक कार्य एखन धरि नि:सन्देह विशेष महत्त्वक अछि। डॉ. रमानन्द झा रमण के सम्पादनमे दू टा उपन्यास 'निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह' वर्ष 1984मे प्रकाशित भेल, मुदा हुनकर शेष रचना एखनो धरि पत्रिकाक पन्नामे सड़बाक बाटमे अछि।

'सती-सर्वस्व' (1912)

अपन पहिले उपन्यास 'सती-सर्वस्व'मे जनार्दन झा 'जनसीदन' मैथिल समाजमे व्याप्त पारिवारिक कलह, परदेशमे अपना संग स्त्रीकेँ रखबामे सामाजिक बंधन आ पति-पत्नीक कर्तव्यकेँ केँद्रमे राखने छथि। एहि उपन्यासक केँद्रमे साबिकक धनी आ निवर्तमान विपन्न कमलाकांत ठाकुरक पुत्र रमाकांत ठाकुर नामक पात्र छथि। जनसीदन जीक प्रत्येक उपन्यासमे एकटा ज्योतिषी पात्र अवश्य होइत अछि संगहि एहि बातक संकेत सेहो जे आब ज्योतिषक नाम पर ठकबाक जमाना जाय बला अछि। कमलाकंत ठाकुर अपन पुत्र रमाकांतकेँ ज्योतिष नहि पढ़ाकेँ अंग्रेजी माध्यमसँ बीए करबैत छथि। परिणामत: नोकरी लागि जाइत छनि आ पचास-साठि रुपैया प्रतिमास गाम पठा दैति छथि रमाकांत। परिवार ठीकसँ ससर' लगैत छनि मुदा स्त्रीगणक बीच कलह सेहो बढैत जाइत छनि। रमाकांतक पत्नीक शिकायत आ चिंता छलै जे हमरे सांयक कमाय पर घरमे सबटा छहर-महर होइत अछि तैयो सासु हुनका दू बात सुनबैत रहैत छथिन। मिथिले नहि भारत भरिमे पितृसत्ताक गुलाम सासु-ननदि, स्त्री भइयोकेँ घरक पुतौहकेँ कोना सतबैत छथि, तकर एहि उपन्यासमे बहुत यथार्थपरक चित्रण भेल अछि। एक तरफ भाइमे सौहार्द दोसर तरफ स्त्रीगणमे महाभारत, ई सौहार्द कतेक दिन चलै बला? एक बेर जखन रमाकांत गाम अबैत छथि तँ पत्नी हुनका अपन दुख सुनाबैत छथि, "जाहि दिन अहाँ जाइ छी ताहि रातिमे हमरा कहिओ निन्न होइ अछि? कहियो ने। अहाँक गेलो पर कै राति हमरा जगले बीति जाइ अछि।" एत' पति बिहीन मैथिल स्त्रीक सासुरमे केहन दारुण स्थिति होइत छल तकर बहुत मार्मिक चित्रण भेल अछि। अंतत: रमाकांत अपन पत्नीकेँ संगेँ शहर ल' जयबाक निर्णय करैत छथि। हुनक एहि निर्णयक पिता विरोध नहि करैत छथिन, मुदा टोल-पड़ोसमे ई चर्चाक बड़का मुद्दा बनि जाइत छै। ननदि योगमाया दाइ व्यंग्य-वाणक वर्षा शुरू क' दैत छथिन। मुदा "जे विचारक लोक छल तकरा तँ एहिमे किछु हानि नहिं बूझि पड़लैक परन्तु बहुतो स्त्रिगणकेँ ई विषय अप्रिय लगलैक। अंतत: सभसँ हर्ष पूर्वक मिलि जुलि रमाकांत बाबू अपन लोकवेदक संग गामसँ विदा भेलाह।" एहि उपन्यासमे जनसीदन जी एकटा

बड़का लीककेँ तोड़ैत छथि। पहिने तँ नोकरी केनाइए पाप छल। (उत्तम खेती मद्धिम बान, अधम चाकरी भीख समान) ताहि पर पत्नीकेँ संगे राखब तँ महापाप आ स्त्रीकेँ बिगड़ि जयबाक मानसिकता से अलग। जाहि समाजमे स्त्री मात्र संतान उत्पत्तिक माध्यम हो ताहिमे ओकर स्थितिक कल्पनोक लेल पारंपरिक शब्द अपर्याप्त अछि। अपन एहि प्रथम उपन्यासमे जनसीदन स्त्रीक लेल बनल एकटा लीककेँ तोड़ैत छथि।

जनसीदन जीक ई पहिल उपन्यास छल। एहिसँ पहिने मैथिलीमे उपन्यास लेखनक कोनो परंपरा नहि छल। जनसीदन जी हिन्दीमे सरस्वती पत्रिकामे अपन लेखनसँ ताधरि स्वतंत्र पहिचान बना चुकल छलाह। संगहि ओ अनेक बांग्ला उपन्यासक हिन्दीमे अनुवाद सेहो क' चुकल छलाह। भने ओ अंग्रेजीक उपन्यास परंपरासँ सद्य: परिचित नहि छलाह, मुदा बांग्ला आ हिन्दीक उपन्यास परंपरासँ नीक जकाँ परिचित छलाह। तकर लाभ मैथिलीकेँ भेटलैक आ जनसीदन जी मथिली उपन्यासकेँ जन्म लैते घुटनाक बलें ठाढ़ क' देलनि। रमाकांत द्वारा अपन पत्नीकेँ ताहि समय कलकत्ता ल' जायब एकटा क्रांतिकारी डेग छल। तत्कालीन मिथिलाक रूढ़िवादी परिस्थितकेँ तोड़बाक प्रयास एहि उपन्यासमे भेल अछि। स्त्री समाजक बीच जे अशिक्षा छल ताहि कारणें ओ पितृसत्ताक बंधुआ गुलाम बनल छलीह आ स्त्रीएकेँ सता क' संतुष्ट भ' जाइत छलीह। कथ्यक एकरेखीयताक अछैतो ई उपन्यास अपन सीमामे मिथिलाक टुटैत संयुक्त परिवार आ ओकरा भीतर प्रवेश करैत अधुनिकताकेँ नीक जकाँ रेखाँकित करैत अछि। डॉ. रामदेव झा एहि उपन्यास पर विचार करैत जनसीदन जीक व्यक्तिगत जीवनसँ एकर कथानककेँ जोड़ैत छथि। ओ लिखैत छथि, "जनार्दन झाक जीवन वृत्तिमे देखल गेल अछि जे पचपन वर्षक बयस धरि जीवनक अधिकांश अवधि हुनका जीविकाक हेतु प्रवासहिमे अपन लोक-वेदसँ दूर रहि व्यतीत कर' पड़ल छलनि। पारिस्थितिक विवशताक कारणें पत्नीकेँ कहिओ संग नहि राखि सकलाह। छओ-छओ मास, बरख-बरख दिन परिवारक लोकसँ भेट भेला भ' जाइत छलनि।"[6] एहि सन्दर्भमे रामदेव झा जनार्दन झा 'जनसीदन' आ 'सरस्वती' पत्रिकाक संपादक हिन्दीक प्रसिद्ध लेखक-संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदीक बीच भेल अनेको पत्राचारक उल्लेख करैत जाहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि से समीचीन अछि, "लगैछ जेना द्विवेदीजीक यैह पत्र 'सती-सर्वस्व'क प्रेरणा-स्रोत छल आ जनार्दन झा अपन जीवनमे जे रुढ़ि नहि तोड़ि सकलाह तकरा उपन्यासक माध्यमसँ टुटैत देखौलनि।"[7] स्पष्ट अछि जे जनसीदन जी अपन पहिले उपन्यासमे अपन सुधारवादी दृष्टिक परिचय दैत छथि।

'निर्दयी सासु' (1914 ई.)

'निर्दयी सासु' जनार्दन झा 'जनसीदन'क दोसर उपन्यास थिक। एहि उपन्यासमे ओ मैथिल ब्राह्मणमे अंतर्व्याप्त जातिवाद, हरिसिंहदेवी बिकौआ प्रथाक पृष्ठिभूमिमे स्त्रीक सामाजिक स्थिक मार्मिक चित्र उपस्थित करैत छथि। उपन्यासक पात्र "ज्योतिषी स्वयं प्राचीन कालक लोक रहथि। हुनका हरिसिंह देवीक उन्माद रोम-रोममे भड़ल रहैन्हि।" एत' लेखक द्वारा प्रयुक्त शब्द 'प्राचीन काल' आ 'उन्माद'सँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे ओ हरिसिंह देवी व्यवस्थाकेँ मैथिल ब्राह्मण-स्त्रीक दुर्दशाक मुख्य कारण मानैत छथि। ज्योतिषी चिंतामणि अपन दस वर्षीय बेटी यशोदाक विवाहक लेल चिंतित छथि। "यशोदाकेँ तिरहुता, हिन्दी ओ मामूली देशी गणितक बोध" छलै। ज्योतिषी जीक भीतर द्वंद्व छनि जे 'जातिए दिशि जैतथि व धन दिशि जैतथि।' अंतत: ओ अपन पिसियौत भाइ लक्ष्मीदत्त झाकेँ संग कय सौराठ-सभा विदा होइत छथि। लक्ष्मीदत्त झा बिकौआ संग कथा करबाक पक्षमे रहथि मुदा घटक घूटर झा बेरमपुर निवासी अयोध्यानाथ मिश्रक पुत्र सीतानाथ मिश्रक कथा कर'क लेल ज्योतिषीकेँ आग्रह करैत छथिन जे पंजीबद्ध तँ नहि मुदा भलमानुस छलाह संगहि जथा-पात बला सेहो। सीतानाथ सोलह वर्षक युवा, अंग्रेजी पढ़' बला, एफ.ए. (फेलो ऑफ़ आर्ट्स)क छात्र। चिंतामणिकेँ ई कथा पसीन्न छनि मुदा जातिक न्यूनता हुनका निर्णय नहि लेब' दैत छनि। घटक घूटर झा बेर-बेर एत' हरिसिंह देवी पाँजिक औचित्य पर प्रश्नचिन्ह ठाढ़ करैत अछि जाहिमे लेखकीय दृष्टि सेहो जुड़ल अछि, "आइ-काल्हि हरिसिंह देवीकेँ के

पुछैत छैक? जकरा धन छैक, विद्या छैक बेड़ी बखाड़ी छैक। सैह सभ अछि... हरिसिंहदेवी कतय लेने फिरै छी। कन्या जाहिमे सुखमे रहय से कर्त्तव्य थिक।" अंतत: चिंतामणि सीतानाथक कथा बिना कोनो लेनदेनकेँ स्थिर क' लैत छथि, आखिर अपनासँ न्यून ब्राह्मणकेँ जे जमाय बना रहल छलाह। शिवहर गाममे वरकेँ देखि सभ प्रसन्न होइत अछि मुदा 'प्राचीन विचारक लोक' आलोचना कर'सँ कहाँ पाछू हट' बला रहथि, "ज्योतिषी एतेक उपार्जन कयलनि, परन्तु कन्यादान नीकठाम नहि कयलन्हि। जमाय उत्तम पांजिबद्ध अनितथि, तखन ने सत्क्रिया देखल जइतैन्हि। ई अपनहुँसँ न्यून ब्राह्मण उठाय अनलैन्हि।"[४]

'निर्दयी सासु' उपन्यासक पूर्व भागमे यशोदा आ सीतानाथक विवाह आ विवाहक एक-एकटा विध व्यवहारक संक्षेपमे वर्णन अछि। एतेक छोट कलेवरक उपन्यासमे मैथिल समाजक वैवाहिक विध-व्यवहारक जतेक बारीक डिटेल्स देल गेल अछि से लेखकीय कौशलताक प्रमाण थिक। चतुर्थी, नागपंचमी, मधुश्रावणी, जितिया, कोजगरा, बड़साइत, जराउर, पुछारी, आदि भार-दौर, विधि-व्यवहारक संक्षेपमे रेखाचित्र खीचि क' ओहिमे रंग भरि देल गेल अछि। एहि बीच सीतानाथ बी.ए.मे नाम लिखोलनि मुदा बीचेमे बीमार पड़ि गेला। अंतत: आर्थिक शिकस्तीक कारणे ओ एकटा इंजिनियर ऑफिसमे नोकरी क' लैत छथि आ नियमित रूपें घर किछ पैसा भेजैत रहैत छथि। एवं प्रकारें तीन वर्ष बीति जाइत अछि। दुरागमन भ' जाइत छै। सासुर अबिते यशोदाक पढाई-लिखाई छूटि गेलै। जे सासु अनूपरानी विवाहक एकहकटा विध-व्यवहार पूरा करक लेल अपन जोगाओल गहना-गुड़िया आ कोशलिया धन पुतहु यशोदा पर लुटा देलनि, सैह आब ओकरा प्रति क्रूर भ' जाइत छथि। एहिमे सहयोगी हुनक बेटी सुदामा बनैत अछि, जे भौजीक छोट-छोट गलतीकेँ महासंग्राम बनाब' लेल सदिखन तत्पर रहैत अछि।

एहि उपन्यासमे जनसीदन जी मैथिल स्त्रीक मनोविज्ञानक बहुत सूक्ष्म चित्र अंकित करैत छथि। एक दिस यशोदा अछि जे ढंगसँ युवतियो नहि भेलि अछि आ सासु-ननदि द्वारा तरह तरहसँ सताओल जाइत अछि। ओकर पढाई-लिखाइक सपना मैथिलक वैवाहिक परिपाटीमे भष्म भ' जाइत छै। तैयो ओ अपन सासुरक अत्याचारक बात अपन माय-बापसँ नुका लैत अछि। कोना कम्मे उम्रमे मैथिल ललनाकेँ पुरुषक देल परिस्थिति प्रौढ़ बना दैत छलै, तकर प्रमाण अछि यशोदाक चरित्र। दोसर दिस अनूपरानीकेँ लगैत छै जे ओकर बेटाकेँ पुतहु कहीं अपना बसमे ने क' लै, आ यैह 'असुरक्षा बोध' ओकरा यशोदाक प्रति क्रूर बना दैत छै। असलमे पुरुषक बनाओल व्यवस्थामे स्त्रीक जीवन गुलामोसँ बदतर रहनि। पति पर अधिकार नहि। पतिक संपत्ति पर अधिकार नहि। शिक्षासँ वंचित। मात्र भोग्या, संतान उत्पतिक साधन बनि क रहि गेल छलीह समाज मे। एहनामे अनूपरानी सन स्त्रीक सामाज-मनोविज्ञानकेँ बुझबाक लेल अलग दृष्टि आवश्यक। आखिर अनूपरानी सन स्त्री अपन संतान पर एकाधिकार किएक चाहैत छलि। चूँकि अपन पतिसँ सदिखन स्त्रीकेँ अपमाने भेटैत रहलनि, तैं पुतहुक प्रति पुत्रक आकर्षणमे हुनका अपन अधिकारसँ वंचित भ' जयबाक भ्रम होइत रहलनि। पुत्र पर स्त्रीक रुपेँ अपन एकाधिकार कायम रखबाक मनो-इच्छा सासुकेँ पुतहुक प्रति क्रूर बना दैत छलनि। आ तैं ओ बेटीक प्रति जतबे सहृदय, पुतहुक प्रति ओतबे क्रूर होइत गेलीह। स्त्रीक एहि मनोविज्ञानक निर्माणमे अशिक्षा आ पुरुष पर आर्थिक निर्भरता मुख्य कारण छल। एहने मानसिकताक शिकार भ' अनूपरानी सेहो अपन पुतहु यशोदा पर अत्याचार करैत रहैत छथि।

जनसीदन जी स्त्रीक एहि मनोविज्ञानक सूक्ष्म चित्रण करैत छथि। एक राति यशोदाक माँथमे बहुत दर्द रहै, ओ सासुकेँ जाँतय नहि जा सकलि आ ई छोट घटना सासु अनूपरानीक भीतर बड़का टा 'गांठ' बना देलक। सीतानाथकेँ कने बोखार लगलैक कि बेटाकेँ यशोदासँ दूर क' दैत छथि अनूपरानी। एत' तक जे नोकरी पर परदेश जयबा कालो सीतानाथकेँ पत्नीसँ भेंट नहि कर' दैत छथि। लेखक अनूपरानीक मनोदशाक वर्णन करैत लिखैत छथि, "इहो विषय रहैक जे सीतानाथकेँ स्त्रीक प्रति स्नेह जे दू-चारि दिन देखलथिन्ह से अनूपरानीकेँ सह्य नहि भेलैन्हि। एतबा दिन बेटाक मन खिचनिहार तँ नहि किओ छलैन्हि। आब घरमे पुतहु

अयलैन्हि और बेटा पुतहुकेँ एकत्र देखलन्हि तखनि पुतहुसँ इर्ष्या होमय लगलैन्हि जे ई हमारा बेटाकेँ वश कय ललक।"[9] प्रकारांतरसँ लेखक एत' अनूपरानीक ओहि मनोविकारकेँ उद्घाटित करैत छथि जाहि लेल पुरुषवादी सामाजिक व्यवस्था दोषी रहल अछि।

दुरागमनक तीन वर्षक बादो जखन यशोदाकेँ संतान नहि भेलनि तँ अनूपरानी सीतानाथक दोसर विवाह करेबाक तैयारी जोर-शोरसँ शुरू क' दैत छथि। एहि बीच यशोदा गर्भवती होइत छथि आ पुत्र होइत छनि। तथापि सासुक क्रूरतामे कोनो कमी नहि अबैत छनि। बीमार भ' क' बिछाओन पकड़ि लैत अछि यशोदा आ सासुक इच्छा जे ओ मरिए जाय। सीतानाथ जखन गाम अबैत छथि तँ अनूपरानी यशोदाक बीमारीक कारण ओकर कुपथ्यकेँ साबित करैत छथि ताकि पत्नीक प्रति सीतानाथक मोनमे कोनो प्रेम भाव नहि अंकुरित भ' सकय। सीतानाथ एहि बेर बेसी दिन गाम रहैत छथि। एक मासक बाद संयोगसँ यशोदाक ज्वर उतरैत छै आ ओ मृत्युक मुंहसँ बाहर आबि जाइत अछि।

'निर्दयी सासु'मे कथानक एकरेखीय छै जकर विस्तार संक्षिप्त रुपेँ भेल छै। आरम्भमे विवाहक रीति-रिवाजक वर्णन कथाक विकासकेँ थोड़े बाधित अवश्य करैत छैक, मुदा एहि बहन्ने मैथिल ब्राह्मणमे व्याप्त वैवाहिक कुरीतिक वर्णन तटस्थ भावें कैल गेल अछि। परिवेश निर्माणमे उपन्यासकार बहुत ध्यान देलनि अछि। संगहि पात्रक चरित्र चित्रणमे मनोवैज्ञानिकताक आश्रय सेहो लेल गेल अछि, जाहि कारणें पात्र सभक विकास बहुत स्वाभाविक रुपेँ भेल अछि। कथाक विकास, परिवेशक निर्माण आ चरित्रक स्वाभाविक विकासमे जतेक सफलता 'जनसीदन'क उपन्यासमे भेटैत अछि ओते कोनो प्रारंभिक उपन्यासमे नहि। जीबछ मिश्रक उपन्यास 'रामेश्वर'मे एतेक जल्दी जल्दी घटनाक्रम बदलैत अछि जे ओ 'पारसी थियेटर'क नाटक सदृश बुझाइत अछि। अस्तु, 'निर्दयी-सासु'मे लेखकक अनेक सुधारवादी रूप सामने अबैत अछि। पंजीप्रथाक बंधन टुटैत अछि। स्त्री शिक्षाक किरण देखा पड़ैत अछि। मधुश्रावणीमे टेमी दगाबाक विरोध होइत अछि, आदि। 'निर्दयी सासु'मे तीनटा मुख्य पुरुष पात्र अछि- चिंतामणि झा, अयोध्यानाथ आ सीतानाथ। चिंतामणि झा पारंपरिक ज्योतिषी होइतहु बेटी यशोदाकेँ थोड़-बहुत शिक्षा दैत छथि। विवाहक रूढ़ हरिसिंघदेवी प्रथा आ तकर विद्रूपतासँ बाहर निकलबाक द्वंद्व चिंतामणि झाक चरित्रमे स्पष्ट देखल जा सकैत अछि, जाहिसँ बाहर निकलबाक चित्रण सेहो बहुत स्वाभाविक भेल अछि। अयोध्यानाथ अपन पुतहुक प्रति सदाशय रहितो पत्नी अनूपरानीक क्रूरतासँ ओकरा नहि बचा पबैत छथि। सीतानाथ माता-पिताक आज्ञाकारी पुत्र अछि आ ओकर यैह विनम्रता पत्नी यशोदाक खुलि क' संग देबामे बाधक बनि जाइत छै। ओना सीतानाथ सन चरित्रमे एतेक बदलाव अवश्य आयल छै जे ओ मायक बात पर आँखि मूनि क' विश्वास नहि करैत अछि आ दोसर विवाह कर'सँ स्पष्ट मना क' दैत अछि। मायक 'वात्सल्य-प्रेम' आ पत्नीक 'दाम्पत्य-प्रेम'क बीच संतुलन बना क' चलब ओकर मजबूरी छै। गौण पुरुष पात्रमे ज्योतिषीक पिसिऔत भाइ लक्ष्मीदत्त झा छथि जे रूढ़िवादीक प्रतीक छथि। ओ पाँजिमे अर्थात बिकौआ बूढ़ संग यशोदाक विवाह नहि करेबाक कारणें रुष्ट भ' जाइत छथि। मुदा घटक घूटर झा व्यावहारिक व्यक्ति छथि जे हरिसिंहदेवी व्यवस्थाकेँ अप्रासंगिक बताबैतो अपन कमीशन पर ध्यान केँद्रित राखैत छथि।

स्त्री पात्रमे यशोदा नव युगक स्त्री अछि जकरा पढ़वाक बहुत इच्छा छै, से सासुर जाइते समाप्त भ' जाइ छै। एगारहम वर्षमे विवाह तेरहम-चौदहममे दुरागमन आ सोलहम धरि बच्चा नहि हेबाक कारणें सासुक ताना चरम धरि पहुँचि जाइत छै। ओकर "विद्या-बुद्धि किछु ओहिठाम काज देनिहार नहि। जेना कौआक मंडलीमे हंस दुर्दशा पबै अछि, तहिना एही मूर्ख मंडलीमे आबि यशोदा कष्ट काटय' लागलि।" तथापि यशोदा सासुक प्रति एक्को शब्द अपन माइयोकेँ नहि बताबैत अछि। एकटा आदर्श मैथिल स्त्री जकाँ ओ सभ किछ सहैत चलि जाइत अछि। सासु अनूपरानी आ ननदि सुदामा यशोदाक छोट छोट गलती तकैक फेरमे रहै छलि, जाहिसँ यशोदाकेँ प्रताड़ित करबाक बहन्ना भेटि सकै। अनूपरानी ओहि वर्गक स्त्रीक प्रतिनिधित्व करैत छथि जे अशिक्षा आ अज्ञानताक कारणें अपने स्त्री जातिक दुश्मन बनि जाइत छथि। आरम्भमे यशोदाक प्रति एतेक व्यवहारिक

रहय वाली अनूपरानीक मोनमे पुत्रक प्रति अधिकारसँ विलग हेबाक जे असुरक्षाबोध समा जाइत छनि से हुनका क्रूर बना दैत छनि। रामदेव झाक एहि सन्दर्भमे ठीके कहब छनि जे "नारीक सामाजिक दुर्दशामे पुरुष वर्ग द्वारा संचालित-पोषित समाज-व्यवस्था प्रधान कारण रहैत अछि तँ पारिवारिक स्तर पर नारिए नारीक शत्रु बनि ओकरा दुर्दशाग्रस्त करैत अछि।" मुदा हुनक एहि वक्तव्यमे इहो जोड़ब जरूरी अछि जे स्त्री पर अत्याचार करय बाली स्त्री सेहो अंततः पितृसत्ताक बनाओल कायदा-कानूनक अनुपालनमे सदिखन लागल रहैत छथि। अंततः स्त्रीक नियंता पुरुषे रहल अछि आ अनूपरानीक यशोदाक प्रति व्यवहार अंततः पुरुष प्रदत्त अछि। एहि उपन्यासक तराशल मुहवारायुक्त भाषाकेँ देखि क' नहि बुझाइत अछि जे ई आरंभिक कालक उपन्यास थिक।

'शशिकला' (1915-16)

'शशिकला' जनार्दन झा 'जनसीदन'क तेसर उपन्यास थिक। एहि उपन्यासक सन्दर्भमे रामदेव झा एकटा शंका जतबै छथि जे "ई वैह उपन्यास तँ नहि थिक जकर उल्लेख 'प्रेमलता' नामसँ यदुनाथ झा 'यदुवर' कयने छलाह? संभव अछि जे 'शशिकला' नामकेँ ओ भ्रमवश प्रेमलता लिखि देने होथि अथवा लेखके अपन उपन्यास नायिकाक नाम ओ उपन्यासक शीर्षक 'प्रेमलता'सँ शशिकला क' देने होथि।"[10] असलमे 1914 ई.मे 'मिथिला-मोद' पत्रिकामे यदुनाथ झा 'यदुवर'क एकटा सर्वेक्षणपरक निबंध 'मैथिली (भाषा) साहित्य दिग्दर्शन' प्रकाशित भेल रहनि। जाहिमे जनार्दन झाक उपन्यास 'सती-सर्वस्व' आ 'निर्दयी-सासु'क उल्लेख करैत ई सूचना सेहो देल गेल छल जे जनार्दन झा 'प्रेमलता' नामक उपन्यास सेहो लिखने छलाह से कतौ छपि नहि सकल। ओहि समयमे प्रकाशन सबसँ पैघ समस्या छल जाहि कारणें तत्कालीन उपन्यासक कलेवर बहुत क्षीण भेनाय स्वाभाविक छल। शशिकला उपन्यासक सात परिच्छेद मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल छल। किछ विद्वान एकरा अपूर्ण मानैत छथि।

शशिकला उपन्यासमे गंगेश्वर नामक पंडित आ हुनक पुत्री शशिकलाक कथा कहल गेल अछि। पंडित गंगेश्वर देशी नरेशक एकटा राजदरबारमे सभापंडितक पद पर कार्यरत छलाह। ओ पुत्री शशिकलाक कन्यादानक लेल चिंतित छलाह, अही बीच हुनका एकटा पुत्र होइत छनि। मुदा पुत्रकेँ देखबाक लेल आ पुत्रीक कन्यादानक लेल राजदरबारसँ अवकाश नहि भेटैत छनि। अंतत कोनो तरहें गाम अबैत छथि आ घटक सुन्दर ठाकुरक सहायतासँ एकटा नीक कथा स्थिर भ' जाइत छनि। एहि उपन्यासमे राजदरबारक अनुभव, ओत'सँ सेवानिवृत्त आदिक कठिनताक वर्णनमे अनुभव संपृक्तता अछि। स्वयं जनार्दन झा 'जनसीदन' अनेक राजदरबारमे चाकरी करैत जाहि समस्या सभक सामना क' चुकल छलाह, तकर वर्णन ओ एहि उपन्यासमे कयने छथि। हुनक एहि उपन्यासकमे प्रयुक्त भाषाक लेल सेहो ताहि समय विवाद भेल छल। "मिथिला-मोद (उदगार-110, अगहन, 1915) अंकमे 'शशिकलामे प्रदत्त राड़िनिक कथोपकथनमे वीभत्सताक आरोप लगबैत उपन्यासमे प्रयुक्त कतेको शब्दक कठोर आलोचना कैल गेल छल।"[11]

असलमे जनार्दन झा आधुनिकताक आलोक मे, बदलैत समयक सन्दर्भमे उपन्यासमे जे भाषागत प्रयोग क' रहल छलाह से अतीतसेवी रट्टू-विद्वान लोकनिकेँ कोना पचितनि? विरोधक ई परंपरा हरिमोहन झा, यात्री, राजकमल, ललित होइत आइ धरि कमोवेश जारी अछि। जखन कोनो रचनाकार सामाजिक रूढ़िकेँ तोड़बाक प्रयास करैत अछि तँ हुनक विरोध स्वाभाविक अछि, मुदा एहन विरोधीक इतिहासक गर्तमे समा जायब सेहो निश्चित अछि। स्त्री शिक्षाक प्रति जनार्दन झा 'जनसीदन'क प्रतिबद्धता हुनक अहू उपन्यासमे देखल जा सकैत अछि।

'पुनर्विवाह' (1926 ई.)

जनसीदनजीक चारिम उपन्यास 'पुनर्विवाह'क कँेद्रमे सेहो विवाह-प्रथाक विकृति अछि। कोना पुरुषक अवहेलानाक कारणें पत्नी मरि जाइत अछि आ पति दोसर-तेसर विवाह करैत रहैत अछि, एहि मानसिकताकेँ लेखक नीक जकाँ उजागर करैत छथि। संगहि बेमेल विवाहक दुष्परिणाम आ पूर्व पक्षक संतानक स्थिति आ ओकर मनोविज्ञानकेँ

सेहो लेखक चित्रित करैत छथि। एहि उपन्यासमे ओ शिल्पगत प्रयोग सेहो करैत छथि। उपन्यासक आरंभ दू मित्र कलाधर आ दिवाकरक बीच दीर्घ वार्तालापसँ होइत अछि। बहसक विषय अछि 'रूप पैघ की गुण?' कलाधर स्वानुभवक आधार पर कहैत अछि जे "रूपक संग गुण होयब सोनमे सुगंध होयबाक बराबरिए बुझबाक थिक। तखन सौन्दर्य रहित गुणवती स्त्री गुणहीन रूपवती स्त्रीसँ अवश्य नीक। ताहिमे संदेह नहि।"

दिवाकर आ कलाधरक वार्तालापसँ पाठककेँ उपन्यासक मुख्य पात्र सभक परिचय होइत छै। ज्योतिषी जीक पत्नीक गुणक चर्चा अबैत अछि। कलाधर कहैत अछि, 'ज्योतिषी भाइक स्त्री कोन रूपवती छथिन्ह, परन्तु गुणक कारण सर्वत्र हुनक प्रशंसा होइ छैन्हि। एकदिन हम हुनक आँगन गेल रही, काकीसँ पुछलिएन्हि— कहू पुतोहुक शील स्वभाव केहन? कहलनि जे हे बाबू स्वभावक वर्णन की करिअन्हि, साक्षात् लक्ष्मी छथि।" स्त्रीक गृह-क्लेशक कारण कलाधर अशिक्षा मानैत अछि, "नैहरमे कन्यांकेँ नीक शिक्षा नहि भेने ई सब होयब आश्चर्यक विषय नहि। अशिक्षिता स्त्री जे नहि करय सैह आश्चर्य।" एत लेखक पति-पत्नीक प्रेममे स्त्रीक संग पुरुषोकेँ बराबरक ईमनादारीक आग्रही छथि। कलाधर कहैत अछि, "स्त्री-पुरुषमे परस्पर प्रेम ताहिखन स्थिर रहैत अछि जखन दुहूक चरित्र शुद्ध रहैक आ दुहूक व्यवहार निश्छल रहैक।" जाहि समयमे निश्छल प्रेम मात्र स्त्रीक हिस्सामे राखि देल गेल छल, ताहि समय एहन विमर्श 'जनसीदन'क आधुनिक सोचक परिचायक थिक।

कलाधर आ दिवाकर, दुनू मित्रक भेंट दुबारा होइत छनि आ कथानकक विस्तारमे गति अबैत छै। ज्योतिषी भवनाथ झा देवघरमे रहि पूजा-पाठ क' मासे-मास गाम टाका पठबैत छथि। गाम पर मायक आलावा पत्नी विशेषरानी आ एकटा तीन वर्षक बालक छनि। एकटा अनपढ़ आ महाकंजूस भाइ जयनाथ सेहो गामे रहैत छनि जे खेती-पथारी सम्हारैत छनि। पत्नी विशेषरानी दुखित पड़ि जाइत छथि आ दिनानुदिन हुनकर हालत खराब होइत जाइत छनि। दीयर जयनाथ हुनका बीमारी पर टाका खर्च करब धनक अपब्यय बुझैत अछि। ओ भाईकेँ पहिने पत्र लिखि दैत अछि "भौजी आब नीकेँ भ' रहल छथि, कोनो अंदेशा नहि।" भवनाथो निश्चिन्त भ' क' टाका कमाइमे लागि जाइत अछि। एमहर 'विशेषरानीक हालत दिन दिन खराबे होइत गेलैन्हि।' जयनाथ एतेक कंजूस अछि जे "एक दिन भाउजि धानसँ माछ कीनलथिन्ह, माछ आँगामे देखि और ई बूझि जे ई किनल गेल अछि, झट माँछक बाटी उनटा देलन्हि।" जनसीदन एहि उपन्यासमे ई देखेबाक प्रयास करैत छथि जे अपनाकेँ विद्वान्-पंडित कह' बला तथाकथित सभ्य ब्राह्मण समाज कतेक स्त्री-द्रोही आ लालची छल। पत्नी मृत्यु शय्या पर चलि गेलीह मुदा, पंडित भवनाथक लेल सेहो पत्नीक बीमारी कोनो पैघ बात नहि। एत' लेखकीय टिप्पणी सटीक अछि, "परंच भवनाथकेँ चाणक्यक ई श्लोक 'दारान् रक्षेत्नैरपि' पुनश्चरणक टाका देखि विस्मृत भै गेलैन्हि, हुनका पुन: एक दोसर यजमान भेटि गेलैन्हि आ कहलकन्हि जे दुइ मास हमारा पूजा कय दिय। कार्य सिद्ध भेला पर हम दक्षिणाक अतिरिक्त पाँच बीघा भूमि ब्रह्म्मोत्तर देब। ताहि लोभें बेचारे अखन धरि ओतहि रहि गेलाह।"

अंतत: कलाधर हुनका रजिस्ट्री-चिट्ठी भेजैत छथि। मुदा जाधरि भवनाथ अबैत छथि विशेषरानी जेना हुनके देखबाक लेल रुकल छलि। दरभंगासँ डॉक्टर बजाओल गेल मुदा ओहो हाथ उठा देलक आ बीमारीकेँ जानिबूझिकेँ बढ़ा रोगीकेँ मारबाक लेल सबकेँ कोसैत रहल। विशेषरानी मर'सँ पूर्व पति भवनाथसँ एकटा प्रतिज्ञा कराबैत अछि, "हम मरि जाइ तँ दोसर विवाह नहि करब। 'पुत्र प्रयोजना भार्या' भगवान जखन दय देलनि..." पंडित सब एक दिस स्त्रीकेँ मात्र पुत्र उत्पन्न करबाक माध्यम घोषित कैलनि, दोसर दिस पुत्रक उम्रक कन्यासँ बियाह करैत रहलाह। पंडित समाजक एहि मानसिकता पर 'जनसीदन' जाहि समयमे कटाक्ष कयलनि से हुनकर आधुनिक सोचक परिचायक थिक। पंडित भवनाथ झा दोसर विवाह नहि करबाक पत्नीकेँ वचन तँ द' दैत छथि मुदा बहुत जल्दी विशेषरानीकेँ समाजक संग पति सेहो बिसरि जाइत अछि। भवनाथ लगभग तीस वर्षक उम्रमे विधुर भ' जाइत छथि, माने लगभग बीस-पच्चीस वर्ष पूरा करैत-करैत विशेषरानीक जीवन समाप्त भ' जाइत छनि। यैह स्थिति छल मिथिलाक स्त्रीक, सीता बनि पुरुषक फुलवारीकेँ

गुलजार कर'क लेल अपन जीवनकेँ समाप्त करैत रहलीह लाखो विशेषरानी, आवेशरानी, बुच्चीदाइ आ पारो।... आगाँक कथा उपन्यासक उत्तरार्धमे कहल गेल अछि।

किछ दिन धरि भवनाथक मनमे पत्नीक छवि स्थिर रहैत छनि जे धीरे धीरे धूमिल होइत जाइ छनि, मात्र सपनामे कखनो क' आबि जाइत छनि। पाँच वर्षक होइते भवनाथ अपन पुत्रक मूड़न करैत छथि। कलाधर ढोलियाकेँ बजा आनैत छथि, मुदा कंजूस जयनाथ ढोलियाकेँ ऐंठ भात खाइ ले दैत छै। ढोलिया अपन विरोध दर्ज कराबैत अछि आ भुखले रहि जाइत अछि। अंतमे संवेदनशील कलाधर अपन जेबीसँ रोजक हिसाबसँ ढोलियाकेँ एक टाका दैत छै। कलाधरक चरित्रमे एत' लेखकक व्यक्तित्वकेँ देखल जा सकैत अछि। आब भवनाथक विवाहक बात घरसँ ल' क' बाहर धरि चलैत अछि मुदा भवनाथ पत्नीक बात मोन पाड़िते एकदमसँ मना क' दैत छथि। एहि बीच भवनाथ अपन भाइ जयनाथक सारक उपनयनमे हुनक सासुर मोहनपुर जाइत छथि। ओत' हुनका उपनयन कराब'क लेल पुरोहिताइक सेहो आग्रह भेल जे ओ स्वीकार क' लेलनि। ओत' जयनाथक ससुर बलभद्र झाक बहिन-बहिनोई आ हुनक तेरह वर्षीय पुत्री पार्वती सेहो आयल छलि। भवनाथ पार्वतीक कटाक्ष भरल चौलसँ जतेक आहत होइत छथि ओहिसँ बेसी ओहि बालाक रूप-लावण्य पर आकर्षित– "तृष्णा तँ बहुत वस्तुक होइत हैत, परंच फेर पचलो चाही कीने। चलू झट दय, अहाँ लेल पान थकुचि क' राखल होएत... अहाँ एक तँ ओझाक जेठ भाय, दोसर पंडित, तेसर बूढ़, अहाँक पैरो दबौने कोनो दोष नहि। परंच डर लाथारक, आइ काल्हि जे जेहन बूढ़ से तेहन मरखाह।" आ पार्वतीक प्रति भवनाथ एतेक ने आकर्षित भ' जाइत छथि जे मात्रिका पूजा कराब' लेल आँगनमे जाइत छथि तँ स्त्रीगणक भीड़मे पार्वतीकेँ खोजैत रहि जाइत छथि ज्योतिषी भवनाथ झा।

भवनाथक मनोदशाक वर्णन लेखक सपनाक माध्यमसँ करैत छथि। रातिमे भवनाथक सपनामे पत्नी विशेषरानी आबि कहैत छथि, "प्रतिज्ञा केलहुँ से बिसरि गेल?... हमारा अहाँ परतारै छी। विवाह तँ अहाँ अवश्ये करब।" अन्हार घरमे पत्नीकेँ रोकबा लेल भवनाथ झा उठैत छथि। चौकैठसँ टकराकेँ कापर फूटि जाइत छनि। खबास भरोसीकेँ उठेबाक ले लात मारैत छथि। भरोसी नीनमे हुनका भरि पाँजकेँ पकड़ि क' चिचिया लगैत अछि। निसभेर रातिमे सब दौरल, तमाशा लागि गेल। भवनाथ झाक गाम घुमैसँ पहिने बलभद्र झा हुनकासँ दोसर विवाहक मादे पुछैत छथि संगहि इहो जे हमर बहिनोइ अर्थात पार्वतीक पिताकेँ अही बेर कन्यादान कर'क छनि। ज्योतिषी भवनाथ झा ऊपरसँ मना क' दैत छथि मुदा बादमे ओ कलाधर संगें सभा जाइत छथि आ पार्वतीक कथाकेँ स्वीकार करैत ऊपरसँ उपकार जताबैत छथि, "जखन अहाँ लोकनिक एतेक आग्रह अछि तखन हम एतेक ब्राह्मणक बीचमे नहि कोना कहू।" एक बेर फेर सपनामे विशेषरानी आबि हुनका अपन वचनकेँ मोन पाड़ैत छथि। ज्योतिषी सफाई दैत छथि, "पार्वती अहाँक सभ सेवा टहल करती, बड़ नीक स्वभाव छैक।" एवं प्रकारें सभासँ पिलखबाड़ गाम जाय ज्योतिषी दोसर विवाह क' लैत छथि।

द्विरागमनक बाद भवनाथ झाक घर तहस नहस भ' जाइत छनि। विशेषरानी अपन छोट दियादिनीसँ दबले रहैत छलीह मुदा पार्वती हुनका बराबरीक टक्कर दैत छनि, फलत: घर रणभूमि बनि जाइत आछि। एहि बीच पितामहीक मुइने भवनाथक पुत्र दयानाथकेँ केओ आब देखनिहार नहि रहलै। लेखक अनुसारें "जे ज्योतिषी चारिबजे रातिएमे उठि अपन नित्य कृत्य करैत छलाह, से आब सात बजे धरि सुतले रहैत छथि। पार्वती हुनका अपन रूप यौवनसँ मोहित कै, जे नाच नचबैन्हि, से नाचथि... जे दयानाथ ज्योतिषीक आँखिक पुतरी छलैन्ह, से आब आँखिमे काँट जकाँ गड़य लगलैन्ह। पुनर्विवाह जे ने चाहय। कलाधर एक दिन दयानाथक दशा देखि ज्योतिषीकेँ कहलथिन्ह। भाइ दोसर विवाह नहि करितहुँ सैह नीक छल।" आ अही कथनक संग उपन्यासक अंत होइत अछि।

एहि उपन्यासमे जनार्दन झा 'जनसीदन' शिल्प आ कथ्यमे अपन पूर्वक उपन्याससँ बेसी प्रौढ़ताक संग उपस्थित होइ छथि। एत' ओ कथाक संग उपकथाकेँ सेहो समावेश करैत छथि आ स्त्रीक संग निम्न-जातिक

जीवन, ओकर शोषणक यथार्थ के सेहो रेखांकित करैत छथि। पुनर्विवाहसँ पूर्वक संतान कोना बिलटि जाइत अछि, ओकर बाल मनोविज्ञान पर केहन खराब प्रभाव पड़ैत छै, तकर मार्मिक वर्णन भेल अछि। एहि उपन्यासमे एकहक़ टा चरित्रक बहुत स्वाभाविक विकास भेल अछि संगहि पूर्वक उपन्यास जकाँ एहिमे एकरसता सेहो नहि छै। रोचकता अंत धरि बांचल रहैत छै। एक दिस अपन पति आ पुत्रक लेल विशेषरानी बिना कोनो शिकायतकेँ जान द' दैत छथि तँ दोसर दिस अनमेल विवाहक कुंठाक शिकार पार्वती ज्योतिषीकेँ वशमे राखि अपनाकेँ सुरक्षित बुझैत छथि। भाषाक विविधता सेहो एहि उपन्यासमे देखा पड़ैत अछि। हास्यक स्थिति पाठककेँ बान्हैत छै। जखन ज्योतिषी जीकेँ अपने खबास भरोसी नीनमे भरि पाँजिकेँ पकड़ि क' गारि दैत छनि, "सार चुप रह' ने तँ जानसँ मारि देब। कपार फुटलैन्हें, आएल छलाहे देह परसँ तौनी खींचय। आइ हम चोरि करबाक हिसख छोड़बै छियह।" रूप आ गुणक द्वंद्वसँ शुरू होब' बला ई उपन्यास समग्रतामे अपन सन्देश देब'मे पुर्णत: सफल अछि। मैथिली उपन्यासक लेल सेहो मजगूत नींव, जकर विकास आगांक उपन्यासमे देखल जा सकैत अछि।

'द्विरागम रहस्य'

जनार्दन झा 'जनसीदन'क अंतिम उपन्यास 'द्विरागम रहस्य'क विषय सेहो हुनक पूर्वक उपन्यास जकाँ मैथिल ब्राह्मणक विवाहक कुप्रथा आ ओहिमे स्त्रीक स्थितिक वर्णन अछि। जनार्दन झाक पाँचू उपन्यास मैथिल ब्राह्मणक बीच कायम वैवाहिक कुप्रथा आ एहि प्रथाक जाँतमे पिसाइत स्त्रीक एकटा महाकाव्यात्मक चित्र उपस्थित करैत अछि। सबसँ पैघ बात कोनो उपन्यासमे कथ्य अथवा मुद्दाक दोहराव नहि भेल अछि जे लेखकीय कौशलताक प्रमाण थिक। 'द्विरागम रहस्य'मे एकटा विधवा स्त्री द्वारा अपन बेटाक विवाहसँ ल' क' बिन दुरागमने पुतहुकेँ घर ल' आनबा धरिक कथाकेँ अत्यंत रोचक ढंगसँ कहल गेल अछि। एहिमे तथाकथित बेटी-बेचबा पाँजिबला लोभी पिताक सेहो पोल खोलल गेल अछि। आन उपन्यास जकाँ 'जनसीदन'क अहू उपन्यासमे एकटा पात्र मदनपुर गामक बुद्धिनाथ फलित ज्योतिषीक विद्वान छथि। बुद्धिनाथ पत्नीक अलावा तीन गोट बेटा– महावीर, मनोहर मुकुंद आ बेटी सुधाकेँ छोड़ि चलि बसलाह। मात्र बेटी सुधाक विवाह पिलखबाड़क शशिकांत संग भेल रहै, द्विरागमन बाकी रहै।

पिताक मृत्युक बाद घरक आर्थिक स्थिति दयनीय भ' जाइत छनि। महावीर जयबार छथि मुदा हुनक आ मायक इच्छा छनि जे टाका दइयो क' पाँजिमे विवाह करी। घटक भिखारी झाकेँ ई भार देल जाइत अछि। भिखारी झा कुसुम पुरक लालची भलमानुष भोल ठाकुरकेँ महावीरसँ अपन कन्यांक कथा करैक लेल कहैत छथि। पहिने तँ भोल ठाकुर जयबार सुनि क' मना क' दैत छथि बादमे तीन सौ रुपैया देला पर कथा करबाक सहमति दैत छथि। वरकेँ देख' अबैत छथि आ तीन सयसँ एक्को पाइ कम नहि लेबाक बात करै छथि। एमहर घटक आ बरागत दू सय पर गिरह बन्हने आ कन्याक पिता भोल ठाकुर तीन सय पर अड़ल, "दू सय टाकामे जमायकेँ नीक जकाँ कोना विदा करबैन्हि? दू टाका रोज तँ हुनक भोजने करबयमे लागत। कदाचित झट दै विदा नहि भेलाह तँ कमसँ कम 100) टाका भोजन-जलापानेमे उड़ि जाएत। कहुना 100) बाँचत। कपड़ा पर दाम बढ़ि गेल छैक... हम अपना घरसँ एको टाका देब नहि। न्यून काज करब और घरक टको बरबाद करब, ई हमरासँ नहि हैत।" घिचातोरी होइत होइत दू सौ पचहत्तरमे कथा टूटैत अछि। एवं प्रकारें महावीरक विवाह भ' जाइत छनि।

महावीरक बहिनोई शशिकांत झा काशीसँ व्याकरणक परीक्षा पास क' गाम अबैत छथि। विवाहक तेसर वर्ष ओ दुरागमन चाहैत छथि जकरा सासु विराजमनि मानि लैत छथि। माय-बेटा दुहूक इच्छा जे सुधाक दुरागमनसँ पहिने महावीरक दुरागमन सेहो भ' जाइन्ह। मुदा से लोभी भोल ठाकुर मान' ले तैयार नहि। ओ रौदी-दाहीक रोदना पसारि दैत छथि संगहि एकटा विपत्तिक बात सेहो करैत छथि जे महाजनसँ 'दू सय टाका हैण्डनोट पर कर्ज' लेने रही, तकर सूदो दू सय भ' गेल, से नहि घुरेलाक कारणें ओ नालिश क' देने अछि 'जेहो दू-चारि बिगहा खेत अछि सेहो नीलाम भ' जाएत।' असलमे भोल ठाकुर झूठ बाजि जमायसँ चारि सौ टाका ठकबाक

फेरामे रहथि। से पता लगेबाक लेल महावीरक माय विराजमनि एकटा आदमीकेँ मधुबनी महाजन मिट्ठू साहु ओहिठाम भेजि झूठक पता लगा लैत छथि। बादमे हुनका इहो पता चलैत छन्हि जे भोल ठाकुर गामक एकटा मसोमातक दू बिगहा खेत लिखाब'क लेल जमायसँ चारि सय रुपैया ठक' चाहैत छथि। लोभी ससुरकेँ मजा चखेबाक लेल दुनू माय-बेटा एकटा योजना बनबैत छथि। महाबीर ससुरकेँ जा क' एक सौ रुपैया द' कहैत छथि जे तीन सय टाका ल' क' मनोहर पूर्णिमा दिन औताह। भलमानुष भोल ठाकुर मोनेमोन प्रसन्न भेलाह। महावीर पत्नी कलावतीकेँ साड़ी, गहना गुड़िया दैत कहैत छथि जे काल्हि हम अहाँक परीक्षा लेब।

अगिला दिन घरक सब सदस्य गामक जमींदार हरिनंदन झाक घर पूजाक सभजना नोत-हकार पूर' गेल छल। झलफल सांझ भेला पर महावीर कलावतीकेँ साड़ी-गहना पहिरा क' गामक बाहर अबैत छथि जत' पहिनहिसँ मंहफा ल' क' भाइ मनोहर तैयार रहनि। पतिक कहला पर कलावती मंहफामे बैसि जाइत अछि। अधिया राति बितला पर महावीर पत्नी संग गाम पहुँचि जाइत अछि। वर-कनियाँक चुमौन होइत अछि। भोर भेने एहन दुरागमनक चर्चा गाम भरिमे होइत अछि। एमहर भोल ठाकुर जखन सपरिवार घर अयला तँ बेटी-जमायकेँ नहि देखि हक्का-बक्का रहि गेला। बादमे बेटाकेँ समधियारे भेजि पता करौलनि। हुनका ठेस लगलनि, 'जमाय हमारा खूब छकौलनि।'

एहि उपन्यासमे जनार्दन झा 'जनसीदन' मैथिल ब्राह्मणक विवाहक एकटा अलग पक्षकेँ उठा ओकर बहुत रोचक चित्रण करैत छथि। चरित्र चित्रणक मध्यमे पात्रक विकास आ विवाह संबंधी विध-व्यवहारक वर्णनसँ परिवेशक निर्माण सजीव भ' उठल अछि। पाँजिक नाम पर अपन बेटीक सौदा कर' बला पुरुष समाजक असली चेहरा देखेबाक हिम्मत करैत छथि। डॉ. रामदेव झा एहि उपन्यासक मादे जे निष्कर्ष दैत छथि से उल्लेखनीय अछि, "जाति वंश, कुलीनता ओ मर्यादाक प्रति सामाजिक व्यामोह तथा एहि नाम पर वर्ग विशेष द्वारा शोषण-दोहन, कन्याकेँ मानव नहि भोग्य वस्तु मानि ओकर मूल्य-निर्धारण करब, कन्याक जीवनक सुख-दुखक उत्तरदायित्वक प्रति स्वार्थपूर्ण उदासीनता-उपेक्षा, आत्मीयताक स्थानमे जमाय सन सम्बन्धीअहुक संग व्यवसायिक चातुर्य ओ शाठ्यपूर्ण व्यवहार इत्यादि सामाजिक विकृति उपहास-आलोचनामे लेखक अत्यंत साहस ओ मुखरताक परिचय दैत छथि। सामाजिक परिवर्तनमे शिक्षाक महत्त्व, संस्कृत शिक्षाक महत्वक प्रति ह्रासोन्मुख समाज-दृष्टि, आधुनिक शिक्षाक प्रति उन्मुखताक अवक्षेपणक संगहि लेखकक नारी-शिक्षाक प्रति अतिशय आवेशक सहज प्रतीति एहि उपन्यासमे देखल जाइछ।"[12] स्पष्ट अछि जे जनसीदन जीक सभटा उपन्यास मनोरंजन मात्र लेल नहि सामाजिक परिवर्तनक उद्येश्यसँ लिखल गेल अछि।

जनार्दन झा 'जनसीद'न सामाजिक दृष्टि

जनसीदन स्त्रीक दुरावस्थाक कारण 'अशिक्षा' आ 'कुशिक्षा', दुनूकेँ मानैत छथि। ताहि समय बाल विवाह आम छल। हुनकर उपन्यासमे स्त्रीक विवाह दस से बारह वर्षमे भ' जाइत अछि जे तत्कालीन समाजमे व्याप्त बाल-विवाहक प्रतिविम्ब अछि। जनार्दन झा 'जनसीदन' जहिया मैथिलीमे उपन्यास लिख' लगलाह ता धरि ओ हिन्दीक लेखक रुपेँ अपन पहचान बना चुकल छलाह। बांग्ला साहित्यसँ ओ नीक जकाँ परिचित छलाह तकर प्रमाण हुनका द्वारा कैल गेल अनेको बांगला उपन्यासक अनुवाद थिक। कहबाक तात्पर्य जे उपन्यासक शिल्पसँ ओ नीक जकाँ परिचित भ' गेल छलाह। तैं मैथिलीमे हुनक उपन्यासक शिल्प भने दीर्घ-कथा बला हो मुदा सधल अछि। भाषाक रूप सेहो सर्वग्राही आ प्रवाहमान। भाषाक एकटा आरो रूप ताहि समय प्रचलित छल जकर प्रयोग जीबछ मिश्र अपन उपन्यास 'रामेश्वर' आ रास बिहारी लाल दास 'सुमति'मे करैत छथि, जे पांडित्यपूर्ण तँ छल मुदा सर्वग्राह्य नहि। जनसीदन कथ्य सेहो उठबैत छथि ठेठ मिथिलाक। उपन्यास लेखनक पाछाँ जनार्दन झाक उद्द्येश्य मिथिलामे व्याप्त मध्ययुगीन कुत्सित प्रथा आ जड़ियायल रूढ़ि मानसिकता, खास क' विवाहमे व्याप्त बाल-विवाह, बहु-बिवाह, बेटी-बेचब आदि कुप्रथासँ मुक्ति आ आधुनिक शिक्षाक प्रचार छलनि। स्त्री शिक्षाकेँ समाजक विकास लेल ओ आवश्यक कड़ी मानैत छथि। जनसीदन जीक उपन्यास

लेखनक उद्येश्य समाज सुधार छलनि। रामदेव झाक कहब उचिते छनि जे "मैथिलीमे साहित्य-रचना जनार्दन झा कयलनि से मनोरंजनार्थ मात्र नहि, अपितु ओकरा पाछाँ एकटा 'मिशन' छल।" आ डॉ. रमानंद झा 'रमण'क अनुसारें, "वर्त्तमान शतीक आरम्भमे नारी जागरण हेतु आन्दोलन चलि गेल छल। बहुतो पंडित स्त्री शिक्षाक विरोधी छलाह, किन्तु जनसीदन जी समाजक अभ्युदय हेतु नारी शिक्षाक प्रचार-प्रसार आवश्यक मानैत छलाह।"[13] जनसीदन स्त्रीक स्वधीनाताक लेल बेर बेर धर्मशास्त्रक स्थापनासँ टकराइत छथि।

महाभारत, रामायण, मनुस्मृति, अन्य स्मृति तथा पुराण ग्रन्थ आदिमे स्त्रीकेँ झुट्ठी, विषक खान, सांप, धूर्त, प्रेमहीन, कामी, पति-द्रोही, लालची, निर्दयी आदि कहि घोर निंदा कयल गेल छल मुदा बारहमिहिर सन किछ विद्वान स्त्रीक पक्षमे लिखिबाक सेहो हिम्मत केने छलाह।[14] मिथिलामे धर्मिकता आ कर्मकांड किछ बेसिए व्याप्त छल, तैं एत' स्त्रीक दशा आरो खराब रहल। नवजागरण कालीन समाजसुधार आन्दोलनक बहुत कम प्रभाव एत' पड़ल। 1917 ई.मे गांधीक चंपारण सत्याग्रह भ' चुकल छल जाहिसँ जातिक प्रश्न पर सेहो बहस आरम्भ भ' गेल छल। एहि आंदोलनमे गांधी अस्पृश्यताकेँ नज़दीकसँ अनुभव केने रहथि। ओना गांधीक अछूतोद्धार आन्दोलन 1930क बादे गति पकड़लक। डॉ. आंबेडकरक पोखरिक पानि पीबाक लेल प्रसिद्ध 'महाड़ आन्दोलन' 1927 ई.मे भेल। जनसीदन अपन 1926मे प्रकाशित उपन्यास 'पुनर्विवाह'मे अस्पृश्यताक प्रश्न पर तँ नहि सोचैत छथि मुदा अछूत-वर्ग पर सवर्ण द्वारा होइ बला अत्याचारक बानगी अवश्य प्रस्तुत करैत छथि। स्पष्ट अछि जे बीसम शताब्दीक आरम्भमे मैथिली साहित्यमे जे अधुनिकताक गलगुल आरंभ भेल तकर एकटा मजगूत कड़ी जनार्दन झा 'जनसीदन' छलाह।

मिथिलामे स्त्री ख़ास क' ब्रह्मण-स्त्रीक दारुण दशाक चित्रण जनसीदन अपन पाँचू उपन्यासमे करैत छथि जिनका तथाकथित सभ्य समाजमे माल-जालो बराबर स्नेह-अपनत्व नहि प्राप्त छलनि। एहि लेल ओ बेर बेर राजा हरिसिंह देव द्वारा स्थापित पंजी-प्रथाक औचित्य पर प्रश्नचिन्ह लगबैत छथि। हुनकर पात्र रहरहाँ बजैत अछि, "आब के पुछैत अछि हरिसिंहदेवी प्रथा कैँ... दरिद्रक घरमे कन्याकेँ कोन सुख भेटतैक! जाति लैक' की धो धो चाटब!" स्त्रीकेँ गुलाम बनेबाक लेल पंडित लोकनि दर्जनों स्मृतिक रचना कैलनि, जनसीदन अपन उपन्यासमे ओहि धर्मग्रन्थमे वर्णित झूठकेँ नकारैत छथि आ पुरुषक संग स्त्रियोक आधुनिक शिक्षाक समर्थन करैत छथि। हुनका दृष्टिएँ पति-पत्नी दुनूकेँ एक-दोसराक प्रति ईमानदार आ समर्पित हेबाक चाही, तखने समाज आ देश आगाँ बढ़त। जनसीदन ब्राह्मण जातिमे व्याप्त जातिवादक विरोध करिते छथि, संगहि ब्राह्मण अथवा अन्य उच्च जाति द्वारा छोट जाति पर होइ बला अत्याचारकेँ सेहो रेखांकित करैत छथि। एहि अर्थमे ओ मैथिल नवजागरणक अग्रदूत साबित होइत छथि।

जाहि समयमे हिन्दीक पत्रिका 'सरस्वती'मे बड़का-बड़का लेखक छपैक सपना देखैत छलाह ताहि समयमे महावीर प्रसाद द्विवेदी 1914 ई.मे दलित हीरा डोमक कविता 'अछूत की शिकायत' छापबाक हिम्मत केने रहथि जे हुनकर आधुनिक सोचक प्रमाण छल। जनसीदन आ द्विवेदी जीक मित्रता ख्यात अछि। स्पष्ट अछि जे जनार्दन झा सेहो जातिक प्रश्न पर उदार दृष्टि रखैत छलाह, जकर प्रमाण हुनकर उपन्यासमे आयल दलित पात्रक प्रति मानवीय दृष्टि अछि। ज्ञातव्य जे हिन्दीमे इलाहाबादसँ प्रकाशित 'चाँद' पत्रिकाक 1927 ई.मे अछूत अंक प्रकाशित भेल छल। जकर कवर पर जे फोटो छपल छल ताहिमे चाँदक प्रधान सम्पादक पंडित नन्दकिशोर तिवारी आ दलित कर्मचारी वंशीलाल संगें, एक्के थारीमे खा रहल छलाह। की मैथिलीक कोनो पंडित संपादक द्वारा ताहि समय कोनो एहन पहल कैल गेल? एत' तँ स्थित ई छल जे जनार्दन झा 'जनसीदन' ब्राह्मणक वैवाहिक कुरीति पर सरस्वतीमे एकटा लेख की लिखि देलनि, पंडित सब हुनका धमकाब' लागल। तथापि जनसीदन अपन समयक मैथिल ब्राह्मणक सोचसँ बहुत आगाँ जाक' सोचैत छलाह आ तकरा लिखैत छलाह।

'पुनर्विवाह' उपन्यासमे एकटा प्रसंग आयल अछि जे उच्च जातिक लोक कोन तरहें दलित जातिक शोषण करैत अछि, ओकरा संग अमानवीय व्यवहार करैत अछि। ज्योतिषी भवनाथक बेटा दयानाथक मूड़नमे

ढोलकिया दिन भरि ढाकतासा बजाबैत रहल। पहर भरि राति बाकी रहै तखन कंजूस जयनाथ ढोलिया सभकेँ भात आ बरीक झोर देब' गेल। ढोलिया सभ खाइसँ मना क' दैत अछि, "बाबू कुकुरकेँ खोआ दिऔक। जेना तीन पहर राति काटल तेना एक पहर काटि लेब।" जयनाथ जखन ओ बड़ीक झोर भात गायकेँ दैल' जाइत अछि तँ ढोलिया बजैत अछि, "हम डोम ने जे सभक ऐंठ उठा कय देबय आएल छलाह।" भिनसर दाइ-माइ सभ जखन ढोल बजेबाक ले कहैत छै, 'निछाउर लेबाक बेर भेलहु।' तँ ढोलिया अपन प्रतिरोध दर्ज करैत अछि, "दाइ हम निछाउर भरि पाओल। ओतेक लोक भोज खैलक, हम दुहू गोटे भरि राति भुखले रहलहुँ। ओहिना दू हाथ बजा कय घर जाइ छी।" काज भेलाक बाद बिना किछ देनहि जयनाथ ढोलिया सभकेँ विदा कर' चाहैत अछि। ढोलियाकेँ जखन बकसीसो नहि भेटलैक तँ ओ स्पष्ट कहैत अछि–

> "बाबू, हम इनामीसँ संतोष कयल। हमरा जे रोजी-मजूरी हो से दय दिय। हमरा दोसरो ठाम जयबाक अछि।
> जयनाथ बटुआसँ एकटा चरिअन्नी बाहर कय ढोलियाक आगाँमे फेकि देलनि।
> **ढोलिया :** ई की हमरा भीख दैत छी। काल्हि भिनसरेसँ दू गोटे ढोल बजाओल अछि। ताहिमे रातुका भूखल, इहो राखि लिय।
> ई कहि ढोल कान्हमे लटका दुहू गोटें विदा भेल, "[15]

स्पष्ट अछि जे मिथिलामे दलित वर्ग पर होइ बला अत्याचारक प्रति जनसीदन आलोचनात्मक दृष्टि रखैत छलाह। उपन्यासमे ओ कलाधर द्वारा ढोलियाकेँ एक टाका मेहनताना आ सीधा दिआय अपन सहानुभूति आ सुधारवादी व्यक्तित्वक परिचय दैत छथि। एहिना जखन भवनाथकेँ अपन भाइ जयनाथक सासुरमे रातिमे माथ फूटि जाइत छनि आ ओ खबासकेँ सुतलेमे एक लात मारै छथि तँ खबास हुनका चोर बूझि खूब गरियाबैत अछि। नि:संदेह उपन्यासमे एहि तरहक प्रसंगकेँ सायास आनल गेल अछि। भिखना अन्हारमे ज्योतिषी जीकेँ भरि पांजकेँ पकड़ि क' चोर-चोर कहि गरियाबैत अछि। ज्योतिषी कहैत छथि- 'रौ हम छी छोड़ि दे'। भिखना कहैत अछि, "हमरा परतारै छह, हम चिन्है छिऐन्हि कहाँ? रौ तों तँ थिकैं भिखना डोम। रहइ सार, आइ हम तोहर सभ चोरि करब बाहर करै छिअहु।"

जनार्दन झा 'जनसीदन' पर लिखल विनिबंधक परिशिष्टमे रामदेव झा 1917मे मिथिला मिहिरमे प्रकाशित जनसीदनक कथा 'ताराक वैधव्य' सम्मिलित कयने छथि। ओना तँ ई कथा बेमेल विवाहक कारुणिक दुखांतक कथा थिक जाहिमे सात वर्षक ताराकेँ ओकर काका भैरव ठाकुर पचास वर्षक बूढ़क हाथें बेचि दैत अछि। ताराक विधवा माय मधुरमणि अपन बेटीकेँ ल' क' घरमे बंद भ' जाइत छथि। भैरव ठाकुर टोलक आरो दू गोटाकेँ बजा लैत अछि। बूढ़ वर बटुकनाथ झा ओकरा सभकेँ पानक संग दू-दू टा टाका पकड़ा दैत छनि। आ सभटा लालची मिली क' भोरहरबामे मधुरमणिक घरक केबाड़ीकेँ तोड़ि क' बच्ची ताराकेँ बाहर निकालि क' कन्यादान करा दैत अछि। तथाकथित उच्च जातिक लोकमे केओ स्त्री-पुरुष नहि जे एहि विवाहक विरोध करय आ मधुरमणिक संग दै, मुदा जकरा ई समाज 'राड़िन' कहैत अछि से सकली मायक टिप्पणी एहि सभ्य समाजक मुंह पर थापड़ सन अछि, "ऐ दाइ! की कहू? अहाँक देवर नहि जानि कोन प्रकृतिक मनुष्य छथि जे एहन खोड़नाठ सन कारी दिवरखौक वर उठाय लायल छथि, वयसो नव नहि, सकलीक बापक वयसें ऐ। छिया! हमारा लोकनि राड़िन छी, तैयो बेटीक प्रसंग एहन वर नहि करितहुँ।" स्पष्ट अछि जे निम्न जातिक स्त्री उच्च जातिक स्त्रीसँ बेसी स्वतन्त्र छलीह। हुनका पुनर्विवाहक अधिकार रहनि तैं विधवाक दंशसँ बचि जाइत छलि। बाल-विवाह अहू वर्गमे प्रचलित छल मुदा ब्राह्मण जकाँ बेमेल आ बहु विवाह बहुत कम होइत छल। जनसीदन ई देखेबाक प्रयास करैत छथि जे ब्राह्मण समाज अपन स्त्रीक प्रति दलितसँ बेसी असंवेदनशील छल। जनसीदनक प्रत्येक उपन्यासमे सौराठ सभाक दृश्य अबिते टा अछि जत' मिथिलाक स्त्रीक भविष्यक अन्हार

सुनिश्चित कैल जाइत अछि। ओ स्त्रीक दुर्दशामे एहि सभाक भूमिकाकेँ रेखांकित करैत छथि। जनसीदन स्त्री-शिक्षाक संगें अंग्रेजी शिक्षाक पक्षधर छलाह। 'द्विरागम-रहस्य'मे एकटा पात्र कहैत अछि, "संस्कृतमे आब की धैल छैक। संस्कृत पंडितकेँ आब के पुछैत छन्हि?... हम दुनू भाइ अंगरेजिए पढ़ब।"

डॉ. रमानंद झा 'रमण' जनसीदन जीक दू गोट उपन्यास 'निर्दयी सासु' आ 'पुनर्विवाह'केँ मिथिला मिहिरक फ़ाइलसँ निकालि पोथी प्रकाशित करौलनि। 'रमण' जी मैथिलीक अनेक आरंभिक रचनाकेँ पुनर्प्रकाशित करबा क' मैथिलीक पाठक-समालोचकक लेल बहुत पैघ उपकार कैलनि। 'निर्दयी सासु' आ 'पुनर्विवाह'क उपन्यासक भूमिकामे ओ जनसीदन जीक दुनू उपन्यासक सारगर्भित विश्लेषण करैत छथि। संगहि जनार्दन झा पर एकटा प्रश्नचिन्ह सेहो ठाढ़ करैत छथि, जे बंगला, हिन्दी आ मैथिलीमे जे राष्ट्रीय स्वाधीनताक स्वर गूंजि रहल छल से जनसीदन जीक उपन्यासमे नहि भेटैत अछि। एहि प्रसंगमे रमानंद झा 'रमण' बंकिमचंद्रक उपन्यस 'आनंदमठ', भारतेंदुक 'भारत दुर्दशा'। मैथिली शरण गुप्तक 'भारत भारती' संगहि चंदा झा, मुंशी रघुनन्दन दास, यदुनाथ झा यदुवर आदिक उदहारण दैत ई निष्कर्ष प्रस्तुत करैत छथि जे "बंगला हिन्दी एवं मैथिली साहित्यिक गतिविधिसँ पूर्ण परिचित जनार्दन झा 'जनसीदन' राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामक पजरैत पसाहीमे एकोटा काठी नहि देलनि। तात्पर्य जे विदेशी शासन व्यवस्थाकेँ छाउर बनएबा लेल, जेना आगि पजरि गेल छल, तकर कनिको उष्णता जनसीदन जीक रचनामे नहि भेटत।"[16] डॉ. रमणक ई विश्लेष्ण जनसीदन जीक उपन्यास आधारित अछि।

रमण जी अपन एहि निष्कर्ष धरि पहुंचैक लेल कविता, कहानी नाटक सभ विधाकेँ एकहि संग मिला देलनि अछि से उचित नहि बुझाइत अछि। औपनिवेशिक शासनक कारणें भारतमे नवजागरणक सुगबुगाहैट आरम्भ भेल। विधाक रुपेँ उपन्यास अथवा कथा नव छल आ पश्चिमसँ आयल छल। तैं एहि विधा संगे प्रयोग चलि रहल छल। इहो तथ्य अछि जे प्रेमचंदक 'सोजेवतन' आ देउस्करक 'देशेर कथा' सन किछ रचनाकेँ अपवाद मानी तँ अंगरेजी शासन द्वारा जाहि भारतीय रचना सभकेँ जब्त कैल गेल अथवा 'बैन' कैल गेल ताहिमे अधिकांश कविता आ नाटक विधाक रचना छल अथवा पत्र-पत्रिका। ताहू जब्तशुदा रचनामे मैथिलीक योगदान नगण्य छल। एकरा पाछांक कारण पर एखन प्रकाश पड़ब शेष अछि। जाहि 'आनंदमठ'क ढोल पीटल जाइत अछि ताहि उपन्यासमे अंग्रेजक भूरि भूरि प्रशंसा आ गुणगान कैल गेल अछि। पुण्यानन्द झाक उपन्यास 'मिथिला दर्पण'मे सेहो अंग्रेजक प्रति कोनो दुराग्रह नहि अछि आ पंडित जीबछ झा तँ अपन उपन्यासक परिवेशे नेपाल ल' क' चलि गेलाह। डॉ. रमानंद झा 'रमण' हिन्दीक जाहि 'भारत दुर्दशा' आ 'भारत-भारती'क चर्च करैत छथि तकर विधा उपन्यास नहि काव्य छल। नि:संदेह कविता आ नाटक विधा सबसँ पुरान विधा छल तैं स्वतंत्रता आन्दोलनक स्वर सबसँ पहिने अही विधामे फूटल आ ताहिमे जनसीदन जी सेहो कोनो मैथिली अथवा भारतीय कविसँ पाछाँ नहि छलाह, तकर प्रमाणक लेल हुनकर कविताक किछ पांति देखल जा सकैत अछि। जाहिमे जनसीदन जीक साकांक्ष नजरि भारतमे अंगरेजी राजमे व्याप्त भय, भूख आ कुव्यवस्था पर छनि संगहि वैश्विक समस्याक संग हुनका मोनमे स्वराजक अवधारण सेहो छनि–

दु:ख-दावानल विपुल विश्वमे व्याप्त भेल अछि।
झुलसि रहल अछि लोक, शोक संतप्त भेल अछि॥
विश्वव्यापी युद्ध प्रथम सभकाँ उकछौलक।
अति महार्घ सभ वस्तु, लोक दारुण दु:ख पौलक॥

जनसीदन जी अंग्रेजी सत्ताक संग संग देशी राजा आ रियासतक सेहो आलोचना करैत छथि आ निष्ठुर शासककेँ 'नाशक' आ 'भक्षक'क संज्ञा दैत छथि–

प्रजा-प्रपीड़क निठुर भेल सम्राट अनेको।
किन्तु एहन कानून बनल कहियो नहि एको॥
बात-बातमे रोक ह्वैछ वस्तुक निष्कारण।
शासक नाशक जतय, दुःख के करत निवारण॥
रक्षक भक्षक होथि, कोन उपचार ततय अछि।
नहि संभव कल्याण, धर्म अघात जतय अछि॥

अंग्रेजी राजमे भारतक धन संपत्तिक दोहन शोषण भेल, ताहि सन्दर्भमे जनसीदन जीक निम्न पांतिकेँ देखल जा सकैत अछि जाहिमे ओ भारतीय किसानक दुर्दशाकेँ सेहो रेखाँकित करैत छथि–

तहस नहस भै गेल देश जे पूर्व बसल छल।
फल सभटा झड़ि गेल मधुर जे एतय फड़ल छल॥
रही गेल केवल कांट भव्य भारत-तरुवर मे।
सुखक नींद चलि गेल बढ़ल चिंता घर-घर मे॥
नहि स्वतंत्रता रहल आब खेतक उपजा पर।
की की उठत उपाधि कहल नहि जाय प्रजा पर॥

जनसीदन जीक भीतर कतेक आगि आ उष्णता रहनि से स्पष्ट अछि। ओ अपन 'आधुनिक समय' शीर्षक कवितामे विस्तारसँ भारतक वर्त्तमान दुर्दशाक चित्रण करैत छथि संगहि हुनका पूर्ण विश्वास रहनि जे भारतवासीकेँ स्वराज भेटबे टा करतैक–

भेटत शीघ्र स्वराज्य आब से समय अबै अछि।
पराधीन जन दुखी धैर्य धय गीत गबै अछि॥[17]

स्पष्ट अछि जे जा धरि पत्र-पत्रिकामे छिड़ियायल जनसीदन जीक समग्र रचनाकेँ एकत्रित क' प्रकाशित नहि कयल जायत ताधरि हुनक समग्र मूल्याङ्कन सम्भव नहि। मुदा ई बात मैथिलीक बौद्धिक जगत लेल एकटा बड़का प्रश्नवाचक अछि जे एखन धरि 'जनसीदन'क समग्र रचना किएक नहि प्रकाशित भ' सकल? की तत्कालीन पत्र-पत्रिकाकेँ नष्ट हेबाक प्रतीक्षा कैल जा रहल अछि? विश्वविद्यालय सभमे मैथिलीमे जे शोध होइत अछि से कोन काजक? अस्तु, एतेक तँ निःसन्देह जे ओ मैथिलीक पहिल आधुनिक उपन्यासकार छथि जे भारतीय उपन्यास साहित्यक आरंभमे कथ्य, संवेदना आ सामाजिक सरोकारक संदर्भमे मैथिलीकेँ नायकत्व प्रदान करैत छथि।

जीबछ मिश्रक उपन्यास 'रामेश्वर' : 'बुभुक्षितः किम न करोति पापम'

जीबछ मिश्रक उपन्यास 'रामेश्वर' 1916 ई.मे मिथिला प्रिंटिंग प्रेस, मधुबनीसँ छपल छल। एहिसँ पहिने जनार्दन झा 'जनसीदन'क दूटा उपन्यास 'सती सर्वस्व' (1912) आ 'निर्दयी सासु' (1914) मिथिला मिहिर पत्रिकामे धारावाहिक छपि चुकल छल। एहि तरहें मैथिलीक ई तेसर प्रकाशित उपन्यास थिक। पंडित जीबछ मिश्र रचानावालीक संपादक डॉ. रामानंद झा रमणक अनुसारें जीबछ मिश्रकेँ 'संस्कृत, मैथिली आ हिन्दीक अतिरिक्त अंग्रेजीक सेहो ज्ञान रहनि।' ओ हिन्दीमे सेहो लिखैत छलाह आ चारि-पाँच टा हिन्दीक पाण्डुलिपि हुनकर बोहा गेलनि। हुनक एकटा हिन्दीक लघु उपन्यास 'अद्भुत रहस्य'केँ सेहो हुनक रचनावलीमे शामिल

कैल गेल अछि। जार्ज ग्रियर्सनसँ सेहो हुनक संवाद रहनि। रामेश्वर उपन्यासमे ग्रियर्सन आ सर गंगानाथ झाक सम्मति सेहो छपल अछि जे लेखकक तत्कालीन स्वीकार्यताक प्रमाण थिक।

'रामेश्वर' उपन्यासक लेखकीय वक्तव्यकमे जीबछ मिश्र लिखैत छथि जे ओ बंगला उपन्याससँ प्रेरित भ' उपन्यास लिखबाक बिचार कयलनि। ओ अहू बातक चर्च करैत छथि जे हिंदीक प्रसिद्ध लेखक पंडित अम्बिकादत्त व्यासक आग्रह पर हिन्दीमे 'मिथिला मंडन नाटक' आ बाबू रामदीन सिंहक (पटनाक खड्गविलास प्रेसक मालिक जिनका भारतेंदुक सभटा रचना छापबाक एकाधिकार छलनि) आग्रहसँ 'ऐतिहासिक रहस्य' लिखलनि। मुदा ओ दुनू पाण्डुलिपि दुनू व्यक्तिक निधनक संग विलीन होएबाक कारण बहुतो दिन धरि लेखनसँ हतोत्साहित रहलाह। ई दुनू लेखक सक्षम हेबाक बादो जीबछ जीक रचनाक प्रकाशन किएक नहि कैलनि से आश्चर्य। बादमे मित्र काली प्रसाद झाक आग्रह पर ओ 'रामेश्वर' उपन्यास लिखलनि— "गत श्रावणसँ अपन सहायक मित्र बाबू काली प्रसाद झा, ओकील जज्जी, दरभंगाक आग्रह कोनो उपन्यास अपन भाषा मध्य हमरेसन सामान्य लिखनिहारसौं प्रस्तुत करएबाक वासना देखि कथमपि अस्वीकारे करबाक साहस नहि भेल।"[18] जीबछ मिश्र पंडित जीवन झाक सेहो चर्चा करैत छथि जे ओ मैथिलीमे लिखि मिथिलावासी पर उपकार कयलनि तकर बदला हुनका 'अपरिमार्जित शब्दक समालोचना मात्र' भेटलनि। मैथिलक इर्ष्या, द्वेष आ कुचेष्टाक चर्च करैत ओ एकरा पुरस्कार मानैत छथि, "कुटिल-कालिक क्रूर दृष्टि एहूपर पड़ल ओ दशम ग्रहक दशामध्य पड़ि नाना प्रकारक निन्दाक अनुदारता सौं जर्ज्जरित भेलहुँ तौं बुझल गेल आदर और पाबि गेलहुँ पूर्ण परितोषिक।"

'रामेश्वर' उपन्यासमे यथार्थ आ कल्पनाक सम्यक मिश्रण कैल गेल अछि। बांग्ला उपन्यासक घटना प्रधानताक प्रभाव एहि उपन्यास पर देखल जा सकैत अछि। जीबछ मिश्र पंडित अम्बिकादत्त व्यासक संपर्कमे रहथि आ हिन्दीक तत्कालीन परिदृश्यसँ सेहो परिचित। अंबिकादत्त व्यासक घटना प्रधान उपन्यास 'आश्चर्य वृत्तांत' (1893ई.) प्रकाशित भ' चुकल छल। 'रामेश्वर' उपन्यासक केँद्रमे भूख, अभाव आ ताहि कारणें क्षण क्षण बदलैत जीवनक स्थितिक वर्णन भेल अछि। भूख-आभाव पर लिखल एहि उपन्यासमे जीवनानुभावसँ बेसी घटना आ कल्पनाक सहायता लेल गेल अछि जाहिसँ रामेश्वर पारसी थिएटरक 'रौबिनहुड' नायक जकाँ बुझाइत अछि। उपन्यासक पात्र ब्राह्मण जातिक रामेश्वर नेपालक जनकपुरक समीप दुर्गापुर गामक रहय बला अछि। पिताक श्राद्धमे हुनका जेहो खेत-पाथर रहै सभ धन स्वाहा भ' गेलै। परिवारमे 19-20 वर्षक पत्नी आ 3 वर्षक बालक। रामेश्वर हित-अपेक्षितक दरबज्जा पर गेल मुदा खाली हाथ घुमल। तँ देखैत अछि जे बालक आनंद मोहन "दरबाजा परक सुखयाल पात सभक ढेरी ओ फुटल माटिक वासन जे श्राद्धक भोज्यमे बाहर फेकल गेल छलैक, ओहि मध्य गामक कुकुर सभ अपनामे कटाउझि कय सड़ल-पचल ऐंठ खाइत छलैक, बालक ओहि दीस टकटकी लगऔने देखैत छलैक।" अपन पत्नी आ पुत्रकेँ भूखसँ बेलल्ला होइत देखि रामेश्वर फेर नदीक किनार जाइत अछि। ओत' किछ युवा कनिचा लेने पानि पर 'बक-छुछूरू' खेलाइत रहय। ओकरासँ मदत माँगलनि रामेश्वर तँ ओ युवा सभ प्रस्ताव देलकनि "बेस अपन स्त्रीकेँ पठाय देब। हम सभ गोटे बेरा-बेरी कै पैसा देबैन्हि।" ओत'सँ रामेश्वर दोसर गाम जाइ एकटा ब्राह्मण घरमे मात्र आठ आना लगभग चोरि करैत अछि। मुदा पेट भरैक लेल अन्न चाही। रामेश्वर फेर एकटा बनिया दोकानमे चोरि करैत अछि। आ तखन जा क' रातिमे चूल्हा पजरैत छै। दोसर दिन 'कृतापराधस्वयमेवशंकते' अर्थात अपन चोरिक अपराधक कारणे घरसँ निकलैमे रामेश्वरकेँ लाज भेलै। से दुनू परानी दोसर गाम जाय कोनो धनिकक सेवा कय निर्वाह करब निश्चित क' अपन गाम छोड़ि दैत अछि। आश्चर्य जे एहि बीच गामक और कोनो दोसर स्वजातीय लोक जिगेसा करबाक लेल नहि अबैत अछि। 'रामेश्वर'क कथानक पल पल बदलैत घटनाक संग एक रेखीय चलैत अछि, जाहि कारणें ने तँ विश्वसनीय परिवेशक निर्माण भ' पबैत अछि, आने पात्रक क्रियाकलाप साँच आ विश्वसनीय बनि पड़ैत अछि।

रामेश्वर नोकरी मांगय जतय जाइत अछि ओतय लोक 'जामिन' (गारेंटर) मंगैत छै। अंतमे ओहि राजक नायब एक शर्त पर सहायता करबाक वचन दैत छै जे एहि बीच गाममे चोरि बहुत होइत छै मुदा चोर पकड़सँ बहार छै— "तैं जौं सम्प्रति एक व्यक्तिकाँ ठीकठाक कय हाकिमक ओहिठाम, ओहि चोरीक असामी बनाय नहि पठाओल जायत, तौं संभव जे एहि बेरि दण्डे मात्र जमींदारकाँ नहि भय, कदाच जमींदारी छीनि लेल जाइन्ह।" (जमीनदारी ककर रहै से उपन्यासमे स्पष्ट नहि अछि) नायब रामेश्वरकेँ कहैत अछि जे ओ अदालैतमे चोरीक अपराध स्वीकार क' लिय। अहाँक पत्नी-पुत्रक देखभालक संग जेलसँ निकलला पर अहाँक आजन्म नोकरीक व्यवस्था कैल जायत। तावत पचास टाका अग्रिम देब। रामेश्वर बात मानि लैत अछि, "पेटक ज्वालासौं कातर मनुष्यसौं किछु नहि होइ छैक।" पत्नी पार्वती मना करैत छथिन जे ब्राह्मण कुलमे जन्म भेल अछि तँ भीख मांगि क' गुजारा क' लेब। मुदा रामेश्वर नायब लग पहुँचि जेल भेजबाक आग्रह करैत अछि। सिपाही सभ पकड़ि लैत अछि। एमहर ओहि राति नायब रामेश्वरक आवास पर जमीनमे किछ सामान नुकेबाक तैयारीमे लागल अछि, जे कहीं रामेश्वर चोरिसँ नकारि जाय तँ ओकरा चोर साबित कैल जा सकय। ओ पार्वतीकेँ किछ दिक्कत नहि हेबाक आश्वासन दैत अछि। कि तखने रामेश्वर सिपाहीसँ हाथ छोड़ा एक बेर पुत्रकेँ देखबाक लेल भागल अबैत अछि। घरमे नायबकेँ देखि ओकरा विश्वास भ' जाइत अछि जे पार्वती पर नायब आशक्त भय हमरा फसा क' अधरतियामे पार्वतीसँ मिलय ल' आयल अछि। आ रामेश्वर पत्नीकेँ सेहो अपराधी मानि सिपाही लग आपस अयबासँ पूर्व बजैत अछि, "जनिका लय कनबाक माया देखबैत छलहुं से हम आयल छी। परंच अहाँक उपपति अहाँक लगमे छथि से देखने सदाक हेतु हम विदा भेलहुँ।" एहि तरहें एकहि पलमे रामेश्वरक विश्वास पत्नी परसँ उठि जाइत छै।

रामेश्वरक पत्नी पार्वती पतिक 'उपपति' शब्दक लांछना सुनि कमलामे जा क कूदि जाइत अछि। नायबकेँ सेहो आब पश्चाताप होइत छै, "हा ! प्रतिष्ठित हिंदूक वंश मध्य जन्म लय कर्तव्यक अनुरोधें पैघ अकर्तव्य कयना गेल। जकर प्रायश्चित कैएक जन्म धरि होएबाक असंभव।" नायब रामेश्वरक पुत्र आनंद मोहनकेँ अपना घर आनि क' अपन बेटे जकाँ शिक्षा दैत अछि। रामेश्वरकेँ बीस वर्षक सजा होइत छै। ब्राह्मण हेबाक कारणें ओ फाँसीसँ बचि जाइत अछि। एमहर एहि चोरकेँ पकड़बाक लेल नायबकेँ नेपाल सरकार प्रधान कचहरीमे पदोन्नति द' ओकर तबादला वीरगंज क' दैत अछि। रस्तामे नायब जय सिंह शिलानाथमे अपन मैथिल गुरुजीसँ भेंट करैत अछि आ अपन अपराधकेँ कहैत अछि। बाबाजीक ओत' नायबकेँ रामेश्वरक पत्नी पार्वती सेहो जिन्दा भेटि जाइत छै। ओ हुनको संग ल' क' वीरगंज अबैत अछि।

एवं प्रकारें बीस वर्ष बीत जाइत अछि। रामेश्वर जेलसँ निकलैत अछि। पत्नीक नफ़रतमे डूबल रामेश्वर बेटाकेँ खोजैत खोजैत फेरसँ डकैती कर' लागैत अछि आ अपन एकटा गैंग बना लैत अछि। ओकर आतँककेँ देखैत सरकार दू सय टाका पुरस्कार घोषित करैत अछि। रामेश्वर नाम आतँकक पर्याय बनि जाइत अछि, "आतँक एतेक बढि गेलैक जे राति कय जे नेना कानैत वा घूमस करैक तकरा डेरयवाले रामेश्वरक नाम महामंत्र भय गेल।" मुदा पार्वती आ आनंद मोहनकेँ किछ पता नहि चललै। रामेश्वर लोकक धन लूटि क' जंगलमे जमीनक नीचाँ जमा क दैत अछि। एहि बीच एकटा डकैतीमे ओ घायल भ' जाइत अछि। एकटा डाक्टर ओकरा अपन घरमे आनि क' जान बचाबैत छै। दोसर बेर रामेश्वर ओहि डाक्टरक जान बचबैत अछि। डॉक्टर सोचैत अछि जे ई डकैत जरूर कोनो प्रतिष्ठित व्यक्ति थिकाह। "एहन कृतज्ञता नीच कुलक मनुष्यसौं होएब असंभव।" ई कथन लेखकक जातीय मानसिकताक सेहो प्रमाण थिक। डॉक्टरकेँ सबटा खिस्सा रामेश्वर कहैत अछि। डॉक्टर ओहि स्त्री पर्वतीक कमलामे डुबि क' बचबाक संग सतीत्व प्रमाण दैत अछि संगहि इहो जे हमहीं अहाँक पुत्र छी— "अहाँक पुत्र अहाँक पयर लग अछि।" डॉक्टर आनंद मोहन अपन डकैत पिता रामेश्वरसँ बीरगंज चलबाक आग्रह करैत अछि। रामेश्वर गेंगक हिसाब-किताब क' भिनसरे अयबाक बात कहैत अछि। बस आब की चाही रामेश्वरकेँ बेटा भेटि गेलैक संगहि पत्नीक सतीत्वक प्रमाण सेहो। चोरिक सामान आपसमे बांटि क' रामेश्वर गैंगकेँ समाप्त क' दैत अछि।

अगिला दिन बीरगंज अबैत अछि रामेश्वर। ओत' पत्नी पार्वती भेटैत छनि। संयोग आ घटना एहि उपन्यासमे पल पल बदलैत अछि। बेटा आनंद मोहनक विवाहक तैयारी चलि रहल छै। नायबक बड़का तरक्की भ' गेल छै। तखनहि शिलानाथ बला ओ मैथिल बाबा सेहो आबि जाइत छथि जे पार्वतीक जान बचेने छलाह। बाबा ई भेद खोलैत छथि जे हम पार्वतीक पिता आ रामेश्वरक ससुर छी। आश्चर्य जे एतेक दिन एहि बाबाजीक आश्रममे रहितो पार्वती अपन पिताकेँ नहि चीन्ह सकलीह। एवं प्रकारें अंत भला तँ सब भला। सब नीके नीक। केओ खलनायक नहि। सभ क्यों नायक। सबटा दोष भाग्यक। रामेश्वरक बेटाक विवाह भेल आ फेर लगले पोता सेहो भेल। पोताकेँ खेलाबैत आ अपन 'सती-साध्वी पार्वतीकेँ पाबि' क' अति प्रसन्न होइत अछि रामेश्वर। जँ सती नहि रहिती पार्वती तँ निश्चिते रामेश्वर फेरोसँ डकैत बनि जाइतय। 'कलावती-लीलावतीक' कथा जकाँ लेखक उपन्यासक अंत एहि रूपें करैत छथि, "जाहि प्रकारें रामेश्वर अंतिम समय सुधी होइत भेलह हमर पाठक मात्रकाँ ओहू सौं विशेष आनंद प्राप्ति होयबाक प्रार्थना जगन्नाटक सूत्रधार श्रीमान् जगदीश्वर सौं कय एहि उपन्यासक इतिश्री अछि।"

रामेश्वरसँ पूर्व जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'सती-सर्वश्व' आ 'निर्दयी-सासु'क 'कथानक' जतेक गस्सल, स्वाभाविक आ सामाजिक यथार्थक भावभूमि पर विकसित भेल अछि ताहि अर्थमे ई उपन्यास बहुत कमजोर आ झुझुआन अछि। 'रामेश्वर'क कथ्यक कोनो सामाजिक वा यथार्थपूर्ण आधार नहि अछि। एकर कोनो सामाजिक परिवेश नहि अछि सिवाय एकर जे रामेश्वर नेपालमे रह' बला ब्राह्मण आ हिन्दू अछि। उपन्यासमे भूख आ अभाव कथानकमे बीज मात्र अछि जे अंकुरितो नहि भ' सकल, ओकर परिपाक अथवा ट्रीटमेंट विश्वसनीय नहि बनि सकल अछि। नि:संदेह कोनो ज्वलंत मुद्दा मात्र उठा देलासँ कोनो रचना उपन्यास आकि कहानी नहि भ' सकैत अछि। भूख पर निबंध सेहो मार्मिक लिखल जा सकैत अछि मुदा ई उपन्यास शुरूक एक-आध प्रसंगक बाद कतौ पाठकक मर्मकेँ नहि छूबि पबैत अछि। आश्चर्य जे रामेश्वरकेँ कतौ मजदूरी नहि भेटैत अछि, आकि ब्राह्मण होयबाक कारण से करबाक आदति नहि छलै, ताहि पर लेखक ध्यान नहि दैत छथि। जाहि समाजमे ब्राह्मणक एहन स्थिति ताहि समाजमे निम्न वर्गक की हाल छल? ताहि दिस उपन्यासकार दृष्टिपातो नहि करैत छथि। ब्राह्मण हेबाक लाभ उठा क' रामेश्वर पुरोहिताय अथवा हाथ देखिकेँ सेहो गुजारा क' सकैत छल। तथापि एहन उपन्यासक पाठक निर्माणमे बड़ पैघ भूमिका होइत छै, मुदा एहि उपन्यासक जे भाषा अछि तकरा देखैत पाठककेँ संस्कृतक ज्ञान आवश्यक छलै। हिन्दीक शुरुआती उपन्यास एहि तरहक घटना प्रधान, जासूसी आ ऐयारी विषय पर लिखल गेल, जकर पाठक निर्माणमे पैघ भूमिका छलै। दुर्भाग्यसँ प्रकाशन आ पाठकक आभावमे मैथिलीमे उपन्यास लिखब सबसँ पैघ चुनौती छल। रामेश्वर उपन्यासमे वेश्याक प्रेमीकेँ मुसलमान बतेबाक पाछाँ लेखकक पूर्वाग्रह सामने अबैत अछि। एहि उपन्यासक सबसँ सबल पक्ष अछि उत्सुकता आ कौतूहल जे अंत धरि बनल रहैत अछि। उपन्यासक भाषा लच्छेदार आ संस्कृतनिष्ठ अछि जे कथा प्रवाहमे सबसँ पैघ बाधा पहुंचाबैत अछि। एहिसँ पहिने जनसीदन जाहि औपन्यसिक भाषाकेँ अपनौने रहथि से बोलचाल रूपक लगीच छल, मुदा जीबछ मिश्रक भाषा पांडित्यपूर्ण आ बनावटी छनि। सामान्य बोलचालमे केओ अपन पत्नीक प्रेमी लेल 'उपपति' शब्दक प्रयोग नहि क' सकैत अछि।

बीसम शताब्दीक प्रारंभमे जाहि समय ई उपन्यास लिखल गेल, ओ समय संक्रमण काल छल। एक दिस नव नव विचार आबि रहल छल दोसर दिस प्राचीन परंपराक रूढ़ि आ संस्कृतक नाम पर कुत्सित परंपराकेँ समाजमे कायम रखबाक प्रयास चलि रहल छल। जाति आ जेंडरक मामिलामे समाजक उच्च वर्ग कोनो ढिलाई देब'क पक्षमे नहि छल। बुद्धिजीवीक एक वर्ग एहनो छल जे अंग्रेजकेँ भारतक हितैषी बुझैत छल किएक तँ ओ इस्लामी शासनसँ भारतकेँ मुक्त दिएलक। एहन स्थितिमे लेखकक भीतर द्वंद्व होयब स्वाभाविक छल। पंडित जीबछ मिश्रमे सेहो ई द्वंद्व देखल जा सकैत अछि। एक दिस ओ 'मैथिल महासभा'मे हर जातिक प्रतिनिधित्व देबाक पक्षधर छलाह तँ दोसर दिस नवीन शिक्षा आ स्त्री शिक्षाक घोर विरोधी। हुनकर

रचना अधिकांश मिथिला मोदमे छपैत छल। मिथिला मिहिरक प्रति ओ कैक ठाम शिकायत करैत छथि। मैथिल-महासभाक कार्यपद्धति आ उद्येश्य पर कैक ठाम ओ तिक्ख टिप्पणी करैत छथि। 'मिथिला-सुधारक उपाय नहिँ' शीर्षक अपन लेखमे ओ लिखैत छथि जे जाहि मैथिल महासभामे ब्राह्मण आ कायस्थक अलावा क्षत्रिय आ वैश्य तकर्कें जगह नहि तत' सभाक बल घटबाक संग-संग विरोधो बढ़त।[19] मिथिला मोदमे 1915 ई.मे छपल 'दोषी के?' शीर्षक उदगारमे ओ मिथिलाक चारू वर्णकेँ 'मैथिल-महासभा'मे शामिल करबाक प्रस्ताव दैत छथि, "आबहु जँ महासभाक धुरंधर संचालकगण हमर विनीत प्रार्थना बुझथि तँ ('गेलो पानि बान्ही आरि') एहि लोकोक्तिक अनुसार शांत भावें अपन दोष मानि मिथिलास्थ आन-आन सभा काँ मैथिल सभामध्य मिलाए चारू वर्णक उक्त सभा कै सकथि तँ अतिहर्ष छल।"[20] जँ जीबछ मिश्रक एहि प्रस्तावकेँ मैथिल महासभा मानि लेने रहितय तँ मैथिलीकेँ स्थान पयबाक लेल एतेक संघर्ष नहि कर' पड़ितै आ 'मैथिल' शब्द जे मात्र ब्राह्मणक पर्याय बनि गेल से मिथिलामे रहनिहार हर जातिक पर्याय बनि जाइतै।

नवीन शिक्षाकेँ पंडित जीबछ मिश्र 'संक्रामक रोग' मानैत छला, मुदा पंडित जनार्दन झा 'जनसीदन' आ पंडित पुण्यानन्द झा संस्कृतक जगह अंगेजी शिक्षाक पक्षधर छलाह। जीबछ मिश्र स्त्री-शिक्षाकेँ सेहो उचित नहि मानैत छला। मिथिला मोदमे स्त्री-शिक्षा पर बुद्धिनाथ झाक लेख (1914 ई.) क 'प्रतिवाद करैत ओ लीखैत छथि जे शिक्षित भेलासँ स्त्री बिगड़ि जेतीह, ओ कुलटा भ' जेतीह– "हम निश्चय कहि सकैत छी जे स्त्री पढ़लासं एक सए मध्य दशो उच्च कुलहुक सदाचारिणी भेटब असंभवे अछि, जे स्थिरचित्तँ अन्वेषण कैलापर अवगत होएत।"[21] जीबछ मिश्र कालिदासक उदहारण दैत कहैत छथि जे 'पढ़ल-लिखल स्त्रीसँ पतिक केहन आदर भेल से मोन पाडू' तैं स्त्रीकेँ शिक्षा माय-पितियाइनसँ आ धार्मिक शिक्षा मात्र भेटबाक चाही जाहिसँ ओ आदर्श-गृहणी' भ' सकथि। पंडिता रमाबाइक उदहारण द' हुनका 'कुलकलंकिनी' कहैत ओ आगाँ लिखैत छथि, "आन देशक (महारष्ट्रकेँ ओ आन देश मानैत छलाह) स्त्रीमध्य जे पहिल पंडिता रमाबाइक उदहारण देब आवश्यक जे ब्राह्मणी भै शिक्षाक बलसँ विधवा भेलहुँ पर एक तेलीसँ पुनर्विवाह कैलन्हिपश्चात एक विधवाश्रम खोलि कतेक प्रतिष्ठितहु घरक स्त्रीकाँ असदाचारिणि कै अपने मोकदमाक झंझाटिमे पड़ि देश त्याग कै विदेश गेलीह। तखनहु जे लीला कैलन्हि से ताहि दिनक समाचारपत्र पढनिहार लोकनिकाँ स्मरण होएतन्हि...।"[22] हुनक एहि कथनमे विधवाक प्रति रूढ़ मान्यताक समर्थन चकित करैत अछि। जे पंडिता रमाबाइ विधवाक लेल स्कूल खोललनि, जे भारतक मेडिकल परीक्षामे स्त्रीक लेल बाट खोलबेलनि। जिनका इंग्लैंडक महारानी एहि लेल देख' चाहैत छलि जे भारतोमे एहन पढ़ल-लिखल स्त्री अछि। तिनका भारतक मर्द-पंडित कतेक परेशान कयलक से आब इतिहासमे दर्ज अछि आ पंडित जीबछ मिश्रक विचार सेहो ओहिसँ अलग नहि छल। अपन पिता पंडित अनंत शास्त्रीसँ शिक्षा अर्जित क' भारतक तत्कालीन पोंगा-पंडित लोकनिकेँ शस्त्रार्थमे परास्त करबाक कारणें भारतक ई पंडित वर्ग पंडिता रमाबाईकेँ एतेक ने परेशान केलक जे अंतत: हुनका इसाई धर्म स्वीकार कर' पड़लनि। तत्कालीन स्थितिकेँ जानबाक लेल 1887 ई.मे प्रकाशित पंडिता रमाबाइक पुस्तक 'द हाइ कास्ट हिन्दू वूमैन' पढ़ल जा सकैत अछि।

स्पष्ट अछि जे मैथिल महासभामे चारू वर्णकेँ स्थान दिएबाक पक्षधर पंडित जीबछ मिश्रक जाति, स्त्री आ विधवाक लेल सोच पारंपरिक रूढ़िपूर्ण पुरुषवादी-जातिवादी मान्यतासँ अलग नहि छलनि। ई द्वंद्व प्रारंभिक अनेक लेखकमे देखल जा सकैत अछि। एहि दृष्टिएँ पंडित जनार्दन झा 'जनसीदन' आ पंडित पुण्यानन्द झा अपन समयसँ बहुत आगाँक सोच राखैत छलाह।

रासबिहारी लाल दासक 'सुमति' : वैवाहिक (कायस्थक) कुरीतिक आख्यान

रासबिहारी लाल दासक उपन्यास 'सुमति'क प्रकाशन 1918 ई.मे भेल छल। अहू उपन्यासमे लेखकक सुधारवादी दृष्टि देखल जा सकैत अछि। 'सुमति'मे लेखक कर्ण कायस्थमे व्याप्त वैवाहिक कुरीति,

फिजूलखर्चीक वर्णन कयने छथि। अहू उपन्यासक पुनर्प्रकाशनक श्रेय डॉ. रामानंद झाकेँ जाइ छनि। 'रमण' जीक अनुसार "रासबिहारी लाल दासक दूटा कृति प्रकाशित अछि। ओ थिक 'मिथिला दर्पण' (1914 ई.) तथा 'सुमति' (1918ई.)। 'मिथिला दर्पण' हिन्दीमे अछि। एकर दू भाग अछि। प्रथम भागमे मिथिलाक प्रकृति, जीव, अन्न आदिक विस्तृत वर्णन अछि। दोसर भागमे मैथिल कर्ण कायस्थक वर्णन संगे कायस्थक उत्पत्ति, चित्रगुप्तजीक बारहों संतानक, विवाह हुनक मूलवास तथा मूलवाससँ कतय-कतय प्रस्थान कैल तकर वर्णन अछि। एकर अतिरिक्त कर्ण कायस्थक अभ्युदय संगहि पंजी प्रथाक अनुसार 278 वंशक पूर्ण विवरण अछि।"[23] रासबिहारी लाल दास पंजी-व्यवस्थाक पोषक रहथि से स्पष्ट अछि।

अंग्रेजी संस्कृतिक दवाबमे भारतमे जे समाज सुधार आन्दोलन भेल तकर परिणामस्वरूप जातीय उत्थान आ जातीय महासभाक गठन भेल। जातिक नाम पर शैक्षिक आ सामाजिक संस्था सभ अस्तित्वमे आयल। एक दिस अंग्रेजी शिक्षाक प्रति आकर्षण, दोसर दिस अपन जातीय अस्मिताकेँ सेहो बचा क' रखबाक कारणें एहि कालक रचनाकारमे द्वंद्व देखल जा सकैत अछि। मधुबनीक भच्छी गामक निवासी रासबिहारी लाल दास अपन उपन्यास 'सुमति'केँ तत्कालीन महाराजा रामेश्वर सिंहकेँ समर्पित कयने छथि जाहिमे ओ महाराजाक प्रति किछ अतिरिक्त नतमस्तक छथि। जखन कि पंडित पुण्यानन्द झा 'मिथिला दर्पण'क भूमिकामे उपन्यास छपेबामे आर्थिक सहयोग लेल बनैलीक राजाकेँ औपचारिक धन्यवाद मात्र दैत छथि। उपन्यास लिखाबाक दू टा उद्द्येश्यक चर्चा लेखक करैत छथि। पहिल मातृभाषा सेवा आ दोसर समाज सेवा, "हमरा सभक आधुनिक सामाजिक दशा परम अधोगति भै प्राप्तिकेँ चललि अछि, तेँ येहि वेरि मिथिले भाषामे समाज सुधार पर कोनो एक उपन्यास रचू, जाहिसँ समाज पर प्रचूर प्रभाव पड़ैक।" उपन्यासक भूमिकामे लेखक उपन्यास विधाक परिभाषा सेहो दैत छथि, "कहि सकैत छी जे समाजरूपी फोनोग्राफक रेकार्ड, समाज रूपी फोटोकमराक लेंस, समाजगत चरित्र प्रर्शनीक पासपोर्ट अथवा गाइड, समाज चरित्रक चित्राधार अर्थात अलबम, समाज सुधार तथा चरित्र गठनक आदर्श तथा आधार उपन्यासे थिक।"[24]

'सुमति' उपन्यासक केँद्रमे विवाहक आडम्बर आ फिजुलखर्ची अछि। पात्रक नाम सब व्यंग्यपरक अछि- उचितवक्ता दास, सहलोला बाबू, कुवेरनिधि, पारसमणि, डपोरशंखनिधि आदि। कथाक शुरुआत सिद्धांतक तैयारीसँ होइत अछि। सिद्धांत-विवाहमे विपुल-खर्च नहि होय, ताहि पर बहस होइत अछि। मुदा नौ सौ टाका सिधांते लिखाइमे खर्च भ जाइत छै। अस्तु, सुमति आ सोनेलालक विवाह होइत होइत दुनू घर दरिद्र भ' जाइत अछि— "पाठक ! सहलोलपन। बहलोलपन, अंध-धुंध अपरिमितापव्ययताक प्रतिफलो राजासँ रंके होइत छैक। अतएव पूर्वोक्त घटना सौं हमरा सभकेँ शिक्षा ग्रहण कर्तव्य थिक जे 'बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि ले। जो बनि आबे सहनमे ताहीमे चित दे।' अस्तु! येहि उपन्यासक नायिका श्रीमती सुमति एक उच्च कुल कामिनी तथा विशेष विदुषी थिकीह तैं आशा कयल जाइत अछि जे भविष्यमे ई अपन सदाचार बुद्धिमत्ता तथा दूरदर्शिता सौं स्वकुलमे एक आदर्श रमणी भै पतिक अध:पतित अवस्था कैंपुन: विभव शालिनी बनाय स्वनाम कैं सार्थक करतीह।" आ से सासुर आबि क' "श्रीमती सुमति आश्रमक प्रत्येक कार्य्यकेँ स्वयं सम्हारय लगलीह। अपन कार्य दक्षता सौं समाज कैं विमुग्ध करय लागलि छलि।" सुमति सासुर आबिते सब किछ सम्हारि लैत अछि। ओ बेटाकेँ अपनेसँ पढ़बैत छलि। एवं प्रकारें घरेमे रहि सुमति एहन प्रबंध करैत अछि जे एतेक उपजा होइत छै जे दोसरे वर्ष सोनेलाल "पुन: चारि-पाँच बिगहा खेत खरीद कयलैन्हि।" सुमतिक बेटा एम.ए.मे पढ़ि रहल अछि। आब पचासो हजारक सुमति मालकिन भ' गेलीह, बेटाक घटक सभ अबैत छनि मुदा सुमति एकटा नियमावली बनने छथि, "जे-जे विचारवान व्यक्ति हमर नियमावलीक पालन करताह तनिकहिं ओहिठाम हम सुशील बाबूक सिधांत-विवाह करयबैन्हि।" सुमतिक सिधांत-विवाह आदिकक वर्णन 57 पृष्ठमे भेल अछि मुदा दुरागमन भेला पर सासुर अयबासँ ल'क' पुत्र उत्पन्न आ ओकरा एम ए धरि पहुँचेबाक आ सुमतिक धनी हेबाक वर्णन मात्र साढ़े पाँच पृष्ठमे समेटि देल गेल अछि। जाहि कारणें उपन्यासमे कोनो चरित्रक समुचित विकास नहि भ' पबैत अछि। सभ पात्रक बदला लेखक अपने बजैत रहैत छथि।

उपन्यासक नायिका 'सुमति' सामान्य पढ़ल-लिखल अछि। मनुस्मृतिसँ ल'क' रामचरित मानस धरि, स्त्रीक जतेक दुर्गुण कहल गेल छै आ जे कर्तव्य निर्धारण कैल गेल छै, तकरा लेखक 'सखी विदुषी हितवादिनी देवी' द्वारा 'सुमति'कैं रटबा दैत छथि, "अपन पति यदि आन्हर, कनाह, कुरूप, कोढ़ि कुकर्मी, क्रोधी, बहीर, बूढ़, लांगड़, लूल्ह तथा मुर्खाधिराजो होथि तथापि हुनक अवहेलना तथा अनादर कोनो अवस्था मध्य कदापि नहि करियैन्हि। मनसा, वाचा कर्मणासँ केवल हुनके सेवा-सुश्रुषा करैत रहियैन्हि। जे पत्नी पतिक अपमान अवज्ञाक आचरण करैत छथि से एहि लौकिकमे आजन्म अनंत यातना तौं भोगितहि छथि किन्तु मरणांतर यमलोकहुमे अनेकानेक क्लेश शहन करक पड़ैत छैन्हि।"[25] भावार्थसँ संतोष नहि भेलनि तँ लेखक मनुस्मृतिक मूल उद्धरण आ मानसक चौपाईक अंश बेस मात्रामे कोट कय अपन एहि कथन सभकैं उपन्यासमे विश्वसनीय बनाबैत छथि। एवंप्रकारें एहि उपन्यासमे लगभग एक दर्जन पृष्ठ तँ पति-पत्नीक कर्तव्य पर खर्च भ' जाइत अछि।

तथापि उपन्यासमे कैक स्थान संवाद बहुत स्वाभाविक बनि पड़ल अछि। जेना समधी ओत'सँ आयल हजाम आ खवासिनक बीच संवाद, "कसमसिया– बेस-होऊ! समधिन कैं डाँड़ सक्कत कयने रहय कहबैन्हि।

मोचन ठाकुर– अय खवासिनी ! देखब ! अप्पन तौं पहिने सक्कत कयने रहू।" प्रसंगानुकूल उपन्यासमे निम्न वर्णक बरियातीक वर्णन अछि जकरा अलगसँ बाहरमे बैसा क' खुआयल जाइत अछि। हुनका सभक भोजन पर सेहो लेखकक कुदृष्टि छनि, "बाहरमे जे नीच वर्णक बरियाती भोजन करैत अछि तकर कथे कोन कहू। ओ सभ तौं अपन-अपन विशाल अक्खा रूपी उदरमे नाना विधिक भोज्य पदार्थकैं तहिआय-तहिआय ठूसि रहल अछि और परसनिहार कैं नाकों दंभ कयने छैन्ह।" अंतमे ई सलाह देल जाइत छै जे मर्यादाक भोजक लेल 'नीच वर्णक बरियातीक' लेल दू साँझक सीधा एक्के बेर तौलबा देल जाय "नहि तौं जेहो किछु सरंजाम अवशेष अछि तकरो ई सभ टिड्डिये जकाँ चाटि जाएत।" तत्कालीन समाजमे निम्न जातिक लेल जे उच्च जातिक मानसिकता रहै तकरा उपरोक्त उद्धरणसँ बूझल जा सकैत अछि।

'सुमति' उपन्यासक सबसँ पैघ कमजोरी एकर निबंध शैली आ अलंकारिक भाषा थिक। जनार्दन झा 'जनसीदन' आ पुण्यानन्द झाक उपन्यासमे जे सहज सम्प्रेषणीय भाषाक प्रयोग भेल अछि से प्रारंभिक कालक आन उपन्यासमे नहि भेटैत अछि। रासबिहारी लाल दास सामान्य पढ़ल छलाह मुदा ओ अपन विद्वत्ता देखेबाक कोनो प्रसंगकैं नहि छोड़ैत छथि। एकर पाछाँ लेखककैं तत्कालीन पंडित समाजक बीच स्वयंकैं स्वीकृति दिएबाक लालसा भ' सकैत होनि। रामचरित मानससँ ओ एतेक ने प्रभावित छथि जे हर एक-दू पैराग्राफक बाद एकटा दोहा चौपाइ रखिए दैत छथि। उपन्यासमे सदिखन लेखक स्वंय उपस्थित रहैत छथि आ पाठक के आँखिक देखल हाल अपने बताबैत रहैत छथि, तैं पात्र सभकैं आपसमे बतियेबाक अवसरे नहि भेटैत छै। उपन्यासमे तत्सम शब्दक बीच-बीचमे जँ मैथिलीक कारक आ सहायक क्रिया नहि अबै तँ पाठककैं 'सुमति'कैं संस्कृतक उपन्यास हेबाक भ्रम भ' सकैत छै– "स्त्री जातिक सर्वालंकाराधिपति पतिये होइत छथि, जखन पति प्रस्तुत नहि तखन प्रणय ककर? जे स्त्री पति वियोगिनी छथि तनिका जीवनक निर्वाह केवल भस्मभरिता-योगिनी वा ब्रह्मलारिणिये भै करक पड़ै छैन्हि। विधवाक हेतु शास्त्रक आदेश छैन्ह जे ओ श्वेतवस्त्र धारण करथि। कोनो वाहन पर विचरथि नहि। ऊँच शय्या अर्थात पलंग, खाटादि पर शयन नहि करथि। काजर-उबटन, अतर-फुलेल, ताम्बूलादि अर्थात सौभाग्यजनक कोनो पदार्थक व्यवहार नहि करथि, शिरमुंडित भेल रहथि।" पात्रानुकूल हिन्दी संवादक प्रयोग प्रारंभिक लगभग प्रत्येक उपन्यासकार करैत छथि से अहू उपन्यासमे देखल जा सकैत अछि।

स्त्रीकैं मनुष्यक दर्जा देबाक आह्वान : 'मनुष्यक मोल'(1924)

गंगानंद सिंह (1898-1970)क तीनटा गल्प रचना- मनुष्यक मोल, विवाह आ आगिलही प्रकाशित अछि जाहिमे उपन्यासक तत्व भेटैत अछि। गंगानन्द सिंह स्त्रीक प्रति सुधारवादी आ मानवीय दृष्टि रखैत छलाह। रूढ़िक विरोधक संग आधुनिक शिक्षाक प्रति समर्थन हुनक रचनामे भेटैत अछि। ओ मूलत: तर्कवादी लेखक छलाह जाहि कारणे

जाति आ जेंडरक संदर्भमे ओ प्रश्न ठाढ़ करैत छथि। 'मनुष्यक मोल' (1924)मे टाका ल'क' बेटी बेचबाक मैथिल ब्राह्मणमे व्याप्त तत्कालीन कुप्रथा पर प्रहार कैल गेल अछि। सोलह वर्षीय हर्षनाथक विवाह रहिकाक बेचन मिश्रक आठ वर्षीय मनोरमाक संग भेल। कर्ज ल' क' दू हजार टाका बेचन मिश्रकेँ देल गेल। हर्षनाथक विधवा माय विवाहक चारिए वर्षक बाद मरि गेलखिन। जमीन सभ ऋणक बदला सेठ दल्लूचंद लिखबा लेलक। हर्षनाथ मनोरमाकेँ नहिरामे राखि कलकत्ता नोकरी कर' चलि गेल। एमहर बेटी-बेचाबा बेचन मिश्रकेँ बेटीक दू-कर भोजन महग बुझाइत छै। ओ सदिखन बेटीकेँ अपमानित करैत रहैत अछि– "मनोरमा जाहि दिनसं अपना नैहर आयलि छथि, ताहि दिनसं प्राय: एको दिन एहन नहि बितैत छैन्ह, जाहिमे हुनका अपमानित नहि होम पड़ैत छैन्ह।" अपन विवाहित बेटीकेँ लालची बाप कतेक क्रूरतापूर्वक प्रताड़ित करैत अछि तकर बहुत मार्मिक चित्रण 'मनुष्यक मोल'मे भेल अछि– "बेचन मिश्र झट् केस पकड़ि आङनमे खसाय हुनका खूब लतियाय फज्झति करैत घरसं बाहर कय देलथिन्ह। मनोरमाक एखनुका मोनक हाल पाठक अनुमान कय लेथु। लेखनीमे ई शक्ति नहि जे तकर वर्णन करे।" अंतत: मनोरमा आत्महत्या क' लैत अछि। हर्षनाथ नोकरी करैत शेयर खरीदैत अछि जाहिमे ओकरा बीस हजार टाका नफा होइत छै। ओ खुशीसँ गाम अबैत अछि ता धरि मनोरमाक चिता शांत भ' जाइत छै। हर्षनाथ अपन सेठ सँ ओहि पैसासँ रहिका गाममे पत्नीक आत्महत्या स्थल पर एकटा स्कूल खोलबाक आग्रह करैत अछि आ अपने साधु बनि जाइत अछि। किछु वर्षक बाद हर्षनाथ नामी साधु भ' जाइत अछि। रहिका आबि ओहि मिडिल स्कूलकेँ देखि ओकरा आँखिसँ नोर खसि पड़लै। ओ लोककेँ अपन असली परिचय दैत अछि आ कहैत अछि, "ई स्कूल यद्यपि बारम्बार ओकर स्मरण करबितहुँ अछि, अहाँ लोकनि मनुष्यक-मोल करब नहि बंद करैत जाइत छी। एहिसँ बढि कय कनबाक और कोन विषय होयत" कथाक अंत एहि सुखान्तक संग होइत अछि जे हर्षनाथक प्रभावमे आबि "लोक कन्या बिक्रयपर सोचय लागल। तकर फलस्वरूप एहि बेरिसं सौराठमे रुपैयाक गननाइ एकदम बंद भय गेल।" नि:संदेह लेखक कथाक अंत अपन आदर्शक अनुरूप करैत छथि जे हुनक सुधारवादी दृष्टिक परिचायक थिक। जाहि समाजमे एखनो स्कूल-अस्पतालसँ पैघ महत्त्व मन्दिर-मस्जिद आ भोज-भातक हो तत' हर्षनाथ द्वारा स्कूल खोलब लेखकीय आधुनिक दृष्टिक प्रमाण थिक।

मनुष्यक-मोलमे पुरुष प्रधान समाजमे स्त्रीक मोलकेँ रेखांकित कैल गेल अछि तँ 'विवाह'मे बाल-विवाहक दुष्परिणाम केँ। कृष्णकांत बाल-विवाहक बिरोधी छल मुदा समाजक सामने झुकैत ओकरा स्वयं बाल विवाह कर' पड़लै। कम उम्रमे माँ बनबाक कारणें रमाक पुत्र जन्मसँ पहिनहि मरि गेलै। रमाकेँ सताब'मे माहिर सासु ओकरा डॉक्टर लग नहि ल' जाइत छै। अंतत: साल भारिक भीतर रमा सेहो चलि बसल। कृष्णकांत एहि सोगमे एकटा चिट्ठी लिखि आत्महत्या क' लैत अछि। तहिना 'अगिलाही'मे एकटा छोट बच्चीसँ जाहि तरहें जाति आ अस्पृश्यता पर प्रश्चिन्ह ठाढ़ कैल गेल अछि तकरा देखैत कहल जा सकैत अछि जे गंगानंद सिंह अपन समय आ समाजकेँ तटस्थ पूर्वक आधुनिक नजरिसँ देखबाक प्रयास कयलनि। अगिलहीकेँ लेखक अपूर्ण व्यक्तिचित्र कहने छथि मुदा एहिमे कथोपकथन बहुत स्वाभाविक बनि पड़ल अछि आ एत' मासूमियतसँ जाति, अस्पृश्यता आ शास्त्र पर प्रश्नचिन्ह ठाढ़ भ' जाइत अछि–

अगिलही : तँ, राड़ ब्राह्मण नहि होइत अछि?
गुलाब मामा : नहि!
अगिलही : तँ, उपनयनसँ पहिने लोक राड़ कोना रहै अछि?
गुलाब मामा : छूति-छातक विचार उपनयनसँ पहिने नहि रहै छैक। पछाति भय जाइ छैक।
अगिलही : से कियै?
गुलाब मामा : ब्राह्मण होई अछि, तैं।
अगिलही : तँ, ब्राह्मण मनचनमाक छुइलासँ छूअल जायत?
अगिलही : नै मामा, कहबे करू, सोहारी किये नहि छूतै छैक? और भात किये?"

कुमार गंगानंद सिंहक तीनू गल्पकेँ रामानंद झा 'रमण' कथा मनैत 'मैथिली कथाक धाप'मे संकलित केने छथि। अगिलही (1935 ई.)केँ स्वयं लेखक अपूर्ण व्यक्तिचित्र कहने छथि। मनुष्यक मोलक कथानकमे औपन्यासिक बीज छल मुदा तकर विकास लेल लेखकीय धैर्यक अभाव अछि। तथापि गंगानंद सिंह जाहि विषयकेँ उठबैत छथि आ जाहि तरहें स्त्री-मुद्दा पर प्रश्न ठाढ़ क' मिथिलाक जमकल परंपरामे गति आनबाक प्रयास करैत छथि से जनसीदनक परंपराकेँ आगाँ बढाबैत अछि।

तत्कालीन समाजकक दर्पण पुण्यानन्द झाक 'मिथिला दर्पण' (1925)

मैथिलीक आरंभिक उपन्यासकेँ ध्यानसँ अवलोकन केलाक बाद स्पष्ट भ' जाइत अछि जे जनार्दन झा 'जनसीदन'क बाद एहि विधाकेँ पूर्ण रूपेंण व्यवस्थित करबाक श्रेय 'मिथिला दर्पण'क लेखक पंडित पुण्यानन्द झा बी.ए. (ग्राम, जहांनपुर, पूर्णिया निवासी)केँ जाइत छनि। 'मिथिला दर्पण'क लेखन काल 1914 ई. छै एहि अर्थमे ई उपन्यास जखन लिखल गेल तखन मैथिलीमे कोनो उपन्यास लेखनक परंपरा नहि छलैक। जनसीदन आ पुण्यानन्द दुनू गोटेक सामने बंगलाक औपन्यसिक परंपरा रहनि। डॉ. जयकांत मिश्र अपन मैथिली साहित्यिक इतिहासमे 'मिथिला दर्पण' उपन्यासक मादे लिखने छथि जे 'एकर कथाक ट्रीटमेंटमे बंगलाक प्रभाव छै मुदा विषय-वस्तु शुद्ध मैथिलीक छै।' डॉ. रमानंद झा 'रमण'क संपादनमे एहि अनुपलब्ध उपन्यासक दोसर संस्करण 2001 ई.मे अखियासल प्रकाशन, लालगंज, मधुबनीसँ प्रकाशित भेल अछि। डॉ. रमण अपन सुचिंतित भूमिकामे एहि उपन्यासक एतिहासिक महत्त्वकेँ निरुपित कयने छथि। अपन कलेवरमे सेहो ई उपन्यास आरंभिक कालक आन उपन्यासक अपेक्षा पैघ, लगभग सौ पृष्ठसँ बेसी अछि। एकर कथानकमे सेहो विविधता छै। मुख्य कथा संगे गौण कथाक समावेश सेहो कयल गेल अछि। दोसर संस्करणमे पंडित गोविन्द झा आ प्रो. आनंद मिश्रक भूमिका सेहो अछि। पंडित गोविन्द झा 'मिथिला दर्पण' पर विचार करैत मैथिलीक प्रारंभिक उपन्यास 'माधवी-माध'वसँ 'चंद्रग्रहण' धरिक चर्चा करैत छथि मुदा जनार्दन झा 'जनसीदन'क नामोल्लेखो नहि करैत छथि। 'रामेश्वर'केँ मैथिलीक प्रथम उपन्यास घोषित कारबाक हड़बड़ीमे एहिसँ पूर्व प्रकाशित 'जनसीदन'क उपन्यास 'सती-सर्वश्व' आ 'निर्दयी सासुकर्कँ ओ सायास अनदेखा करैत छथि? एतेक तँ अवश्ये जे 'निर्दयी सासु' आ 'मिथिला दर्पण' दुनू उपन्यास जीबछ मिश्रक उपन्यास 'रामेश्वर'सँ एक वर्ष उम्रमे (जन्मक अनुसार) पैघ अछि। संगहि इहो उल्लेखनीय जे एहि दुनू उपन्यासक तुलनामे 'रामेश्वर'केँ ओकर घटना-बहुलता आ भाषाक गरिष्ठता कमजोर आ अपठनीय बना दैत छैक। तथापि पंडित गोविन्द झा 'मिथिला-दर्पण' पर सूक्ति शैलीमे अपन जे मतव्य रखैत छथि से हुनक आलोचकीय विवेकक परिचायक थिक। ओ उचिते कहैत छथि जे 'मिथिला दर्पण' 'सुधारक संक्रमण कालक' कथा थिक। आब एहि उपन्यासक प्रकाशनसँ एकर पुनर्मूल्यांकन शुरू भ' गेल अछि। डॉ. 'रमण' अपन सम्पादकीयमे लिखैत छथि जे एखन धरिक इतिहासकार आ आलोचक एहि उपन्यासक मादे डॉ. जयकांत मिश्रक उक्तिकेँ दोहराबैत रहलाह। किछ विद्वान् तँ जयकांत मिश्रक टिप्पणीकेँ अपन टिप्पणी बना लेलनि।

मैथिली साहित्यक भंडारकेँ संमृद्धि करबाक उद्येश्यसँ लिखल गेल एहि उपन्यासक संक्षिप्त भूमिकामे पुण्यानन्द झा लिखने छथि, "सन 1914 ई.मे जखन कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीकाँ स्थान देबाक हेतु चेष्टा भए रहल छल, तखन हिन्दी संसार दिशिसं मैथिलीक ऊपर अनेक आक्रमण भेल छल। ओहि आक्रमणक उत्तरमे कलकतास्थ मैथिल नामसँ 'मिथिला मिहिर'मे हमर लेख छपैत छल। ताहि समय हमरालोकनि कैक गोटे प्रतिज्ञा कयने छलहु जे मैथिली भाषामे एक-एकटा पुस्तक लीखब हम अपन प्रतिज्ञाक पूर्ति ओही वर्ष 'मिथिला दर्पण' लिखि कए प्रस्तुत कयने छलहूँ, परन्तु अर्थाभावात ओ अद्यावधि अप्रकाशिते छल।"[26] एहि उपन्यासक प्रकाशन 1924मे बनैली राजाक आर्थिक सहयोगसँ संभव भ' सकल। ताधारि एकर दोसरो भाग लेखक लिखि चुकल छलाह मुदा ओ पाण्डुलिपि प्रकाशनक अभावमे नहि छपि सकल।

एकर दोसर खंडक प्रकाशन मिथिला मिहिरमे किएक नहि भ' सकल आकि केओ दानदाता किएक नहि भेटल से शोधक विषय थिक। अस्तु, पुण्यानन्द झा लग अपन 'किस्सागोई' आ औपन्यासिक शिल्प छलनि संगहि समाजकेँ देखबाक एकटा सुधारवादी आ प्रगतिशील दृष्टि सेहो छनि। 'मिथिला दर्पण'क मुख्यकथा भने ब्राह्मण जातिक वैवाहिक समस्या छै मुदा गौण रुपेँ निम्न वर्ग आ किछ आन समस्या सभ सेहो एहि मिथिलाक दर्पणमे देखा पड़ैत अछि। लेखक अपन दर्पणकेँ तटस्थ रुपेँ प्रमाणिक बनेबाक चेष्टा कयने छथि।

कथाक विकास

'मिथिला दर्पण'क शुरूमे तीन कथा सामानांतर चलैत अछि जकर सन्दर्भ मध्यांतरक बाद एक-दोसरासँ जुड़ैत जाइत छै। ई उपन्यास छोट-छोट तैंतीस परिच्छेदमे बाँटल गेल अछि। जाहिमे अधिकांशक शीर्षक देल गेल अछि। किछ परिच्छेद शीर्षक विहीन सेहो अछि। कथाक केँद्रमे संतलाल झाक तेसर बेटी, दस वर्षीय योगमायाक विवाहक लेल वरक खोज आ ओकर विवाह अछि। उच्च कुलीन ब्राह्मण संतलाल दूटा कन्यादान क' लेने छथि मुदा कोनो बेटी सुखी नहि। तैं आब एहि तेसर बेटीक विवाहक लेल ओ बहुत चिंतित छथि आ अपनासँ न्यून ब्राह्मण अंग्रेजी पढ़निहार योगानंद झा संग योगमायाक कथा कर' चाहैत छथि। मुदा उपन्यासक आरंभ बाप-दादाक जथा बेचि फुटानी कर' बला मङनी झाक भंगपीबा मंडलीक क्रिया-कलापसँ होइत अछि, जकर शीर्षक देल गेल अछि– 'वसंत ऋतु तथा भङपीबा मंडली'। मङनी झाक स्थिति आब ई छै जे एक्कोटा दोकानदार नून-तेल उधार दैक लेल तैयार नहि। नोकरकेँ बेगार खटाब' बला मङनी झा पाँजि बला ब्राह्मण अछि आ पत्नीकेँ सदिखन पीटैत आ सतबैत रहैत अछि। बादमे पाठककेँ ज्ञात होइत छै जे मङनी झा संतलाल झाक जमाय अछि। मङनी एतेक लोकक कर्ज ल' लेने छल जे एकटा सेठ मोकदमा क' दैत छै आ ओकरा एक सालक सजा भ' जाइत छै। संतलाल अपन बेटीकेँ ल' क' अपन गाम करणपुर आबि जाइत छथि।

एमहर गामक किछ लोक सभ काशी धर्मयात्रा कर' लेल जाइत अछि जत' संतलालक भागिन राखी झा हैजाक चपेटमे मरि जाइत अछि। ओकर अंतिम संस्कार आदिमे ओत' अंग्रेजी पढ़' वला योगानंद झा बड़ सहायता करैत छथि। जखने पता चलैत छै जे हैजासँ मृतक मरल अछि सभटा संस्कृत पढ़' बला मैथिल ब्राह्मण सभ ओकर दाह-संस्कारमे जायसँ मना क' दैत छै। मात्र एक व्यक्ति संग दैत छैक। योगानंदक एहि सेवा भावसँ मुग्ध भ' संतलालक परिवार कृतज्ञताक संग संग ओकरा संग योगमायाक कन्यादान कराब' ले तैयार भ' जाइत अछि। मुदा योगानंद विवाह करइए नहि चाहैत अछि। फेर गर्मी छुट्टीमे योगानंद गाम अबैत अछि। टेकन झा सहित सब लोक विवाहक लेल जिद करैत छनि। कैक राति अपने आ मित्र वर्ग संग बातचीत केलाक बाद योगानंद दस वर्षीय योगमाया संग विवाह कर' लेल तैयार भ' जाइत अछि। ओ सोचैत अछि जे पाँच वर्षक बाद जखन हम बी.ए. बी.एल. पास कइयो लेब तँ हमारा लेल अठारह वर्षक कन्या कत' भेटती। एवं प्रकारें सभा जाइत अछि योगानंद आ योगमाया संगे ओकर विवाह भ' जाइत छैक। उपन्यासक अंत लेखक एहि शब्दें करैत छथि, "पाठक वृन्द! विवाहक दुइ दिन पूर्वसँ ई दश दिनुक भीतर योगानंद बाबू की सभ देखलन्हि, की सभ सुनलैन्हि विधविधानसँ की सभ अनुभव कयलन्हि तथा आगाँ की सभ करबाक अभिप्राय करै छथि। इत्यादि विषय यदि जनबाक इच्छा हो, तँ द्वितीय भाग,मे देखल जाय।"

स्पष्ट अछि जे पुण्यानन्द झा मैथिल ब्राह्मणक वैवाहिक कुरितिकेँ देखार करक संग संग सामाजिक यथार्थकेँ सेहो रोचक ढंगसँ पाठककेँ समक्ष रखबाक उद्द्येश्यक संग एकर दोसर भाग लिखलानि मुदा से प्रकाशनसँ पुर्वाहि कालकवलित भ' गेल। ई मोन राखक थिक जे आरंभिक कालमे उपन्यास पढ़ब रूढ़िवादी सभक नजरिमे 'आवारापन' आ 'बिगड़वाक' लक्षण छल। मुदा मिथिलामे सेहो उपन्यासक आगमन भ' गेल छल। बादमे आबि क' मिथिला क्षेत्रक तीन टा उपन्यास जे अखिल भारतीय स्तर पर धूम मचेलक से हरिमोहन झाक 'कन्यादान', 'यात्री'क 'बलचनमा' आ फणीश्वर नाथ 'रेणु'क 'मैला आँचल' छल। ई अनायास नहि

छल जे डॉ. प्रशान्तक प्रेममे डूबल 'मैला आँचल' उपन्यासक नायिका कमली विषवृक्ष, इन्दिरा, श्रीकांत, देवदासक अतिरिक्त जे उपन्यास पढैत अछि से हरिमोहन बाबूक 'कन्यादान'। कहबाक तात्पर्य जे उपन्यासमे 'किस्सागोई' अर्थात कहानी कहबाक जे कला 'कन्यादान' आ 'मैला आँचल'मे भेटैत अछि तकर आरंभिक रूप 'मिथिला दर्पण'मे देखल जा सकैत अछि। मिथिला दर्पणमे करुणा छै, हास्य-व्यंग्य छै, वीभत्स दृश्यक संग सामाजिक शोषणक सेहो प्रतिबिम्ब छै।

प्राचीनता आ अधुनिकताक द्वंद्व 'दर्पण'मे विस्तारसँ चित्रित भेल अछि। 'मैथिल महासभा'केँ एहि उपन्यासमे एकटा सुधारवादी मंचक रुपेँ देखाओल गेल अछि जकर प्रवक्ता टेकन झा छथि। टेकन झाक विचार सुधारवादी छनि। अपन बेटाक मूड़नमे ओ कोनो लाम-काफ नहि करैत छथि। अपन मौसा संतलाल झाकेँ ओ महासभाक गतिविधिक जानकारी दैत छथि। संगहि अहू लेल तैयार करैत छथि जे आजुक सन्दर्भमे पंजी-व्यवस्थाकेँ अप्रासंगिक मानबाक चाही, "हरिसिंह कोनो बूड़ि नहि रहथि, परंच ओ परम बुद्धिमान रहथि। आ ओही समयक गुण-कर्मानुसार जाति विभाग बनौने रहथि। जे लोकनि वेद पढैत रहथि तनिका लोकनिकेँ श्रोत्रीय पदवी भेटैन्ह, जकर अपभ्रंस आब सोति भए गेल अछि। जनिका वेद पढ़बाक योग्यता रहैन्ह, से योग भेलाह। एहिना क्रमेक्रमे जाति विभाजन कैने रहथि। तखन एकटा बुझू, एक गोटे केओ पहलवान अछि, ओकर बेटा जँ खरकिट्टी रोगाह रहैक तँ की ओ पहलवान कहौतैक? मानि लीय एखन हरिसिंह देव रहितथि तँ कोन तरहें जाति विभाजन करितथि...?" फेर दोसर ठाम टेकन झा कहैत छथि, "यदि हरसिंह देव एहि समयमे रहितथि तँ जाति पांतिक व्यवस्थे दोसर कयने रहितथि। आइ काल्हि उन्नतिक कथा कोन? पैघ-पैघ लोक रुपैयाक लोभें नीचाँ उतरैत गेलाह जे पंजीबद्ध कहौलन्हि। एहिमे ओ अपन प्रतिष्ठा बुझै छथि।"

उपन्यासमे लेखक अपन मोनक विचार टेकन झा आ योगानंद झाक माध्यमसँ अभिव्यक्त करैत छथि। टेकन झा स्वजातीय प्रेम-विवाहकेँ सेहो अधलाह नहि मानैत छथि मुदा से वर-कनियाकेँ 'मेच्योर' हेबाक चाही, "यदि वर वा कन्या विद्वान् वा विदुषी रहथि, अपन हानि लाभकेँ नीक जकाँ बुझैत रहथि, तखन यदि अपन इच्छासँ विवाह करथि तँ कोनो क्षति नहि।" पुण्यानन्द झा नीक-अधलाहक विचार आ व्यावहारिकता पर बेस जोर दैत छथि। ओ एहि बातक आलोचना करैत छथि जे लोभवश बूढ़ मरणासन्न वरकेँ उठा आनब आ 'कन्याकेँ सौतिनक कंटक जालमे खसा देब कोना उचित भेल? टेकन झाक मुहें ओ अर्थकरी आ यथार्थपरक शिक्षाकेँ महत्त्व दैत छथि आने 'धर्म आधारित संस्कृत' शिक्षाकेँ जत' "चारि अक्षर ज्योतिष किंवा न्याय पढ़ि पोथी पतरा नेने एम्हरसँ ओम्हर घुमैत रहै छथि। पुनश्चरण करैत रहै छथि। हुनका लोकनिक हाल कहाँ धरि कहू।" असलमे संतलाल झाक पत्नीक मनाब छनि जे अंग्रेजी पढने लोग क्रिश्चन बनि जाइत छै, विदेश चलि जाइत छै। आ योगानंद न्यून ब्राह्मण हेबाक संग संग अंग्रेजी सेहो पढ़ैत छथि फेर ई कथा कोना करी? टेकन झा अंग्रेजी शिक्षाक गुणगान करैत कहैत छथि, "अंगरेजीवालामे बहुत गुण। चारू दिशक विषय बूझल रहै छैन्ह। बुद्धि मांजल रहै छैन्ह। अपन बाहुबलपर बेसी निर्भर रहै छथि। आओर दोसर आइ काल्हि अंगरेजिए राज्य छैक। अंग्रेजी अर्थ करी विद्या सेहो थिक।" टेकन झाक इहो मानव छनि जे 'धनादिक अधिक भाग विद्या प्रचारमे खर्च हेबाक चाही' नेकि भोज-भातक देखौआ मे।

स्त्रीक जीवनक यथार्थपूर्ण चित्रण

'मिथिला दर्पण'मे मिथिलाक स्त्रीक यथार्थपूर्ण चित्र खिचबाक प्रयास भेल अछि। मङनी झा अपन पत्नीकेँ एतेक सताबैत अछि तैयो ओ बेचारी बापक 'मोचरल-गन्हाइत' पाग राखक लेल सब किछ सहि जाइत अछि। ओकरा सपनामे बेर बेर छाती पर चढ़ि क ठोंठ मोकनिहार पति मङनीक आलावा के भ' सकैत छै? तथापि ओ पिटाइ खाइयो क' जवाब दैसँ पाछाँ नहि हटैत अछि। योगमायाक उम्र दस वर्षक छै। ओकर विवाहक लेल पिता संतलाल जतेक चिंतित छथि ओहिसँ बेसी स्वयं योग अछि। योगमाया सामान्य पढ़ल-लिखल अछि। दिन-राति भगवतीकेँ ओ नव-नव भजन सुनबैत रहैत अछि जे मनोनुकूल वर भेटि जाय। एहि उपन्यासक सभ पात्र

सपना देखैत अछि, योगमाया सेहो देखैत अछि। मुदा ओकर सखी अंधविश्वासक बदला सपनाक वैज्ञानिक कारण बताबैत छै, "जे जे बात अहाँ दिनकेँ मनमे करू, वैह बात रातियोकेँ सपनायब।" दस वर्षीय योग अपन सखी संगे जे स्त्रीक तुलना पुरुषसँ करैत अछि से स्त्रीक प्रति लेखकीय चेतना आ संवेदनशीलताक परिचायक थिक, "हमारा लोकनि पुरुष रहितहुँ तँ नीक छल। अपन इच्छासँ कतहु ताकि क (विवाह) करितहुं।" एतबहि नहि बेटा-बेटीक प्रति सामाजिक दुरंगा मानसिकताक लेल सेहो लेखक किशोर युवतीक मुंहें प्रतिरोध दर्ज कराबैत छथि। जाहि समयमे पंडित जीबछ मिश्र स्त्री-शिक्षाक विरोध अही लेल क' रहल छलाह कि ओ पतिसँ सवाल-जवाब करत, ओही समयमे पंडित पुण्यानन्द झा बेटा-बेटीक प्रति पितृसत्ताक भेदभावकेँ खुलिकेँ उघाड़ करैत छथि। अपन समयक विरोधाभासकेँ पकड़ैत जे लेखक भविष्यक समाजकेँ थाहि लैत अछि, वैह परंपराक विकासमे मीलक पाथर साबित होइत अछि। दर्पणक निम्न संवादकेँ देखल जाय–

चंपा : 'हँ से किएक नहि, माय बापकेँ जतेक बेटाक खातिर होइ छैक, ततेक बेटीक होइ छैक? बेटा चाहे दश बेर विवाह कए सकै, केश पाकल, मुंहमे दांत नहि रहैक तथापि विवाह भए सकै छैक'।

योग : 'छिह: छिह: ई कोन कार्य करै जाइ छथि। सात जन्म जन्मी तथापि एहन काज नहि करी।

चम्पा : करब से की पुरुष थिकहूँ ?

योग : (लज्जित भए कय थोड़ेक काल चुप रहि पुन: बजलीह)– 'तँ, अहाँक विचार जे बुढिया स्त्रीगनकेँ छौंड़ा वर होइक'?

चम्पा : 'ई से के कहै अछि? परन्तु, छौड़ीकेँ बुढ़बा वर होइक ई कोन न्याय थिक? जे हमरा लोकनिक कोनो वश नहि चलै अछि तें ने? हाय! हाय! देखू ने केतकीक कोन दशा भेलैन्ह? बेचारीक कानबे ठाँव नहि। हाय! हाय! झखैत बेचारीक ठठरी मात्र रहि गेल छैन्ह'।"[27]

उपन्यासमे केतकीक कथा सेहो योगमाया आ ओकर सखी चंपाक बीच चलैत रहैत अछि जे कोना ओकर बाप जीवन भरि बेटी बेचियो क' दरिद्रे रहि गेल। एत' जे चंपा द्वारा 'हमरा लोकनिक कोनो वश नहि चलबाक' बात कहल गेल अछि ताहिसँ तत्कालीन स्त्रीक लाचारी आ बेवसी नीक जकाँ प्रतिविम्बित होइत अछि। अगाँ चलि क' केतकीक बेमेल विवाहक प्रसंगमे चंपा आ योगमायाक बीच जे चर्चा होइत अछि से क्रमश: कठोर होइत जाइत अछि– 'हाय! हाय! जे बड़ पंडित सैह बड़ बूड़ि। देखू तँ कथीले बेचारीकेँ दुरि कैलथिन्ह... ओ बुढ़बे विवाह कैलक की लुचपनी कैलक?'

मैथिलीक आरंभिक उपन्यासमे जतेक 'दर्पण'क स्त्री पात्र बजै अछि ततेक आन उपन्यासमे नहि। जीबछ मिश्र आ रासबिहारी लाल दास तँ स्त्रीपात्रकेँ बहुत कम बाज' दैत छथि। जा धरि लेखक स्त्री पात्रक भीतर तटस्थ भावें नहि प्रवेश करत, ता धरि हुनक स्त्री पात्र कोना बाजि सकैत अछि? जनसीदन परिवेश निर्मित क' स्त्रीक कारुणिक अवस्थाकेँ सामने आनैत छथि, मुदा पुण्यानन्द झा स्त्रीएक मुँहें ओकर मोनक विकार आ स्वप्नकेँ आकार दैत छथि। एहि सन्दर्भमे किछ और उदाहरण द्रष्टव्य अछि, "हमारा लोकनि काँ की? बाजार लगबे करतैक, गोटेक भेढ़वा, टेढ़सिंघा औताह, हमारा लोकनिक हाथ पकड़ि लेताह, बस भेल विवाह। ...हमरा लोकनिक कोन दोष? इहो तँ माइये- बापक दोष। योगक पिता पढ़ौलखिन्ह तें ने योग पढ़लैन्ह कि हुनक शील स्वाभाव सभकाँ ज्ञात भेलैन्ह। हमरा लोकनिकाँ तँ सभ कलंकी-ई, हमरहु सभकेँ क्यों पढ़बिते।" बेटी द्वारा अपन दुर्दशाक लेल माय-बापकेँ स्पष्ट रुपेँ जिम्मेवार मानबाक मैथिली साहित्यमे ई पहिल संदर्भ थिक। 10 वर्षीय योगमायाकेँ बूढ़ वर नहि भेलै, से देखि ओकर सखी सभ प्रसन्न छै। संगहि ओकर मोनक टीस सेहो बहार आबि जाइत छै। स्त्री लोकनिक दोसराक विवाहमे प्रसन्न भ' गीत गयबाक खुशी पर सेहो लेखक

मनोवैज्ञानिक रुपेँ विचार करैत छथि। पुरुष तँ बाहर सिनेमा तमाशा देखि क' मनोरंजन क' लैत अछि मुदा स्त्री लोकनि सतत कठपुतली जकाँ, कहियो किछु देखबाक सुनबाक अवसर नहि। स्त्री-जीवनकेँ लेखक एकटा समाज मनोविज्ञानीक दृष्टिसँ देखैत छथि, "हुनकालोकनि सतत कठपुतली जकाँ बंद, कहियो किछु देखबाक सुनबाक अवसर नहि। तें नेत्रादि परम विकल रहै छैन्ह।" एत' ओ अंग्रेज मेम आ नव शिक्षित बंगालिन स्त्रीसँ मैथिल स्त्रीक तुलना सेहो करैत छथि। जे शिक्षित आ पूर्ण स्वतंत्र होइत छथि। ओ "यत्र तत्र मेला तमाशा देखै छथि। तें हुनका लोकनिक चित्त ओतेक लल्ल नहि रहै छन्हि।" स्पष्ट अछि जे पुण्यानन्द तत्कालीन भारतमे भ' रहल परिवर्तनक सन्दर्भमे मिथिलाक समाज आ स्त्री-जीवनक आकलन करैत छथि।

तत्कालीन मैथिल ब्राह्मणमे पसरल जातिवाद वीभत्स रूप ल' लेने छल। तथाकथित उच्च कुलशील ब्राह्मणक लेल विवाह एकटा व्यवसाय बनि गेल छल। आ एहि व्यापारक वस्तु छलीह मिथिलाक अबोध स्त्री। अपन पांडित्य आ परंपरा पर डींग हाँक' निहार ई पुरुष समाज स्त्रीकेँ मात्र 'पण्य' बुझलक जे स्थिति कमबेसी पूरा भारतक स्त्रीक छल। मुदा भारतक अन्य क्षेत्रक अपेक्षा मिथिलामे स्त्रीक लेल संवेदना बहुत बादमे जागल। जनसीदन आ पुन्यानंद बीसम शताब्दीक आरम्भमे अपन उपन्यासक माध्यमसँ स्त्री-स्वधीनाताक पहिल बेर आवाज उठबैत छथि। पुण्यानन्द झा तत्कालीन वृद्ध पुरुषक विवाह, सौराठ सभा आदि पर अपन पात्रक मुंहें खुलि क' टिप्पणी क' प्रतिरोध दर्ज करैत छथि। एहिसँ इहो स्पष्ट होइत अछि जे लोकवृत्तमे एकर विरोधक परंपरा छल। एहि उपन्यासमे तीन तरहक वरक चर्चा अछि— 'वर, बराट आ झराट।' एकहक टा एहन 'झराट' सभ विवाहक लेल उताहुल रहैत छल जकर "मुंह घोडा सन, तँ पेट बनमानुष सन, केश पाकल। ककरो दांत टूटल तथापि विवाहक ममता नहि छोड़ैत छथि।" एहन-एहन 'झराठ' सभ शुद्धक समय पैंच-उधार ल' पाग-डोपटा पहिरि क' शिकार करबाक लेल 'सभा-गाछी' दिस बिदा भ' जाइत छल। बादमे 'यात्री' जे बिम्ब 'बूढ़ वर' कवितामे खिंचैत छथि तकर झांकी 'दर्पण'मे पहिनहिसँ देखल जा सकैत अछि, "कतेको बुढ़बा धरकट सभकेँ देखै छियैक? मुंहमे एको टा दांत नहि भरि माथ केश दनुफक फूल जकाँ पाकल। देह मंहक चमड़ा लटकल। तथापि आँखिमे काजर लगा मोछ कटा लाल धोती पहिरि वर बनि, सभामे विवाह करय लय उपस्थित।" उपन्यासक पात्र टेकन झा द्वारा 'मैथिल महासभा'केँ एकटा सुधारवादी संस्थाक रुपेँ देखल गेल अछि मुदा लेखक अपन टिप्पणीमे अहू मतकेँ स्थान दैत छथि जे किछ लोक सौराठ सभाक तुलना मालक हाट-बजार संग करैत छथि, 'जाहि ठाम कन्या वर हाट चढ़ायकेँ खरीद-बिक्री कएल जाइत अछि।'

जाति आ सामंती व्यवस्थाक विद्रूपताक चित्रण

'दर्पण'मे पुण्यानन्द झा सवर्ण द्वारा अवर्णक शोषण अत्याचारक चित्र सेहो खिचैत छथि, संगहि निम्न जातिमे अंकुरित होइत चेतनाकेँ सेहो दर्ज करैत छथि जे मिथिलाक सामाजिक जीवनक एकटा प्रमाणिक चित्र बनैत अछि। अपन कुलक घमंडमे मोचंड भेल मङनी झा एकटा गरीब पिछड़ल समाजक व्यक्तिकेँ अपन खबास, बंधुआ मजदूर बनाकेँ राखि लेने अछि, जकरा उपन्यासमे 'टहला' कहल गेल छै। मङनी झाक घरमे दूटा शोषित अछि। पहिल उच्च कुलीन ओकर पत्नी आ दोसर निम्न जातीय टहला। आ दुनू शोषित-पीड़ित आपसमे एक दोसराक दु:ख-सुख बाँटैत अछि। बहुआसीनकेँ टहला बताबैत अछि जे ओ गरीबीक कारणें पूब कमाइ लेल जाइत छल। स्टेशन पर ओकर भेंट मङनी झासँ भ' गेलै। कहलकै ला टिकट कटा दैत छियौ। "ई सुनि सभटा रूपया पैसा माने एगारह रुपैया साढ़े सात आना कैंचा छल, से हुनक हाथमे दए देलियन्हि। ओ रुपया लए टिकट घर गेलाह। परन्तु थोड़ेक कालमे खाली हाथ फिरि अएलाह आर कहलैन्ह जे 'रेलक सड़क टूटल छैक। दू दिन बाद टिकट भेटतौ ता चल हमरे ओहिठाम दू दिन रहि हें। ले हमरो मोटरी टानने चल। हमर गाँव विलासपुर एहिठामसँ लगे छै।" आ से दू दिन बितला पर टहलाकेँ मङनी कहलकैक जे "हम तोहर रुपया नहि जनै छियो। जँ हमरा ओहिठाम तों नोकरी रह तँ डेढ़ रुपैया दरमाहा खेनाइ कपड़ा लत्ता देबहु। जखन

गाम जाय लगबें तखन ओहो रुपैया फिरा देबहु।" आ तहियासँ आइ दू साल बीति गेलै टहलाकेँ एक्को टाका नहि भेटलै। ओकरा मङनी बंधुआ बना लेने छै। टहला बहुआसिन लग बकारि फारि क' कान' लागैत अछि, "हाय रे बाप एहि ठामसँ हमर गाँव अठारह कोस पश्चिम भिक्खनपुर अछि। हाय रे बाप! ओढ़गेलहुँ रे बाप! एतबा कहि टहला वेश दहाड़ि मारि नेना जकाँ कानय लागल।"

1914 ई.मे पुण्यानन्द झा 'मिथिला दर्पण'मे मिथिलाक जाहि सामंतवादी प्रवृत्तिक चित्रण करैत छथि तकर विकास मिथिलाक परिवेश पर लिखल यात्रीक उपन्यास 'बलचनमा' (1952) आ 'रेणु'क 'मैला आँचल' (1954)मे भेल अछि। उल्लेखनीय अछि जे एहि समय तक देशमे ने गाँधीक हलचल छल ने डॉ. अम्बेडकरक। ता धरि वामपंथक वर्गवादी वैचारिकीक हवा सेहो नहि बहल छल। स्त्रीक प्रति दयासँ उपजल मानवतावादी आन्दोलन शुरू भ' गेल छल जकर नेतृत्व बंगालमे राजा राम मोहन राय आ ईश्वरचंद्र विद्यासागर सन कतेको पुरुष क' रहल छलाह'। पुण्यानन्द झा कलकत्तामे रहि शिक्षा अर्जित केने छलाह आ हुनका पर बंगालक सुधारवादी आन्दोलनक प्रभाव पड़ल होयतनि जकर प्रमाण 'मिथिला दर्पण'मे यत्र-तत्र पसरल अछि। टहलाक शोषणक बहन्ने लेखक मिथिलाक जातिवादी-सामंतवादी मानसिकताकेँ देखार करिते छथि संगहि निम्नवर्गमे अबैत चेतनाकेँ सेहो रेखांकित करैत छथि। टहलाक लेल सवर्ण भङपीबा मंडली सभक जे वक्तव्य छै से असलमे मिथिलाक वर्गीय चरित्रक अभिव्यक्ति थिक, "आयल अगहन मास राड़क देहमे चढ़ल मास... कसलाहक वाट तँ कूदि उठय तेरह हाथ... राड़ं एड़ं कनमोचड़ं जूत्ता मारं पवित्रं- मारू ने बदमशवेकेँ धमाधम। ...बिन मारने कि आइ-काल्हुक राड़ सेर रहै छैक– कहे कबीर सुनौ भाइ संतो राड़ जाति लतियैनहि बन्तौ।"[28]

सवर्ण भङपीबा मंडलीक पल्लवित राय सन किछ एहनो सदस्य अछि जे बदलैत समयकेँ अकानि रहल अछि, "हौ पचकौड़ी भाइ, ई तँ सभ गोटे कहै जाय छह, परन्तु जँ हमर विचार मानी तँ एहन काज जुनि करी। किएक जे आइ काल्हुक राड़क दोसर दिन भेल जाय छैक। कले बलें काज लेबाक चाही। सुनै छहक गुआर सभक हल्लागुल्ला।" कमला कातमे मस्ती करैत मङनी झा आ ओकर अफीमची मंडली माँछ मारि क' अबैत भोदुआसँ सभटा माछ छीनि लैत अछि। एकरा सभकेँ सामने देखिते "भोंदुआ बूझि गेल जे आइ भरि दिनुक मेहनति व्यर्थ गेल।" तथापि ओ किछ बचेबाक प्रयास करैत कहैत अछि जे 'दू-चारि टा पोठी-चन्ना छै।' मुदा एहि मुफ्तखोर सबकेँ दया कत'–

पचकौड़ी : 'बेटी चोद बड़ बदमाश अछि।' देखू मङनी बाबू 'नीचाँ कहाँ-कहाँ माछ छैक।' एतबा सुनि आ मङनी बाबू अपनो देखि भोदुआकेँ तीन-चारि थापड़ लगा सभटा माछ तउनीमे बान्हि घर दिश विदा भेलाह।

भोदुआ : बाबू दू चारिटा नेना ले तँ छोड़ि दीअ। दुहाइ बाबू'।

मङनी : 'भाग नगटवे माछ लेताह?' की करत बेचारा। भोदुआ झखैत तपैत घर गेल।[29]

मङनी झाक पत्नी, जकर उपन्यासमे बहुआसिन नाम देल गेल अछि,कैं टहलाक प्रति संवेदना छै। टहला ओकरे लग अपन दुखित बेटा मखना आ पत्नीक लेल हाकरोस करैत रहैत अछि, मुदा मङनीक हृदय तँ पथरा गेल छै, ताहि पर कुल-गौरवक काई ओकरा पर अलगसँ जमल छै। जखन माछ ल' क' मङनी घर अबैत अछि तँ खेनाय बनि गेल रहै आ एक्को ठोप कड़ू तेल बाँचल नहि रहै। दोकानमे केओ उधार दै लेल तैयार नहि। माँछ नहि बनैत देखि मङनी पत्नीकेँ तीनि चारि खड़ाम मारैत अछि। एहि बेर पत्नी कने मौखिक प्रतिवाद करैत छै, "सात धड़मे एको धड़मे लाज नहि होई छैक, हमरा सब तरहें नाश कैलक। घरमे जतेक चीज वस्तु नहि ततेक फरमाइश बड़।" आ एहि पर ओ आरो पाँच-सात लातक घात करैत पत्नीसँ कहैत अछि, "दुपहरिया रातिक हाल मन ने छहु जखन घरक पछुआड़क गाछ झड़-झड़ करै छैक।" एतेक सुनिते

पत्नी जोरसँ चिचियैत अछि आ मूर्छित भ' क' खसि पड़ैत अछि। लेखक अगां कहैत छथि जे एहि रहस्य परसँ पर्दा हम आगाँ उठाएब मुदा से उपन्यासक पहिल खंडमे पर्दा नहि उठि सकल अछि।

पत्नीकेँ तँ मङनीक जेल गेलाक बादे एक वर्षक लेल मुक्ति भेटैत छै मुदा ताहिसँ पहिनहि टहला एक राति भागि जाइत अछि। 'घरक पछुआड़क गाछक बात' सुनि ओ रातिमे खराब-खराब सपना देखैत अछि। ओ सोचैत अछि "हाय, हम केहन अभागल छी। एहन चांडाल ब्राह्मणक हाथमे हम रुपैया कथिले देने रहियैक? खाली हाथ गाम जाइ छी। बाल बच्चाकेँ की देबैक? बाप रे! विलासपुर गाँव तँ खगतक गाँव थिक।" आ टहला महिंस निकालि क' दोसराक खेतमे छोड़ि क' खाली हाथें भागि जाइत अछि। मङनी टहलाकेँ हर राति महिंस खोलि क' दोसराक खेतमे जजाति चराब'क लेल भेजैत रहै, से बहन्ना आइ टहलाकेँ काज अयलै। मङनी झा कुल-खानदानक निशामे मातल रहय, जकरा अपन कर्मक लेल जेल भेजि लेखक ई देखेबाक प्रयास करैत छथि जे पुरान घर आब खसि रहल अछि। अजादीसँ लगभग तीन दशक पूर्व शोषणक विरुद्ध एहि तरहक चित्रण लेखकीय ईमानदारीक प्रमाण थिक आ मैथिली उपन्यास लेल उपलब्धि सेहो, जकर विकास आगाँ होइत अछि।

एकटा सेठक गाडीसँ मङनी सामान छीनि लेने रहय आ ओ सेठ नालिश क' देलक। आब जेल जाइक डरें एहि ब्राह्मण-श्रेष्ठ मङनीक सपनाक वर्णन देखू, "सिपाही बजै अछि— साला पापी के देहियामे तँ तनिको खून नहिखे। घत् तेरे की। पकड़ो पकड़ो कसके कहीं भाग न जाय... एतबा कहि लात मुक्कासँ खूब मर्दन करय लगलैन्ह। मारते भयसँ मङनीक दुनू मलद्वार खूजल। धोती हुनक भीजि गेलैंन्ह। ठंढा लागलासँ हुनक निन्न टुटलैन्ह। तँ देखै छथि जे हुनका सेजहि पर लगही भेलैन्ह तथा गुदा मार्ग लग किछु पातर मलक सेहो प्रादुर्भाव भेलैन्ह..." मङनी झा सन ब्राह्मणक कारणें तिरहुतियाक छवि केहन अछि, तकर प्रमाण मोखतारक उक्ति अछि जे ओ मङनीक ससुर संतलालसँ कहैत अछि, "हें हें, तिरहुतिया बाभन का सभ हाल मालुम है। काम हो जाने से आप लगार देंगे।" लेखक अंतमे मङनी झासँ सेहो आत्मालोचन करा दैत छथि, जकर पाछाँ हुनक ओ सुधारवादी दृष्टि अछि जे बिकौआ प्रथा समाजक कोढ़ि थिक, "हा भगवान ! कोन जन्मक पापसं हमारा एहन वंशमे उत्पन्न कयल जे माता-पिता हमारा भरि जन्म मूर्ख रखलैन्ह। ओ जगह जमीन घन संपत्ति ओ पैघ जाति आइ हमर कोन काज अबै अछि। विकौआ भेनहि की? पैघ जातिमे उत्पन्न भेनाहि की? जँ विद्या नहि भेल, नीक अधलाहक विचार नहि भेल तँ ओ सभ व्यर्थ थिक।" स्पष्ट अछि जे लेखक अशिक्षा आ पंजी-व्यवस्थाकेँ मैथिल ब्राह्मणक अवनति आ एहि वर्गक स्त्रीक दुर्दाशाक कारण मनैत छथि। ओ जतेक स्पष्ट रूपें एहि व्यवस्था पर प्रहार करैत छथि से तीक्ष्णता-तामस तत्कालीन मैथिली साहित्यक आन विधामे कम्मे भेटत। बीसम शताब्दीक आरंभमे पुण्यानन्द झा आधुनिक शिक्षाक संग-संग अर्थक महत्वकेँ जाहि रूपें महत्त्व दैत छथि से हुनकर समयसँ बहुत आगाँक सोच थिक।

परंपरा आ आधुनिकताक द्वंद्व

उनैसम शताब्दीक मध्य धरि अबैत-अबैत अंग्रेजी शिक्षाक संग-संग पाश्चात्य संस्कृतिक प्रचार प्रसार नीक जकाँ शुरू भ' गेल छलै। परिणामस्वरूप भारतीय नवजागरणक मुख्यत: दू टा कैंद्र बनल- बंगाल आ महाराष्ट्र। उपन्यासमे एकटा पूरा अध्याय काशीमे रहि अंग्रेजी पढ़निहार योगानंद आ संस्कृत पढ़निहार भोलाक बातचीतक बहन्ने अंग्रेजी शिक्षा आ संस्कृत शिक्षा प्रणालीक द्वंद्वकेँ उभाड़ल गेल अछि। एहि बहसमे बंगाल आ महाराष्ट्रक आगाँ बढि जेबाक बातक संग संग भारतक जनसँख्या आ देशक दशा पर सेहो बहस होइत छै। योगानंद बंगाल आ महाराष्ट्रकेँ आगाँ बढ़वाक पाछाँ अंग्रेजी शिक्षाकेँ मुख्य कारण मनैत अछि, "हम जे बंगाली तथा महाराष्ट्री आदि लोकक उपमा कहल एहिसँ ई नहि बुझक चाही, जे हम मिथिलाक विरोधी छी। मिथिलाक अवनति देखिकेँ हमर ह्रदय जेहन विदीर्ण भेल अछि से यदि खीरा काँकड़ि रहितहुँ तँ फाड़ि कय

देखाय देतहुँ। हाय!" मुदा भोला रूढ़िवादी वर्गक प्रतिनिधितव क' रहल अछि, जकर मानब छै जे नीके भेल जे मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाक प्रसार नहि भेल। हुनका मोने 'जाति-धर्म बाँचब सेहो बड़का बात थिक। ओ सभ देशक (बंगाल, महाराष्ट्र) लोक विलायत जाय जाय क्रिस्तान बनि बनि पैघ बनल अछि।" भोल एहन उन्नतिकेँ अवनति मनैत अछि किएक तँ 'अंत धर्मे काज देत।' योगानंद तामसे भोलसँ कहैत छथि, "अहाँ संस्कृतकेँ कचरम कूट धरि अवश्ये कयल अछि। परन्तु अहाँक बुद्धि विकाशकेँ प्राप्त नहि भेल। वास्तवमे अहींक सन सन लोक मिथिलाक अधोगति केने छथि।" स्पष्ट अछि जे लेखक संस्कृतक रट्टू ज्ञानकेँ रूढ़िवाद आ कुप्रथाक जननी मानैत छलाह। अँग्रेजी शिक्षाक ताहि समय मिथिलामे सेहो बहस आरंभ भ' गेल छल। एत' बहसमे दुनू वर्गक प्रतिनिधित्व भेल अछि।

वास्तवमे पुण्यानन्द देशक अधोगतिक लेल एहने लकीर पिटनिहार पंडितक क्रिया कलापकेँ मानैत छथि जे पोथी-पतरा बाँचि बाँचि क' समाजकेँ ठकैत रहल, "हमरा वास्तवमे देशक दशा देखि परम खेद होइत अछि। ताहि पर जखन अहाँ लोकनिक सदृश पढ़ल लिखल लोकक एहन सम्मति। तखन तँ कटला पर नोन पाड़ि जाइत अछि..." भोल झाक वंशजक एखनो मिथिलामे कमी नहि। योगानंद संस्कृत शिक्षा पर बहुत तिक्ख टिप्पणी करैत छथि। हुनकर मानब छनि जे संस्कृत विद्या सोझे रहि जाइत अछि मुदा अंग्रेजीमे भाषाक संग संग आन विविध विषयक ज्ञान सेहो होइत छैक। मिथिलामे नवजागरणक हवाकेँ भोल झा सन पंडित नहि घुस' देलक। पुण्यानन्द झा मिथिलाक विकासमे एहन रट्टू पंडितकेँ सबसँ पैघ बाधक मनैत छलाह। असलमे मिथिलाक लाखो स्त्रीकेँ दारुण दु:ख देनिहार, बेमेल विवाह आ विधवाक नाम पर स्त्री-हत्या केनिहर पंडितक यैह वर्ग छल। लेखक योगानंदक माध्यमे श्लोक रटि क' अपनाकेँ पंडित बूझनिहार यथास्थितिवादी संस्कृतक पंडित पर जाहि शब्दें कटाक्ष करैत छथि से हुनक आधुनिक मानसिकताक द्योतक थिक, "एहने एहन सपूत मिथिलाक उद्धार करताह। हाय ईश्वर करथु एहन पंडितमन्य लोकनिक सुअवतरणसँ दीना हीना मलिना मिथिला बंचित रहै सैह नीक। जे लोककेँ भूगोलक परिज्ञान नहि, इतिहासक बोध मात्र नहि, आधुनिक अवस्थाक परिचय नहि, जे केवल अ, इ, उण, ऋ, ऋ, घोंखने अछि तथा उदर पूजाक हेतु पुनश्चरणादि क्रियामे लागल अछि। जे सतत यजमान लोकनिक चाटुपरतामे लागल रहै अछि कदाचित यजमान ने रुष्ट भए जाय, एहन लोकनि मिथिलाक सुधार कथमपि नहि कय सकै छथि।"[30] एहन तिक्ख टिप्पणी सभ एहि उपन्यासमे पढ़ि मिथिलाक तत्कालीन रट्टू-पंडित लोकनिक केहन प्रतिक्रिया भेल हेतै आ 'मिथिला दर्पण'क दोसर भाग किएक नहि छपि सकल तकर अनुमान सहजहि लगाओल जा सकैत अछि। सही अर्थमे देखल जाय तँ जनसीदन आ पुण्यानन्द झा जाहि रुपेँ मैथिली उपन्यासमे आधुनिकताकेँ अनैत छथि से मैथिली साहित्य लेल पैघ उपलब्धि थिक। देखल जाय तँ हिन्दीसँ किछ पहिने मैथिली उपन्यासमे सामाजिक यथार्थक प्रवेश भ' जाइत अछि।

देशक स्थितिक प्रति चिंता

पुण्यानन्द झा 'दर्पण'मे योगानंदक माध्यमे देशक तत्कालीन स्थिति पर सेहो टिप्पणी करैत छथि। पुण्यानन्द ने तँ वर्णव्यवस्थाक विरोधी छथि आने धर्मनिरपेक्ष, मुदा अपन लेखनमे ओ मानवतावादी-सुधारवादी, स्त्री-हितैषी हेबाक संग-संग तर्कवादी सेहो छथि। संगहि भारतक नास्तिक दर्शनक परंपराकेँ सेहो ओ रेखांकित करैत छथि। कहबाक तात्पर्य जे पुन्यानंद अपन लेखनमे समय आ परिवेशगत सीमाक अछैतो तटस्थ आ अकुंठ लेखक छलाह। यैह कारण अछि जे तत्कालीन समय, समाज अ देशक द्वंद्वकेँ प्रतिबिंबित कारबामे हुनका पूर्ण सफलता भेटल छनि। एकैसम अध्यायक शीर्षक देल गेल अछि 'योगानंद बाबूक चिंतन'। एहि अध्यायमे योगानंद मिथिलाक संग-संग देशक तत्कालीन हीन अवस्था पर विचार करैत अछि। योगानंदक अनुसारें वर्तमानमे 'मिथिलाकेँ के पूछय? समस्त भारतवासीकेँ लोक गुलामक पदवी देखलक अछि।' ओकरा अनुसारें एहि गुलामीक कारण भारतक लोक अपनहि अछि जे 'आलसी निरुद्यमी, परमुखापेक्षी' अछि। योगानंदक

अनुसार भारत वैदिक समयसँ ल' क' महाभारत काल तक जगद्गुरु छल। "जाहिमे ब्राह्मण सर्वविद्या निपुण, सब विषयक मालिक, दंडादि नियमक विधाता भए गेल छथि। क्षत्रीय परम शूरवीर पराक्रमी, वैश्य तथा शूद्र सभ स्व स्व धर्मानुरागी भरि संसारमे नामी भए गेल छथि।" ताहि "स्वर्णभूमि भारतवर्षक पवित्र पीठ पर यवनादि जातिक पदार्पण भेल।" से योगानंदकेँ आश्चर्य लगैत छै। ओ आत्मालोचन करैत अछि, "वाह रे हिन्दू शास्त्र ! वाह रे हिन्दू जाति ! जाहि शास्त्रमे यवनादि जातिक दर्शन मात्र निषिद्ध ताहि यवन जातिक हिन्दूगण दासत्व स्वीकारमे गौरव बुझय लागल।" अंग्रेज इतिहासकार द्वारा स्वयंकेँ आर्य घोषित क' जे भारतमे अपन सत्ताकेँ वैध बनेबाक सफल प्रयास भेल आ धीरे-धीरे हिन्दूकेँ आर्य आ मुसलमानकेँ अनार्य साबित कारबामे सफलता भेटलैक। तकर असर एतहुओ देखल जा सकैत अछि। बंकिम चन्द्र अपन उपन्यास 'आनंदमठ'मे अंग्रेजकेँ भारतक तारणहार देखाबैत छथि। पुण्यानन्द सेहो 'गौरांग जातिक' बहुत उपकार मानैत छथि जे भारतक आर्य जातिक मलीन मुखकेँ समुज्ज्वल कैलक'। मुदा "गौरांगक आगमनसं बहुतो पंडितमन्य, कूप मंडूक क्षोभकेँ प्राप्त भेल तथा आधुनिक शिक्षा प्रणालीकेँ जाति भ्रष्टताक कारण बुझैत अछि।" असलमे 1915 ई.मे गांधी दक्षिण अफ्रीकासँ भारत आयल छलाह। 1917 ई.मे चंपारण सत्याग्रहक बाद अंग्रेजक विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर जनमत तैयार हुअ' लागल छल। यैह कारण अछि जे 1920 ई.क बादे भारतीय साहित्यमे आजादीक स्वर नीक जकाँ सुना पड़ैत अछि। एहिसँ पहिनेक साहित्यमे अंग्रेजक प्रति तामस नहि, शिकाइत मात्र भेटत। जे हिन्दीक भारतेंदु मंडलक लेखनमे सेहो देखल जा सकैत अछि। पुण्यानन्द झा सेहो अही प्रकारें सोचैत छथि जे जा धरि एहिसँ नीक विकल्प नहि भेटि जाय ता धरि भारतक लेल अंग्रेजी राजे नीक छै। ओ इस्लामी शासनसँ नीक अंग्रेजी शासनकेँ ओकर शिक्षा प्रणालीक कारणें मनैत छथि। उपन्यासमे योगानंद देशोन्नति लेल सदिखन चिंतित रहैत अछि आ आधुनिक शिक्षाकेँ ताहि लेल आवश्यक मानैत अछि। तेँ ओ विवाहक बादो पत्नीकेँ आधुनिक शिक्षा देबाक मादे सोचैत अछि।

विवाह, सेक्स आ ब्रह्मचर्य पर चर्चा

'मिथिला दर्पण'क एक अध्यायमे विवाह, सेक्स आ ब्रह्मचर्य पर सेहो बहस होइत छै। एहि विषय पर भारतीय मिथक, साधु-सन्यासीक आलावा वैज्ञानिक दृष्टिसँ सेहो विचार कैल गेल अछि- "मैथुनी सृष्टमे प्राणी मात्र स्त्री तथा पुरुष दुइ वृहत विभागमे विभक्त अछि।" संगहि स्वाभाव आ ज्ञानकेँ सेहो बेराएल गेल अछि– "स्वभाव (Instinct) एक अंध प्रवृत्ति थिक। परन्तु ज्ञान वा (Reason) एक प्रकाश स्वरूप थिक। अस्तु तँ की मनुष्य स्वेच्छानुसार प्रकृतिक नियमकेँ भंग कै सकै अछि?" एहि मादे योगानंद आ हुनक मित्र रामेश्वर झाक बीच बहस होइत अछि। रामेश्वर बी. एन. कालेज पटनामे पढैत अछि। रामेश्वरक कहब छै जे "जहिना मनुष्यकाँ भूख पियास होइ छैक तहिना काम तृष्णा सेहो एक वस्तु थिक।" योगानंद द्वारा भीष्म पितामाहक अखंड ब्रह्मचर्यक उदहारण देला पर रामेश्वर भर्तृहरिकेँ कोट करैत कहैत अछि "भर्तृहरि एक ठाम लिखने छथि जे दुर्वासा प्रभृत्ति जे दुर्वाक रस पीबि कै रहै छलाह, सेहो लोकनि कामकेँ नहि जीति सकलाह। तखन दालि, तरकारी, घी-दूध आचार चीनी खयनिहार व्यक्ति कामकेँ जीतथि परम आश्चर्य थिक।" दुनू मित्र अपन बहसमे अर्थशास्त्री आ इतिहासकार रमेश दत्त आ राजेन्द्र लालक लेखन पर सेहो विचार करैत छथि। ज्ञातव्य हो जे आर्थिक इतिहासकार रमेशदत्त महाभारत आ रामायणक अनुवाद केने छलाह आ एकर पात्रकेँ ओ काल्पनिक मनैत छलाह जकर चर्चा उपन्यासमे दुनू मित्र करैत छथि। रमेशदत्त (1848-1909) 'ड्रेन थियरी'क प्रतिपादन केने रहथि जकरा अनुसारें अंग्रेज अपन लाभक लेल निरंतर निर्यात थोपने जा रहल छल आ अनावश्यक अधिभार वसूलीसँ भारतीय अर्थव्यवस्थाकेँ निचोड़ि रहल छल। राजेन्द्र लाल मित्र (1823-1891) बंगाल पुनर्जागरणक अग्रदूत रहथि। ओ बंगालक वैज्ञानिक इतिहासक प्रथम रचयिता आ पुरातत्वविद रहथि। पुण्यानन्द झा कतेक बहुज्ञ रहथि आ हुनक दृष्टि कतेक साकांक्ष आ फड़िच्छ छल, तकर प्रमाण उपन्यासमे आयल ई बहस थिक।

'विचारकेँ अनंत' माननिहार पुण्यानन्द झा भारतीयताक जड़ि पर ठाढ़ भ' आधुनिकता संग संवाद कर' बला लेखक रहथि। वाद विवादमे विश्वास राखनिहार भारतीय परम्पराक विद्वान्– "एकहि ढर्रा पर नहि सोचनिहार पाँच गोटे मिलि कय विचार-सीचर करय" बला लोकतांत्रिक लेखक। आजुक बंद दिमाग बला रूढ़िवादी पंडित जकाँ नहि जिनकर नस-नसमे साम्प्रदायिकता आ जातिवाद समायल रहैत छनि। स्पष्ट अछि जे पुण्यानन्द आस्तिक मुदा तर्कवादी रहथि, जकर परंपरा मिथिलामे पुरान रहल अछि आ जकर विकास बादमे हरिमोहन झाक लेखनमे वटवृक्ष बनि जाइत अछि। पुण्यानन्द झाक व्यंग्य देखू- 'गीतामे स्पष्ट लिखल छैक जे ध्याने कयलासँ विकार होइत छै... तखन तँ आन्हर रहब ठीक। ...मल मूत्रक बेगो नहि रुकि सकै अछि तँ ओहो रुकब असंभव।' लेखक मिथिला समाजमे व्याप्त आस्तिक-नास्तिक, तर्क, आस्था आदि सभक प्रतिबिम्बकेँ अपन 'दर्पण'मे अकुंठ भावें प्रतिविम्बित करबाक प्रयास करैत छथि।

धर्मस्थलमे व्याप्त पाखंडक चित्रण

पुण्यानन्द झा 'मिथिला-दर्पण'मे धर्मस्थलमे व्याप्त पंडाक लूट-खसोट, गन्दगी आ कुव्यवस्था पर सेहो व्यंग्य करैत छथि। उपन्यासमे काशी यात्राक वर्णन आयल अछि। संतलाल झाक भागिन राखी झा आ बंङट पाठक गामक स्त्रीगणकेँ ल' क' काशी जाइत छथि। स्टेशन पर टिकट कटबैसँ ल' क' राखी झाक जनाना डिब्बामे बैस' आ आधा यात्रीकेँ स्टेशने पर छुटि जयबा धरिक रोचक आ हास्ययुक्त वर्णन भेल अछि। बनारस स्टेशने पर सभकेँ मैथिल पंडा अपन कब्जामे ल' लैत अछि। आ दशासुमेध घाट पर ल जाकेँ गोदान करबैत झटसँ पाँच रुपैया दक्षिणाक संकल्प करा दैत छै। किएक तँ ओकरा बूझल छलै "मैथिल सभ बड़ भक्त होइ अछि।" बेचारा राखी झा अपन असमर्थता जतबैत अछि कि तखनहि "बाछी लघी करै लगलैक कि पंडा झट दू तीन चूर यजमान लोकनिक देह पर छीटा दैत कहलकैन्ह– 'देखिये आप लोग कैसे भाग्यवान हैं, गौ माता ने प्रसन्न होकर अमृत वर्षा किया है, निकालिये निकालिये जल्दी खोलिये।" बेचारा राखी झाकेँ पाँच रुपैया देब' पड़लै। विश्वनाथक दर्शन कर' गेल तँ 'ओहू ठाम पुजारी हिनकासँ कतेक रगड़ैत झगड़ैत सवा दू टाका दक्षिणा' निकालि लेलकै। अंतत: काशीक रबड़ी खा क' राखी झा हैजाक शिकार भ' जाइत अछि। ओकर जान चलि गेलै। ओकर अर्थी उठाब'सँ संस्कृत पढ़निहार मैथिल सभ मना क' दैत छै। अंग्रेजी पढ़' बला योगानंद आ एकटा संस्कृत पढ़निहार विद्रोही मिलिकेँ सभटा संस्कारकेँ पूरा कराबैत अछि। योगानंद सभक टिकट कटबा क' ट्रेन पर पहुंचा अबैत अछि। काशीक कुव्यवस्थाक संग लेखक धर्मक नाम पर व्याप्त अंधविश्वास आ लूटपाटक खुलि क' आलोचना करैत छथि संगहि बिमारीक वैज्ञानिक उपचार पर सेहो जोर दैत छथि।

कमजोर पक्ष

दर्पणमे अनावश्यक विस्तार सेहो छैक। नायककेँ सोचइएमे दू-दू अध्याय लागि जाइत छै। जकर पाँछा बेसीसँ बेसी विषयकेँ समेटि लेबाक लेखकीय मोह अछि। कैकटा अध्याय तँ मात्र एक-डेढ़ पृष्ठक मात्र अछि। जनसीदनक उपन्यासमे जे शिल्पक सधल गठन छै से मिथिला दर्पणमे नहि, एत' झोल स्पष्ट छै। मुदा 'मिथिला दर्पण'मे जे विषयक विविधता छै से जनसीदनक उपन्यासमे नहि भेटत। योगमाया दसे वर्षमे एतेक ने प्रौढ़ भ' गेल अछि जे ओ जीवन-मृत्यु पर प्रवचन दैत अछि, जाहि लेल लेखककेँ सफाइमे कह' पड़ैत छनि "हुनकामे एक-एक अलौकिक गुण भरल पडल छनि।" 'दर्पण'मे लेखक उपन्यासकेँ विस्तृत आयाम दैत छथि, मुदा छोट छोट कतेक त्रुटि देखा पड़ैत अछि। जेना गंगा यात्रामे अचानक संतलाल झा प्रकट होइत अछि। भागिन राखी झा मरि जाइत अछि, मुदा हुनक माय बापकेँ कोनो खबर नहि द' संतलाल अपन बेटीक विवाहक तैयारीमे लागि जाइत छथि। प्रश्न इहो उठैत अछि जे जखन संतलाल झाक परिवारसँ केओ काशी यात्रा पर नहि गेल तखन ओ अपन भागिनकेँ गामसँ बजा क' किएक काशी भेजलनि? जखन राखीक मृत्युक समाचार गाम आयल तँ संतलाल टेकन झाक घर पर रहथि।

ओत'सँ ओ गाम आबि झट द' काशी पहुँचि जाइत छथि। स्टेशने पर सबसँ भेंट भ' जाइत छनि। योगानंदसँ सेहो, जिनका संग ओ अपन बेटीक कथा कर' चाहैत छथि। दाह-संस्कारक अगिला दिन योगानंद सभकेँ गामक लेल ट्रेन पर बैसाब' गेल अछि। एतबहि समयमे गाम आबि 'एकटा आदमी' राखीक मृत्युक समाचार दैत अछि, फेर एकटा खबास भुसौल भेजल गेल। संतलाल आ टेकन करणपुर अयलाह। फेर स्टेशन गेलाह आ काशी पहुँचि गेलाह। तत्कालीन ट्रेनक गतिकेँ देखैत ई अस्वाभाविक लगैत अछि। असलमे संतलालकेँ योगानंदसँ भेंट करेबाक चक्करमे ई संयोग रचल गेल अछि। एहिना नवम परिच्छेदमे केतकीक बेमेल विवाहक कथा चंपा योगमायासँ कहैत छै आ योगमाया केतकीक पूरा कथा सुनेबाक ले चंपासँ आग्रह करैत अछि। मुदा उन्नैसम परिच्छेदमे चम्पा योगमायासँ केतकीक हाल सुनेबाक ले कहैत छै। इहो संभव जे उपन्यासक मूल पाठमे एहि तरहक गलती नहि होइ।

शिल्प आ भाषाक नवीनता

एहि उपन्यासक जे शिल्प अछि तकर पूर्ण विकास बादमे हिन्दीक उपन्यास 'मैला आँचल'मे देखा पड़ैत अछि। इहो संयोग जे दुनू लेखकक परिवेश एकहि छल। भ' सकैत अछि जे 'रेणु' सेहो एहि उपन्यासकेँ पढने होथि। 'मिथिला दर्पण'मे कोनो नायक अथवा नायिकाकेँ मुख्य पात्र नहि कहल जा सकैत अछि। सब पात्र मुख्य अछि चाहे ओ नीक हो कि अधलाह, सभक चरित्रक विकास पर लेखक खूब ध्यान देने छथि। परिवेशगत जीवनमे व्याप्त नीक-अधलाह, राग-द्वेष, विश्वास-अन्धविश्वास, लोकगीत सभक कोलाज 'दर्पण'मे बनैत जाइत अछि जाहिसँ जीवनक गतिशीलता आ धड़कन एत' नीक जकाँ सुना पड़ैत अछि। उपन्यासक अंत जाहि समदाओनसँ होइत अछि से लोकमे व्याप्त स्त्री-चेतनाक द्योतक थिक। एहि सामदाओनक भणितामे तुलसीदासक नाम अबैत अछि मुदा ई विद्यापतिक पदक परिवर्तित रूप थिक–

'आरे चानन गाछ चढ़ी बोलए कोइलिया हे तिरिया जनम जनु दै।
आरे तिरिया जनम जँ दीहले विधाता, हे पुरुख मुरुख जनु दै।...'

प्रकृति वर्णन आ परिवेश निर्माणमे सेहो लेखकक मोन खूब रमल छनि। यथास्थान काव्यमय वर्णन मैथिलीक परिमार्जित गद्यक प्रमाण थिक– "...समय सेहो अपन अनवरुद्ध पथमे तीव्र वेगसँ जाय रहल अछि। लाखपति, करोड़पति, राजा, महाराजा किनको हजार सर पटकनहु ओ क्षणमात्र नहि ठहरि सकैत अछि। समय डाकगाड़ीसँ लक्ष गुण तीव्रगामी थिक, जे पुरस्कारस्वरूपी डाक फेकने चल जायत अछि। जे सावधान पूर्वक डाक लैत अछि से धन्य थिक अन्यथा हाथ मलिन मलि पछतौनहि बात..." यथा स्थान गीत-नादक उपयोग सेहो कथामे रोचकताक संग गति प्रदान करैत छै।

'मिथिला दर्पण'मे भाषाक अनेक रूपक प्रयोग भेल अछि आ ताहिमे मुहावरा आ कहावतक छौंकसँ जीवंतता आबि जाइत छै, जे लेखकक लोक-संपृक्तताक सेहो प्रमाण थिक। जेना— "छीका, टोका पादा, जे नहि मानै गाधा।' 'परक डाबा परक घी हमर तोहर लागे की?' 'सुख कहल दु:खकेँ तोहर जीवनक कोन काज? दुख कहल भाय, तोहर राखक लाज" आदि। भाषाक एकटा ई रूप देखू– "मर्र तँ भौजी, तँ ई सभ भेद-भाव लेलैन्हि? मर्र, आंय हे सुघड़मनि इहो सभ ने फुरै अछि?" व्यंग्य आ हास्यसँ युक्त गल्पक जे चरम रूप हरिमोहन झामे भेटैत अछि तकर आदि रूप जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'पुनर्विवाह' आ पुण्यानन्द झा'क 'मिथिला-दर्पण'मे देखल जा सकैत अछि। समग्रतामे औपन्यासिक कलेवर, शिल्प आ कथ्यक विविधता पूर्ण विकास एहि उपन्यासक महत्त्वकेँ बढ़ा दैत अछि। जँ दर्पणक दोसरो खंड छपि सकितय आ लेखक उत्साहित भय किछ आरो उपन्यास लिखि सकितथि तँ मैथिली उपन्यास साहित्यक कतेक उपकार होइतैक! प्रश्न उठैत अछि जे एकर दोषी के?

चंद्रग्रहण (1932) : सांप्रदायिक पूर्वग्रह लेखन पर भारी

कांचीनाथ झा 'किरण' मैथिलि आन्दोलनक पर्याय रहल छथि। काशी हिन्दू विश्वविद्यालयसँ ल' क' मिथिलाक गाम-घर धरि ओ मैथिली भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसार लेल आजीवन लागल रहलाह। फ़कीर बनि अलख जगाबैत रहलाह। आन भारतीय भाषाक समक्ष मैथिली साहित्यकेँ बराबरीमे ठाढ़ करबाक उद्द्येश्यसँ ओ साहित्यक हर विधामे लिखलनि आ मैथिली साहित्यकेँ आधुनिक चेतनासँ सम्पृक्त करबाक प्रयास करैत रहलाह। अही क्रममे ओ 'चंद्रग्रहण' उपन्यासक रचना सेहो कैलनि ताकि मैथिलीमे उपन्यास विधा संमृद्ध होइ आ आगाँ एहिसँ प्रेरित भ' लेखक सेहो उपन्यास लिखथि। मुदा तीर्थयात्रा लेल स्त्रीक विकलता पर लिखल गेल हुनक उपन्यास 'चंद्रग्रहण' स्त्रीक विरोधमे तँ जाइते अछि संगहि सांप्रदायिक सोचकेँ सेहो प्रश्रय दैत अछि। कोनो उपन्यास अथवा साहित्यिक रचनामे मुसलमान विलेन अवश्य भ' सकैत अछि। मुसलमाने कि सवर्ण-अवर्ण-पंडित, हिन्दुओ विलेन भ' सकैत अछि। मलिक मुहम्मद जायसी जखन अपन अमर कृति 'पद्मावत'मे एकटा दिल्लीक पूर्व सुल्तान अलाउद्दीन खिलजीकेँ इस्लामी शासनक समय खलनायक बना सकैत छलाह तँ 'किरण' अंग्रेजी शासनक समय किएक नहि? मुदा जखन ओ विलेन रचनामे व्यक्तिक बदला अपन धर्म-जातिक प्रतिनिधित्व कर' लागय तँ लेखकीय ईमानदारी आ पूर्वग्रह पर प्रश्न उठब स्वाभाविक अछि। पद्मावतमे राजा रत्नसेन आ अलाउद्दीन नामसँ हिन्दू-मुसलमान होइतो अपन धर्मक नहि, अपन प्रवृत्ति आ व्यक्तित्वक प्रतिनिधित्व करैत अछि। रत्नसेन पद्मावतीकेँ पयबा ले अपन राज-पाट त्यागि क' 'जोगी' बनि जाइत अछि आ अलाउद्दीन अपन राज-पाटक बलें पद्मावतीकेँ हासिल कर' चाहैत अछि। आ तें अलाउद्दीनकेँ अंतमे एक मुट्ठी छाउर हासिल होइत छै– 'छार उठाइ लीन्ह एक मूठी, दीन्ह उड़ाइ परिथमी झूठी'। एत' जायसीक उदहारण साभिप्राय देल अछि। सूफी संत जायसीक आस्था इस्लाममे रहनि। तथापि हुनक अध्यात्मिक दृष्टि सांप्रदायिक नहि रहनि। कहबाक तात्पर्य ई जे मानवतापूर्ण अध्यात्मिक दृष्टिसँ लैस आस्तिकता सांप्रदायिक नहि भ' सकैत अछि मुदा कैक बेर राजनीतिक दृष्टिसँ लैस नास्तिकता सेहो सांप्रदायिक सोचक शिकार भ' जाइत अछि।

कोनो लेखक जाहि जाति-धर्म-लिंगमे जन्म ल' क' विकसित होइत अछि बहुत प्रयासक अछैतो परिवेशगत गुण आ दुर्गुण ओकर अन्तश्चेतनामे दबल रहि जाइत छै। जे समय पर कनेको आलंबन भेटिते फूटि क' बहरा जाइत छै, लहलहा उठैत छै। आइ काल्हि बहुतो लेखकमे ई नव-अंकुरण देखल जा सकैत अछि। 'डी-कास्ट', डी-रिलिजन' आकि 'डी-जेंडर' होइ लेल जाहि दृष्टि आ द्वंद्वक आवश्यकता होइत छै से सभ लेखकोमे कहाँ संभव भ' पबैत छनि। अंग्रेजी नीतिक कारणें मुस्लिम लीग अलग पाकिस्तानक माँग केलक परिणामस्वरूप जनसामान्य हिन्दू-मुस्लिमक बीच नफरत चरम धरि पहुँचि गेल। आगिमे घी देबाक काज 'हिन्दू महासभा' सेहो की कम केलक? जकर परिणाम अंतत: विभाजन भेल। तथापि विभाजनक त्रासदीक शिकार भेल अनेको भारतीय-पाकिस्तानी लेखक– भीष्म साहनी, अमृता प्रीतम, 'मंटो, इंतजार हुसैन आदिक लेखनमे सांप्रदायिक सोच किएक नहि आबि सकल? जखन कि ओ सभ स्वयं एकर भुक्तभोगी रहथि। एहने स्थितिमे तँ लेखकीय दायित्व होइत छै जे ओ धर्म-जाति-लिंगसँ ऊपर उठि क' मानवताक संग ठाढ़ हुअय। मुदा से 'किरण' जी अपन 'चंद्रग्रहण'मे सोचक स्तर पर 'सांप्रदायिक ग्रहणक शिकार भ' जाइत छथि। उपन्यास छपलाक पचास साल बादो ओ अपन एहि भूलकेँ नहि स्वीकार करैत छथि। 'चंद्रग्रहण'मे मुसलमान द्वारा हिन्दू स्त्रीकेँ अपहरण क' मुसलमान बना देबाक सन्दर्भमे ओ डॉ. रमानंद झा 'रमण'सँ बातचीतमे कहैत छथि, "ओहि समय धरि ब्रिटिश सरकारक 'डिवाइड एंड रुल'क नीति बेस सफल भए गेल छलैक। मुस्लिम समुदायकेँ खूब सनका देने छल। अपहरण कए धर्म परिवर्तन करबैत छल। स्त्रीगणक अपहरण बेसी होइत छलैक। एहिसं जनसंख्या तँ बढ़िते छलैक, वासनाक तृप्ति सेहो होइत छलैक। मेला अथवा भीड़ आदिसं अपहरण बेसी सुविधगर छलैक। ई समस्या ततेक सामान्य आ' दारुण छलैक जे हमरा आकृष्ट कयलक। तें एहि समस्यासं परिचय आ' प्रतिकारक लेल 'चंद्रग्रहण'क रचना हम 'मैथिली सुधाकर'क हेतु कएल"[31]

'किरण'जीक एहि उक्तिमे अनेक विरोधाभास अछि। 1906 ई.मे मुस्लिम लीगक स्थापना भेल। 1915मे अखिल भारत हिन्दू महासभाक स्थापना भेल जकर अध्यक्ष विनायक दामोदर सावरकर आ उपाध्यक्ष केशव बलराम हेडगेवार छलाह। जे बादमे 1925मे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघक स्थापना कयलनि। किरण जी मुस्लिम लीगकेँ तँ आतँकी संगठन कहैत छथि मुदा हिन्दू महासभाक चर्चो नहि करैत छथि जे गोडसे सन आतँकी पैदा क' रहल छल। उपरोक्त सभटा बात ओ सुनल सुनायल आधार पर कहैत छथि जकर कोनो आधार अथवा सन्दर्भ ओ नहि दैत छथि। अपवाद सन एहन घटना भ' सकैत अछि मुदा सवर्ण द्वारा अवर्ण स्त्रीक संग दुर्व्यवहार तँ जगजाहिर अछि जे बादमे यात्रीक बलचनमामे देखा पड़ैत अछि। किरण जीक लेल ई बिन आधारक मुद्दा हुनका लेल 'दारुण समस्या' छल ने कि अंग्रेजी-राजक लूट-खसोट आ दमन जाहि पर उपन्यास अथवा कथा लिखबाक हिम्मत क' सकैत छलाह। अपन उक्त साक्षात्कारमे ओ इहो कहैत छथि जे "दुनू अपहरणकर्ता हिन्दी बजैत अछि। एहि हेतु जे मैथिल संस्कारक व्यक्ति अपहरण सन काज नहि कए सकैत अछि। ओ गुंडा सभ मुस्लिम लीग समर्थित गिरोहक सदस्य छल जकर अड्डा कानपूर-लखनऊसं लाहौर धरि व्याप्त छलैक। एहन गिरोहक सदस्य मैथिली कोना बाजैत?" प्रश्न उठैछ जे मैथिली बजनिहार तथाकथित संस्कारी बूढ़ सभ जखन विवाहक नाम पर दस-बारह वर्षीय बच्ची सभकक शिकार करैत छलाह से अपहरणसँ कम वीभत्स छल की? मिथिलाक सामंत सभ जखन अपन रैयत पर लगान नहि देबाक कारणे ससुरक जाँघमे पुतहुक जाँघकेँ बान्हबाक हुक्म मैथिलीमे दैत छल, से की स्त्रीक सम्मान छल? (देखू स्टीफन हेनिंघम केर किताब)

किरण जीक एहि दृष्टि सं स्पष्ट अछि जे मुसलमानकेँ ओ मैथिल नहि मनैत छथि, तैं ओहि गुंडा-अपहरणकर्ता पात्र सभक क नामे एहि उपन्यासमे 'मुसलमान' राखि देने छथि। उपन्यासमे अपहरणकर्ता मुसलमानसँ बचेबाक लेल जे दल बन्दे मातरम करैत अबैत अछि से काँग्रेसी अछि। स्वयं हेडगेबार हिंदू महासभाक संग कांग्रेसमे सेहो सक्रिय छलाह। 1919मे कांग्रेसक अमृतसर अधिवेशनमे सेहो भाग लेने छलाह। ताहि समय कांग्रेसमे एकटा बड़का धड़ा सांप्रदायिक सोचक शिकार छल जे हिंदू महासभा आ मुस्लिम लीग संगे जुड़ैत गेल, जकर चरित्रक अभिव्यक्ति एहि उपन्यासमे सेहो भेल अछि, "कोई चिंता नहीं। बन्दे मातरम' ध्वनिसँ (सौं) आकाश गुंजि उठल। युवती सभक हृदयमे फेर बलक संचार भेल। ओ लोकनि भूमिकेँ खूब जोरसँ (सौं) धय लेल। शब्दकेँ (के) नजदीक बूझि मुसलमान युवक हिनका दूनू गोटाकेँ (के) घिसियेबाक प्रयत्न केलक। किन्तु दश-बारह व्यक्तिकेँ (के) समीप आयल देखि, पड़ा गेल।"[32] एत' बंकिमक आनंदमठक प्रभाव स्पष्ट रूपें देखल जा सकैत अछि।

लगभग बीस पृष्ठ (डिमाई साइज)मे लिखल गेल 'चन्द्रग्रहण'क संक्षेपमे कथा एतबे अछि जे बहुत दिनक बाद पूर्णग्रास चंद्रग्रहण लाग' बला रहै। भुल्लू बाबूक बेटी रजनी, देवन बाबूक बेटी सुषुमा आदि माय-बापसँ जिद्द कय सिमरिया जाइक लेल ट्रेन पकड़' जाइत अछि। भीड़क कारण सुषमा आ रजनी अपन माय बापसँ बिछड़ि जाइत अछि। दुनूकेँ दू टा मुसलमान गुंडा पकड़ि लैत छै। सुषमाक पति तरुणकेँ स्त्रीक मेला-ठेला जायब पसंद नहि छै। आ तें ओ अग्रसोची पहिनहिसँ अपन पत्नीकेँ बचेबाक लेल तैयार छल। मुदा दुनू स्त्रीकेँ बचेबाक क्रममे गुंडा ओकरा चाकू मारि दैत छै। तखनहि कांग्रेस सेवा दलक कार्यकर्ता सभ आबि क' सभकेँ बचा लैत अछि। सुषमा आ रजनीकेँ सिमरिया माता-पिता लग पहुँचा देल जाइत छै। तरुण अपन पत्नी सुषमाकेँ चीन्हि जाइत अछि मुदा सुषमा नहि। बादमे किछ उपचारक बाद तरुण आ कांग्रेस सेवा दलक कार्यकर्ता सभ सिमरिया पहुंचैत अछि आ ओत' मेला-ठेलामे स्त्रीकेँ जयबा पर विस्तृत भाषण दैत अछि जे कोना मुसलमान सभ हिन्दू स्त्रीकेँ पकड़ि क' मुसलमान बना दैत अछि, वेश्या बना दैत अछि। उपन्यासक अंतमे सुषमा आ तरुणक मिलन होइत अछि।

एहि उपन्यासकेँ लिखबाक उद्येश्य एतबे जे स्त्रीक सतीत्व बचा क' राखब पहिल शर्त तें हुनका मेला-ठेलामे नहि जा' क' घरेमे रहि क' ईश्वर भजन करबाक चाही। तुलसी दास कहने छिथ 'जिमि स्वतंत्र होहि बिगड़हि नारी'। तें स्त्रीकेँ स्वतंत्रताक सपना नहि देखबाक चाही। आ ताहि लेल रजनी सन स्त्रीक

उपन्यासमे घोर निंदा कैल गेल अछि। एतबहि नहि तरुण ईलाज करेबाक बदला सिमरिया मेलामे भाषण देब' पहुँचि जाइत अछि। चाकूक घावक कारण ओकर हालत खराब भ' जाइत छै मुदा सुषमाक सतीत्वक कारणें तरुण ठीक भ' जाइत अछि, "तखन भय की? ककर साध्य जे सतीकेँ (के) स्वामीसँ वंचित कय देत?' यथार्थमे सतीत्व धर्म एहने थिक।" स्पष्ट अछि जे 'किरण' स्त्रीक सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ 'सतीत्व' धरि समेटि दैत छथि। हुनक कथा 'मधुरमनि' आ 'कोन महल रखबै एकर नाम'मे सेहो हुनकर स्त्रीक 'सतीत्व-रूप' पर जोर देखल जा सकैत अछि। जाहि सतीत्वक नाम पर स्त्रीकेँ हजारो वर्ष धरि पुरुष द्वारा गुलाम बना क' राखल गेल, हुनका प्रताड़ित कैल गेल ताहि पर 'किरण'जी एकदम रूढ़िवादी दृष्टि राखैत छथि। एहि कारणें अपन समग्र अधुनिकताक बादो ओ स्त्री विरोधीक पांतिमे जाक' ठाढ़ भ' जाइत छथि।

आलोचक कुलानंद मिश्र कांचीनाथ झा 'किरण' पर विनिबंध लिखने छथि। 'चन्द्रग्रहण'क प्रसंग अबिते हुनका 'किरण'जीक प्रगतिशील सोच पर प्रश्नचिन्ह लागैत बुझेलनि। आ एहि लेल 'किरण'जीकेँ क्लीनचिट देबाक लेल कुलानंद मिश्र सन दृष्टिवान आलोचक सेहो अपन आलोचकीय विवेककेँ बिसरि जाइत छथि। आखिर कोनो प्रगतिशील लेखकक भीतर सेहो विरोधाभास भ' सकैत छनि। आ ओ संक्रमणक काल छल, तखन हुनका 'महामानव' बनेबाक कोन आलोचकीय मजबूरी? कुलानंद मिश्र लिखैत छथि, "एहि उपन्यासमे वर्णित तथा स्त्रीगणक अपहरण हेतु चेष्टाशील 'गुंडा' निश्चित रूपसँ एकटा मुसलमान थिक, मुदा एहि कथाकृतिक ग्रथनसँ ई कतौ स्पष्ट नहि होइछ जे ओ गुंडा मुसलमाने भ' सकैत छल। हम तँ ओहि गुंडाक मुसलमान होयब नितांत संयोगक बात बुझैत छी जे हमर एहने मानलासँ 'किरण'क रचनाकारक प्रगतिशील सोच पर प्रश्न चिन्हकेँ टारल जा सकैत अछि।"[33]

कुलानंद मिश्र 'किरण'जीक रचनाकारक प्रगतिशील सोच पर लागल प्रश्न चिन्हकेँ टारबाक' ले ई भावुक वक्तव्य दैत छथि। जखन कि अपन अही पुस्तकमे ओ हुनकर 'मुसलमान द्वारा हिन्दू स्त्रीक अपहरण' बला बातकेँ सेहो कोट कयने छथि। उपन्यासमे क्रांग्रेसी नेता देवेन्द्र अपन भाषणमे कहैत अछि जे मैथिल स्त्रीकेँ मेलामे नहि जेबाक चाही किएक तँ ओ मुसलमानक कारणें "बाटहिमे मुसलमानी बनि नारकीय जीवन बितबैत छथि। अथवा शहरक चानिनी मुहल्लाकेँ (के) सुशोभित करैत छथि।" ओ एहि तरहक दोसरो उदाहरण दैत अछि, "संजोगसँ फेकन झाक कन्या आइ भेटलथिन। मुसलमान हुनका मूसलमानिनी बनेबाक हेतु मसजिद लय जा रहल छल कि बाटहिमे पुलिसक सहायतासँ छीनल।"[34] इस्लाम अपनेबाक लेल मस्जिदमे जएबाक कोनो बाध्यता नहि, फेर ई गलत जानकारी किएक ? उपन्यासकेँ पढ़ैत बुझाइत अछि जेना ताहि समय अंग्रेज़ नहि अपितु नादिर शाह सन कोनो लुटेरा मुसलमानक राज हो। तखन कुलानन्द जी कोना मुसलमान पात्रकेँ गुंडा होयब संयोग मात्र बुझैत छथि, तकर कोनो तार्किक आधार एहि उपन्यासमे नहि भेटैत अछि। स्पष्ट अछि जे 'किरण'जीक 'रचनाकारक प्रगतिशील सोच पर लागल प्रश्न चिन्ह'केँ टारबाक चिंतामे कुलानन्द जी अपन आलोचकीय विवेककेँ बिसरि जाइत छथि। ओना जयकांत मिश्र सेहो 'किरण'केँ सफल उपन्यासकार नहि मानैत छथि, "'किरण' आओर 'सरोज' एहि कालक अन्य उपन्यासकार थिकाह, परन्तु हुनका लोकनि कोनो नीक उपन्यासकार नहि भए सकलाह।"

कवि-आलोचक विद्यानंद झा 'किरण'जीक दृष्टिकोण पर तीन दृष्टिएँ प्रश्नचिन्ह ठाढ़ करैत छथि। "पहिल धर्म संबंधी हुनक विचार, खासक' मुसलमान धर्मक सम्बन्ध मे। दोसर अछि हुनकर स्त्री-विमर्श आ तेसर हुनकर नैतिक-दृष्टिसँ संबंधित।"[35] विद्यानंद जी 'किरण'जीक वैचारिक अंतर्विरोधकेँ रेखांकित करैत कहैत छथि जे किरण अपन कृति "अंतर्ध्वनि'मे 'हिन्दू, सनातन, आर्य ओ इसलाम, सभ थिक एक सामान'क बात करैत छथि... मुदा चंद्रग्रहण उपन्यासक खलनायकक नामकरण संगहि हिन्दू राष्ट्रक रूपमे भारतक हुनक वर्णन एहि लेल साकांक्ष करैत अछि जे हुनकर सकल रचनाक पुनर्पाठ आवश्यक अछि, एहि विषय पर कोनो ठोस धारणा बनेबाक लेल।" विद्यानंद झा इहो टिपैत छथि जे "एहिना चंद्रग्रहणक पाठ इहो देखा

सकैत अछि जे लेखक कोन तरहक स्त्रीकेँ आदर्श मानैत छथि। अपन इच्छा पर चल'बाली (स्वेच्छारिणी?) आ आनक गप मान'वाली तथाकथित 'पतिव्रता' कैं। मूल रूपें कह' चाहब जे किरणजीक स्त्री-विमर्श कैक टा समस्यासँ ग्रस्त छनि।"[36] स्पष्ट अछि जे विद्यानंद झा 'किरण'जीक अंतर्विरोधकेँ खुलि क' रेखांकित करैत छथि। आलोचना निर्मम भइएकेँ साहित्यिक परम्पराक विकासमे अपन योगदान द' सकैत अछि। नि:संदेह 'स्त्री आ मुसलमान, दुहुक प्रति जे किरण'जीक लेखकीय पूर्वाग्रह अछि से तत्कालीन ब्राह्मणवादी-पुरुषवादी आ वर्चस्ववादी मानसिकतासँ भिन्न नहि। असलमे आक्रान्ता आ वर्चस्ववादी पितृसत्तात्मक सत्ताक लेल अपन शक्तिप्रदर्शनक सबसँ आसान शिकार रहल स्त्री, चाहे ओ कोनो धर्म आकि जातिक सत्ता रहल हो। की युद्धमे जीतल गेल स्त्रीकेँ दासी आ बंधुआ बनेबाक प्रथा भारतमे इस्लामक आगमनसँ पहिने नहि छल की? वैदिक साहित्यसँ ल' क' मध्यकालीन भारतीय वांग्मयमे पन्ना-पन्ना एहन दासीक आख्यानसँ आंटल-पाटल अछि। मायानंद मिश्रक उपन्यास 'मंत्रपुत्र'मे जकर विस्तारसँ वर्णन भेल अछि। की दलित-पिछरल वर्गक स्त्रीक यौन शोषण सवर्ण-पुरुष द्वारा ताहि समय नहि होइत छलैक? फेर मुसलमान पात्र अबिते ओकरा धर्मसँ किएक जोड़ि देल जाइत अछि? अही मानसिकताकेँ साम्प्रदायिकता कहल जाइत छै।

दू संस्कृति अथवा धर्मकेँ आमने-सामने भेला पर टकराव निश्चिते होइत अछि मुदा तकरा संगे समन्वय केर प्रक्रिया सेहो चलैत रहैत अछि। भारतमे इस्लामक आगमन सँ पहिने आर्य-द्रविड़, शक-हूण, शैव-सनातन-वैष्णव-शाक्त, निर्गुण-सगुण आदिक बीच टकराव आ समन्वय भ' चुकल छल जे प्रक्रिया इस्लामक आगमनक बादो चलैत रहल। पुण्यानन्द झाक उपन्यास 'मिथिला-दर्पण'मे सेहो तीर्थयात्राक वर्णन आयल अछि। मुदा ओ एहि बहन्ने धर्मस्थलमे व्याप्त भ्रष्टाचार, कुव्यवस्था आ पंडाक लूट-खसोटकेँ रेखांकित करैत छथि। जखन कि 'किरण'जी 'दर्पण'क लगभग अठारह साल बादो अपन उपन्यास 'चंद्रग्रहण'मे एहन प्रसंग अयलो पर निरपेक्ष रहि जाइत छथि आ अपन पूरा प्रतिभा मुसलमानकेँ गुंडा, लुटेरा साबित कर'मे लगा दैत छथि। 'किरण'जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे रहैत छलाह। ज्ञान-विज्ञानक नव खोज आ अविष्कारसँ ओ परिचित हेबे टा करताह। 'ग्रहण'क बारेमे समाजमे जे अंधविश्वास आ किम्वदंती सभ व्याप्त छल ताहि पर वैज्ञानिक दृष्टिसँ विश्लेषण करबाक हुनका लेल पूरा अवकाश एहि उपन्यासमे छलनि, जे ओ नहि क' सकलाह। जखन कि 'मिथिला दर्पण'मे पुण्यानन्द झा बनारसमे पढ़' बला अपन पात्र योगानंदक माध्यमसँ तत्कालीन वैचारिक परिदृश्यकेँ दर्ज करैत छथि। एतबे नहि पुण्यानंद एहन अवसर पर उमड़ै बला स्त्रीक भीतर उत्साहक समाज-मनोविश्लेष्ण करैत कहैत छथि जे मिथिलाक स्त्री चूँकि जीवन भरि घरमे कैद रहैत छथि तें विवाह आकि मेला-ठेला हुनका लेल अजादीक एकटा अवसर होइत छनि।

'चंद्रग्रहण'मे जे भाषाक दू-दू टा रूप राखि देल गेल अछि, सेहो बहुत खटकैत अछि आ उपन्यासकेँ अपठनीय बनबैत अछि। तथापि 'चंद्रग्रहण'मे यथास्थान किछ वर्णन बहुत प्रामाणिक बनि पड़ल अछि। जेना प्लेटफाम पर छौंडा सभ जाहि तरहें स्त्रीगण पर फब्ती कसैत अछि आ मेलामे 'रगड़ा' कर' चाहैत अछि से स्त्रीक लेल पुरुष मानसिकताक द्योतक थिक। मुदा समग्रतामे 'चंद्रग्रहण' सांप्रदायिक सोचकेँ प्रश्रय देब' बला एकटा स्त्री-विरोधी उपन्यास साबित होइत अछि।

एवंप्रकारें मैथिलीक आरंभिक उपन्यासमे स्त्री-समस्या, भूख, जातीय शोषण आदि विषयकेँ मुख्य स्थान भेटैत छै। परंपरा आ आधुनिकताक द्वंद्व खुलि क' एहि उपन्यास सभमे आयल अछि। पंजीव्यवस्था आ बहु-विवाहक प्रति प्राय: सभ लेखकक दृष्टिकोण आलोचनात्मक छनि। 'मैथिल'क नाम पर बनल 'मैथिल महासभा' सन जातीय संगठनक आलोचना पंडित जीबछ मिश्र अपन लेखमे खुलि क' करैत छथि मुदा पुण्यानन्द झा एकरा सुधारवादी मंचक रुपेँ देखैत छथि। जनसीदन आ पुण्यानंद मैथिल ब्राह्मण स्त्रीक जाहि दारुण दशाक चित्रण आरंभ कैलनि तकर पूर्ण विकास बादमे यात्रीक 'पारो' आ 'नवतुरिया'मे होइत अछि। प्रारंभिक उपन्यासमे भाषा, साहित्य आ सामाजिक आन्दोलन सभ एकहि संग मिलल-जुलल अछि। नि:संदेह

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्ध आ बीसम शताब्दीक पूर्वार्धमे जे मैथिलीक आन्दोलन भेल तकर नींव पर मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ अनेक उपलब्धि प्राप्त भेलैक। मुदा ई आन्दोलन मिथिलाक एकटा बृहत्तर जाति, वर्ग आ संप्रदायकेँ अपन मातृभाषासँ काटबाक कारण सेहो बनल। 'अखिल भारतीय मैथिल महासभा' मूलत: ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थक संगठन छल जकर स्थापना एहि दुनू जातिक भीतर सुधारक लेल भेल छल। मुदा ई संस्था मैथिली भाषा आ साहित्यमे हस्तक्षेप करब शुरू केलक। फलत: मैथिली भाषा सेहो एहि दुनू जातिक पर्याय बनैत चलि गेल। जं एहि संस्थाक नाममे ब्राह्मण आ कायस्थ महासभा जुड़ल रहितै तँ भविष्यमे बहुतो समस्या नहि उत्पन्न होइतै। बांग्ला भाषा संग एहन बात नहि रहल जकर प्रमाण मुस्लिम बहुसंख्यक द्वारा भाषाक आधार पर बांग्लादेशक मुक्ति आन्दोलन थिक। की मैथिलीक प्रारंभिक आन्दोलनकर्ता लोकनि द्वारा मैथिलीकेँ समस्त मिथिलावासीक भाषा बनेबाक लेल कोनो पहल कयल गेल? जवाब प्राय: नहिमे भेटत। कुल मिला क' देखल जाय तँ मैथिलीक आरंभिक कालक लगभग तीन दशकक यात्रा विकासोन्मुख अछि। पुलकित मिश्र अपन रचनामे 'उपन्यास' नामक पहिल प्रयोग करैत छथि तँ जनसीदन एहि विधाक आधारभूमि तैयार करैत छथि जकरा पुण्यानन्द झा विस्तार दैत छथि। नि:संदेह जनसीदन आ पुण्यानन्द झा एहि कालक सबसँ मजगूत खाम्ह छथि जे सामाजिक समस्याक सन्दर्भमे उपन्यास विधाकेँ जीवन संग्रामक माध्यम बनबैत छथि। एहि दुनू लेखकक उपन्यास कथ्य आ शिल्प दुनू अर्थमे अपेक्षाकृत प्रौढ़ अछि। जनार्दन झा 'जनसीदन' मैथिल ब्राह्मणक वैवाहिक समस्याक संग संग अनेक सामाजिक रूढ़ि पर खुलि क' लिखैत छथि। हुनक शिल्प सोझारयल अछि, भाषा प्रवाहमान आ सर्वग्राही। नि:संदेह मैथिली उपन्यास जखन अपन जड़ि खोज' जायत तँ ओकरा 'जनसीदन' सन अपन निस्सन खाम्ह भेटतै।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामदेव झा, जनार्दन झा 'जनसीदन' (विनिबंध), साहित्य अकादेमी,1998 ई., पृष्ठ-49
2. भूमिका, मिथिला दर्पण, लेखक एवं प्रकाशक पंडित पुण्यानन्द झा बी.ए., संपादक- रामानंद झा रमण, अखियासल प्रकाशन, तृतीय संस्करण-2006
3. रामदेव झा, जनार्दन झा 'जनसीदन', साहित्य अकादेमी, 1998 ई., पृष्ठ-51
4. विस्तारक लेल देखू, रामदेव झा, जनार्दन झा 'जनसीदन' (विनिबंध), उपरोक्त, पृष्ठ- 43-44
5. जनार्दन झा 'जनसीदन' पर लिखल विनिबंधमे समालोचक डॉ. रामदेव झा बहुत शोधपूर्ण कार्य केने छथि, संगहि जनसीदन जीक रचनाक तटस्थ मूल्यांकन सेहो। मिथिला मिहिरमे प्रकाशित हुनक पांचू उपन्यासक कथानककेँ सेहो संक्षेपमे रखने छथि। ज्ञातव्य हो जे जनसीदन जीक एखन धरि दू गोट उपन्यास 'निर्दयी सासु' आ 'पुनर्विवाह' डॉ. रामानंद झाक संपादनमे छपि चुकल अछि। एहि लेखमे 'निर्दयी सासु' आ 'पुनर्विवाह' उपन्यासक सन्दर्भ डॉ. रामानंद झाक संपादनमे प्रकाशित पोथीसँ लेल गेल अछि। शेष उपन्यासक कथानक आ सन्दर्भ डॉ. रामदेव झा द्वारा लिखित विनिबंध "जनार्दन झा 'जनसीदन'सँ साभार लेल गेल अछि।
6. देखू, रामदेव झा, जनार्दन झा 'जनसीदन' (विनिबंध), उपरोक्त, पृष्ठ- 58
7. उपरोक्त, पृष्ठ- 58
8. निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह, संपादक : रमानंद झा 'रमण', प्रकाशक- हरिनंदन सिंह स्मारक निधि, राघोपुर, सकरी, 1984, पृष्ठ- 5
9. उपरोक्त, पृष्ठ- 19
10. देखू, रामदेव झा, जनार्दन झा 'जनसीदन' (विनिबंध), उपरोक्त, पृष्ठ- 58
11. देखू, उपरोक्त, पृष्ठ- 66
12. देखू, उपरोक्त, पृष्ठ- 86

13. देखू, भूमिका, निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह, संपादक : रमानंद झा 'रमण', उपरोक्त, पृष्ठ- VI
14. विस्तारक लेल देखू, धर्मशास्त्र का इतिहास, डॉ. पाण्डुरंग वामन काणे, खंड- एक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ- 326-327
15. निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह, संपादक : रमानंद झा 'रमण', उपरोक्त, पृष्ठ-41
16. उपरोक्त, भूमिका- VI
17. विस्तारक लेल देखू जनार्दन झा 'जनसीदन' (विनिबंध) रामदेव झा, उपरोक्त, पृष्ठ- 122-130
18. देखू, पंडित जीबछ मिश्रक रचनावली, संपादक- डॉ. रमानंद झा 'रमण', साहित्यीकी प्रकाशन, सरिसब-पाही, मधुबनी, संस्करण-2016, पृष्ठ-33 (एहि लेखमे उपन्यासक उद्धरण अही पोथीसँ लेल गेल अछि, उद्धरणसँ लेखकक भाषाक संग तत्कालीन भाषाक विविध रूपक झलक सेहो भेटैत अछि)
19. देखू, पंडित जीबछ मिश्रक रचनावली, उपरोक्त, पृष्ठ- 78
20. उपरोक्त, पृष्ठ-109
21. उपरोक्त, पृष्ठ-110
22. उपरोक्त, पृष्ठ-110
23. मुंशी रासबिहारी लाल दास कृत उपन्यास 'सुमति' सम्पदाक- डॉ. रमानंद झा 'रमण', द्वितीय संस्करण 1996, उर्वशी प्रकाशन, पटना, पृष्ठ-5
24. उपरोक्त, पृष्ठ-13
25. उपरोक्त, पृष्ठ-63
26. मिथिला दर्पण, पंडित पुन्यानंद झा, संपादक- डॉ. रमानंद झा 'रमण', अखियासल प्रकाशन, लालगंज, मधुबनी, 2001, पृष्ठ- 22
27. देखू, उपरोक्त, पृष्ठ- 24
28. उपरोक्त, पृष्ठ- 32
29. उपरोक्त, पृष्ठ- 48
30. उपरोक्त, पृष्ठ- 77
31. 7 अगस्त मिथिला मिहिरमे छपल साक्षात्कार-'चंद्रग्रहण'क प्रसंग किरणजीसं भेंट, देखू, कांचीनाथ झा 'किरण' कृत 'चंद्रग्रहण', संपादक- डॉ. रमानंद झा 'रमण', किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान धर्मपुर, उजान, दरभंगा, द्वितीय संस्करण-1913, पृष्ठ- 11
32. उपरोक्त, पृष्ठ-29
33. कांचीनाथ झा 'किरण' (विनिबंध), कुलानंद मिश्र, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1998, पृष्ठ- 61
34. उपरोक्त, पृष्ठ-33
35. देखू, विद्यानंद झाक आलेख- 'कत' ल' जेताह किरणजी हमारा सभ कँ', 'किरण', संपादक- मोहन भारद्वाज, प्रकाशक- प्रतिमान, पटना, पृष्ठ-77
36. उपरोक्त, पृष्ठ- 79

•••

'उत्तर जनपद'क भाषा-शैली

डॉ. विनीत कुमार लाल दास

सम्पर्क : सहरसा, बिहार।
+91 83185 50178

समकालीन मैथिली भाषा-साहित्यक अध्येता, शोधकर्ता आ अनुवादक छथि। पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिली विषयमे स्नातक आ स्नातकोत्तरक शिक्षा प्राप्त कएलाह। स्नातकोत्तर परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भ' स्वर्ण पदकसँ सम्मानित डॉ. विनीत कुमार लाल दास तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालयसँ 'रमानन्द रेणुक जीवन ओ साहित्यक समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर शोध क' पीएच.डी. क' उपाधि प्राप्त केलनि। डॉ. दास शिक्षणक संग-संग शोध, संपादन आ भाषा-प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे सेहो सक्रिय छथि। भारत सरकारक संस्कृति मंत्रालय द्वारा हुनका वर्ष 2019-2020 क' लेल वरिष्ठ फेलोशिप प्रदान कएल गेल छल। 'भाषिणी' परियोजनाक अंतर्गत हिंदी-मैथिली अनुवाद आ समीक्षा कार्यसँ सेहो जुड़ल छथि। मैथिली आ हिंदी दुनू भाषा पर समान अधिकार रखनिहार डॉ. दास संप्रति सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा (बिहार)क मैथिली विभागमे अतिथि प्राध्यापकक रूपमे कार्यरत छथि तथा शिक्षण, शोध आ अनुवादक क्षेत्रमे सक्रिय छथि।

मैथिली उपन्यास साहित्यमे अनेक उपन्यासकार भेलाह अछि जाहिमे एक नाम साहित्य अकादेमी पुरस्कारकारसँ पुरस्कृत, प्रसिद्ध समालोचक, कवि-गीतकार, कथा-उपन्यासकार रमानन्द रेणुक सेहो लेल जाइत अछि। ई अपन उपन्यास 'उत्तर जनपद'मे सम्पूर्ण मिथिलाक भाषाक दिग्दर्शन करौने छथि। ई मात्र भाषेटाक दिग्दर्शन नहि करौने छथि अपितु मैथिली भाषाक विभिन्न जे बोली सब अछि तकरो दिग्दर्शन करौने छथि। हिनक भाषामे पात्रोचित भाषा आ रचनोचित भाषा दूनू देखबामे आबैत अछि संगहि भाषाक जे सब विशिष्टता सब रहैत छैक से हिनक रचनामे स्पष्ट रूपमे देखबामे आबैत अछि।

मनमे आयल विचारकेँ व्यक्त करबाक लेल एक भाषाक बेगरता होइत छैक। ओना संकेतसँ सेहो व्यक्त कयल जाइत छैक मुदा संकेतकेँ साहित्यमे बेसी महत्व नहि देल जाइत छैक। साहित्यमे भाषा आ ओकरा व्यक्त करबाक लेल एक लिपिक बेगरता होइत छैक। तेँ तँ लेखन-कला मानव-जीवनमे अपन अक्षुण्य स्थान बनौने अछि।

जे समाज जतेक विकसित होइत छैक ओहि समाजक भाषा ओतेक समृद्ध होइत छैक संगहि ओहि भाषामे अनेक विशेषता सब सेहो देखबामे आबैत छैक। एहि बातकेँ ध्यानमे राखैत जखन अपन भाषा मैथिलीकेँ देखैत छी तँ बुझना जाइत अछि जे इहो भाषा अनेक विशेषताकेँ अपनामे पचौने अछि।

भाषाक विशेषता व्यक्ति-व्यक्तिपर सेहो निर्भर करैत छैक। प्रत्येक व्यक्तिक अपन-अपन जीवनानुभूति फरक-फरक रहैत छैक आ अपन भाषामे दिनानुदिन परिमार्जित करैत रहेत छैक जाहिसँ भाषा समृद्ध आ विशेषता सबसँ परिपूर्ण होइत रहैत छैक।

भाषापर संस्कृति, समय, शासक आदिक प्रभाव सेहो देखबामे आबैत छैक। संस्कृतिसँ संबंधित शब्द सब प्रत्येक भाषामे देखबामे आबैत छैक। समयक संग किछु शब्द संब समाप्त होइत चलि जाइत छैक आ किछु-किछु नव शब्द सबक सेहो आगमन होइत रहैत छैक जाहिसँ भाषाक प्रवाह आ जीवन्तता बनल रहैत छैक। शासकक प्रभाव भाषापर निश्चित रूपसँ देखबामे आबैत छैक। शासकक भाषा आम लोक धरि अपन स्थान बना लैत छैक आ धीरे-धीरे आम लोक शासक भाषाकेँ आत्मसात करय लागैत छैक। जतेक शासक बदलैत छैक ततेक भाषामे दोसर नव शब्द सबक आगमन होइत रहैत छैक आ भाषा सब समृद्ध होइत रहैत छैक।

कोनो भाषाक विस्तृत रूप ओकर साहित्यमे विशेष क उपन्यासमे देखबामे आबैत छैक। तेँ एहि ठाम हम रमानंद रेणुक मैथिली उपन्यास 'उत्तर जनपद'केँ आलोच्य विषय बनाओल अछि। एहिमे विस्तृत रूपसँ हुनक आ हुनक पात्रक भाषाक जनतब भेटैत अछि।

मैथिली उपन्यास साहित्यमे अनेक उपन्यासकार भेलाह अछि जाहिमे एक नाम साहित्य अकादेमी पुरस्कारकारसँ पुरस्कृत, प्रसिद्ध समालोचक, कवि-गीतकार, कथा-उपन्यासकार रमानन्द रेणुक सेहो लेल जाइत अछि। हिनक पहिल उपन्यास 'दूध-फूल' मैथिली उपन्यास साहित्यमे एक विशिष्ट छाप छोड़ने अछि। जखन ई देखलथिन्ह जे हिनक रचना मैथिली पाठकक संग छात्र-छात्राक लेल सेहो उपयोगी सिद्ध भ रहल छनि तखन दोसरो रचना दिस प्रवृत भेलथिन्ह आ ओकरे परिणाम अछि जे ई दोसरो उपन्यास मैथिली उपन्यास साहित्यकेँ देलथिन्ह जे अछि– 'उत्तर जनपद' उपन्यास।

'उत्तर जनपद' उपन्यास रमानन्द रेणुक दोसर कृति थिक जे कर्णगोष्ठी, कोलकाता द्वारा 2003मे प्रकाशित करल गेल छलैक। ई उपन्यास 280 पृष्ठमे पूरा करल गेल छैक जे नओ अंशमे लिखल गेल छैक। एहि उपन्यासमे कतहु अंकक बाद भाग/अंश/खण्ड आदि शब्दक प्रयोग नहि करल गेल छैक। मात्र अंक लिखल गेल छै।

रमानन्द रेणु मैथिली साहित्यमे अपन उपस्थिति गीत ल क देने छलथिन्ह आ बादमे गीत लिखब छोड़ि, आन-आन विधामे लिखय लागल छलाह जाहिसँ कथा, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, समीक्षा आदिक अनेक पोथीक रचनाकार बनलाह। ई कुशल सम्पादक सेहो छलाह। "हिनक पूर्ण नाम थिकनि रमानन्द लाल दास, जन्म भेल छनि 3 जनवरी 1934केँ दरभंगा जिलाक उसमामठ नामक गाममे।"[1]

"उपन्यासमे उपन्यासकारक ओ पात्रक दुनू व्यक्तिक भाषाक अभिव्यक्ति मिश्रित रहैत अछि। जें लेखक विद्वान ओ संस्कृतिक परिवेशसँ परिवेष्ठित रहल छथि तें लेखक भाषा शुद्ध एवं सुसंस्कृत होएब अनिवार्य रहैत अछि। पात्रक बहुलता ओ सब तरहक पात्रक समावेश भेलाक कारणेँ (मूर्ख-विद्वान, पुरुष-स्त्रीगण, सवर्ण-सवर्णेत्तर) भाषा फराक-फराक भेलाक कारण मिश्र भाषाक उपन्यासमे पात्रानुसार प्रयोग होएब आवश्यक। यहि सब वस्तु (संवाद भाषा प्रयोग) केँ जे लेखक ध्यानमे राखि रचना करैत छथि ओ यशस्वी एवं जे एकर आवश्यकता पर ध्यान नहि द' केहनो कहुना रचना क' लैत छथि, ओ ओतेक यशस्वी नहि होइत छथि।"[2]

'उत्तर जनपद' उपन्यासक संदर्भमे बड़ कम लिखल गेल अछि। डा. विभूति आनन्द 'प्रथम दशकक उपन्यास-लेखन' शीर्षकसँ निबंध लिखने छथि जे यू०जी०सी द्वारा आयोजित संगोष्ठीमे पठित आलेखक संचयन 'सम्प्रति'मे प्रकाशित अछि जाहिमे उत्तर-जनपदक संबंधमे लिखने छथि- "रमानन्द रेणुक 'उत्तर जनपद' एक सामाजिक उपन्यास थिक। ई उपन्यास मिथिलाक उत्तरी क्षेत्र, जे सुगौली संधिक बाद नेपालक अधीन भ' गेल, पर आधारित अछि। एहिमे उक्त क्षेत्रक जीवन-गतिक वर्णन उपन्यासकार अपन आने-आन रचना जकाँ बहुत फड़िछाक' आ रेघाक' कयलनि अछि।"[3]

रमानन्द रेणुक 'उत्तर जनपद' उपन्यासक भाषामे विभिन्न प्रकारक युग्म-शब्दक प्रयोग देखबामे आबैत अछि। जेना- गप्प-शप, साढ़े नौ-दस, जेठ-अषाढ़, नौ-दस, घंटा-दू घंटा, पढ़बा-लिखबा, जेना-जेना, बैसा-भिड़ा, दिन-समय, भरण-पोषण, पूरा-पूरी, आइ-काल्हि, घर-वर, वस्तु-जात, हाट-बाजार, बढ़ा-चढ़ा, जोगाड़-पाती, हिनका-हुनका, दौगि-धूपि, लेन-देन, पूछ-ताछ, एत'-ओत' पाँच-छौ, नोन-रोटी पच्चीस-पचास, चाह-पान, सबेर-सकाल, कर्जो-वर्ज, दू-चारि, पाँच-दस, तरुआ-भुजुआ, पापड़-तिलौड़ी, इंतजाम-व्यवस्था, कर्जो-पैंच, बुझि-सूझि, आठ-नौ, नीक-निकुत, दस-बीस, स्वागत-सत्कार, काज-रोजगार, शिक्षा-दीक्षा, पैंतालिस-पचास, लीखब-पढ़ब, कागज-पत्र, पढ़ल-लिखल, अङने-अङने, टहल-टिकोरा, आय-व्यय, हिसाब-किताब, लार-दुलार, भोजन-पनपियाइ, होइत-होइत, इम्हर-ओम्हर, टहल-अढ़ौती, सदा-सर्वदा, समय-समय, भरण-पोषण, दर्द-पीड़ा, दुख-पीड़ा, कहुना-कहुना, मदति-सहादति, कुटिया-पिसिया, गाम-घर, शहर-बाजार, कत्तहु-कत्तहु, नोकरी-चाकरी, टाका-पाइ, कुर्मी-धानुक, एक-एक, क्षण-पलक, खरीद-बिक्री, सूझ-बुझ, जखन-जखन, एक-डेढ़, काज-प्रयोजन, परिचय-पात, पाछाँ-पाछाँ, धीरे-धीरे, हल्लुक-हल्लुक, लागल-लागल, दुब्बर-पातर, काम-काज इत्यादि।

एहि उपन्यासमे अंग्रेजी भाषाक शब्दक प्रयोग सेहो ठाम-ठामपर देखबामे आबैत अछि। जेना-लाइन, बी. ए., एम. ए., कन्फर्म, फिजिक्स, केमेस्ट्री, मैथ, एम. एस. सी., पीएच.डी., डी. लिट, चीफ

इंजिनियर, मैट्रिक, फार्म, मिडिलची, मिडिल, इन्ड्रेस, पास, अपर, स्कूल, पीस, कॉलेज, कलक्टरी, ब्लॉक, ट्यूशन, क्वाटर, ज्वाइनिंग लेटर, ड्रॉफ्ट, फेयर, ऑफिस, ट्रेजरी, इस्टैब्लिसमेंट सेक्सन, नेम प्लेट, ऑडर, डी. एम. कौरेस्पॉन्डेंस, इस्यू- रिसीट, डेट, पेंडिंग, डेट वाइज, रजिस्टर, इंट्री, बुक, डॉकेट, रिटन, लोन सेक्सन, रजिस्ट्री, बेरीफिकेशन, ऑडर-सैक्सन इत्यादि।

एहि उपन्यासमे अरबी-फारसी-उर्दू भाषाक शब्दक प्रयोग सेहो ठाम-ठामपर देखबामे आबैत अछि। जेना- करीब, खास, तरह, मतलब, असल, जमाना, पैरवी, सिफारिस, खर्च, मामला (मामिला) बदतर, इंतजाम, जमींदारी, बेरोजगार, नोकरी, हिसाब-किताब, जिम्मा, बस्ता, विस्तर, अमानत, मोकदमा, पैरवी, नगदी, जिरात, खतम, दाखिल, अमला, मालिक, परेशान, दर्द, असल, मदति-सादति, जिम्मेदारी, शहर, आमदनी, जगह, अखबार, तारिख, बहाली, फुरसति, एवज, मोहल्ला, गुंजाइश, सहूलियत, गरीब, खास, आदत, इशारा, दफ्तरी, इशाक, तारीफ, पुस्त-दर-पुस्त, खातीर, दुरुस्त, जानकार, फजीहति, जमाबन्दी, कोशिश, जमीन, दोस्त, फिकिर इत्यादि।

एहि उपन्यासमे विशेषण शब्दक प्रयोग सेहो ठाम-ठामपर देखबामे आबैत अछि। जेना- बड़ थोड़, बड़ उत्साह, बड़ असोकर्ज, शैक्षणिक योग्यता, यांत्रिक विशिष्टता, पदोन्नतिक परीक्षा, सर्वोच्च अंक, विभागीय परीक्षा, रिक्त स्थान, प्रतीक्षा सूची, घुतहा रोग, प्रधान कार्यालय, निम्न-मध्यम कोटि, नीक घर-वर,मेही अरबा चाउर, तरुआ-भुजुआ तरकारी, यथोचित विदाई, समुचित शिक्षा-दीक्षा, अच्छर कटुआ, निकृष्ट व्यक्ति, कष्टप्रद जीवन, दछिनवारि गाम, प्रधान दीवान, बड़ लार-दुलार, बड़ कठिन, दुलारू, छोटका कला, समस्त जोड़, आमरण व्याधि, नितान्त असंभव, मौखिक अन्तर्वीक्षा, लिखित परीक्षा, ऊपरी आय, सरकारी क्वाटर बहुत रास समस्या, तमहा चूड़ा, खास विशेषता, फुलाओल धान, मझोला तामा, सुखले चूड़ा, साधारण गृहस्थ, अधिक विलक्षण, सुभ्यस्त यादव, बेस अधिक, सामान्य भाव, बकेन महीस, विशेष ध्यान, बड़ उछतगर, पर्याप्त मात्रा, अतिथि वाला चौकी, बेस उल्लास, मुख्य द्वारि, हाथ जोड़ि प्रणाम, अधबयसु, श्याम रंगक व्यक्ति, अत्यधिक उल्लसित, कुल काम, गंभीरतापूर्वक जाँच, घोकचल चाम, नोरायल आँखि, पूरापूरी असोथकित, पूर्णत: निर्विकार इत्यादि।

एहि उपन्यासमे तत्सम शब्दक प्रयोग सेहो ठाम-ठामपर देखबामे आबैत अछि। जेना- पश्चात, सम्पूर्ण, प्रत्येक, समस्त, आश्रम, विवाह, आवश्यक, प्रयत्न, ज्ञात, शीघ्र, श्वाँस, निर्गत, अनिच्छा, पूर्णत:, ग्रहण, स्वयं, भोजन, आभ्यान्तर, गृहस्थ, तदनुकूल, तत्काल, अत्यधिक इत्यादि।

एहि उपन्यासमे काव्यात्मक भाषाक प्रयोग सेहो ठाम-ठामपर देखबामे आबैत अछि। जेना–

1. "हँ, राति कनि अन्हार धरि छलैक अवस्स।" [4]
2. "सेन साहेब कोनो बंगाली नहि, अपितु ओ छलाह शुद्ध बिहारी।" [5]
3. "छैक मैथिली ब्राह्मणमे इम्हर एकमात्र सौराठक सभा।" [6]

एहि उपन्यासमे अलंकृत भाषाक प्रयोग सेहो ठाम-ठामपर देखबामे आबैत अछि। जेना–

1. "नौ-दस तँ साँझे जकाँ लगैत छलैक।" [7]
2. "ओ सभ तँ आब नीक जकाँ अभ्यस्त भ' गेल छल।" [8]
3. "एहूमे आब नीक जकाँ धाँधली, पैरवी आ टाका खुजि क' काज कर' लागि गेल छलैक।" [9]
4. "आब तँ सभ किछु जेना सहज-सनातनी भ' गेल छलै।" [10]
5. "दिन-समय तँ बदलिए गेलैक आ मँहगी ऊपरसँ भारी बोझ जकाँ लदा गेलैक।" [11]
6. "ई कोनो बाजारक सामान नहि छैक जे टाका ल' क' जायब आ ओम्हरसँ वस्तु-जात जकाँ वर कीनने चल आयब।" [12]
7. "सभासँ कुटमैती एक तँ पटिते नहि छैक आ जँ पटबो करैत छैक, तँ नीक जकाँ लोक ठका आइत अछि।" [13]
8. "ओ बालक ततेक ने दुलार छलाह जे अमानतक पढाइ बड़ कठिन सन लगलनि।" [14]

9. "मोन होइत रहैत छलनि जे जहल सन ओहि स्कूलसँ छूटि धीया-पूताक संग कबड्डी आकि चिक्का-दरबड़ि खेलाइत रहितथि।" [15]
10. "बलदेब बाबू ओकरा सोझाँक कुरसी पर तात्काल बेसि जयबाक संकेत क' किछु व्यस्त जकाँ टेबुल पर राखल पैड खोलि बिल सभ कँे देख' लगलाह।" [16]
11. "सरबाबू अपना कँे कहना स्थिर कयलनि आ हारल पासा जेना समेटि लेने होथि।" [17]

एहि उपन्यासमे मुहाबराक प्रयोग सेहो ठाम-ठामपर देखबामे आबैत अछि। जेना–

1. "अन्हारमे हथोड़िया देब।" [18]
2. "डाँड़ टुटब।" [19]
3. "माटि कँे चिक्कस बनायब।" [20]
4. "पेट पोसब।" [21]

एहि उपन्यासमे कहबी (लोकोक्ति)क प्रयोग सेहो देखबामे आबैत अछि। जेना– "पितियौत भाय आर खुजि क' आगाँ कहलकनि– बड़ाबाबू, भैया तँ गाम पर तेहन ने फूल आ फूलबाड़ी लगौने छथिन जे देखि पड़ोसिन जरि मरय...।" [22]

एहि उपन्यासमे अनुभवी वचनक प्रयोग सेहो देखबामे आबैत अछि। जेना–

1. "लाख ने क्यो योग्यता बढ़ा लिअय, किन्तु विभागक लेखें धनि सन।" [23]
2. "अपन नोकरीक बल पर परिवार कँे नोन-रोटीक जोगाड़ तँ लोक कैए नहि पबैत अछि, तँ ऊपरसँ पच्चीस-पचास हजार टाका गनत कोन आधार पर।" [24]
3. "जाबत अपना कन्यादान कपार पर रहतनि ताबत आदर्शक व्याख्यान बेस देताह, किन्तु जखने निवृत्त भेलाह आ हाथमे वर होनि तँ फेर ओहो ओहने रूप धारण क' लैत छथि।" [25]
4. "होनी आखिर भैए क' रहतै।" [26]

एहि उपन्यासमे उपन्यासकारक भाषा आ हुनक उपन्यासक पात्रक भाषामे अन्तर देखबामे आबैत अछि। जेना– "अजीत वण्डल खोललक। लगभग सत्तरि-पचहत्तरि टा चिट्ठी छलैक। ओ रिसीट बुकमे धाँइ-धाँइ इन्ट्री कर' लागल। लगभग आधा घण्टामे सभ समाप्त क' सरयूबाबूक आगाँ बढ़बैत कहलकनि– देखियौ तँ, कतहु कोनो गलती ने तँ भ' गेलै?

ओ विस्मित होइत एक पलक धरि ओकरा दिस एक टक देखैत रहलाह आ लगले उक्त रजिस्टर कँे खोलि गम्भीरतापूर्वक जाँच कर' लगलाह।

सरयूबाबूक मुँहेठ पर कतेको प्रकारक रङ अबैत-जाइत रहल। पन्द्रह-बीस मिनटक पश्चात् ओ बही लेने बड़ाबाबूक टेबुल दिस विदा भेलाह। अजीत कँे संदेह भेलैक जे कोनो पैघ गलती भ' गेलासँ ओ बड़ाबाबूसँ तकर नालिश कर' जा रहल छलथि। ओहो कनि भयार्त भेल आ उत्सुकतावश हुनके पाछाँ-पाछाँ विदा भेल।

क्षणे भरिमे ओ मोनमे निश्चय क' लेलक जे जँ कोनो गलती भैए गेल होयतैक, तँ ओ बड़ाबाबूसँ अपन चूक स्वीकार क' माफी माङि लेत आ आगाँसँ सचेत रहबाक अपन प्रतिज्ञाक आश्वासन द' देतनि। किन्तु, सरयूबाबू बड़ाबाबू कँे बही खोलि क' देखबैत बजलाह– हो बालदेव, ई लड़िका तँ लुत्ती ह'बे।... हम जब कुछ बताबे लगली तँ बोलल जे रहे दिउ, जे कुछ काम हो से दिउ। हम करैत हती आ गलती होए तँ बतला दिउ।... आ से जनलहू, ई तँ आधो घंटा नइ लागल होतै कि एक डेट के सगरो चिठ्ठी-डॉकेट कर देलस। आ तारीफ ई जे कहूँ कुच्छो गलती नइ कयलस।..." [27]

निष्कर्ष

रमानन्द रेणु अपन उपन्यास 'उत्तर जनपद'मे सम्पूर्ण मिथिलाक भाषाक दिग्दर्शन करौने छथि। ई मात्र भाषेक टाक दिग्दर्शन नहि करौने छथि अपितु मैथिली भाषाक विभिन्न जे बोली सब अछि तकरो दिग्दर्शन करौने छथि। हिनक भाषामे पात्रोचित भाषा आ रचनोचित भाषा दूनू देखबामे आबैत अछि संगहि भाषाक जे सब विशिष्टता सब रहैत छैक से हिनक रचनामे स्पष्ट रूपमे देखबामे आबैत अछि। जेना– युग्म शब्दक प्रयोग, अंग्रेजी भाषाक शब्दक प्रयोग, अरबी-फारसी-उर्दू भाषाक शब्दक प्रयोग, विशेषण शब्दक प्रयोग, तत्सम शब्दक प्रयोग, काव्यात्मक भाषाक प्रयोग, अलंकृत भाषाक प्रयोग, मुहाबराक प्रयोग, कहबी (लोकोक्ति)क प्रयोग, अनुभवी वचनक प्रयोग आ स्थानीय भाषा वा बोलीक प्रयोग।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा. भीमनाथ झा, 1985, परिचायिका, भवानी प्रकाशन, पटना; पृष्ठ संख्या– 180
2. श्रीशंकर झा, 2016, मैथिली उपन्यासक विकास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली; पृष्ठ संख्या– 115
3. डा. विभूति आनन्द, 2012, सम्प्रति, मैथिली विभाग, चन्द्रधारी मिथिला विज्ञान महाविद्यालय, दरभंगा; पृष्ठ संख्या– 114
4. रमानन्द रेणु, 2003, उत्तर जनपद, कर्णगोष्ठी, कोलकाता; पृष्ठ संख्या – 09
5. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 10
6. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 10
7. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 09
8. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 09
9. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 09-10
10. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 10
11. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 10
12. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 10
13. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 10
14. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 12
15. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 12
16. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 17
17. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 19
18. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 09
19. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 10
20. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 10
21. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 12
22. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 162
23. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 09
24. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 11
25. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 11
26. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 194
27. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 19

•••

डॉ. अभिलाषा

सम्पर्क : दरभंगा, बिहार।
+91 8409408123

मैथिली साहित्यक लब्धप्रतिष्ठ लेखिका आ समीक्षक डॉ. अभिलाषाक पह, ओ छौँड़ी, आ फूलभँगा कथा संग्रह प्रकाशित आ चर्चित छनि। संगहि हिनक 'पोथी पाठ' आ 'यथाप्रसंग' (समीक्षा) बेस प्रतिष्ठा अर्जित कएलनि अछि। मैथिली साहित्यमे विशिष्ट योगदान लेल हिनका– 'ज्योत्स्ना सम्मान' (2018), 'डॉ. गणपति मिश्र साहित्य सम्मान' (2020), 'तिरहुत साहित्य सम्मान' (2022) आ 'साहित्यिकी सम्मान' (2025) सँ सम्मानित कएल गेल छनि। संप्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार)मे वरिष्ठ सहायक प्राध्यापकक पद पर कार्यरत छथि।

चतुरानन मिश्रक 'कला' : एक दृष्टि

मैथिली उपन्यास 'कला'क लेखक चतुरानन मिश्र साम्यवादी (सीपीआई) छलाह। आमजन हुनका 'चतुराबाबू' अथवा 'चतुरबाबू' कहल करनि। ओ एकबेर लोकसभा, दू बेर राज्यसभाक सदस्य रहलाह। पार्टी लोकसभा लेल भोगेन्द्र झाक टिकट काटि हुनका देने छलनि। ओही बेर चतुरा बाबू केन्द्रमे मन्त्री सेहो बनल रहथि। हुनका कृषि मन्त्रालयक दायित्व सौंपल गेल रहनि ओ गिरिडीहसँ विधायक सेहो रहलाह।

मुदा ई सब अवान्तर विषय अछि। एतय हमर अभिप्राय अछि जो ओ मैथिलीक लेखक रहथि। प्राय: पहिने ओ लेखके रहथि। जानकारीक मुताबिक हुनक चारि गोट मैथिलीमे पुस्तक प्रकाशित अछि, यथा– 'कला' (उपन्यास), विकास, विचारार्थ तथा गप्प-शप्प (विविध)। एक गोट पुस्तक हिन्दीमे सेहो छनि– 'वामआन्दोलन और समकालीन सवाल'।

प्रसंगवश उल्लेखनीय जे आन दलमे सक्रिय रूपसँ जुड़ल मात्र पद्मश्री बिलट पासवान विहंगम रहिथ। ओ कांग्रेसी रहथि। हुनद अनेक कविता-गीत-संग्रहक प्रकाशन अछि। सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मादे किछु विशेष अछिये नहि।

साम्यवादी दलक भोगेन्द्र झा सेहो मैथिलीमे लिखैत छलाह। भाषण सेहो मैथिलीटामे। ओ मैथिलीमे पत्रिका बहार करथि– 'मिथिला टाईम्स'। कवि-पत्रकार सुकान्त सोम ओतहि से अपन पत्रकारिताक शुरुआत कएने रहथि। किछु समय तक कवि-कथाकार श्री राज सेहो ओहिमे काज कएलनि। पार्टी कार्यालय अजय भवन, दरभंगामे ओहि पत्रिकाक कार्यालय रहै। टैबुलेट साईजमे।

भोगेन्द्र झा सेहो कविता लिखैत छलाह। तुकान्त। प्राय: क्रान्तिदूत नामसँ। तकर कए टा पुस्तिका बहरायल अछि। एकर अतिरिक्त एक पुस्तिका अछि– 'भारतीय दर्शनक क ख ग घ'। 'क्रान्तियोग' नामसँ पुस्तक छनि। ओ अपन स्तरक पर्चा-पोस्टर मैथिलीमे छपाबथि। बादमे पार्टी दिससँ आब' लगलनि। विजयकान्त ठाकुर सेहो वामपंथी रहथि। सीपीआईएम। ओ सेहो 'चिनगी' नामसँ मैथिलीमे पत्रिकाक प्रकाशन करथि। आलेख सब सेहो लिखथि। रामलखन राम 'रमण' सेहो हिनक अनेक कविता पुस्तक प्रकाशित अछि। ई अद्यावधि लेखनसँ जुड़ल छथि। ई विधायक, मन्त्री धरि रहल छथि।

दोसर दल काँग्रेसमे साहित्यसँ जुड़ल एकमात्र विलट पासवान 'विहंगम' रहथि। ओ पद्मश्री सेहो रहथि। हुनद अनेक पुस्तक छनि। ललित नारायण मिश्रा लेखक नहि रहथि। मिथिला-मैथिलीक सुच्चा अनुरागी रहथि।

मुदा हमर विमर्श अछि राजनीतिक लोकनिक रचनाधर्मिताकेँ ल' क', एहि धर्मक निर्वहन मैथिलीमे चतुरानन मिश्र कयलेनि। ओ वामपंथी छलाह। सोच प्रगतिशील छलनि। शेष सब साहित्य-लेखनसँ जुड़ल टा रहथि।

विमर्श

चतुरानन मिश्रक उपन्यास 'कला' (1948) अपन नवीन दृष्टिकोणक कारणें काफी चर्चित रहल अछि। 'कला' ताहि कालखंडमे लिखल गेल, जखन मिथिला क्षेत्र, जे अनादिकालसँ रूढ़िवादी सोचसँ ग्रस्त छलै, मुदा परिवर्तनक बयारकेँ सेहो स्पर्श क' रहल छलै। ओही कालखंडमे हरिमोहन झाक कथा आ उपन्यास 'कन्यादान' सामाजिक जड़ताकेँ तोड़' लागल छलै। यात्रीक पारो सेहो आवि चुकल रहै। आ जकर विषय-वस्तु अनमेल विवाह रहै। आ तकरहि पीड़ा-कष्ट भोगैत स्त्रीगणक मन-मिजाज, लुंज-पुंज भेल आ औनाइत-पीड़ाइत सन...

ताहि अवधिमे आयल चतुरानन मिश्रक 'कला' जे विधवा विवाहक पक्षकेँ वकालत करैत रहै। ओहि पुस्तकक कवर पृष्ठ पर यात्रीक टिप्पणी रहै– "कलादाइक दुर्गति आ अंतमे सुगति– एहिसँ हम बड़े प्रभावित भेल छी। अनमेल विवाहक उपरांत अपना समाजमे जे-जे अनर्थ देखल जाइत अछि, ताहिसँ सब गोटे परिचित छी। 'दैवसँयोग' आ 'कपाड़क लिखलाहा' कहि देलासँ एहि समस्याक समाधान दुघर्ट। हमरा जनैत कलादाइ बेस कयलन्हि जे डॉक्टर कलानन्दसँ बियाह क' लेलन्हि। एहि उपन्यासक साहसी लेखक हमरा सभक आशीर्वादक पात्र थिकाह।" [1]

एहि उपन्यासक प्रकाशन-पूर्व एक आर टिप्पणी प्रो. हरिमोहन झाक द्रष्टव्य अछि– "हम एहि उपन्यासकेँ आदि से अंत धरि पढ़ि गेलहूँ। 'कला' क दारुण दशा देखि मर्माहत भ' जाय पड़ल। एहन कोनो सहृदय पाठक नहि होयताह जिनका ई कथा पढ़ला उत्तर क्षोभ नहि होनि। उपन्यासक प्रत्येक घटनासँ ध्वनित होइछ जे लेखकक हृदयमे क्रान्तिक ज्वालामुखी भभकि रहल छनि। हम आशा करैत छी जे जाहि-जाहि सामाजिक कुरीतिक दिस लेखकसँकेत कएने छथि तकर एहि रूपें सुधार भ' सकत, जाहिसँ एहि प्रकारक करुण कथावाला उपन्यासक पुनः आवश्यकता नहि पड़त।" [2]

कलाक कथानकसँक्षिप्त अछि, मुदा तकर सम्भावना असीम अछि। आ लेखकक अपेक्षा सेहो। एकर कथानक अछि एक मैथिल ब्राह्मण कुलोदय 'कला' नामक एक लड़कक। ओ विवाह योग्य भ' चुकल छलीह। अवस्था दसकेँ जे छुबय लागल रहै। तहिया स' एह तय अवस्था रहै। रजस्वला पूर्व कन्या, आपश्चात् माउग (स्त्री)। ओना ई विवाह-विमर्श मैथिली साहित्यक धुरी रहल अछि। आब बहुत बेसी परिवर्तन भेल अछ। 'बाल विवाह' जन्य धारणा सेहो क्षीण, अनमेल वा बिकाउआ प्रथा, कब्र बनि चुकल अछि।

कलाक समय अपन रूढ़चिन्तनक युवाकाल रहै। तैँ फल होइत छै जे ओ चरिगुन्ना-पचगुन्ना सुसम्पन्न बालकसँ बियाहि देल जाइत अछि। पिताक विरोधक बावजूद, सौतेली मायक इच्छा आ जिद विजयी होइत छै। आ ताहि प्रतिक्रिया स्वरूप कलाक पिता घर छोड़ि दैत अछि। वर्ष दिन बाद ओ घर घुरैत अछि। कला द्विरागमन भ' अपन सासुर अर्थात् सहारनपुर, जतय ओकर बर नौकरी करैत अछि। फेर धीरे-धीरे जीवन रसमय होइत जाइत अछि। कलाक यौवन-कला प्रस्फुटित होमय लगैत छै बरक बदली भ' जाइत अछि। आ कुसंयोग एहन जे कलाक कपार फुटि जाइत अछि। यौवन फुलाइत छलै कि ओकर सोहाग मेटा जाइत छै, ओ विधवा भ' जाइत अछि।

एहि तरहक वज्रपातक निदान एहि तरहेँ होइत छै जे कलाकेँ ओकर देयोर गाम ल' अबैत अछि। फेर नैहर-सासुर होइत विपत्ति पर मलहम लगैत अछि। मोन लगाब' लेल देयोर किछु पुस्तक पढ़य हेतु दैत छथिन। कालिदासक 'कुमार सम्भव' ताकिमे प्रमुख। देयोरक ई सदाशयता भाउज के ओकर निकट आनि दैत अछि।

परिणाम विधवा कला, गर्भवती भ' जाइत अछि। फेर तखन सासुरक प्रताड़ना आरंभ। कला निर्णय लैत अछि आ महिला विधावाकसँगे काशी चलि आबैत अछि। किछुवे दिनमे ओकरा बुझा जाइत अछि जे

एत' अक्षत बचब असम्भव। फेर तँ अन्तिम निदान, भोरे-भिनसरे स्नान-ध्यान करैत बाबा विश्वनाथक दुआरि अबैत-अबैत बेहोश भ' भूलुंठित भ' जाइत अछि।

फिर एक ड्रामेटिक स्थिति बनैत अछि। ओकर अस्पतालमे इलाज शुरू होइत अछि। स्वाभाविक ओ स्वस्थ भ' जाइत अछि। आ एक युवक कहने डॉक्टर कलानन्दसँ विवाह भ' जाइत छै, ओकर सहमतीयेसँ। अर्थात् विधवा विवाहक स्वीकृति। सहृदय डॉक्टर पतिक सहायतासँ ओ नर्सिंग सीखैत अछि। फेर एकबेर नैहर अबैत अछि। ओत' ने ओ देवी ने ओ कराह, जमीन-जायद, घरबाड़ी, सबटा कर्जा-पैंचक एवजमे जमीन्दारक जिम्मे रजिस्ट्री। अपन सब सम्बन्धी मरि-हरि गेल, या उपटि दोसर गाम-ठाम ध' लेलक।

से अन्ततः दिदि सिन्दूर लगौने, किंचित भावुक होइत अपन ठाम धरि अबैत अछि। मात्र सत्तावन पृष्ठमे समेटो ई 'कला' नामक उपन्यास एहि तरहें सुखान्त दैत पूर्णविराम लैत अछि।

एहि कृतिक ताना-बाना जाहि तरहें आकार लेलक समाप्त भेल, से सुखान्त। एहि कृतिक चरित्रगत भूमिका प्रकृतिक अनुकूले भेल अछि, जेना- केन्द्रबिन्दुमे कला, हुनद प्रगतिशील पिता महेश, देयोर सुन्दर, कलाक वृद्ध पति, सौतेली माय, आदि।

से वक्तव्य जे ओहि रूढ़ समाजमे अपेक्षाकृत कलाक पिता महेश प्रगतिशील सोचक रहथि। ओ अपन बेटीक ओकरासँ चारि-पाँच गुन्ना पैघ बरसँ बियाह नहि करय चाहैत रहथि। कला अवस्थाक बंगाली धिया-पुता तँ फ्राक पहिरैत रहैत अछि। एहि क्रमे ओकरा कोरामे खेलाइत अछि आठ वर्षक नेना। कला द्वारा गीत मोन पड़ैछ छै, जे ओकर वैचारिक दृढ़ताक प्रमाण जकाँ लगैत छै– "गौरी हमर बड़ छोटि गे माइ, उमा हमर बड़ छोटि... हम ने करब बूढ़ जमाइ गे माइ...।"[3] मुदा पिता महेशक बस नहि चलैत छै, जकर विरोध गृहत्याग क' करैत अछि। कलाक माय जे सौतेली रहै, अपन रूढ़ता लेल कोनु हद धरि समर्पिता रहै, तकर नमूना ओकर एहि गुमानसँ स्पष्ट होइत अछि– "ई लोक की पूजा थिक जे चौदह-चौदह वर्षक धाकड़ि भ' जयतैक, तखन जाक' बेटी बियाहब?"[4]

अनमेल विवाहक भविष्य निश्चित छलै बाल विधवा। एहि प्रसंग 'यात्री' अपन एक कवितामे विधवा मुँहें कहबैत छथिन– "तइयो करय चाहै छथि हमरा नचार, केहन-केहन चानन-ठोप कएनिहार...।"[5] ताहि ठाम चतुरानन मिश्रक नजरि परिष्कृत बूढ़ नहि, युवा-मन दिस एहन भावकें सरेआम करैत छथिन, जेना कोना समयवयसी विधवा भाउजकँ भ्रष्ट करैत अछि। लेखक एहि हेतु दूरक कौड़ी चलैत कालिदासक 'कुमार-सम्भव' क उपयोग करैत छथि। देयोरसँस्कृतक श्लोकक भाषा-अनुवाद करबैत ओकरा भावनात्मक स्तर पर पघिलबाक सफल चेष्टा करैत अछि। भाषा-अनुवाद द्रष्टव्य– "एकबेर पार्वती आ शिवजी दुनू गोटे एहन सम्भोग कयलनि जे दुनू गोताक केश छितरा गेलनि, चारूकात नह दे' चेन्ह भ' गेलनि आ पार्वती क डरकस टूटि गेलनि, तइयो महादेवकेँ मोनमे सन्तोष नहि भेलनि।"[6] एहि प्रसंग अवान्तर मुदा सन्दर्भित जन-श्रुति अछि जे 'कुमार सम्भव' लिखलाक बाद कालिदासक सर्वाङ्ग चड़क फुटि गेलनि। जनश्रुति ई अछि जे ओ तकरा बादे 'रघुवंश' लिखलनि। एहि प्रसंग सत्यांश जे ततेक रहल होवय, प्रकारान्तरसँ समाजमे ईश्वरक प्रति डरकेँ जरूर वकालत करैत लागल अछि।

कलाक पिता महेशक चरित्र सँ लगैत अछि जे ओ उपन्यासकारक मत के प्रदर्शन करैत अछि। समग्र उपन्यासमे महेश एक आधुनिक सोचक व्यक्ति रूपमे छायल अछि– "मनुष्यक जीवन एतबे टासँ सुखी नहि भ'सकैत अछि जे भोजन क'दिन गुजारैत चली जाय। अघि व्यक्तिक मउगति छिएक जे खोरिस पाबि जीवन बिता रहल। यदि केवल मनुष्य दुःखित हो वा कोनो आन कारणें काज करबामे असमर्थ हो, तखने टा खोरिस पर गुजर करब पसिन करत। काज जीवनमे एकटा आनन्द दैत छैक। सबकेँ अपन विकासक क्षेत्र चाहिऐक, जाहिमे ओ मनुष्य जातिक हेतु किछु क' सकय। हमरा लोकनि, पशुसँ एतबे भिन्नता रखैत छी। भोजन द' एक खास काज तँ ओकरहु से लय जाइछ। स्त्री लोकनि भोजन पाबि बच्चा तुएयबाक यन्त्र थोड़बे थिकीह?"[7]

उपन्यासकार घोषित रूपसँ वामपंथी छथि। तैँ परिवर्तनकारी छथि। हुनका सङ्ग एक वैज्ञानिक तर्क छनि, आ जे सबटा रूढ़क विरुद्ध सतत साकांक्ष रहैत अछि। एहि प्रसंग उपन्यासमे एक ठाम आयल अछि– "सनातन दुनियाँमे किछु नहि छैक– परिवर्तने सनातन थिक। दुनिया एकटा विकास-क्षेत्र अछि। ओहिमे नित दिन मनुष्य अपन अनुभवसँ नव-नव यन्त्र, नव-नव आचार-विचारक सृष्टि करैत अछि, आविष्कार करैत अछि।"[8]

तथापि नौ वर्षीया कला, जकर– 'पान सन पातर, लाल लाल ठोर, छुरी सन नाक, खूब सघन बड़का केश... कोनो ऐब नहि रहितो अकड़ासँ पाँचगुन्ना पैघ दुल्हासँग बियाहि जाइते अछि। ताहि सन्दर्भित ई वाक्य केहन समाज-रूचिक परिचय दैत अछि, से द्रष्टव्य– "ओतेक फीट-फाट, साबुन-तेल लगैत छथिन तँ कनि साफो लगैत छथिन। ताहि पर धोधि भ' गेल छनि, से आरो कोनादन लगैत छथिन। तखन सैह जे पुरुष अपन केहनो अधलाह रहै, तँ ओकरा नीक बहुक मोन होइते छैक आर मौगिक मोन के जान' जाइत छैक?" [9]

ओना जतय धरि हमरा मैथिली साहित्यक इतिहास पढ़ल भेल अछि, कलामे आयल वैचारिक उच्चासन प्रथमहि दृष्टिगत भेल अछि। विधवा जीवनक मादे एहि तरहें परिणति सोचब सेहो मैथिली लेल शुभोदय सन लगैत अछि। ओना तँ ई अनमेल विवाह बिकाउआ विवाह समाजमे अनादि काल सँ जीवन्त, मुखर रहल अछि। विद्यापति अपन गीतमे एकरा अपने समाज-चिन्तामे अन्ने छथि– "पिय मोर बालक, हम तरुनी गे...।" [10] अथवा "जनम होय जनु जँ पुन होय, जुबती भए जनमय जनु कोय" [11] आदि। पारम्परिक लोकगीतमे सेहो बेटी के जन्महिकँ अभिशाप बुझैत जाइत रहल। तहिना ई आधुनिकों कालमे लेखनक परिधिमे रहल। 1917मे (मिथिला मिहिर, 30 जून–7 जुलाई धरि) जनार्दन झा 'जनसीदन' क 'ताराक वैधव्य' आ 1931 महा (अक्टूबर, मिथिला मित्र) हरिनन्दन ठाकुर सरोज क 'वैधव्य जीवन' उदाहरण रूपमे स्मरणीय अछि। जेना कि सुनल अछि, जे तहिया सामाजिक स्तर पर वैवाहिक परिपाटी एहन रहै जे एक पुरुषक मुइने दस-दस सधवा युवतीद चूड़ी फुटि जाइ, ओ ठेठमे राँड़ भ' जाइ। 'कला'मे सेहो आयल अछि एहन दुखद स्थितिक प्रसंग।

'कन्यादान' क नायिका बुच्चीदाइ चुप्पे रहलीह। दस वर्ष जाक' 'द्विरागमन'मे बोल फुटलनि। आ मोसम्मात सभक तँ कोनो नव रूपे नहि बनि सकल। आ जे बनलथि से वह-जाही विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये...

एतय अवान्तर मुदा उल्लेखनीय जे भारतीय साहित्यमे कोनो पत्रिका स्त्री-समयकँ केन्द्रित नहि प्रकाशित भ' सकल, जखन कि ई सब दिनसँ एक समस्या रूपमे समाजकँ झकझोरैत रहल। बहुत नजरि दौड़यबा पर हिन्दीक 'चाँद' पत्रिका पर ध्यान जाइत अछि, जे स्त्री-जागरणकँ ध्यानमे रखैत 1923मे एक गोट साप्ताहिक प्रकाशन कयलक। मैथिलीमे एहि तरहक सोचब कल्पनातीत छल। ओना आधुनिक समयमे महिला सम्पादित पत्रिका सब आयल– 'स्वाती' 'कोसी-कुसुम' आदि। मुदा ताहुमे तेहन किछु नहि आयल, जे रेखांकित कएल जा सकय। ओना, चाँद के लगभग सौ वर्ष बाद 'नवारंभ' पत्रिकारक एक विशेषांक आयल, जकर मूल विषये छलै– मैथिली साहित्यमे विधवाक जीवन।

एकर सम्पादकीयमे बहुत आत्मीय ढ़ंग से कथाक स्वाद दैत लिखल गेल अछि। द्रष्टव्य अछि– "हम बाबा के नहि देखल। बाबी के देखल अछि, जे एक वस्त्रा रहैत छलीह। भोजन करैत छलीह अरवा-अरबाइन। आसे जे अपनहि बनवैत छलीह। हुनकर चीज-वस्तु ओछान-विछान सब किछु फरक। ओ सदिखन भगवत्-भजनमे लागलि रहैत छलीह। हमर बाल नजरिहु हुनद चेहरा पर एक दिव्य आभाक बोध करय। हुनद आँखिमे एक विराट शून्य सेहो देखय। ओकरा रिक्तता-बोधसँ युक्त आँखि सेहो कहि सकैत छी। ओ असूर्यम्पश्या बाबी आब नहि छथिन।

हमर माय सेहो एकवस्त्रा छलीह। मुदा बाबी से कनेक अलग। ओ साड़ीसँग सायाक बदला 'डेढ़ी' पहिरैत छलीह। ब्लाउज नहि पहिरैत छलीह रहि-रहि क'। मुदा जखन शरीर खसलनि, आ पुतोह-पोती लोकनिक परिवारक आमद भेलनि तँ कनेकसँशोधन कएलनि। जाढ़मे फ्लैलैनक ब्लाउज आ पयरमे हवाई चप्पल पहिर' लगलीह। आनहु ऋतुमे जँ सिमरिया आकि उचैठ जाथि तँ उज्जर रङ्गक ब्लाउज जरूर पहिरि लेथि। व्रत-उपवास करथि। माछ-मासु बाबीये जकाँ अखाद्य। मुदा तकरा बनाक' खुवयबाक बड़ सिनेह। बनबितो रहथि बहुत स्वादिष्ट। बिनु लहसुन-पियाजक। मुदा हुनकर अपन भोजन, फरक बनैन, आ जे जेठकी पुतोहू बनवनि। आ शेषक लेल दोसर-तेसर पुतोहू। छोटकी पढ़ली-लिखली रहथिन। तँ हुनका चुलहिये-चौका नहि, गोसाउनि धरि छुबाक मनाही रहनि।

मायुद ओछान-विछान सेहो अलग रहनि। मुदा से रहितहु ओही पर एलगरि नहि सूतथि। पोता-पोती लुढ़कल रहनि। अथवा एना कही जे वह सब आवि हुनका सहज बनौने रहनि। ओ सभकें रङ्ग-रङ्गक खिस्सा आ गीत सब सुनबथिन।" [12]

अभिप्राय ई जे तत्कालीन मिथिला समाजमे विधवा जीवनक एक खास गाइड-लाइन होइत रहै।

सबटा परम्परित। कतहु किछु लिखित नहि। एक विधवासँ दोसर विधवा धरि देखल-सुणल। एक प्रकारे ओ रूढ़ रहै। एदर विरोध किछु सोचबो अपराध रहै। ओहि कालखंड धरि तँ जेना जीवन धारे अवटकि गेल रहै।

मुदा ताहिसँ पूर्वक समाज (समाज माने कुलीन ब्राह्मण आ सामान्य ब्राह्मण) आर बेसी मुइल मानसिकतामे जीबैत रहै। एहू उपन्यासमे तकर जिक्र आयल अछि, जे महिला वर्ग सेहो एहि गलीज जीवनकेँ कोना आह्लादकसँग लैत रहैत छलीह– "पहिने तँ लोग बाइस-बाइस टा बियाह क' लैत छलाह किन्तु आब दुइयो टा करयमे हीन बुझैत अछि। ई कोनो अधिक दिनक गप्प नहि थिक। एखनो धरि ओ स्त्रीगण जीवित छथिन जे एके पुरुषक मुयला मुयला उत्तर नवो-नवो गोटे एके सँग लहठी फोड़लनि। ननुआड़ वाला भाई के एखनो सोढ़हो स्त्री जीवित छथिन...।" [13]

ई सबटा रूढ़ बिकाउआ विवाहक परिणाम होवय। तहिया कुलशील, जाति प्रमुख होइ। आ से गौरव होइ। ताहि लेल उच्च-कुल पुरुष सतत उदार रहथि। पोती-परपोतीक उमरक माँगमे सिन्दुर रगड़यमे नहि चूकय।

एहन अन्ध-समाज, जाहि पर सम्पूर्ण मिथिला समाज गौरव करय, जे समाज पर हुकुम चलबय खासक' महिला समाजक मन-प्राण पर। परिणाम ओ एखनो हुक हुक करैत जीबि रहल अछि। स्त्री माने पतिक सब तरहेँ इच्छापूर्ति करय। अपन इच्छाकेँ कोनो इच्छे नहि बुझय। तँ आइ इहो सुणल जाइछ जे महिला मात्र बच्चा देनिहारि मसीन नहि अछि आब।

मुदा आइ जे हम सब देखि-जी रहल छी, तकर रूप स्वरूप लेब'मे बहुत दशक लागल। एहन स्थिति नवम सदीक बीच होइत-होइत आर बेसी ओझरीमे पड़ि गेल रहै। विधवा सभकेँ आजन्म नोर सुखैत बीति जाइ।

देशमे स्त्री विषयक अनेक कुप्रथा, सब जीवन्त रहै। प्रथमत: तकर विरोध बंगालसँ शुरू भेलै। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर विरोधी आन्दोलनक नेतृत्व कएलनि। परिणाम भेल जे 1866मे विधवा-विवाह अधिनियम पारित भेल। तकर बाद खंड-खंडमे बाल विवाहक आयु निर्धारित होइत आगू बढ़ैत गेल। वर्तमानक परिणाम समक्ष अछि।

तथापित वैश्विक स्तर तँ सहजे भारतीय स्तर पर सेहो विधवाक स्थितिमे अधिक सुधार नहि भ'सकल। एक रिपोर्टक अनुसार विश्वक एक तिहाई विधवा चीन आ भारतमे अछि। ताहुमे भारतमे विधवाकसँख्या तँ सर्वाधिक आकल गेल अछि। मुदा मिथिला ब्राह्मण समाजकसँगहि बाल विवाहमे अप्रत्याशित कमी आयल अछि।

एतावत प्रयास कएल जाय तँ परिवर्तन होइते टा अछि। ई समय माँगैत अछि। परिवर्तनक कमी लोककेँ अंटकायल समयमे अपेक्षित सुधार नहि होइत छै, तँ तामस, क चोट होइत अछि। उदाहरण रूपमे एही उपन्यासकेँ लय जा सकैत अछि। ई उपन्यास जेना उल्लेखित अछि पहिल बेर 1948मे छपलय। तकर बीस वर्ष बाद एकर दोसरसँस्करण प्रकाशित भेलै 1968 मे। उक्त दोसरसँस्करणमे उपन्यासकारक उद्गार द्रष्टव्य अछि– "युगक प्रवाह मेसँसार कत'सँ कत' भागि गेल, मुदा हमरा लोकनि कोबरक डेग कोना छोड़ब? एखनो अनमेल विवाह होइते अछि आ 'कला' आ 'कलानन्द' लुदक छातीक मटगुर दोखे-दाखी भेटत। हवाई जहाज, मोटर, रिक्शा, साईकिलोक युगमे जँ महफा आ एक्का पर चढ़ि अपन सांस्कृतिक ढोल पिटिते रहब, डाक-तारक अचैतो जँ नौवा दिया नोत-पिहान, चिट्ठी-पतरी पठाविते रहब, रसगुल्ला, शाहीटोस्ट, मलाई पूरी, चमचमक अचैतो जँ बाइस नम्बरक बजराहा कुसियार सँ गलफड़ नोचबिते रहब, अपन महीस जँ कुढ़हरिये नाथब, ताहि लेल तँ कयो लाठी नहि लेत मुदा, कन्ही गाइक भिने बथान ई देश-विदेश बुझिते रहत। ई युग उपरोक्त युग थिक, एहिमे जे पछुआयल रहि जायत, से कहियो अगुआ नहि सकत। तँ जँ आगू नहि तँ देश-विदेशकरसँग पयरमे पयर, कान्हमे कान्ह मिला क' चलू, बसारक दिश पीठ दियौ, जहिना फूल-अक्षत भेटैत छलै, तहिना भेटत।" [14]

निष्कर्ष

एहि स्थिति सँ लड़ैत आइ हम सब एत' पहुँचल छी। बहुत समय लागल। मुदा परिणाम इच्छित बहरयल अछि। एत स्पष्ट क'लेब जरूरी छै जे कला उपन्यास अयलै, तँ ई आइ अछि। दरअसल, लेखक समाजक अध्ययन कएनिहार होइत छथिन। आ अध्ययन करैत भविष्यकेँ अकानैत रहैत छथिन। स'ए आगुक बात अपन वर्तमान कहैत-लिखैत मनुष्य के अग्रगति चलबा सोचबा लेल प्रेरित करैत छथिन। हमरा जनैत लेखकक इह' भूमिका छै, आ जे अहम अछि।

आई एक्कीसमे शताब्दी अछि। हम सकल मनुष्य आइ के जीबैत ताहिमे अपस्यन्त छी। पाछू देखबाक आ ताहि विषयमे सोचबाक समय नहि अछि। समय-गति जेना वायुगति सँ चलि रहल अछि। गाम बहुत तेजी सँ खाली भ' रहल अछि। सब शहर दिस पलायन क' रहल अछि। भविष्यमे ई गति थम्है सन नहि बुझाइत अछि। तेहना स्थितिमे हम युवा-मन जखन गाम, गामक सम्बन्ध, गामक सुख-दुःख, प्रेम-अनुराग-व्यभिचार आदिक कथा सुणैत छी तकरा मादे सोचैत, ई 'कला' उपन्यासक परिवेश कोनो कल्पितसँसार जकाँ लगैत अछि।

आजुक युवा-मन वैवाहिक सम्बन्ध के बन्धन बुझैत एहि सङ्ग जल्दी बन्हयबा सँ परहेज क' रहल अछि। तेहनामे कलाक विवाह-प्रसंग– 'जस्ट ए फन' जकाँ लगैत हेतै। एक सर्वेक अनुसार चीनमे विवाह-प्रथासँकटमे आवि गेल अछि। जँ इह' स्थिति रहल तँ अगिला चारि-पाँच वर्षमे विवाह योग्य लड़का-लड़कीकसँकट भ' जायत। ई भारत विदेश भ्रमण करैत वायरस जकाँ भारतमे सेहो आवि रहल अछि। एखनुक प्रारम्भिक स्थिति ई बनल अछि जे लड़का-लड़की विवाह सँ अधिक अपन कैरियर पर अपनाकेँ 'बेस' क' रहल अछि।

किन्तु एहि विषय सँ इन्कार नहि कएल जा सकैत अछि, जे मिथिला समाजमे एहि प्रसंग कोनो 'रेडिकल चेंज' नहि भेल। एहिमे काफी समय लागल। 'कन्यादान'मे बुच्चीदाइक बदलबाक परिकल्पना 'द्विरागमन'मे अठि लेखककेँ करय पड़लनि, जे हुनकर 'इमैजिनेशन' रहनि। यथार्थ नहि। अनमेल विवाहक परिणाम यात्रीक 'पारो'मे हल्का विस्तार पौलक। ओ अपन ममियौत सँ, एकर निदान अगिला जनममे विवाहक सपना देखैत कयलक। कलाक कलाकारिता एहि 'कला'मे बेसी यथार्थ, बेसी युगीन आ बेसी मुखर भ' क' आय। तँ आजुक सोचकेँ ई 1948 केरक सोच तँ अविश्वसनीय आ कल्पित लगैत अछि। आ स'ए यथार्थ सेहो।

कोनो साहित्य तखने समकालीन कहबैत अछि, जखन ओकर लेखन समयकसँग चलैत अछि। ठेमडल साहित्य मृत भ' जाइत अछि, समयकसँगहि। उदाहरणमे बहुतो भाषा-साहित्य अछि, जे अतीत अछि, कतको ओही रस्ता पर चलि रहल अछि। तँ ई अतिशयोक्ति नहि होवय तँ निर्भीक-निस्संकोच कहल जा सकैत अछि जे मैथिली सृजनात्मक समयसँग डेग-मे-डेग मिलाय, समानान्तर चलैत रहल अछि। आ ताहि गतिशीलतामे चतुरानन मिश्र लिखित "कला" नामक उपन्यास उदाहरणस्वरूप ठाढ़ भेटैत अछि।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'मिश्र' चतुरानन, कला, तृतीयसँस्करण 1984, मैथिली अकादमी, पटना, पृष्ठ– बैक कवर
2. तत्रैव
3. 'मिश्र' चतुरानन, कला 1948, जन प्रकाशन मधुबनी, पृष्ठ–1
4. तत्रैव, पृष्ठ–1
5. 'यात्री' वैद्यनाथ मिश्र, चित्रा, 2006, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–28
6. 'मिश्र' चतुरानन, कला, 1968, जन प्रकाशन, मधुबनी, पृष्ठ–35
7. तत्रैव, पृष्ठ–10
8. तत्रैव, पृष्ठ–11
9. तत्रैव, पृष्ठ–3
10. 'चन्द्रम' ज्योत्स्ना, विद्यापतिक पदावली, 2008 जखन-तखन, दरभंगा पृष्ठ–51
11. तत्रैव, पृष्ठ–50
12. नवारंभ (अनियतकालीन पत्रिका), विधवा विशेषांक, अतिथि सम्पादक–विभूति आनन्द (सम्पादकीय एवं देवशंकर नवीनक आलेख), नवारंभ, मधुबनी, 2020
13. 'मिश्र' चतुरानन, कला, 1984, मैथिली अकादमी, पटना, पृष्ठ–09
14. तत्रैव, पृष्ठ–च

•••

रमण कुमार सिंह

सम्पर्क : गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।
+91 9711261789

रमण कुमार सिंह मैथिली आ हिंदीक प्रतिष्ठित लेखक, कवि, संपादक आ अनुवादक छथि। ओ पत्रकारिता एवं जनसंचारमे एम.ए. कएने छथि। रमणजी पाँच वर्ष धरि राजकमल प्रकाशनमे संपादक, दू वर्ष टीवी पत्रकारितामे आ वर्तमानमे दैनिक 'अमर उजाला'मे उप समाचार संपादकक पद पर कार्यरत छथि। 'समयांतर' (मासिक)क सह-संपादन सेहो कएने छथि। हुनकर प्रमुख कृतिसभमे 'बाघ दुहने का कौशल' (हिंदी कविता), नए वसंत के लिए, 'फेर सँ हरियर' (मैथिली कविता), 'दु: स्वपनक बाद' आ दू ललित निबंध संग्रह शामिल अछि। ओ कतेको प्रसिद्ध कृतिक अनुवाद आ 'किसुन समग्र', 'महत्व महेंद्र', आदि महत्वपूर्ण पोथीक सह संपादन कएने छथि। संप्रति ओ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे मैथिली भाषाक परामर्श मंडलक सदस्य छथि।

देखनाय

बरमहल बुजुर्ग लोक कोनो नव अथवा अनसोहाँत या किछु अनछजल सन देखैत छथि, तँ कहि उठैत छथि– 'जीयब तँ की-की नहि देखब।' ई देखनाय एकटा सामान्य क्रिया थिक, मुदा सबहक देखनाय एक तरहक नहि होइत छैक। जहिना सबहक पाठबोध अलग-अलग होइत छैक, तहिना दृष्टिबोध सेहो भिन्न-भिन्न होइत छैक।

देखनाय एकटा कला सेहो थिक। एकहि वस्तुकेँ हम, अहाँ आ आनो लोक जे देखैत छी, तँ सबहक प्रभाव-प्रतिक्रिया अलग-अलग होइत अछि। एकटा प्रसिद्ध उदाहरण अछि, जे किनकहु गिलास आधा भरल देखाइत छनि आ किनकहु वैह गिलास आधा खाली देखाइत छनि। एहि बातकेँ एम्हर एकटा शिक्षिका किछु एहि तरहेँ कहने छलखिन, हालांकि ओ गलत संदर्भमे एना कहने छलखिन– 'योर सिक्स कैन बी माइ नाइन।' मतलब अहाँ जेकरा छह कहैत छियैक, ओ हमरा लेल नौ सेहो भ' सकैत अछि। तँ कहबाक तात्पर्य ई, जे कोनो घटना अथवा वस्तुकेँ देखबाक सबहक अपन-अपन दृष्टि होइत छैक। एकटा पाथर देखिकेँ केओ ओकरा महादेव बनाकेँ पूजय लगैत अछि, तँ केओ ओहि पाथरक उपयोग दोसरक घरक शीशा फोड़बा लेल करैत अछि। मुदा वैह पाथर जौं कोनो शिल्पीक हाथ लागि जाइत अछि, तँ ओ ओहिमे नुकायल कोनो आकृतिकेँ उकेर दैत अछि।

लेखन अथवा सृजनमे ई दृष्टि बहुत महत्वपूर्ण होइत छैक। बिना फरीछ दृष्टिकेँ केओ नीक सृजन नहि क' पबैत अछि। काव्य सृजन लेल तँ निश्चित रूपसँ स्पष्ट आ फरीछ दृष्टि चाही। जाहि कवि लग अपन नव दृष्टि होइत छैक, ओ पारंपरिक समझकेँ तहस-नहस करबाक क्षमता रखैत अछि आ सौंदर्यक नव आयाम आ प्रतिमान गढ़ैत छथि। एकटा उदाहरण नागार्जुन (यात्री जी) केर दैत छी। हुनक एकटा हिंदी कविता छनि– 'पैने दांतों वाली।' हम सब जनैत छी जे सुग्गर, ओकरासँ जुड़ल लोक आ जाहि परिवेशमे ओ रहैत अछि, ओकरा सामान्यतया बहुत घृणाक दृष्टिसँ देखल जाइत अछि, मुदा नागार्जुन अपन दृष्टिबोधसँ एहि पारंपरिक

समझकेँ तहस-नहस करैत एकटा नव दुनियाक अन्वेषण करैत छथि आ हुनक कवितामे ओ मादा सुग्गर 'मादरे हिंद के बेटी' बनि जाइत अछि आ ओकर बारह थन सामाजिक उर्वरताकेँ सोझाँमे आनि दैत अछि।

जमना किनारे
मखमली दूबों पर
पूस की गुनगुनी धूपमे
पसरकर लेटी है
यह भी तो मादरे हिन्द की बेटी है
भरे-पूरे बारह थनों वाली!

यैह थिक अपूर्व आ अभिनव दृष्टि! साधारणतामे असाधारण के खोज आ बनाबटी, जन-विरोधी समझकेँ बदलामे जरूरी नैतिक तार्किकताक अन्वेषण नव सौंदर्यबोधकेँ सृष्टि करैत अछि। यैह अभिनव दृष्टि जखन आध्यात्मिक ऊंचाइक स्पर्श करैत अछि, तँ ओ जीव मात्रमे ईश्वरक दर्शन करैत अछि।

एहि संदर्भमे एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि, जे संभवत: अहूँ सब सुनने होयब। एकटा कविकेँ चारि टा बेटा छलनि। जखन हुनक अंतकाल अयलनि, तँ ओ चारूकेँ बजौलनि आ सामने ठाढ़ एकटा ठूठ गाछकेँ देख क' वर्णन करय लेल कहलखिन आ जे बेटा सबसँ अलग ढंगसँ ओहि पत्रहीन ठूठ गाछक सौंदर्यक वर्णन कलनि, ओकरहि अपन विरासतक जिम्मेदारी सौंप देलखिन। एहि उद्धरणसँ इहो बूझल जा सकैत अछि जे, जेकरामे काव्यबोध होइत छैक, ओकरे जिम्मेदार मानल जाइत छैक। एकरा एना मानू जे कविताक साधना एकटा जिम्मेदारीक काज थिक, जे सब बूते नहि सधैत छैक। आखर-आखर जोड़िकेँ पाँति तँ रचल जा सकैत अछि, मुदा कवि होयब असंभव थिक। कवि होयबा लेल अलौकिक दृष्टि आ कवि-हृदय होयब जरूरी अछि।

खैर, कतय देखनायक गप होइत छल आ कतय हम अपने सबकेँ काव्य-साधना दिस ल' क' चलि गेलहुँ, माफ करब। एहि देखयमे महत्वपूर्ण गप इहो होइत छैक, जे देखबाक उद्देश्य की अछि। जेना एकटा सामान्य लोक जखन कोनो नदीकेँ देखैत अछि, जे ओकरा सबसँ पहिने पानि मोन पड़ैत छैक, आचमन-स्नान करब मोन पड़ैत छैक, भ' सकैछ जे नदीकेँ देखैत ओकरा माछ, सितुआ, घोंघा सेहो देखाइत हो आ ओ ओहि सभक अपन जीवनमे उपयोगिताक मादे सोचय लागय। नदीकेँ पार करबाक कामना ओकरा मोनमे जागि सकैत अछि अथवा नदीमे नाह पर चढ़ि जलविहार करबाक इच्छा जागि सकैछ। नदीक कछेर पर उगल गाछ-बिरिछ आ ओकर सौंदर्य ओकरा मोहित क' सकैत अछि आ ओ किछु काल नदीक घाट पर बिलमय चाहि सकैत अछि।

मुदा जखन कोनो व्यापारी ओहि नदीकेँ देखैत अछि, तँ ओकरा नदीकेँ देखैत ओकर पानि, ओकर माछ, बालु, नदीक कछेरमे उगल गाछ-बिरिछ आदि सब किछु कमाइक संसाधन नजरि अबैत छैक। तहिना एकटा स्त्रीमे कोनो सज्जन व्यक्तिकेँ माइ, बहिन, बेटी अथवा एकटा मानवी नजरि अबैत छैक, तँ एकटा लंपट, कामी चरित्रक व्यक्तिकेँ मात्र ओकर मांसल देह नजरि अबैत छैक। अपनहि लिखल कविताकेँ जौं अहाँ किछु दिन बाद पढ़ू, तँ ओहिमे किछु त्रुटि नजरि आओत। असलमे बादमे अपन कविताकेँ पढ़ब या देखब आलोचक अथवा पाठक केर नजरिसँ देखब थिक, तेँ त्रुटि नजरि अबैत अछि। ओना अपन रचना आ अपन काजमे बिरले केकरहु त्रुटि नजरि अबैत छैक। एकटा कवि अथवा कलाकार कोनो चीजकेँ ओहि नजरिसँ नहि देखैत अछि, जाहि नजरिसँ सामान्य लोक देखैत अछि। कवि-कलाकार किछु अलग तरहेँ देखैत अछि।

एकहिटा चीज आ दृश्य केकरो ठीक लगैत छैक, तँ केकरो गलत। असलमे ई देखबाक कोण (एंगल) पर निर्भर करैत छैक। उदाहरणक लेल, संविधानमे अनुसूचित जाति आ जनजातिक लेल कयल गेल आरक्षण व्यवस्थाकेँ देखू, तँ जौं अहाँ एहि दुनू समुदायक लोक थिकहुँ, तँ अहाँकेँ ई सामाजिक न्याय बुझायत। मुदा जौं अहाँ सवर्ण वर्ग के थिकहुँ, तँ अहाँकेँ ई सवर्ण वर्गक प्रति बड़ पैघ अन्याय बुझाइत। संविधान निर्माता लोकनि बहुत विचार-विमर्शकेँ बाद संविधानमे एकर प्रावधान कयने छलाह, मुदा सही ढंगसँ क्रियान्वयन नहि होयबाक कारणेँ, वोटबैंकक राजनीति आ बढ़ैत बेरोजगारीक कारणेँ आइ ई व्यवस्था विवादित भ' गेल अछि। फोटोग्राफीमे एंगलकेँ बहुत महत्व होइत छैक, तँ देखैत होयबै जे फोटोग्राफर लोकनि एंगल बदलि-बदलिकेँ फोटो खींचैत छथि, ताकि फोटोक सौंदर्यकेँ सही परिप्रेक्ष्यमे उतारल जा सकय।

देखबाक महिमा अपरंपार होइत छैक। केकरो पाथरमे देवता नजरि अबैत छैक, तँ केकरो सुमुखीक दर्शन क'कैँ दिन बनि जाइत छैक। गालिब कहने छथि– *उन के देखे से जो आ जाती है मुँह पर रौनक/वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।* ओना तँ संपूर्ण दुनिया, ई विशाल जीव-जगतमे बहुत किछु देखबाक जोग चीज होइत छैक, मुदा मोनकेँ सुकून तँ अपन प्रियजनकेँ देखिये के भेटैत छैक।

धर्मप्राण आ भक्त लोकनि ईश्वर दर्शन लेल मंदिर-मंदिर तीर्थाटन करैत छथि। पौराणिक ग्रंथ सभमे देखनाय मात्र आंखिसँ कोनो चीजकेँ देखब नहि होइत अछि, अपितु ज्ञान, अंतर्दृष्टि आ दिव्य अनुभूतिकेँ कहल जाइत छैक। ई सत्यकेँ बूझब, आत्म-साक्षात्कार करब आ परमात्माक दिव्यताकेँ हृदयंगम करब सेहो थिक, जे आस्था, भक्ति आ कर्मक माध्यमसँ संपन्न होइत अछि।

कबीरदास सरिपहुँ कहने छथिन– *बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय, जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।* यैह थिक आत्म-साक्षात्कार। तँ कहल जाइत छैक, जे असली ज्ञान लोककेँ तखन होइत छैक, जखन ओ आत्म-निरीक्षण करैत अछि, अपन भीतर झाँकिकेँ देखैत अछि। एहि तरहेँ जौं देखब, तँ नहि मात्र आत्म सुधारकेँ मार्ग प्रशस्त होयत, बरु अहंकारकेँ त्याग करबाक प्रेरणा सेहो भेटैत अछि, आ तखने असली ज्ञानक दीप जरैत अछि। अपन कमीकेँ सुधारि ली, तँ दुनिया बेस सुंदर भ' सकैत अछि।

•••

साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ अलंकृत विभूति सभक अभिनन्दन !

वर्ष 2024क मूल पुरस्कार श्री महेन्द्र मलंगियाकेँ 'प्रबन्ध संग्रह' (निबंध)क लेल आ वर्ष 2025क मूल पुरस्कार श्री महेन्द्रक संस्मरण 'धात्री पात सन गाम' लेल देल गेलनि अछि। युवा पुरस्कारक अंतर्गत वर्ष 2024 लेल रिंकी झा ऋषिकाक कविता-संग्रह 'नदी घाटी सभ्यता' आ वर्ष 2025 लेल नेहा झा मणिकेँ 'बनारस आ हम' (कविता-संग्रह) लेल सम्मानित कएल गेल छनि। वर्ष 2025क बाल साहित्य पुरस्कार मुन्नी कामतकेँ हुनक कथा-संग्रह 'चुक्का' लेल तथा वर्ष 2024क अनुवाद पुरस्कार डॉ. केष्कर ठाकुरकेँ विभूतिभूषण वंद्योपाध्यायक बाङ्ला उपन्यासक मैथिली अनुवाद 'आरण्यक' लेल देल गेलनि छनि।

अनुप्रास परिवार दिससँ हिनका लोकनिकेँ हार्दिक बधाइ एवं शुभकामना!

कैप्टन साहेबक शर्ट : इन्द्रधनुषी रंगमे रंगल कथा

हितनाथ झा

सम्पर्क : जयप्रभानगर, हजारीबाग।
+91 9430743070

'कोइलख' केर पूज्य भूमिपर जन्म लेनिहार हितनाथ झा मैथिली साहित्यक प्रबुद्ध रचनाकारमेसँ एक छथि। हिनक साहित्यिक योगदान बहुआयामी अछि, जाहिमे 'लेख-रेख' आ 'आलोकन' (पोथी-प्रसंग), 'राजापोता बलगर' (बालकविता), आ शम्भु बादलक अनूदित कविता प्रमुख अछि। सम्पादनक क्षेत्रमे हिनक महत्वपूर्ण कार्य 'भावांजलि', 'त्रिवेणी', 'मैथिली इतिहासक रेखांकन' (संग-सम्पादन), 'झारखण्ड मैथिली मंच-2025-26क स्मारिका' आ 'प्रशस्ति' आदिमे देखल जा सकैत अछि। हिनक साहित्यिक अवदानक सम्मान करैत 'विदेह' पत्रिकाक 405म अंक (01 नवम्बर 2024)कैं 'हितनाथ झा विशेषांक'क रूपमे प्रकाशित कएल गेल छल। इलाहाबाद बैंकसँ सेवानिवृत्त वरीय प्रबन्धक हितनाथजी संप्रति पूर्णकालिक साहित्य साधनामे रत्त छथि।

जँ कोनो दृश्य अहाँक सामने नाँचि रहल हो, भ' सकैछ जाहिमे स्वयं सेहो भुक्तभोगी रहल होइ वा नहियों आ बेर-बेर अहाँक मन-मस्तिष्ककेँ झकझोरैत हो, चैनसँ नहि रहय दैत हो, समाज पर कोनो ने कोनो प्रभाव छोड़ैत हो, नीको-बेजाइयो आ जँ अहाँमे साहित्यिक किञ्चित मात्रो गुण विद्यमान अछि, तँ अहाँ अवश्य चाहब ओहि पात्रकेँ समाजक समक्ष प्रस्तुत करी जाहिमे वास्तविकताक पुट हो, कल्पनाक सकारात्मक समावेश हो, अनुभवक अभिव्यक्तिक प्रतिबिम्ब हो, से चाहे जाहि विधामे हो कविता, कथा, नाटक अथवा आने, जा धरि अहाँ ओहि वस्तुकेँ समाजक सामने परसि नहि देबैक, चैनसँ नहि रहि सकब। रहबोक ने चाही। मूँह केहनो हो, शृंगार केने हो वा नहि, मुदा दर्पणक सामने अयबाक इच्छा तँ रहिते छैक आ साहित्यकारक ई धर्मो छैक, समाजक समक्ष दर्पण राखब। आ एहन दर्पण हमरा लोकनिक समक्ष मैथिलीक सुपरिचित साहित्यकार, अनुसंधानकर्ता, विविध विधाक रचनाकार, सम्पादक, अनुवादक, वरिष्ठ प्रशासक(पूर्व) डा. रंगनाथ दिवाकर करीब दर्जन भरि पोथी, जे ओहि विधाक विशिष्ट कृतिक रूपमे गनल जाइत अछि आ टटका संग्रह जे कथाक अछि, ओहिमे विषय-वस्तुक विविधता तँ अछिए, प्रसंग आगाँ। मुदा एक गप्प एखनहि...। सोलह कथामे छह कथा 'युद्ध-कथा' अछि जे मैथिली साहित्यमे विरले देखल गेल अछि। एहि हिसाबें सेहो हिनक ई संग्रह " कैप्टन साहेबक शर्ट" साहित्यानुरागीक बीच पढ़ल जायत आ विशिष्टताक श्रेणीमे समादृत होयत, से दृढ़-विश्वास अछि।

हिनक ई दोसर कथा-संग्रह छनि। पहिल 2015मे प्रकाशित भेल छलनि। कथा लेखनक गतिसँ लगैत अछि, हिनक प्राथमिकता कथा लेखन नहि, अनुसन्धान, शोध पहिल पसन्दक लेखन छनि। एहि संग्रहमे जे कथा सभ संकलित छनि से एक 2019क आ बाँकी 2022सँ 2026 धरिक। अधिकाँश कथा "सगर राति दीप जरय"मे पठित, पत्र-पत्रिका आ स्मारिकामे पूर्व प्रकाशित छनि। दू खण्डमे विभाजित एहि संग्रहक दस कथामे पहिल पारिवारिक अबरजातसँ प्रेमक अंकुरण आ ओकर बीजारोपणसँ पहिनहि टूटनसँ आहत, किन्तु दुनू अपन-अपन वृत्ति

कैप्टन साहेबक शर्ट : *डॉ. रंगनाथ दिवाकर*
(मैथिली कथा-संग्रह)

पृष्ठ संख्या : 172
प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन, मधुबनी (मिथिला) बिहार।
ISBN : 9789391371661 (HB) ₹ : 500/-
ISBN : 9789391371777 (PB) ₹ : 300/-

आ परिवारमे रमि गेल छलाह, पता नहि कहियो भेँटो होयतैक कि नहि ! आ से भेलैक बहुत अन्तरालक बाद। आ पुनः प्रेम पनपयसँ पहिने जे शंका मनमे उत्पन्न भेलैक, ओकर निवारणक रास्ता सहजहि खोलि दुनू परिवारक खुशीक ठेकान नहि रहलैक आ अपने जे ओहि समय चुकल रहथि,से अपन-अपन प्रतिरूपक मिलान करा इंद्रधनुषी रंग जकाँ सात फेरा लगवा क' अपन दुख-दर्द, टीस-संत्रास आ कचोट-कसक बिसरि, दुनूकभविष्य जगमगा देलनि। असफल प्रेमकेँ सफल प्रेममे बदलि क' कथाकेँ नव मोड़ द' देल गेल अछि।

जेना स्वयं कथाकारो कहैत छथि, एक कथा आ दोसर कथामे विषयवस्तुक मिलानसँ कथा पढ़बाक समय पुनरावृत्तक भान होबय लगैत छैक, से हिनक जतेक कथा छनि, सभ अलग-अलग स्वादक, आ से सुस्वादु छनि, चहटगर छनि आ समाजक दर्पण तँ छनिहेँ। कोनो गरम मसाला बला, कोनो आमिल-अम्मत बला, कोनो कबकब तँ कोनो कड़ू। कोनो बटर-पनीर-मसाला तँ कोनो पटुआ सागक झोर। कोनो कथा उठा लिअ, कथ्य आ तथ्य भेटत सहजोड़।

संस्कार भलें पद आ पैसाक लोभमे कनेक दिनक लेल असहाय सन बुझना जायत, लागत आब संस्कार बचत नहि। अट्टालिका पर अट्टालिका ठाढ़ क' ओकरा कतबो दबयबाक कोशिश केलनि, देशकेँ छोड़ि विदेशक गुणगान कयलनि, मुदा परिस्थिति तेना ने झकझोरि देलकनि, जे अन्तमे कहय पड़लनि- "भैया! हम आबि रहल छी।" पाग-दोपटा, मधुर बोलीक सम्मान नीक, सभ्यताक कसौटीपर खड़ा उतरब ठीक, मुदा नाइट क्लबमे अय्यासी करब, कोनो दृष्टिकोणसँ नीक नहि। पद-पैसा आयत, जायत, मुदा, जँ संस्कार एक बेर च्युत भ' जैत तँ वापस नहिएँ टा घुरिआयत। से हिनक एहि कथा (भैया ! हम आबि रहल छी)मे जखन कहलनि जे ओ परसू पटना पहुँचि जायब तँ देखल जाय ओहि समयक दृश्य "कनैत छोट भाइक स्वर नंदाकेँ विह्वल कऽ देने छल हुनको आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छल। लगमे ठाढ़ बेटा राकेश भावुक भ' गेल छल आ ओकर माए सेहो साड़ीक आँचरसँ अपन आँखि पोछि रहल छलीह।"

हिनक एक-एक कथाक विषयमे अलग-अलग विश्लेषण करब हमर अभीष्ट नहि आ नहि उचितो, कारण पाठक जँ कथाक सारतत्वसँ परिचित भ' जायत तँ पढ़बाक ओ उत्सुकता नहि रहि जयतैक। हँ, मुदा हिनक कथा सभ पढ़लाक बाद, किछु नहियों कहब अनुचित, कारण कथाक जे विशिष्टता छैक, से समाजक समक्ष नहि राखब कर्तव्यच्युत हैत। हिनक कथासभमे संतुलन आ साहस दुनू अछि।

कथाकारक न्यायाधीशक रूपमे नहि, गवाहक रूपमे प्रस्तुति अछि। घाव सेहो अछि, प्रभाव सेहो अछि, दृष्टि सेहो साफ अछि। प्रेममे त्याग अछि, साधना अछि, कठोर परिश्रम अछि, मानवीय संवेदना तँ अछिए, आ अछि बारुदक बीचमे जीबैत, पेटक लेल विकल रहैत, फुटपाथपर सुतैत, हिनक एक कथामे पुनीता जखन अधिकारी बनि जाइत अछि, तँ कर्तव्यपथपर अग्रसर रहैत, पीड़ाकेँ बिसरि आगाँक सोचैत अछि, कि एकाएक ममताक बुच्ची शब्द सूनि "माएक छातीमे माथ रखने पुनीता नेना जकाँ कानि रहल छलीह।" ई कथाक अन्त अछि, मुदा कथाकेँ आदिसँ अन्त धरि बिनु पढ़ने नहि रहि सकब।

विश्वास आ सेवा एक परिवारकेँ कतेक तक उठा सकैत अछि, से हिनक एक कथा "अपनअपन विश्वासमे वर्णित अछि। कलाकारकेँ कलाक प्रति सम्मानमे जखन ठेस लगना जाइत छैक तँ खुट्टीपर टाँगल घूँघरू उतरि फेर ओकर पैरमे आबि जाइत छैक आ पद-ध्वनि सुना पड़ैत छैक। आरक्षणक प्रतिकूल प्रभावपर सेहो एक कथा छनि।

जेना पूर्वमे कहलहुँ, मैथिलीमे युद्धकथा बहुत कम अछि, ओहिठाम जँ एक सङ्ग छह युद्धकथा हो, तँ साहित्यकेँ सेहो समृद्धि करत आ नव कथाकारक लेल अनुकरणीय सेहो हैत।

कारगिल युद्ध, कैप्टन विक्रम बत्राक शहादत, पिताक मन:स्थिति, परिवारक परिस्थिति, डिंपल चीमाक प्रेममे दोसर विवाह नहि करब, सरकारक सम्मान आ ओहि स्थल पर प्रथम पुण्यतिथि पर पुत्रकेँ माल्यार्पण करब आ जन्मदिनक लेल सियैल शर्ट केँ शहीद स्थलपर पुत्रक लेल अर्पण करब, पिताक लेल गर्व आ विछोहक संगमकेँ कथाकार दिवाकरजी दू नदीक हिलकोरक बीच सामंजस्यक जे अक्षरांकित कैलनि अछि, माल्यार्पण करैत काल हाथ तँ कंपैत छनि, मुदा ओही क्षण सीना सेहो तनाइत छनि, एक दिस भारत माताक जय तँ दोसर दिस आँखिक नोर सुखाएल। डिम्पल चीमाक त्याग कम क' क' नहि अंकलनि अछि, इहो लेखनीक परिपक्व होयब थिक। प्रेम शारीरिक भूख नहि पूजा थिक, ई बात "सेहो कैप्टन साहेबक शर्ट" कथामे झलकि रहल अछि।

अन्य पाँचो कथाक अपन वीरगाथा छैक, देशप्रेमक हेतु प्राणक निछावर छैक, सभ कथाक दृष्टि फ़रिच्छ छैक। सभ कथा बहैत धारक निर्मल जल जकाँ स्वच्छ छैक आ अन्तमे भारतीय सेनाक शौर्यक जे विश्वमे पहचान छैक, से कथाक रूपमे मैथिली साहित्यक युद्धकथा अपन शीर्षस्थ स्थान बनयबामे सफल रहत, से डा. रंगनाथ दिवाकरक कलमक ताकत छनि। हिनक एक कथा(जसु वचन देने छल)क एक अंशक प्रस्तुति, हिनक भाषा आ शिल्पक निजताक प्रमाण अछि– " महावीर योद्धा जसवंतक तीन दिनक ओ विराट युद्ध थमि गेल छल। नूर मृतप्राय भेल खसल छलीह। एक चीनी सैनिक खसल जसवंतकेँ दू चीनी सैनिकक सहायतासँ बैसा खुखरीसँ हुनक घेंट छोपि लेलनि। ई भयंकर दृश्य देखि पता नहि कतयसँ नूरामे प्राण आबि गेलै। ओ सहसा ठाढ़ भेलीह आ एक झपट्टामे जसवंतक कटल मूड़ी छिनि अपन माथपर राखि लेलनि। जसवंतक खूनसँ जेना ओकर माथ सेनुरा गेल हो।"

निष्कर्षत: हम इएह कहब, हिनक पहिल खण्डक कथा समाजक अनेक रंगमे रँगल अछि आ दोसर खण्डक केसरिया रंग विशेष चटखदार आ दिव्य अछि।

•••

विश्व कीर्तिमानक ऐतिहासिक उपलब्धि पर
हार्दिक बधाइ एवं अभिनंदन!

मैथिली साहित्य, नाटक आ रंगमंचक महान साधक आदरणीय महेंद्र मलंगियाकेँ
*Guinness World Records*मे स्थान बनाबए लेल 'अनुप्रास परिवार' दिससँ...
हार्दिक बधाइ, अभिनंदन आ अनन्त शुभकामना!

डॉ. सुरेन्द्र लाभ

सम्पर्क : जनकपुरधाम, नेपाल।
+977 9844051292

डॉ. सुरेन्द्र लाभ (सुरेन्द्र लाभ कर्ण) मैथिली साहित्यक एकटा सुपरिचित आ प्रतिष्ठित नाम छथि। अर्थशास्त्रमे पी-एच. डी. उपाधित प्राध्यापक सुरेन्द्र लाभजीक रचना सबमे जीवनक यथार्थ, सामाजिक विसंगति आ मानवीय संवेदनाक सूक्ष्म विश्लेषण स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि। तहिना हिनक सरल स्वभाव, सहज मानवीय दृष्टि आ सुकोमल संवेदनशील मोन हिनक रचनामे उभरल अछि। लोकसँ आत्मीयता, जमीनसँ जुड़ाओ, परंपरा-संस्कृति सहेजबाक प्रवृत्ति आ मैथिलीक लेल अतिरिक्त मात्सर्य हिनक लेखनीक वैशिष्ट्य अछि। डा. सुरेन्द्र लाभ राष्ट्रीय योजना आयोग, नेपाल सरकारक नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान, समाज कल्याण परिषद आदि संस्थाक महत्वपूर्ण पदक जिम्मेदारी निर्वहन क' चुकल छथि। तहिना संयुक्त राष्ट्रसंघीय विकास कार्यक्रम (UNDP) अन्तर्गत परामर्शदाता रूपमे सेहो अपन सेवा प्रदान कएने छथि। सम्प्रति डा. लाभ नेपालक मधेश प्रदेशमे प्रदेश प्रमुख/राज्यपाल (Chief of State/ Governor) पदकँ सुशोभित करैत छथि।

बौक जनता

दृश्य : एक

मंचपर अन्हारसँ प्रकाश होइत अछि। 5-6 टा व्यक्ति ठाढ़ अछि। ककरो छातीपर भूखल जनता, ककरो छातीपर बीमार जनता, ककरो छातीपर बेरोजगार जनता, ककरो छातीपर अशिक्षित जनता, ककरो छातीपर पियासल जनता तँ ककरो छातीपर गरीब जनता लिखल अछि। सब जनताक मुँहपर पट्टी बान्हल अछि। बीचमे कुर्सी टेबुल लागल अछि। टेबुलपर 'सरकार' लिखल बोर्ड राखल अछि। एहि टेबुलके चारुकात सभ केओ घुमि रहल अछि।

किछु देरक बाद 5-7 गोटे अपन छातीपर 'क्रान्तिकारी' लीखि मूक नारा लगबैत प्रवेश करैछ। सभक माथपर लाल पट्टी बान्हल अछि आ हाथमे ललका झण्डा लेने अछि। सबसँ आगू रहल व्यक्ति जोरसँ नारा लगएबाक अभिनय करैछ। बाँकी पछुआसभ अनुसरण करैछ। भुखल-पियासल जनतासभ एकटा कोन्हमे बैसि जाइछ। क्रान्तिकारीसभ जोर-जोरसँ नारा लगएबाक अभिनय टेबुलकँ चारुकात घुमि घुमि क' करए लगैछ। किछु देरक बाद ओकरा सभक नजरि खाली कुर्सीपर जाइत अछि। सभगोटे लोभी नजरिसँ देखए लगैछ, यथा कुर्सी नहि मिठाइ हो कुर्सी। सभक जीह लपलपा रहल अछि, कुर्सी देखि। केओ प्रेमसँ छुबाक प्रयास करैत अछि। केओ जीहसँ चाटबाक प्रयास करैत अछि। कान्तिकारी नेताजी एसगरे नारा लगा रहल अछि, घुमि-घुमि क'। एम्हर बाँकी साथी अपन-अपन माथक पट्टी आ हाथक झण्डा फेकि कुर्सीकेँ अपनादिस तना-तनी क' रहल अछि। नेताजी ई दृश्य देखि स्टील भ' जाइत अछि। पछुवासभ किछु समयधरि कुर्सी तना-तनीक खेलमे लागल रहैत अछि। नेताजी सजग होइत छथि आ कुर्सीदिस दौड़ैत छथि। ई देखि पछुवासभ कुर्सी ल' क' भागए लगैछ। किछुदेर ई खेल चलैत अछि। अंतमे नेताजी अपन झण्डा कुर्सीपर राखएमे सफल होइत अछि आ तत्पश्चात् स्वयं कुर्सीपर बिराजमान होइत छथि। चेलासभ ताली बजबैछ। मंचपर अन्हार पसरि जाइछ।

दृश्य : दू

क्रान्तिकारी नेताजी पूर्ववत अपन कुर्सीपर बैसल छथि। भुखल-पियासल, गरीब, बेरोजगार जनता अपन-अपन छातीपर पूर्ववत लिखल पट्टी सभकेँ देखबैत नेताजीक चारुकात घुमि रहल।

भुखल जनता : (नेताजीक ल'ग जाए, हाथजोड़ि सङ्केतसँ अपन भूख मेटा देबाक हेतु याचना करैत अछि)
नेताजी : (दूतकारि क' भगा दैत अछि।)
पियासल जनता : (नेताजी लग जाए पियास मेटा देवाक हेतु प्रार्थना करैत अछि।)
नेताजी : (तामसे थू... थू क' थूक फेकबाक अभिनय करैत छैक।)
अशिक्षित जनता : (नेताजी लग जाए अशिक्षा दूर करबाक हेतु अनुरोध करैत छैक।)
नेताजी : (एकटा भैंसके फोटो ओकरा पकड़ा दैत अछि आ दुतकारिकए भगा दैत अछि।)
बीमार जनता : (नेताजी ल'ग जाए अपन बीमारी दूर क' देबाक हेतु कल जोड़ैत अछि।)
नेताजी : (घृणासँ लाते लात ओकरा मारैत अछि आ ओहि ठामसँ भगा दैत अछि।)
बेरोजगार जनता : (रोजगार देबाक हेतु नेताजीसँ निवेदन करैत अछि।)
नेताजी : (ओकरा झापड मारि भगा दैत अछि।)

जनतासभ अपन अपन माथ, छाती पकड़ि कनैत अछि। नेताजी टेबुल त'रसँ दारुक बोतल आ गिलास निकालि दारु पिब' लगैत अछि। बीच-बीचमे सिगरेट पिबैत मौन ठहाका सेहो मारैत अछि। जनतासभ कनैत-खिजैत नेताजीक चारुकात घुमि रहल अछि। क्रमश: मंचपर अन्हार पसरि जाइछ।

दृश्य : तीन

मञ्चपर प्रकाश होइत अछि। नेताजी कखनो अखबार पढ़ि रहल छथि, कखनो फोन क' रहल छथि। भुखल जनता भुख्खे छटपटा रहल अछि। पियासल जनता पानि लेल तड़पि रहल अछि। बीमार जनता दुखसँ कराहि रहल अछि। सभ जनता अपन-अपन वेदनासँ तड़पि रहल अछि।

एकटा नेता टाइप जनता प्रवेश करैत अछि। ओ सम्पूर्ण स्थितिकेँ अवलोकन करैत अछि आ सभगोटेकेँ आश्वासन दैत सङ्केतसँ ई कहैत अछि जे ओ सभक अधिकार हेतु लड़त। सभक विश्वास जगैत अछि।

सभ ओकरादिस आशा भरल नजरिसँ देखए लगैत अछि। ओ धीरे-धीरे नेता ल'ग जाइत अछि।

नेताजी : (सङ्केतसँ पुछैत अछि– अहाँ के छी ?)
नेता टाइप जनता : (जनतासबके देखाए सङ्केतसँ कहैत अछि– हम एकरा सभक नेता छी।)
नेताजी : (सङ्केतसँ कहैत अछि– अच्छा ठीक अछि। मुदा एत' किया अएले ?)
नेता टाइप जनता : (भुखल जनताके ल'ग अनैत अछि आ संकेतसँ कहैत अछि– एकरा भोजन चाही। पियासल जनताके ल'ग आनि सङ्केतसँ कहैत अछि– एकरा पानि चाही। बीमार जनताके ल'ग आनि सङ्केतसँ कहैत अछि– एकरा दबाइ चाही। बेरोजगार जनताके ल'ग आनि सङ्केतसँ कहैत अछि- एकरा काम चाही। अशिक्षित जनताके ल'ग आनि सङ्केतसँ कहैत अछि- एकरा अक्षरके ज्ञान चाही।)
नेताजी : (सङ्केतसँ कहैत अछि– हम कत्त'सँ दियौ ?)
नेता टाइप जनता : (नेताजीसँ याचना करैत अछि।)
नेताजी : (सङ्केतसँ 'नै नै नै' कहैत अछि।)
नेता टाइप जनता : (पैर पकडि खुशामद करैत अछि।)
नेताजी : (पैर झटकि ओत्त'सँ विदा भ' जाइछ।)
नेता टाइप जनता : (तमसा जाइछ आ अपन सर्टक बाहि मोरैत बाहर निकलि जाइछ।)

दृश्य : चारि

मंचपर प्रकाश होइत अछि। नेताजी नमस्ते मुद्रामे प्रवेश करैत छथि। सभकेँ बैसबाक हेतु संकेत करैत अछि आ स्वयं सेहो कुर्सीपर बैसि रहैत अछि, दुनू पैर टेबुलपर राखि ककरो फोन करए लगैत अछि। 'नेता टाइप जनता' माथमे लाल पट्टी आ हाथमे बन्दुक लए प्रवेश करैछ। ओकर पाछू भुखल-पियासल, बीमार, बेरोजगार सभ जनता अछि। ओ सभ नेताजीक चारुकात घुमए लगैछ। घुमैत-घुमैत 'नेता टाइप जनता' नेताजी पर बन्दुक तानि दैत अछि। नेताजी डरे थर-थर करए लगैछ। किछुदेर ई नाटक चलैत अछि। तत्पश्चात नेताजी फोनसँ पुलिसकेँ बजबैत अछि। पुलिस बन्दुक लेने धरफराइत प्रवेश करैछ।

पुलिस : (नेताजीके सलुट मारैत अछि।)
नेताजी : (पुलिसपर तमसाइत सङ्केतसँ कहैत अछि– 'की सलुट मारैत छे? देखै नै छे ? मार एकरा।)
पुलिस : (सङ्केतसँ कहैत अछि– जी सरकार ! आ 'नेता टाइप जनता' दिस बन्दुक तानि दैत अछि)

दुनू बीच संघर्ष सुरु भ' जाइत अछि। नेताजी टेबुलपर तबला बजाक' मजा रहल छथि। दुनू बन्दुकधारीक गोलीसँ किछु जनता मारल जाइत अछि। बाँकी जनता निरिह भावसँ टुकुर-टुकुर देखि रहल अछि। दुनू बन्दुकधारी आपसमे लड़ि रहल अछि। एकटा कारी कपडा आ नकाबपोसधारी व्यक्ति प्रवेश करैछ। ओ अबिते नेताजीक कुर्सी हिलाब' लगैछ। नेताजी चिचिया रहल अछि। बचएबाक हेतु पुलिसके संकेतसँ बजबैत अछि। मुदा ओ सुनैत नहि अछि आ पूर्ववत लड़ाइमे व्यस्त रहैत अछि। नकाबपोस व्यक्ति कुर्सीके हिलबैत हिलबैत नेताजीके निचा खसा दैत अछि। मंचपर अन्हार पसरि जाइत अछि।

दृश्य : पाँच

(मंचपर प्रकाश होइत अछि। टेबुल पर कुर्सी राखल अछि। कुर्सी फूल मालासँ सजाएल अछि। किछु व्यक्ति कुर्सीके आरती क' रहल अछि। केयो अगरबत्ती बारि रहल अछि तँ केयो फूल अबीर चढा रहल अछि। कुर्सीक भक्तिभावमे सब अपना-अपना तरिकासँ लागल अछि। नकाबपोसधारी किछु लालिपाप हाथमे लेने नचैत झुमैत प्रवेश करैछ। सबगोटे लोभसँ लालिपापके देखैत अछि। नकाबधारी लालिपापके कुर्सीपर राखि दैत अछि।

बाँकीलोक कुर्सीक परिक्रमा करए लगैछ।परिक्रमा करैत करैत आपसमे झगडा शुरू क' दैछ। किछु गोटे कुर्सिके एमहर तनैछ, किछु गोटे ओमहर। जनतासब छोड़ाब' जाइत अछि, मुदा धक्का खा' क' निचा खसि पडैछ। कुर्सीक तानातानीक अन्तमे कुर्सी निचा अबैछ आ' एकगोटे पुनः कुर्सिपर कब्जा करैत छैक। बाँकीसब ओकरादिस आँगुर देखबैत स्टेच्यु भ' जाइत अछि। मञ्चपर अन्हार पसरि जाइत अछि।

दृश्य : छओ

मंचपर प्रकाश होइत अछि। नवका नेता कुर्सीपर बैसल अछि। टेबुलकेँ आगु नेताक बन्दुकधारी आ जनताक बन्दुकधारी आपसमे भीड़ल अछि। किछु गोटे मूक नारा लगबैत जुलुसमे चलि रहल अछि। भुखल-पियासल, बेरोजगार, बिमार,अशिक्षित जनतासभकेँ बहुत औनाहटि होइत छैक। सबगोटे संगठित होइत छथि आ' अंतमे अपन मुँहपरक बान्हल पट्टीकेँ खोलि लैत अछि। ई देखि बाँकीलोक आश्चर्यचकित भ' मंचपरसँ भागि जाइत अछि। मंचपर बौक जनतासभ विजयी भाव नेने मुर्तिवत ठाढ़ अछि आ सभक हाथमे अपन अपन मुँहपरक पट्टी अछि जे दर्शक दिस देखा रहल अछि।

•••

शिवशंकर श्रीनिवास

सम्पर्क : लोहना, मधुबनी (बिहार)
+91 9470883301

मैथिली एवं हिन्दी विषयमे एम.ए. तथा पी-एच.डी. उपाधित मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासजीक त्रिकोण (सहयोगी प्रकाशन), अदहन, गामक लोक, मुग्ध कथा, माटि आ चयनित कथा प्रकाशित अछि। बदलैत स्वर हिनक मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन थिक। हिनक सम्पादनमे नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डियासँ प्रकाशित मैथिली कथा संचयन पोथी चर्चित ओ प्रशंसित अछि। साहित्यिक इतिहासक अन्तर्गत मैथिली कथाक इतिहाससँ संबंधित लेखन कएलनि। किरण साहित्य पर हिनक कार्य उल्लेखनीय छनि। किरण साहित्य सम्मानसँ सम्मानित श्रीनिवासजी कथाक अतिरिक्त कविता, गीत ओ समालोचना सेहो लिखैत छथि। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे वर्ष 1980सँ 2018 धरि शिक्षण कार्यसँ जुड़ल रहलाह आ वर्ष 2018मे प्रभारी प्रधानाचार्यक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह।

लोक अनमोल

नरेन्द्र पढ़लनि लिखलनि गामेमे। शिक्षकक प्रशिक्षण सेहो बुझु एक लेखें गामे सन जगहमे लेलनि आ नोकरियो भेलनि एहने सब जगह जे सभ दिन साइकिलसँ स्कूल जाइ छलाह आ साँझमे घर घुमि अबै छलाह।

ओइ दिनमे जहिया छुट्टी रहै छलनि तहिया घर रहैत बड़ मजा अबनि।

घर परहक दुपहरिया, साँझ एतेक मन भावन लगनि जे कतौ ने जाय चाहथि, खूब आनन्दे धीया-पूता ओ पत्नीसँ गप्प करधि। जँ जँ दिन बीतै तँ तँ फेर काल्हिसँ स्कूल जेबाक ध्यान अबनि आ मन होइन बीतैत दिनके अपनामे लपेटि लेथि मुदा से होई कहाँ, दिन तँ अपना अनुसार बीति जाइ।

वैह दिन आब अवकाश ग्रहण कयलाक बाद पहाड़ लाग' लगलनि।

धीया-पूता सभ शहरमे छनि। बेटी-जमाय आ बेटा-पुतोहु सभ, अपन-अपन दिन-दुनियाँमे अइ। एकटा बेटी अपन सासुरक गाममे' रहै छनि। ई बेटी-जमाय बेसी काल अबै जाइ छथिन।

गाममे ई मात्र दुनु बेकती रहै छथि, पत्नी ममता हरदम काजेमे व्यस्त। ई निठल्ला, कोनो काज नहि।

पहिने बाड़ी-झाड़ीमे नाना प्रकारक तरकारी उपजबै छलाह, मुदा आब किछु नहिं, तकर कारण से गाममे ततेक ने बानर भ' गेल अइ जे सभटा उजाड़ि-पजाड़ि दै छनि। तखन रोपि के की? आब बाड़ी-झाड़ी ओहिना पड़ल छनि।

एहन स्थितिमे नरेन्द्र की करताह?

गाम सँ बहुतो लोक शहर चल गेल। बहुतो घरमे ताला लागल अइ, एते तक जे शिक्षक वा शिक्षिकाके गाममे लगहक स्कूलमे नोकरी छनि, ओहो सभ लगीचक शहरमे रहैत गामक स्कूल अबै छथि। तखन कहब जे गाममे लोक नहि अइ से नहि बहुतो लोक अइ, मुदा हिनका लेल केओ जेना नहि अइ। तकर कारण ई बुझै छथि। हिनका सभ दिन अपनासँ बहुत जेठ सभसँ सँग-भाव रहलनि, ओइ दिनमे ई बात हिनका स्वयं गौरवक बोध करबनि, किन्तु ओ लोकनि बूढ़ भ' भ' एहि दुनियाँसँ चल जाइ गेलाह, जे किछु लोक जे हिनका संग पढे छल ओ स्कूल जीवनक बाद छीडिया गेल, एक-दू गाममे अछियो तँ ओ सभ सँग छुटलाक कारणे हिनकासँ एकदम उदास भ' गेल अछि।

सभटा अपनहि गलती छनि से सोचैत नरेन्द्र आब ककरोसँ जुड़ि नहि पबै छथि, ककरासँ भरिपोक गप्प करताह ?

बेटा-बेटी शहर अयबाक आग्रह करै छनि मुदा शहरमे तँ आर नीक नहि लगै छनि। ओहि ठामक डेरा हिनका पिजरा बुझाइ छनि।

बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाय अपन-अपन काजमे, धीया -पूटा सभ स्कूल जाइ जाइए, स्कूल सँ आयल तँ खेलायल-धूपायल आ साँझमे होम-टास्क। तखन तँ ई दुनु बेकती की गप करै जेताह। मोन पड़ै छनि युवावस्था जखन रहनि तँ ओह! पत्नीसँ गप्प समाप्ते नहि होइन। कएक दिन तँ गप्प करैत -करैत आधा राति बीति जाइन। आब इएह बेगरताक गप्पसँ आगू किछु नहि। शहरमे खास 'क'क' जतय हिनक बेटा-बेटीक डेरा छनि ओत पार्क सभ छै। मुदा टहलैमे हिनका असगर मन नहि लगै छनि। पत्नी कहियो ने टहलथि। ओ गाममे रहै छथि तँ हुनका काजे एतेक भ' जाइ छनि जे फुटसँ शारीरिक श्रमक आवश्यकता नहि होइ होन, मुदा ओत' शहरमे ओहो बैसल-बैसल अकच्छा जाइ छथि।

आ ई सभ बेटी-बेटासँ जिद क' गाम धुरि अबै छथि। गाममे फेर वैह जीवन। एकदम नीरस।

गाममे कतेक गोटयसँ जुङ, चाहलाह, मुदा जुड़ि नहि रहलाह। तथापि ई अपने प्रयास जारी रखने छथि।

हिनका असगर बैसल नीक नहि लगै छनि, ओना गाममे कएक गोटयके देखै छथि जे ओ करीब करीब भरि दिन कुर्सी पर बैसल समय बीता लै छथि। हिनका आश्चर्य लगै छनि जे एहन लोकके कतौ टहलबाक बुलवाक मोन किएक ने होइ छनि! एहने लोकमेसँ एकटा व्यक्ति सुभाष जी छथि, ओ हिनकासँ मात्र दू बरखक जेठ छथि, पहिले उनकासँ बड़ गप होइ छलनि। ओ बगलेक महाविद्यालयसँ बड़ा बाबू भ' क' रिटायर केलाहे। हुनका की भेलनि कि नहि ओ एकदम गुम्मी लाधि लेलनि। ओ हरदम घरमे नहि, दलान पर कुर्सी ल' क' बैसल रहताह, जँ कोनो काजे कतौ बहरेता आ भेटताह तँ कुशल-क्षेमक बाद किछु नहि। नरेन्द्र सेहो हिनका देखि आश्चर्य-चकित रहै छथि। ओहेन गप्पी सुभाष जीके कोनो एहन बातक ठेस लागल छनि जे हुनका ओना क' देलकनि। मुदा नरेन्द्र के ई बात नै जँचै छनि। जे उनका ओना क' देलकनि। नरेन्द्र जी सोचै छथि जे सुभाष जी सन गुम्मा लोक मात्र सुभाषे जी नहि छथि, ओहन आरो कएक गोटय छथि जिनका मनुक्ख-गंध लगै छनि। की सभके कोनो-कोनोने ठेसे लागल छनि।

नहि ई नहि भ' सकैत अछि।

ई एक दिन सुभाष जी के पुछलथिन्ह जे हुनका असगर बैसल कोना नीक लगे छनि, एहि गप्प पर ओ बिगड़ि जेकाँ गेलथिन आ कहलथिन- "गाममे आब कतौ जाइ वला रहलै"। हुनक भंगिमा देखि नरेन्द्रजी चुप्प भ' गेलाह, फेर अनका सं' ई गप्प नहि पुछलनि।

गाम तँ असुरक्षित भइए गेलैए-से नरेन्द्रो जीके मनमे होइ छनि मुदा सौंसे साँपे छिड़िआयल है, तेहन तँ नहि छै।

गाममे चौक-चौराहा पर लोक जुटैए, आब प्रत्येक गामक चौक-चौराहा पर रंग-विरंगक दोकान सभ खुजल छै, किछु लोक बेगरते कीन-बैसहा आ किछु गोटयक नित्य-कर्म छै चौराहा अटेन्ड करब। हं, जकरा एहन राजनीतिमे रस छै, ओ सभ बैस क' गप्प करैए। हिनका एहन गप्प पर कहियो रुचि नहि रहलनि। ओहेन गप्प-शपमे ई अपनाके सरीक नहि क' पबै छथि।

बेर के टहलैके मन करै छनि मुदा कत' टहलता। सड़क आब टहलै वला नहि रहलै। जे मुख्य सड़क छै ओहि पर ततेक सवारी चलै छै जे डेगे- डेगे कात होब' पड़ै छै, एहि सड़क पर कतेको गोटयके ठोकर लगले'ए। कतेक गोटय अपंग भ' गेलए। दू गोटय ठामहि मरि गेल।

ओहि सड़क पर पत्नी टहलवासँ मना करै छथिन, अपनो डर होइ छनि आन जे सड़क अछि ओहि पर ततेक लोक नदी फिरने रहैए जे नाक नहि देना जाइ छै।

एनामे कत' टहलता? घरे पर घुमैमे मन नहि लगै छनि। एहनामे तँ देह एकदम जाम भ' जेतनि। यैह सभ, सोचेत नरेन्द्रके अपन पिता मन पड़लथिन। हुनका समयमे तँ गाममे लोक गज-मज करैत रहय। लोक

लोकक दलान पर मात्र गप्पे करै लेल अबै छल। गुप्पो एकटा काज छलै। हिनक पिता ततेक ने सहमेलू छलाह जे बहुतो लोक हुनकासँ जुड़ल छल। तथापि ओ सभ दिन दुपहरियाक बाद बाध टहलै छलाह। जखन ओ साँझमे अबै छलाह तखन ओ हिनका पितामहीके माने अपने मायके कहे छलथिन-" माय आइ डोरा (बाधक नाम) गेल छलहुँ, ओह! की कहू एखन खेतमे धानके देखि मन जुड़ा जाइए। आ से कहैत ओ नाना प्रकारे खेतमे लहलहाइत धानक फसिलक वर्णन करै छलाह, से ओ कहियो कोनो ओहि बाध तँ कहियो ओहि बाध जाइ छ्लाह।

मुदा नरेन्द्र बाध की देख' जेताह। सभक खेत वा तँ बटाइ लागल अछि जाहिमे कोनो फसिल देखब तँ मन झुझुआन भ' जायत। बहुतो खेत एहन अछि जे परता पड़ल अछि। से एहि दुआरे जे गाममे आब लोक बटाइयो नहि कर' चाह'ए।

नरेन्द्रके मन छनि जे श्रमिक वर्ग खेत वलासँ बटाइ देबाक लेल उजूर लगबै छल। ओ जमाना चल गेल, तकर कारण युवा वर्गक पलायन। ओह एतबे दिनमे गामक खेती एकदम उपेक्षित भ' गेल। जखन खूब खेती होइ छल तखन बाध हरदम लोकसँ गनगनाइत रहै छल आ खेती समाजके सेहो एक दोसरसँ जोड़ने रहै छल, बुझु सामूहिक जीवन छल, ओ सभटा समाप्त भ' गेल, से सोचैत नरेन्द्र सोचलनि जे किएक ने बाधेमे टहलल जाय आ ओ बाध टहल' लगलाह।

एक दिन बाधमे टहलै छलाह तँ बूलन चौरसिया भेटलथिन बूलन जी आ ओ समनवयसक, हुनकासँ कूशल क्षेम खूब होइन, जाहि दिन ई स्कूलमे पढ़े छलाह, ओहि दिनमे जखन स्कूलमे गरमीक छुट्टी होइ तँ बेरमे बड़द चरब' गाछी जाथि। ओहि गाछीक नाम अबछी रहै।

दश बीघाक रकबा आ फटक झाड़ आमक सेहो सरहीक विशाल-विशाल गाछ। से एकावन तरहक भिन्न-भिन्न गाछ। ओही गाछीक एक कात लोक सभ मुर्दा जरबै तँ कहै जे ओ गाछी भूताहि छै। साँझ पड़ैत केओ ओहिमे नहि टपय।

नरेन्द्रक पिता शम्भूनाथजी ओहि गाछीक देखभाल करथि। असलमे ओ गाछी एकटा जमीन्दारक रहै। नरेन्द्रक पिता माने शम्भूनाथ जी ओहि जमीन्दारक करपरदाज रहथिन। हुनका मेहनतनामामे ई गाछीक आम भेटनि, किछु मासिक पाइ सेहो। तैं आम फड़ै तँ ओकर मालिक शम्भूनाथ जी भेलाह, मात्र आमक गाछ आ जमीन सभ मालिकक।

शम्भूनाथ जी की करथि तँ बैद्यनाथ जीके आधा-आधी पर सभ दिनका हेतु ओगरवाही द' देने छलथिन।

ओतहि बड़द चरब' जाथि, बहुतो चरवाह सभ आवय। जाहिमे बूलन सेहो आबधि। ओ किछ दिन नरेन्द्रक संग स्कूलमे रहथि बादमे घरक काजमे लागि गेलाह।

बूलन जीके देखि मन प्रफुल्लित भ' गेलनि, पुछलथि-

-'की बूलन भाइ, जजात देख' आयल छलहुँ ?

नहि, नहि। की कहु भाइ, चीनीक रोग भ' गेल अइ, डाक्टर कहलक– टहलै ले, कत' टहलब। सड़कक हालति तँ देखते छियै, के गाड़ीसँ पिचाय तैं बाधेमे टहलै छी।

"तवन तँ सभ दिन दूनू गोटय घूमब।" नरेन्द्र कहलनि

अहुँ टहलब, वाह तखन तँ खूब मन लागत, एखन तक जखन टहलैत-टहलैत थाकि जाइ छी' तँ ओहि आमक गाछ तर बैसि गाछेसँ गप करै छी।" बूलन आनन्दमे बजलाह गाछो गप्प करैए?

"हाँ, नरे भाइ, ओ गाछ जे देखे छियै ओतै हम बैसै छी,

पहिने तँ नहि लागय, मुदा आब गाछ जेना हमरासँ गप्प करैए। कतौ बसात नहि रहत मुदा जखन ओहि गाछ तर बैसब तँ हिमालय-हिमालय" बूलन गाछ प्रति अपन उद्‌गार कहलनि।

"तखन तँ ओत' सभ दिन बैसै छी?"

"हँ नहि बैसब तँ मने ने लागत, तेना ओ गाछ हमर आत्मामे सटि गेलए।

"ठीक है बूलन भाइ, आइसँ हमहूँ ओत बैसब।"

"ठीक छै।" कहि दून् गोटय खेते-खेते आड़िये धूरे टहल' लगलाह।

नरेन्द्र मनमे अयलनि जे "मनुक्खके ककरोसँ जुड़क चाही, चाहे प्रकृतिक कोनो जड़ चेतन हो। जड़ वस्तु सेहो मनुक्खसँ जुड़ि जाइए। जेना पहिने पोखरि घाटे पर बैसल ई घंटो आनन्दसँ बैसै छलाह।

आइ नरेन्द्र के बात स्पष्ट भेलनि जे कएक गोटय कोना घरे पर बैसल-बैसल समय संग रहि जाइए। "किन्तु ओहेन बैसब बहुत ठीक नहि छै। सभसँ सुन्दर छै लोक के लोकसँ जुड़ब। लोकसँ पैघ एहि संसारमे किछु नहि छै।" नरेन्द्र मने मन सोचि रहलाहए ओ पुन: सोचै छथि जे "आइ-काल्हि लोके भेटब दुर्लभ भ' रहलैए।"

नरेन्द्रके अपन संगे जाइत बूलन के आश्चर्य लगलनि जे नरे किए गुम्म – सुम्म छथि, पुछलथिन ताहि पर नरेन्द्र कहलथिन- की कहु भाइ, आइ सँ संग-सुख हैत ओहि आनन्दमे बूझु हेलि रहल छलहुँ। लोक भेटब सभ सँ पैघ भेटब छै। नहि?

•••

पहिल छाप/कविता

आदर्श भारद्वाज

सम्पर्क : झंझाड़पुर, मधुबनी।
+91 72503 67478

आदर्श भारद्वाज एकटा मेधावी बाल लेखक आ समाजसेवी छथि। सातम कक्षाक छात्र आदर्श मैथिली, हिंदी आ अंग्रेजीमे आठटा पोथी लिखि चुकल छथि। हुनका भूटानमे 'World's First Youngest Author of the Year 2025', अटल सम्मान, मगध गौरव सम्मान आ श्री अटल बिहारी वाजपेयी राइटर ऑफ द ईयर सहित अनेक राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार/सम्मान भेटल छनि। आदर्शकेँ मानद डॉक्टरेटक उपाधिसँ सेहो उपाधित कएल गेल छनि।

नव पीढ़ीक पुकार

अरुण प्रभातक प्रथम किरनसँ,
जागू नव सन्तान।
ज्ञान-ज्योतिसँ आलोकित हो,
भारतक नव प्राण॥
आँखिमे उज्ज्वल स्वप्न सजाउ,
हृदयमे प्रेमक वास।
सत्य, दया आ श्रमक बाटे,
बनू देशक विश्वास॥

मोबाइलक मायाजाल छोड़ू,
ज्ञानक दीप जराउ।
क्षणिक मोहक भीड़ बिसरि क',
सत्य-पथ अपनाउ॥

रीलक क्षणभंगुर चकाचौंधे
जीवनक मान नहि।
चरित्र, श्रम आ सदाचार बिनु
मानवक पहचान नहि॥

युवाशक्ति भारतक बल छथि,
ओकर गौरव बनू।
मेहनतिक अमृतधार बहाउ,
नव इतिहास गढ़ू॥

सीमापर जे वीर ठाढ़ छथि,
राखथि देशक लाज।
हुनक त्यागक ऋण चुकाबय,
बनू कर्मक समाज॥

मातृभाषाक मान बढ़ाबू,
संस्कृतिक दीप जराउ।
मिथिलाक पावन माटिक गौरव
विश्वधरि फैलाउ॥

जाति-पाँतिक भेद बिसरि क',
सभकेँ करू सम्मान।
एकतामे बसैत अछि शक्ति,
एहने भारत प्राण॥

धरती, वन, नदी आ पर्वत,
प्रकृतिक अमूल्य दान।
संरक्षणक व्रत लिअ सभ मिलि,
एहिमे जीवन-गान॥

विज्ञानक नव पाँखि पसारू,
संग रहय संस्कार।
ज्ञान, विनय आ कर्मक बलसँ
उज्ज्वल हो संसार॥

देश-प्रेम केवल शब्द नहि,
ई जीवनक धर्म।
राष्ट्र-सेवा सर्वोच्च पूजा,
कर्तव्ये श्रेष्ठ कर्म॥

उठू युवा! समय पुकारए,
त्यागू सभ अज्ञान।
अहाँ सभ छी भारत-भविष्य,
अहीँसँ देश महान॥

जय मिथिला! जय भारत!
ज्ञान, संस्कार, श्रम आ
राष्ट्रभक्ति-एहने हो
नव पीढ़ीक पहिचान॥

•••

पाथर

कुणाल

सम्पर्क : पटना (बिहार)।
+91 93343 39348

साहित्य आ संस्कृति क्षेत्रमे सक्रिय कुणालजी एक बहुमुखी कवि, कथाकार, संपादक आ प्रखर रंगचिंतक छथि। सिनेमा-सीरियल-लघु चित्रकथाक पटकथा, संवाद, गीत लेखन एवं कुशल निर्देशन कएने छथि। मिथिलाक निजी नाट्य-शिल्पक चिंतन क्रममे लोक-नाट्य आ कीर्तनिया नाटक पर गहन अनुसंधान क' "प्रदर्शन आलेख" एवं "चैंबर ड्रामा" प्रारूपक प्रणयन कयने छथि। शिखा, भंगिमा आ मिथिला दर्शनक संपादन कयने छथि। हुनक सात मैथिली नाटक, एक कविता संग्रह, 'बर्बरीक उवाच' (हिंदी नाटक) आ विद्यापतिक सए पदक संपादन सहित कतेको अनुवाद पुस्तक प्रकाशित छनि। हिंदी नाटक "बर्बरीक उवाच"क लेल "मोहन राकेश सम्मान"(प्रथम पुरस्कार) आ मैथिली रंगमंचमे समग्र योगदान लेल," हालहिमे राष्ट्रपति द्वारा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कारसँ अलंकृत कयल गेलनि अछि। अनुप्रास परिवार दिससँ आदरणीय कुणालजीकेँ हार्दिक बधाइ!

जखन देखू तखन ओ दूइए गोटा। तेसर ककरो एहि दुनु के संग नहि देखाए। ओ दुनु ककरो नइ सोहाइ। दुनु एकतरफे लोक सबके प्रणाम-पाती करए मुदा तकर प्रत्युत्तर नइ भेटइ। लोक ओहिना एहि दुनु के देखए जेना ओ रास्ता, गाड़ी-घोड़ा, मकान-दोकान के देखइए। एखन ई सामान्य प्रक्रिया छी। रूढ़ावस्था के प्राप्त प्रक्रिया आंइख खोइल क' आन्हर जेकाँ चलनाइ। जखन हिंसक होइए, तखने एकठाम होएत। बाकी घरसँ कल्हुरबा आ कल्हुअरबा घर। एहनो हालमे ओ दू गोटे छल।

सबदिन जेकाँ दुनु सबेरे सकाल बाट पर आइब गेल छल। बड़ सोहनगर समय छलइ। सूर्य उगिए रहल छला। चिड़इ-चुनमुन्नी बजने जा रहल छल। बाट पर लोकक संख्या बइढ़ रहल छलइ। मॉर्निंग वाक, एक रूटीन छल। ओकरो दुनुक लेल।

दुनु बतिया रहल छल। लोक के बजबइत छल। लोक एक बेर देइख क' आगू बइढ़ रहल छल कि एक क्षण देइख आगू बइढ़ जाइ छल। अंततः दुनु आपसमे बतियाए लगइ छल। कम्मे-सम शब्द मे। अधहा-छिदहा वाक्य मे। बहुत नीचा सुरमे कनफुसकी जकाँ। फेर ओ दुनु रूक्ष होब' लागल।

दुनु पढल-लिखल, बुझनुक लोक छल! जोरसँ नइ बजलक। चिचिआएल नइ। बस शब्दक जे चयन छल से बदइल गेलइ। शब्द एक दोसराक विरुद्ध होइत गेल। आरोप सन, दोष सन आ रोष जकाँ सेहो...

दुनु भद्र व्यक्ति छल। पढ़-लीख' बला। बुझ' बुझाब' बला। साहित्य-संस्कृति-कला के ओढ़' ओछाब' बला। लुतुक नइ, करतेबता मान' बला।

दूनु व्यवस्था के टेढ़ आँखिए देख'मे एकमत। व्यवस्था के मानवताक शत्रु मानए। दोसर दिस लोकक विचार-हीनता, खाससँ खास बात पर लोकक अन्यमनस्कता पर दूनु खबखबाएमे सेहो एकमत रहए।

पूंजीक राजनीति के, धर्मक राजनीति के, झूठ-फरेब-गड़बड़ी क खेल के चीर-फार करए। कवि विद्वान लोकनिक गोल-मोल बात पर भड़कए। भरल सभामे सवाल करए। नेता सभक रैलीमे मंच पर चढ़ि जाए आ समस्त कुकृत्यके मोटा पसाइर दिअए। गरदनिया द' क' बाहर कएल जाए।

क्रमशः दूनु के सब चीन्ह' लागल। समस्त उत्सव त्योहार मे, कवि-गोष्ठी मे, सभा-बइसारमे दूनु के प्रवेश वर्जित

होइत गेल। केओ संग चल' कि बात कर' क लेल तइयार नइ। सकले संसारक दर्द अपना छातीमे भरने ओ दूइए गोटे रहि गेल। मालिक मकान के किराया आ भोजनालय के बिल पेमेंट टासँ मतलब। बाकी लोकक अस्तित्व लेल चिन्तित दुनुक अस्तित्व बाकी लोकक लेल एतबे तक।

दूनू चलल जा रहल छल। चाइल सामान्य छलइ, सुर सामान्य छलइ, उच्चरित शब्द सब नइ। क्रमशः दुनुक गति कम होब' लगलइ। मानू जे ओ दुनु चइल नहि रहल हो, हवाक गति संगे बहि रहल हो। स्वर एत्तेक मद्धिम भेलइ जेना ओ एक दोसरासँ नइ, अपना-आपसँ बात क' रहल हो।

फेर दूनु ठाढ़ भ' गेल। ओकरा सबके ठेल' बला हवा अगल-बगलसँ बढ़इत गेलइ। दूनु सोझा-सोझी ठाढ़ भ' गेल। बड़ी काल तक ओहिना ठाढ़ रहल। एक दोसरा दिस टक लगओने। आँखिमे देखैत, मानू जे ओही बाटे एक-दोसरामे प्रवेश कर' चाहइत हो, एक दोसरामे बिला जाए चाहैत हो।

ट्रैफिक बइढ़ रहल छल। ओकरा दूनुसँ कतिया रहल छल। कुतूहलसँ देखि रहल छल। **सोझमे** दूनु के कात भ' क' ठाढ़ हेबाक सलाह द' रहल छल। उपदेश द' रहल छल, दबाड़ि रहल छल– 'मरना है क्या ?'

आस्ते-आस्ते दूनूक चेहरा परसँ भाव मेटाए लगलइ। फेर दूनुक चेहरा भावहीन, सपाट भ' गेलइ -सियाह सिलेट जकां। दृष्टि जइम गेलइ, एकदम स्थिर। आब ओ दूनू खुजल आंइखसँ किछु नइ देइख रहल छल...

टांगमे शरीर के भार उठेबाक हुब्बा-कुब्बा नइ रहलइ। थुस्स द' बइस गेल दूनु। बीच बाट पर। आमने-सामने...

समयक अविराम गति लेल धनसन। दिन चढ़इत गेलइ। बाट व्यस्त होइत गेल। दूनू बइसल के बइसल रहल। सोझा-सोझी। ओएह हेराएल स्थिर दृष्टि। ओएह सिलेट सन सपाट चेहरा। पलथी मारने, आमने-सामने। कोनो क्रिया-कलाप नइ। कोनो उकस-पाकस नइ। बाट पर भीड़ बढ़इत गेलइ। ओकरा दूनूक चारू भ'र आवाज तुमुल कोलाहल भ' गेल। कोलाहलमे ओकरा दूनूकेँ ओत'सँ उठ'क लेल, ओत'सँ हट'क लेल आदेश छलइ। अपशब्द आ धमकी छलइ। मुदा केओ ओकरा दूनूक ल'ग जेबाक साहस नइ क' सकल। तखन देखबाक कोन बात! संभवतः, लोक सब ओकरा दूनूकेँ मानव बम बुइझ रहल छल। प्रशासन लोक के मोनमे बैसा देने छइ जे लावारिस वस्तु आ असामान्य व्यक्तिसँ दूर रहनाइ जरूरी। ओहुसँ बेसी काज क' रहल छलइ, सबहक धार्मिक ज्ञान। तदनुसार दूनूकेँ मनुष्य-रूपी कोनो मायावी प्राणी कहल जाए लागल। शैतानी तिकड़म मानल जाए लागल। मानव समाजक लेल खतरा कहल जाए लागल...

कहल गेलइ जे ओना तँ दूनु देखलासँ मानुष्यक बौद्धिक प्रजाति सन लगइए। मुदा की कहल जाए। कलिकाल छइ भाइ। धर्मग्रंथमे लिखि देल गेल छइ जे कलिकालक घोर वस्थामे, 'शैतान' एहिना रूप बना क' धरती पर विचरण करत, मानवक शिकार करत....

ओ दुनू टस-स' मस नइ। ओहिना बइसल। एक दोसरा दिस मुँह केने। स्थिर दृष्टि, सपाट चेहरा। कोनो तरहक लार-चार नइ। जेना साँस पर्यन्त थम्हि गेल होइ...

ओ एक शहर छी। तखन जी जानसँ विकास क' रहल छल। स्मार्ट भ' रहल छल। संसारक नामी शहर सबसँ ओ टक्कर लेबाक लेल उताहुल भ' रहल छल। चाकर-चउरस रोड, ओवर ब्रिज, मॉल, बड़का-बड़का गाड़ी, घंटों ट्रैफिक जाम, एक्केटा झमटगर फुहारमे जल-विहार करइत शहर। एहनामे सायरन क अनघोल करइत गाड़ी सबहक झुंड कने देरीसँ माने दूपहर तक पँहुचल से कोनो खास बात नइ। खास बात ई जे गाड़ी सब अंततः ओत' पँहुचिए गेल। उजरा एस.यू.वी. सबमेसँ अधिकारीगण बाहर भेलाह। कारी-कारी बैगन सबमेसँ चित्तकबरा ड्रेसमे सैनिक, सिपाही आ अंतरिक्ष यात्री जकां पोशाक धारण केने, विचित्र सन लगइत यंत्र सब लेने लोक सब बाहर आएल।

सिपाही सब, असंख्य तमाशबीन सबके दूर हटाब' आ दूरे राख'मे व्यस्त भ' गेल। सैनिक लोकइन अफसरक चारू कात सुरक्षा घेरा बना देलइन। अंतरिक्ष यात्री सन लगइत लोक सबके अफसर लोकइन किछु निर्देश देलइन। ओ लोकइन आपसमे विचार-विमर्श क' क' बाट पर बइसल ओहि दुनू लोक दिस नहुए-नहुए बढ़' लगला।

एहि बीच स्मार्ट होइत शहर, असत-व्यस्त, लश्त-पश्त होइत गेल। समस्त टी.वी. यूट्यूब बगैरह-बगैरह चैनल सब अकस्मात प्राप्त सुअवसरके ब्रेकिंग न्यूज नामसँ ब्रेक पर ब्रेक कर' लागल।

अंतरिक्ष यात्री सन पोशाक वला सब अत्यंत सावधान रहइथ। बेस गंभीरता पूर्वक पर्यवेक्षण

केलइन। बेर-बेर अपन यंत्र सबसँ परीक्षण केलइन। बेर-बेर ओहि अद्‌भुत यंत्र सबसँ ओहि दूनुक प्रदक्षिणा करबओलइन। यंत्र सब मौन छल। ओ सब कोनो तरहक संकेत नइ द' रहल छल। अर्थात जे समझदारी ओइ यंत्र सबमे भरल गेल छल तकर कोनो संकेत यंत्र सब के नइ भेइट रहल छल। फलत: यंत्र सब तटस्थ छल।

ओमहर निरंतर समृद्ध होइत लोक भीड़ छलइ। भीड़क उत्सुकता चरम पर छलइ। ओ सब लगले हाथ कोनो उत्तेजक घोषणाक लेल आकुल- व्याकुल भ' रहल छल। माइक कैमरा बला सबके कोनो नव बात भेटिए ने रहल छलइ। ओ सब बेर-बेर कहले बात के कहने जा रहल छल। स्पष्ट लाइग रहल छलइ जे ओकरा सभक ऊर्जा ढलान पर छलइ। लोक सबके ढठने सिपाही सब सेहो शिथिल होब' लागल छल। भीड़ मुखर होब' लागल। ओहि मुखरतामे पुलिस, प्रशासन आ पत्रकारिताक आलोचना सेहो सन्हियाए लागल। क्रमश: उपेक्षा आ असंसदिय शब्दावलीक प्रयोग सेहो भेल।

अंतरिक्ष यात्रीक पोशाक बला सब पहिने आपसमे विमर्श केलइन। ओ लोकइन एहि निष्कर्ष पर पँहुइच गेल रहइथ जे ओ दूनु मानव बम नहि छल। ओ सब अपन सिरस्त्राण उतारलइन आ अफसर लोकइनसँ गप-सप कर' लगला। की बात सब भेलइ से तँ पता नइ किएक तँ कैमरा-माइक बला समेत समस्त भीड़ के बेस दूर तक ठेइल देल गेल छल। बातचीत सेहो मद्धिम गंभीर स्वरमे भ' रहल छलइ। लोक सबहक उत्सुकता के फेर नव ऊर्जा भेइट गेलइ। माइक-कैमरा बला सब फेर जोशमे चिचिआए लागल छल– विमर्श भ' रहल छइ... समाधान सब ताकल जा रहलए...

विमर्श समाप्त भेल। अंतरिक्ष यात्री सनक लोक सब पुन: अपन सिरस्त्राण धारण केलइन आ कोबर-गमन के चाइलमे ओइ दुनु गोटे दिस बढ़' लगला। तमसबीन सबहक साँस जेना फेर थम्हि गेल होइ। कैमरा तँ चलइत रहल मुदा माइक के वाक्‌-हरण भ' गेल। एकाएक पूर्ण शांति स्थापित भ' गेल।

अंतत: अंतरिक्ष यात्री सनक लोक सब ओहि दूनू गोटेक लग फेर सँ पँहुचल। एक गोटे डेराइत-डेराइत छुलइन। हुनका चेहरा परहक आस्वास्ति भाव के पइढ़ क' बाँकी सब सेहो छूब' लगला। अंग-प्रत्यंग के स्पर्श कयल गेल। एकाएक ओ सब एक स्वरमे बाइज उठल– अरे ! ई तँ मूर्ति छी... पाथरक मूर्ति..पाथरक मूर्ति !!!

भीड़ ई घोषणा सुनलक आ रिफलेक्स एक्शनमे दोहरा देलक।

एहि दोहरौनीमे आश्चर्य छल, अविश्वास छल, निराशा छल आ क्रोध सेहो। 'धत् तोरी के। ई तँ बस पाथरक मूर्ति छी।'

प्रशासन, मूर्ति के उठबओलक। दूनुक ठेहुन एक-दोसरा सँ सटल छल। से मूर्ति के उठाबक लेल बेस सावधानी-सतर्कता राखल गेल। मूर्ति उठा लेल गेल आ शहर – कोतवालीक मालखानामे जमा क' देल गेल। भविष्यमे फोरेंसिक जाँचक संभावना दुआरे धटना-स्थल के घेराबंदी क' देल गेलइ। पुलिस पोस्ट के व्यवस्था भेल। स्थल आब संरक्षित क्षेत्र छल।

आब शुरू भेल दोसर स्तर के काज। पुलिस आ माइक-कैमरा बला सब, शहरमे पसइर गेल। ओ दूनु जत'-जत' रसइ-बसइ छल, सब ठाम के खड़रल गेल। सामान के नाम पर जे किछु भेटलइ, तकरा जब्त कएल गेल। जँ ओ कहियो दूनुक रात्रि विश्रामक स्थल छल तँ कमरा सब के सील कएल गेल। अखबार सभक कार्यालय, प्रकाशन-संस्थान, एन.जी.ओ. समेत ओहि समस्त संस्थानमे सघन जाँच-पड़ताल भेल जत' ओ दूनु काज करैत छल। जत'सँ ओकरा दूनु के गरदनियाँ द' क' निकालल गेल छल। समस्त पांडुलिपि, प्रकाशित लेख सभक प्रति, आडियो-भिजुअल सामग्री जब्त कएल गेल आ अत्यंत गोपनीय घोषित कएल गेल।

ओहि समस्त स्थल सबके बेर-बेर देखाओल जाए लागल, जत' जत' ओहि दूनुक चरण पड़ल छल अथवा पड़बाक अनुमान छल। ओहि समस्त व्यक्ति सबके कत' कहांसँ ताइक-ताइक क' सोझा आनल गेल, जे सब ओहि दुनूसँ संपर्कमे छल, बातचीत छलइ, संगमे काज केने छल कि झगड़ा-झंझट केने रहए। अद्‌भुत कथन सब सोझा एलइ, चमत्कारिक कथा सब गढ़ल गेल। समस्त कथन आ कथाक प्रभावी तत्वमे आश्चर्यजनक समानता छल जे ओ दूणु सामान्य नई, अलौकिक छल, दैवी शक्ति सबसँ परिपूर्ण छल...। किछु सुरक्षाकर्मी, कार्यकर्ता सोझाँ अएलाह। ई लोकइन ओहि दूनु के समय-समय पर सभा, कवि-गोष्ठी, मुशायरा, गोष्ठी, सभा आ कार्यालय सबसँ 'गलहस्तेन' केने रहइथ। सब एहि बात पर एकमत छला जे ओहि दूनुक स्पर्शसँ हुनका सबके एक अद्‌भुत उर्जाक अनुभव भेल रहइन। किछु-किछु बिजलीक शॉक

जकां। ओहि कालमे तँ ओ लोकइन एहि ऊर्जा-आभास के अनठा देलइन मुदा आब स्पष्ट भ' रहल छइन जे 'गलहस्तेन'क अनेक दिनक उपरांतो ओ लोकइन ओहि अलौकिक ऊर्जाक अनुभव करइत रहल छलाह! किछु गोटे चिकित्सीय परामर्श लेबाक बात सेहो कहलथिन!

गवेषणकेँ एहि मोड़ पर किछु चिकित्सक सेहो सोझा एलाह जे ओहन 'ऊर्जान्वित' लोक सभक इलाज केने छलथिन। चिकित्सक लोकइन साफ-साफ कहलथिन जे ओहि उर्जाक लक्षण के ओ लोकइन नइ बुइझ सकलाह। हुनकर चिकित्सकीय ज्ञान कोनो तरहे सहायक नइ भेलइन।

आब पदार्पण भेल धर्माधिकारी लोकनिक। ओ लोकइन कतिपय ग्रंथ सभक उटपटांग वाक्य सभक जिलेबी सनक व्याख्यासँ ओहि दूनू के इश्वर-अवतार घोषित क' देलइन। बस, ओ लोकइन 'अवतार'क नामकरण पर एकमत नइ भ' पाइब रहल छलह। अंततः ई निर्णय लेल गेल जे 'धर्म-संसद' वा संत-सम्मेलनक आयोजनमे एहि समस्याक निराकरण कएल जाएत।

सत्ता-केंद्र, एहि परिघटना के लेल बेस संवेदित भेल। अविलंब एक हाइ पावर कमिटीक गठन कएल गेल। ओहिमे एक आला अफसर, एक सेवानिवृत जज, एक वयोवृद्ध वैज्ञानिक, सत्ता-दल के एक सर्वज्ञानी नेता आ एक धर्माधिकारी के सदस्य मनोनीत कएल गेल। पुनः ई कमिटी एक अनुसंधान-कोषांग बनओलक। बिना कोनो तरहक समयक अपव्ययके कोषांग, जब्त कएल गेल 'गोपनीय सामग्री' सभक जांच आ डिकोडिंगमे लाइग गेल। कमिटी के सामयिक रिपोर्ट प्रेषित होइत रहल आ ओमहरसँ आवश्यक निर्देश अबइत रहल। एक शोध-प्रबंधक रचना होब' लागल।

ओमहर सत्ता-सेठक बोर्ड-रूम व्यस्त भ' गेल। परिघटनामे एक पइघ व्यवसाय-उपक्रम हुलकी मारइत बुझाए लागल रहइ। फटाफट एक प्रोजेक्ट– प्रोफ़ाइल के रचना भेल। प्रोफाइल, एक सुगठित प्रस्तावक संग सत्ता-केन्द्रक समक्ष प्रस्तुत भेल। सत्ता-सेठ अपन एक अति-विवादित अर्थात शैक्षणिक परिक्षणक लेल पूर्व सत्ता द्वारा आवंटित भू-खंड के एहि सार्वजनिक काजक लेल स्वमेव समर्पित करबाक विचार रखलक। आवश्यक संरचना निर्माण करबाक प्रतिबद्धता ज्ञापित केलक। बस ! कोनों झंझट नइ। पी.पी.पी.क अंतर्गत अविलंब स्वीकृति भेइट गेलइ। तँ युद्ध स्तर पर काज आरंभ भ' गेल। देखिते-देखिते एक भव्यतम परिसर आकार ग्रहण क' लेलकइ। सम्पूर्ण विधि-विधानक संग मूर्तिके कोतवालीक मालखानासँ उठा क' नव-निर्मित परिसरमे सम्पूर्ण भव्यताक संग स्थापित कएल गेल। नियत तिथि पर अर्थात सघन घमर्थनक उपरांत निश्चित शुभ घड़ीमे सत्ता-प्रमुख उद्घाटन केलइन। अपना उद्गारमे ओ व्यक्त केलइन जे "एहि परिसरक निर्माणसँ देशक आर्थिक, शैक्षणिक, वैज्ञानिक आ अध्यात्मिक विकास होएत। 'मनु देवेश्वर दंपति' समस्त देशवासी के सुख-शांति-समृद्धिक वरदान देबाक लेल अवतरित भेलाह अइछ। आब हमरा सबके विश्वक 'सिरमौर' बन'सँ केओ नइ रोइक सकइए। नामकरण के समस्याक अनायास समाधानक संग सत्ता-प्रमुख, गोपनीय तथ्य आ सामग्री सभक आधार पर रचित आ हाइ-पावर कमिटी अनुशांसित शोध-प्रबंधक लोकार्पण सेहो केलइन। शीर्षक छल 'मनु देवेश्वर दंपति अवतरण'।

बिना कोनो देरीकेँ परिसर जनताक लेल खोइल देल गेल। दर्शन-शुल्क लेल बॉक्स-ऑफिसक आगू प्रातः छ बजेसँ रातुक नौ बजे तक लोक सब पंक्तिबद्ध होब' लागल। टिकट बिकाए लागल, टाका बरिस' लागल। परिसर के आस-पासक जमीन के दाम आकाश ठेक' लागल। तैयो अनेकानेक होटल, रेस्त्रां, बुक-स्टॉल, शो रूम, मॉल सब खूज' लागल। खोमचा-ठेला वला सब सेहो दोग-सान्हिमे सन्हिया गेल। परिसरक प्रेक्षागृहमे परिसंवाद आयोजित होब' लागल। कवि-गोष्ठी सबमे आमंत्रित हेबाक लेल कविगण जोगार धरब' लगला। नाटक लिखाए जाए लागल, खेलाएल जाए लागल। कथा आ वृत-चित्रक निर्माण होब' लागल, प्रदर्शन होब' लागल। मूर्ति के नित-नूतन श्रृंगार होब' लागल, नव-नव कर्मकांडक निर्माण आ अनुपालन होब' लागल।

शहर, विश्वक महानतम पर्यटन-स्थलमेसँ एक घोषित भ' गेल। समस्त शिक्षण आ शोध-संस्थान सभक प्रमुख विषय भ' गेल, 'मनु देवेश्वर दंपति'। शहर के नव नामकरण भेल– मनु देवेश्वर दंपति नगर।

देशक अन्य शहर उदास छल जे ओत' किएक ने ई परिघटना भेल। किछु लोक एहि बातक लेल कटिबद्धभेल जे ओइ दूनूक जन्म स्थल के 'अवतार जन्म स्थान'क मान दइत विकास कएल जाए। सत्ता-सेठ लग पइरवी भ' रहल अइछ।

•••

प्रदीप बिहारी

सम्पर्क : बेगूसराय, बिहार।
+91 62021 40561

नाट्यशास्त्रमे स्नातकोत्तर उपाधित आ भारतीय स्टेट बैंक अवकाशप्राप्त पदाधिकारी श्री प्रदीप बिहारी सुप्रसिद्ध कथाकार, लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार, निपुण नाटककार, कुशल अभिनेता-रंगकर्मी-निर्देशक, सफल संपादक, अनुपम अनुवादक छथि। कथा-संग्रह 'सरोकार' लेल वर्ष 2007मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ अलंकृत भेल छथि। हिनक रचना सभक अनुवाद विभिन्न भाषा सभमे भेल अछि। दस कथा-संग्रह, दू लघुकथा-संग्रह, आधा दर्जनसँ बेसी उपन्यास हिनक अक्षय कीर्त्ति-कलशक आधार अछि। हिनक संपादनमे प्रकाशित 'अंतरंग' पत्रिका राष्ट्रीय स्तरपर प्रतिष्ठित भेल।

साकिन

सुधीर जी पोतासँ पूछि रहल छलाह, "तोहर की नाम छह?"

ओ नाम कहलकनि।

"पापाक नाम?"

इहो नाम कहलकनि।

"दादूक नाम?"

ओहो नाम कहलकनि।

"परदादूक नाम?"

आकि पोता पूछि देलकनि, "यह क्या होता है? परदादू मतलब?"

"दादूकेँ पापा।"

"मुझे क्या मालूम? मैंने देखा ही नहीं। आप बताओ।"

पोती जे पोतासँ जेठ छलि, प्रपितामहक नाम भायकेँ कहलकि।

सुधीरकेँ छगुन्ता लगलनि, अन्देसा सेहो भेलनि, भय सेहो। ओ अपन चारूकात देखलनि। केओ सुनि तँ ने रहल अछि। नहि, केओ ने सुनैत छलनि। बेटाक डेरामे छलाह। पोता-पोतीक संग खिस्सा-पेहानीमे लागल रहथि। तखने मोनमे उचरलनि आ पोतासँ प्रश्न पूछ' लगलाह।

मोन पड़लनि, अपन पितामहकेँ ओ सेहो नहि देखने रहथि, मुदा अपन पूर्वजक कतोक पीढ़ी धरिक नाम बुझल छलनि। पितामह, प्रपितामह, वृद्ध प्रपितामह, अतिवृद्धप्रपितामह आ हुनको पिता, पितामह आ प्रपितामह धरिक नाम बुझल छलनि। कका सातो पीढ़ी धरिक नाम रटौने रहथिन। ओ स्वयं सेहो अपन पुत्रकेँ रटौने रहथि। मुदा...

पोता-पोती सोसायटीक पार्कमे खेल' गेलनि तँ पत्नीकेँ कहलनि, "बौआकेँ आइ हमहीं कहबै। स्कूलमे भने अंग्रेजी पढ़ैत होअय, मुदा पुरखा सभक नाम धरि बुझल नहि रहब जुलुम छै ने।"

"अहाँ आइ बुझलियै तँ दुख होइए, हम तँ एकदिन कहनहुं रहियै जे घरमे अपनो सिखा देल करही, तँ की कहलक से सुनब?" पत्नी कहलखिन।

"कहू ने।"

"कहलक जे समय कहाँ भेटैए। दुनू प्राणी दुनूकेँ स्कूलेक होमवर्क तैयार कराब'मे लागल रहै छी। समये कहाँ भेटैए?"

"मुदा समय तँ बहार कर' पड़तह।"

"दिन-राति ओतबे घंटाक होयतैक ने। बढ़तै नहि ने। कतोक बेर कहलियौ जे दुनू गोटे एत्तहि रह। पुरखाक नाम, गामघर, मूल-पांजि, साते भवतु...संस्कृतक श्लोक सभ बबे-बाबीक मुहेँ सिखैए धीयापुता। हम चुप भ' गेलहुँ।"

कनेकाल चुप्पी व्याप्त भ' गेलैक।

"ओकरो कहब बेजाय नहि छै, मुदा अपनो सभ की करबै? दरभंगाक घर खाली कोना छोड़ि देबै?" पत्नी चुप्पी तोड़ने रहथिन।

साँचे, सुधीरक जिनगीक सम्पूर्ण संघर्षक संग्रह छलनि दरभंगाक घर। ओहो घर तखन बनौलनि, जखन ओत' बदली भेल रहनि।

सुधीरक बदली दरभंगा शहरमे होयब शिक्षक सभक लेल एकटा उदाहरणे सन भेल छल। एकटा शिक्षककेँ देहातसँ शहरमे बदली होयब तखन छोट बात नहि रहैक। भेलैक एहन जे विज्ञानक प्रदर्शनी जिला मुख्यालयमे लागल छलैक। अपन स्कूल दिससँ ओ छात्र सभक संग आयल छलाह। समापनमे सांस्कृतिक कार्यक्रम भेल रहैक, जकर संचालनक भार सुधीरे जी पर छलनि। ओहि आयोजनमे कलक्टर साहेब आयल रहथि। सुधीरक संचालन देखि हुनका बजा क' पुछलनि, "किस स्कूलमे पदस्थापित हैं?"

"एम जी एम हाई स्कूल खजौलीमे।" तखन मधुबनी जिला नहि बनल छलैक।

कलक्टर साहेब जिला शिक्षा पदाधिकारीकेँ कहलनि, "कल से इन्हें शहर के किसी विद्यालयमे स्थानान्तरण कर दीजिए। ये कल ही योगदान देंगे। ऐसे कलाकार को जिला मुख्यालयमे रहना चाहिए। जिले का सांस्कृतिक विकास के लिए इनका मुख्यालयमे रहना जरूरी है।"

आ, सुधीर जी आमसँ खास भ' गेलाह। मुदा, खास भेने बहुत रास शिक्षक सभक कोपभाजन सेहो होम' पड़लनि। शिक्षक संघक नेता सभ सेहो ग'र लगौने रहैत छलनि जे हिनकासँ कोनो चूक होनि आ सभ डी ई ओ लग लुतरी लगाबय। हिनक हेटमास्टर बरोबरि ठाम-ठाम पर बाजथि– स्कूलमे रहते कहाँ हैं? बराबर कार्यक्रमे सबमे घुमते रहते हैं। मुदा, सुधीर जी मस्त। मोनक अनुसार काज भेटल रहनि। हुनका लेल तँ, जखन राघव लला छथि सहाय, तखन परवाहे की?

मुदा परवाह छलनि। परवाह छलनि– मायक, पत्नीक, एकटा बेटा आ दू टा बेटीक। एकटा बहिन छलखिन जे सासुर बसैत रहथिन।

माय सेहो प्राथमिक विद्यालयक शिक्षिका छलखिन। घरेसँ स्कूल आयब-जायब करथिन। दरभंगामे डेरा लेने धियापुताक पढ़बाक सुविधा रहनि, मुदा माय लेल असुविधा। दुविधामे पड़ि गेलाह सुधीर जी। माय दरभंगामे रहि नहि सकैत छलखिन। स्कूल दूर पड़ि जइतनि।

मुदा, माइए हिनका दुविधासँ मुक्त कयलखिन। ओ कहलखिन जे गामेमे रहतीह। ओत्तहिसँ अपन नोकरी करतीह।

शहरमे लोक चिन्ह' लागल रहनि सुधीर जीकेँ। जिला प्रशासनक पदाधिकारी सभ आर बेसी, से कखनो क' भारी सेहो पड़नि। सप्ताहमे एकदिन कलक्टर साहेबक कोठी पर गतिविधिक रिपोर्टिंग करबा लेल जाय पड़नि।

कलक्टर साहेबक बदली भेलाक बाद विद्यालयमे सेहो समय देब' पड़लनि। तकर प्रभाव ई पड़लैक जे शेष समय घर-परिवारक बदले सांस्कृतिक कार्यक्रम लेल निहुँछ' पड़नि। तँ ओ ट्यूशन नहि पढ़बथि। ट्यूशन नहि पढ़बथि, तँ शहरक खर्च भारी लागनि। मुदा, माय छलीह जे अभाव-बोध नहि होम' देलखिन।

कलक्टर साहेबक बदली भेलाक बाद संघक नेता सभ प्रयासमे लागल जे हिनका पूर्वेक विद्यालयमे घुरा देल जानि। मुदा, ताधरि सुधीर जी नव कलक्टर आ अन्य अधिकारी सभक संग अपन समीकरण संतुलित क' लेने रहथि। तकर बाद एकटा शिक्षक मित्र कहने रहथिन, "बड़ मजगूत अछि अहाँक गणित। जिला प्रशासनमे केहनो हाकिम आबथि, अहाँक गणित सेट भ' जाइए।"

ओना किछु समवयस्की संस्कृतिकर्मी सेहो चाहय जे हिनक बदली भ' जाइनि आ ओ जिला

प्रशासनमे अपन स्थान फिट करथि। मुदा, सुधीर जीक बुद्धि आ कौशल कोनो दोसर संस्कृतिकर्मीक दालि नहि गल' देलकनि। सेवानिवृत्ति धरि अपन जगह ओगरनहि रहलाह सुधीर जी।

जाधरि माय रहलखिन, गामक घर, पिताक कीनल जग्गह-जमीन आदि बाँचल रहलनि। तकर बाद सुधीर जीक फिरीसानी बढ़' लगलनि। बेटा-बेटी सभ कओलेजिया भ' गेलनि। समय भेटबे ने करनि जे दू-चारियो दिन लेल गाम जा सकथि। पित्तिए सभ खेती-पथारी करथिन आ हिनको जगह-जमीन वैह सभ देखथिन। मुदा, उपजा-बारीक नाम पर सुधीर जीक लेल सभ बेर रौदिए पड़ि जानि। दोसर केओ रहैत, तँ किछु बजबो करितथि... करबो करितथि। मुदा, पित्ती सभकेँ की करितथि? की कहितथि? गुड़क मारि सह' लगलाह।

पत्नी तगेदा कर' लागल रहथिन जे दरभंगामे एकटा अपन घर होअय। धियापुता सियान भ' गेल अछि। ओकरा सभकेँ अपन-अपन कोठरी चाही। अहाँक पोथी-पतरा लेल फुट्टे एकटा हौल चाही। किरायाक घरमे कतेक कोठरी सिरजल जायत? ई एकटा चिन्ता घुरघुरा जकाँ सुधीर जीक माथमे बूल' लागल रहनि। ओ जगहक खोजमे लागि गेलाह।

सुधीरक एकटा पित्तीक मृत्यु भ' गेलनि। ओ पित्तीक श्राद्धमे गाम गेलाह। श्राद्ध खूब ऐल-फैलसँ भेल छलैक। कतोक गामक सभ वर्णकेँ नोतल गेल रहैक। सुधीर देखलनि जे घराड़ीक कात बला हुनक पंचकठवाकेँ कमलाक बालुसँ पाटि देल गेल रहैक आ ओहीमे भोजक इंतिजाम कयल गेल रहैक। ओहूबेर गुड़क मारि सहलनि। पत्नीकेँ एहि दिस संकेत कयने रहथि, तँ पत्नी कहने रहथिन, "मुहमे गड़-चाउर धयने रहब, तँ एहिना होयत। खेतमे बालु नहि छल, तखनो ओहिसँ किछु अबिते ने छल आ आब सहजे बालुसँ पाटि दै जाइ गेलाह। मारू करेजमे मुक्का।"

पित्ती आ पितियौत सभ द्वारा कतोक घटनाक शिकार होइत गेलाह सुधीर जी।

समय बीतैत गेलैक।

सुधीर जीक व्यस्तता बढ़ैत गेलनि। हुनक कलाकारक ख्याति पसरैत गेलनि। सम्मान/पुरस्कार भेटैत गेलनि। गाम बिसराइत रहलनि।

किछु अवसर विशेषमे गाम मोन पड़लनि। जेना बेटा-बेटी सभक बियाहमे कुलदेवताक पूजा करबा लेल मोन पड़लनि गाम। पोताक मूरनमे कुलदेवताक पूजाक लेल मोन पड़लनि गाम। एहि खुशीक अवसर पर गाम जाथि, पूजा करथि आ अपन भसकैत घर-घराड़ी देखि झूर-झमान भ' घुरथि।

मोन पड़लनि, पोताक मूरनक अवसर पर जखन गाम गेल रहथि तँ पोताकेँ अपन घराड़ी पर ठाढ़ क' कहने रहथि, "यह अपने गाँव की सबसे ऊंची जगह है। पूरा गाँव दीखता है। कैसा लगता है पोतालाल?"

पोता कहने रहनि, "गीत गाने और डांस करने का मन करता है। हम बड़ा होकर यहां आएंगे तो सुन्दर घर बनाएंगे।"

मुदा पोताकेँ घर बनयबाक अवसर नहि भेटलैक।

देशमे नवका सरकार एहि बात पर जोर देब' लागल रहय जे पैतृक सम्पत्तिमे बेटा-बटीक बरोबरि हिस्सा भेटतैक। विभिन्न माध्ययमसँ जखन ई सूचना पसर' लगलैक, तँ सुधीर जी साकांक्ष आ चिन्तनशील रह' लगलाह। बेटी अपन-अपन सासुरमे आ बेटा दिल्लीमे छलनि। दरभंगामे बस दुइए प्राणी। सेवानिवृत होइतहिं नोकरीक व्यस्तता बन्न भ' गेलनि। गाममे रहबाक उपाय बना क' रखनहि ने छलाह। अंतत: गामक घराड़ी धरि हटा लेलनि।

बेटा बेर-बेर दिल्ली बजाबनि। मुदा दरभंगाक मोह दुनू प्राणीकेँ नहि छोड़नि। कतोक बेर दुखित भेलाह। बेटा दिल्लीसँ आबनि, उपचार करबनि। ठीक होथि, तँ फेर जिद शुरू। नहि छोड़ब दरभंगा। दिल्ली जाथि। पनरह-बीस दिन रहि क' घुरि आबथि।

मुदा जखन पत्नी दुखित भेलखिन, तँ बहुत दिन धरि हुनक निमेरा कयलनि। शहरमे ओत्तेक परिचय रहलाक बादो केओ हालो-खबरि पूछ' नहि आबनि। फोन पर उपचार आ टोटमा धरि सभ कहनि। मोहल्लाक पड़ोसिया सभ सेहो व्यस्त रह' लागल। लागनि जे पूरा शहर व्यस्तताक चक्र बनि गेल अछि। ककरो लग अपनासँ फाजिल समय नहि छैक। एहना स्थितिमे अपन शहर काट' लगलनि।

पत्नीक स्वास्थ्य दिनानुदिन खसैत गेलनि। एकदिन एकटा पूर्व सहकर्मी फोन पर कहने रहनि,

"बेटा नहियो चाहैए, तैयो चलि जाउ ओकरे लग। दुखित होयब तँ नहियो चाहैत अस्पताल तँ ल' जायत ने। एत' राति-बिराति किछु भेल तँ..."

सुधीर जीकेँ तामस उठलनि। झारलनि हुनका, "अहाँकेँ के कहलक जे हमर बेटा नहि चाहैए। यौ शर्मा जी! हम सभ अपने नहि जाइ छी। अइ घरक मोह नहि छोड़ैए। घर बन्हन भ' जाइ छै, से बूझै छियै ने।"

बेटाक फ्लैटमे दुनू प्राणी बैसल छलाह। बेटा आफिससँ आबि ककरोसँ बतिया रहल छल, "चन्दन भाइ जी! अहाँकेँ दरभंगा बला घर द' कहने रही, से ध्यान देबै।"

"यौ एकबाही एत्ते कम नहि। गर्जुआएल थोड़े छी। आब ओत' के जेतै? तेँ सोचै छी एकटा सम्पति अनेरो पड़ल रहय आ दोसर के बैंक लोन राखी, से उचित नहि।"

"बहिन सभ बला चिन्ता अहाँ किएक करै छी? ओ तँ हमरा सभक समस्या अछि ने। यौ! पप्पाक नामसँ छनि। वैह लिखथिन।"

बेटाक स्वर सूनि दुनू प्राणीक कंठ सूखि गेलनि। बेटा कोठरीसँ बहरायल आ पितासँ समाचार पुछैत सोझाँक सोफा पर बैसि गेल। सुधीरजीकेँ बेटासँ डर लाग' लगलनि।

सेन्टर टेबुल पर एकटा स्टैंडमे रिंग लागल छल, ताहि बीच एकटा सुग्गा आ एकटा मेनाक छोटसन मूर्ति झूलि रहल छल। सुधीरजीकेँ किछु भ्रम भेलनि। बेटासँ पुछलनि, "पहिने तँ एक्केटा मूर्ति रहह ने– मात्र सुग्गे?"

बेटा उतारा देलकनि, "ई दुनू मूर्ति बला परसुए अनलियैए।"

सुधीरजी आ हुनक पत्नी एक-दोसराक मुह ताक' लगलाह। निस्तुकी नहि क' पाबथि जे घर घूमि रहल छैक कि ओ दुनू घूमि रहल छथि।

•••

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

मूर्धन्य प्राज्ञ, साहित्यकार, कथाकार, प्रसिद्ध भाषाविद् एवं सुहृद व्यक्तित्व...

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद विमल
(26 मार्च, 1947 – 10 अगस्त, 2026)

लागै हिमनद जमल-जमलसन
भावक प्रवाह थमल-थमलसन
सृजन-वागकेर ब्रह्म-कमलसन
कतौ ने क्यो राजेन्द्र विमलसन
– प्रेमर्षि

अनुप्रास परिवार दिससँ श्रद्धेय राजेन्द्र विमलजीकेँ
भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि!

रमेश रञ्जन

सम्पर्क : काठमाण्डू, नेपाल।
+977 9854024143

रमेश रञ्जन मूलत: रंगकर्मी छथि। तीन दशकसँ बेसी समय ओ रंगक्षेत्रकेँ समर्पित कएलनि अछि। अपन निर्देशन, अभिनय आ लेखन कार्यमे सक्रिय नाटककारक रुपमे हिनक प्रमुख कृति 'मुर्दा', 'बगिया', 'बुधियार छोड़ा' आ 'राक्षस' आदि अछि। 'खोंता', 'सिंगार', 'डेग', 'लेहुआयल आँचर', 'हमरा नेपाल चाही' आदि नाटकक कुशल निर्देशन कएने छथि। नाटकक अभिनय आ निर्देशन संगहि ओ कविता आ नाटक लेखन सुरू कएलनि। आ तीनू विधामे हिनक उपस्थित ठोस रूपेँ स्वीकारल गेल। मूलत: मैथिली भाषामे मौलिक शिल्प, लोकबिम्बक प्रयोग आ तकर अर्थक स्थापना आन साहित्यकारसँ रमेश जीक पृथक बनबैत अछि। हुनक लेखनमे सामाजिक आ राजनीतिक विषय सहज शैलीमे विशिष्ट ढंगसँ उठाओल गेल अछि। स्पष्ट वैचारिक दृष्टिकोणक संग सृजन-संसारमे सकारात्मक परिवर्तनक आग्रही सेहो देखल जाइत अछि। सम्प्रति नेपाल सरकारक संगीत नाटक प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे कार्यरत छथि।

स्वाद

समोसा हाथसँ तोड़ि क' मुहमे धएलक आ बड़ी कालधरि मुहकेँ लाड़ैत रहल दुलरबा। मुहमे दाँत नइ छै, तेँ मुहकेँ लाड़ैत रहबाक वाध्यतामे अछि, आ कि समोसाक स्वादकेँ ओकर जीह बेसीकालधरि अनुभूत करए तकर प्रयत्न क' रहल अछि से तँ दुलरबेकेँ बूझल हेतै।

जवानीमे नामी कुरहरिया रहए दुलरबा। केहनो गाछ काट' पड़ै, फाड़' पड़ै तँ बस देखिते-दिखते काम फिनिस क' दै दुलरबा। जखन कुरहरि कन्हापर ध' क' निकलए दुलरबा तँ गाछसभमे हाहाकार मचि जाइ, सभ हील'-डोल' लागए, गाछसभ थरथराए लागए। गाछसभ दुबकी माड़ि लिअए। साँस बन्द क' लिए।

दुलरबा अपन एहि क्षमताक कारण धानक बोनिसँ बाहरक बोनिहार बनि गेल छल। नगदी कारोबार होइ छलै। रोजहा जनमे नइ जाइत छल दुलरबा। एक प्रकार ठिकेदारी जकाँ छलै, जतेक गाछ काटत, छकरत, लाधत ततेक पाइ। तकर कारण छलै जे ओ आब गीरहतक काज करिते ने छल। गामगाममे जे दन्तरबा हाथी सनसन चिरान मसिन अबि गेल छलै तकर खोराक तँ गाछे बिरिछ छलै। तँ ओकरा खोरकी जुटब' लेल दुलरबा सन–सन कुशल कुरहरिया पट्ठा सभकेँ आवश्यकता छलै। ओएह आवश्यकता ओकर बजार भाउ बढा देने छलै।

ओहि समयमे खूब मेहनत कएलक, कमाएल आ मौज कएलक दुलरबा। एकटा बेटा छलै, एकटा बेटी, बहु मरि गेल रहै। तँ दुनूके खाए पीबकेँ कोनो तकलिफ नइ। अफराद दालि चाउर घरमे रहै छलै। बजारसँ डेढ़वे पोठिया नइ, गरैयो गरचुन्नी कहियो क' लैए अबै छल। अपनो एक आध कटिया तारी छाँकि देलक, मस्त खएलक, मस्त सूतल। भोरमे फेर कुरहरि कन्हापर। गाममे हल्ला भेलै मरि गेलै मरि गेलै, रे दुलरबा मरि गेलै। जे सुनै छल अपना कानपर विश्वास नइ होइत छलै। ओहन चकरैठा मर्द, ओकरा लग आब'मे तँ यमदूतो डरेएतै। केना मरि जेतै टन्नसँ। हवामे खूबी होइ छै। ओ लुत्तीके पसाही बना देलकै। हवा कनिए बातके सिहकौलकै, एहिमे बेसी बात साँच रहै। गाछ दुलरबाक जाँघपर खसि पड़लै। आ खसि पड़लै तँ हाहाकार मचलै। लोक दौड़लै चारु दिससँ। सभ सिरपहिया लगा ठेलि ठालि क' गाछके ओकरा जाँघपरसँ तँ उतारि देलकै, मुदा जाँघ तँ भ' गेलै भुजरी–

भुजरी। दाँत खिसटि देलकै, साँस चलै की बन्द से बुझनाइ मुश्किल। जाँघमेसँ खैनीके नोसि जकाँ भरभराएल रहै हड्डी। चूर्ण भ' गेल रहै हड्डी साफ क'। एहनमे हल्ला भेलै दुलरबा मरि गेलै, अन्हेर भेलै।

मुदा अलबत्त रे चिरान मीलबला। ल' क' चलि गेलै धरान। महिनाके महिना रखलकै। कए गो अपरेशन केलकै। उठि क' ठाढ़ भ' गेलै दुलरबा। मुदा कन्हापरसँ कुरहरि उतरि गेलै। उठ बैस कर'मे दिक्कत होइ। तइसँ गीरहतबो काम नइ कएल होइ दुलरबाकेँ।

दुलरबाक जीवनकेँ इजोरिया पख समाप्त भ' गेल रहै आ अन्हरिया अमवस्योसँ अन्हार भ' क' आबि गेल रहै। बेटी बियाहिक' चलि गेल रहै सासुर। बहुरिया आबि गेल रहै घरमे। घरक शासन प्रशासन सभ बदलि गेल रहै। बेटा बापक जुतिमे कते दिन रहितै, जखन की ओकर घरनी घरमे छै। सब सौख मनोरथ जेना बिहारिमे उड़िया गेलै। समयसँ दबाइयो भेटब मुश्किल। जीहकेँ नइ भेटलै सौंसे पोठियो कहियो। बाहरेसँ कराहीमे छनमनाइत माछक कर लगएबाक आवाज सुनि लै छल। आ की लहसुन आ सरिसो भुजाइ छलै तँ नाक फलका क' ओकर सुगन्धसँ अपनाके सन्तुष्ट क' लैत छल।

अपनाके परतारै छल दुलरबा। मुदा छुलाह मन उछल' लगैत छलै। ओ गल्ली होइत आङन दिस डेग बढ़बैत छल। डेगक धम्मक सुनिते बहुरियाक आँखिमे चूल्हिसँ बेसी आँच लपलपाए लगैत छलै, 'अखिनते कत' अएलखिन ग। बिसपिपरी कटने हनि। चैनसँ दूरापर बैठथिन से नइ। अङनामे हुलकी-बुलकी मारैत रहल। इहे एगो बूढ़ छथिन।' दुलरबा सुनि क' फेर ससरै छल घरसँ बाहर दिस। ठोर पटपटाइ छलै, 'दूरापर मच्छर बैठ' दै हइ जे बैठ' कहै छाह। छिलमिला देलक। कत जाउ ?' 'ककरा ब्रम्होत्तरमे जतै से हमहीं कहियौ ? अपना जकरा दूरा दलान नइ हइ से अनको दूरापर जा क' बैठबे करै हइ ने।'

दुलरबा अपन कज्जी जाँघकेँ कहूना क' उठबैत बजारैत चलि जाइत छल शुदोधनक दूरापर। कहियोकाल बड़ आनि लागि जाइ छलै। सोचै छल जे ओइ घर दिस तकबे नइ करी, 'धुर बहि ! अइसँ नीमन जे मरि गेल रहिती। कैला अथबल बनाक' छोड़ि देलक। आँइ ? कथी कथी ने नीक निकूत चिउज सुन खियौली एकरा सभके आ से कुकुर जाँकित धारधार कएने रहै हय हमरा। आइ नइ जएबै हम। नइ बुलौउतै तँ एहि जँ भूखले सूति रहबै।' दुलरबा इएह सोचैत-सोचैत देवालमे अडेस लेलक। आँखि मुना गेलै। निसभेर सुतिरहल दुलरबा।

खेनाइ लए नहिए बजौलकै कियो। आँखि खूलितै तँ पानियो मन भरि पीब लैत सेहो नइ भेलै। भोररहबामे आँखि खूजलै तँ पेटमे बग्घा लगै। एक मन भेलै जे जाइ छी घरमे। दोसर मन ई कहै जे, 'देखियौ तँ केहन निष्ठुर भ' गेलै छौड़ा। हे ऊ अनकर बेटी हइ, छौड़ा तँ हमर बेटा हइ। हमरा भूखले छोड़िक' केना अन्न घोंटाएल होतै, तहुमे माछ !

दलानमे बैसल-बैसल मनमे हरबिर्रो मचल छलै, 'रे ऊ सुन दया दरेग छोड़ि देलकै। कमसँ कम शुदोधन तँ सूतल जरुरे देखने होतै। जगा दितै तँ नइ होइतै। की करिती थेथरि–मेथरि क' जइती। जेहे दीत घोंटि लीति आ से बहि भूखले रहि गेली।' ओना दुलरबाके बूझल छै जे दलान आब नामेके दलान रहि गेलैए। ओहो ककरो ककरो छै ने तँ सभके टूटिए गेलै। तँ घरमे गेल तँ दलान बला थोड़बे घुमिक' आएल। ओइमे आदमी सूतल हए की कुकुर कोन मतलब।

धरतीपर हाथ ध' क' उठल आ लाठीके समहारैत आगू बढ़ल दुलरबा। ताबे नीकसँ फरिछ भ' गेल छलै। पोखरि दिस डेगाडेगी दैत बढिरहल छल, 'सेहे तँ हम पोखरी दिसा कैला जाइ छी ? खइली नहिए तँ झाड़ा कथी फीरब।' तैयो ओकर डेग पोखरि दिस बढ़िए रहल छलै, 'चल भाइ देहमे हवो तँ लागत।'

आएल घरमे घुरिक'। सोचने छल जे अबिते रातुको बसिया तँ बाँचल होतै। तुरत्ते काढ़िक' देत, बहिं, दम धरब। मुदा घर तँ जेना ओकरा लेल दिनदिन मरखाह भेल जा रहल छलै, 'देखौ अएलै मेझमानी खा क'। तरुवा बघरुवा मीलतै तँ कैला लोक रुखसुख खाएत। धनिकाहाके दूरा ओगरने रहै हइ ओहिना। अइ जँ कहतै मच्छर कटै हय, तँ कखनितो डाउस कटै हय। ओकरा आउरकेँ दूरापर बजरखसुवा मच्छरो डाउस

निपत्ता भ' जाइ हइ। ओगरबाह मीलल गेल हइ, पेटेपर। अपन दूरा, अपन धियापूता, अपन मालजाल सब जेना काट' छुटै।'

धराप्रवाह बहुरियाकेँ मुहसँ निकलैत शब्दगोलासँ आहत भ' गेल दुलरबा। दुलरबाकेँ किछु केने कछि नइ बनै छै, 'आङनमे गेल तँ कत' हुलकी मार' आएल ग। दूरापर बैसल त, भरिदिना दूरापर बैसल रहल जेना सुश्ना पकड़ि लेने होइ। कोनो आनठाम गेल तँ अनका दूरापर ओगरिया केने रहै हय। बहि आब हमरा लए एक्के गो ठाम हइ, ओ हइ उपर। तहिये मरि गेल रहिती, से भगमानोके दया दरेग नइ। बेकम्मा बनाक' छोड़ि देलक, जे बलु सुनैत रह गाड़ि मारि।'

एकेटा ठौर छलै जत' दुलरबा जा सकै छल। से बिर्रो जकाँ ओकरा दिमाग नाँचि रहल छलै, बेटीकेँ ससुराइर, माने समधियौना। 'ओत' भरि पोख खेनाइयो भेटतै। जाबे रहतै बेटी सेवा सुश्रुखा क' देतै। नीमन–नीमन बात करतै। समधी जरुरे हटियासँ माछ किनिक' लएबे करतै। पाइके कट्मट्मी होतै तँ कोनो खत्तो उपछि क' आ सेर पाभरि मारिए लेतै। साँझु पहर एक्को गो पाउच जरुर लउतै। चल बहिँ जाइ छी बेटिए ल, किछुओ दिन तँ अन्न खाइब, गाइर नइ खाइब।'

सपना नइ छलै ई, मनक कल्पना छलै। कल्पनो कोनो दुर्लभ नइ छलै। बस्स ओकरा जएबाक छलै बेटी ओइठाम। जखने की अपना पैरसँ चलके बात आएल तँ ओकरा ओएह भयावह घटना स्मरण भ' अबै छै। कुरहरि तँ गाछके एक कातसँ कटैत रहै आ दोसर कात ओकरा खस'के रहै। जइ कात खस'के रहै तइसँ उन्टा कातमे रहए दुलरबा। जे कहियो ने भेलै से भ' गेलै। गाछी गैँचिक' दुलरबा दिस खस' लगलै। ओकर तँ मस्तके फाटि जइतै, धन भाग जे जाँघपर खसलै। ओ अपन जाँधपर हाथ फेरलक। जाँहिमे हड्डीकेँ जगहपर लोहाक राँड देने छै। ओएह छै दुलरबाके पैर। जाहिमे ओ टाल नइ ठोकि सकैए, चाटी नइ मारि सकैए। ककरो चुनौती नइ द' सकैए, अपन जाँघक शक्तिसँ। अपना जाँघके सहलबैत बाजल दुलरबा, चल, उठाक' ल' चल हमरा। बस्स डेढ़ कोस जमीन। लाठीके सहारासँ उठि गेल। देब' लागल डेगाडेगी।

कए दिन भ' गेलै। अनेरोके बैसल-बैसल रस्ता दिस आँखि नँचा लए दुलरबा। आइ सातम् दिन बेटी ओइठाम अएला भ' गेल छलै। लेकिन कोनो खोज-खबर नइ। ई तँ नइ बुझलकै जे बौआइत ढहनाइत कतौ दूर चलि गेलै। तैयो तँ खोजी करितै। खोजी करितै तँ सभसँ पहिने अही जँ अबितै, 'न, ई बहौँ चाहै छल ग जे हम बौआ-ढहनाक' मरि जाइ। ने डाह' परत आ नहिए, काम-क्रिया कर' परत।' फेरसँ ओ रस्ता दिस आँखि नचौलक। माने ओकर आश मरल नइ छलै। ओकर मनमे कतौ आशक बत्ती जरिरहल छलै, 'केना भ' सकैए अते कसाई। हमरे जनमल हइ ने कनिको दरेग तँ होतै। जखने मुरियाड़ी द क' रस्ता दिस तकलक कि बेटी बापकेँ देख लेलकै, 'बाउ भैयाकेँ रस्ता तकै छहो ने। कोनो तकलिफ हओ। किछ दिन रह न अएबे करतो कि। झगड़ा क' क' तँ नइ आइल छहो कि ने ?' दुलरबा मूडी झाँटि देलकै। झगड़ा तँ नहिए भेल रहै। मुदा रुसि क' आएल रहए। की पता दुलरबाकेँ जे रुसाफुल्ली जीवनकेँ सिंगार-पटार छै। एखन दुलरबाकेँ बहु रहितै तँ हाहाकार मचि गेल रहितै, सात दिनसँ चुपचाप ककरो कुछो कहने बिना घरसँ गायब भ' जएतै आ कियो खोज खबरि नइ लेतै। एहन जुलुम। बहिँ दर दियाद, कर कटुमकेँ बेचैन क' देने रहितै ओकर बहु, आब ककरापर करब सिंगार। ऊ तँ गेलै उपर हम घिसरी कटै छी नींचा।'

जमाए विदेश। समधी खेत दिश। एसगरे मोन उबिया जाइ छै कखनो क'। बधारामे राखल खटियापर जा क' ओलरि गेल। आँखि मुना गेलै। बाउ... बाउकेँ आवाज ओकरा निन्नमे सेहो चिन्हल-चिन्हल सन बुझाइक। पपनी फरफरेलै। आँखि खुजलै। देखैए बेटा मूडिए लग ठाढ़। बेटी सेहो कोन्टा लग। बेटी कहलकै, 'भैया लिय अएलोह'। टैम्पो ल क' आएल हओ। उठ' खा ला तब चलि जइहा।' बेटाकेँ मुहसँ जेना सरबत चुबै, 'कैला खतै, दस मिनिटमे तँ घरे पहुँच जएतै। खेनाई बनल हइ। फेनो मोन होतै तँ हम पहुँचा देबै। बेट आ बेटीके घरमे कोनो फरक हइ ?'

जहिना कहलकै तहिना दुलरबा खटियापरसँ उठके लेल जोर लगब' लागल। बेटा सहारा देलकै।

बाँहि पकड़ने ल गेलै टेम्पुपर। टेम्पुपर बैसल। स्टार्ट भेलै आ गुड़क' लगलै बेजोर। दुलरबाकेँ आश लगै। जखन टेम्पु उपर नीचाँ भेल तँ बुझाई जेना हिलोरापर बैसल छी। एहने आश लागल रहै जहिया ओ अपना गौनामे ससुराइरसँ महफापर आएल रहए। गौनाक महफाकेँ कारण रहै। एकर कोनो कारण नइ भेट रहल रहै दुलरबाकेँ। अपना जनतबे बड़ दिमाग दौड़ोलक। जोड घटाउ कएलक, जेना हिसाव बिच्चेमे भङ्ठि जाइ। हाथमे किछो नइ अबै, 'दूर बहिं जा, जे लिखल होतै सेहे होतै।' बस्स आँखि मुनिक' टेम्पोसँगे आश मार' लागल। सौंसे देह गुदगुदाई दुलरबाकेँ। आँखि बन्द, ठोरपर मुस्की।

टेम्पो ओकरा घर दिस घुमबे नइ कएलै। लुक्खी जकाँ ओहिना सड़कपर सब गाड़ीकेँ छकबैत भगैत जाइ आगू मुहे, 'बहिं, ई कत' ल जाइय हमरा। कहुँ जमुनी धारमे तँ नइ भसिया देत।' जहियासँ जाँध टूटलैए तहियासँ अपना बेटापरसँ भरोस उठि गेलै दुलरबाकेँ, 'रे ई कत' ल जाइ हउ टेम्पोबला, हइ रोक। रे गाँजा पिने छे। बहिं अपनो घर याद नइ हउ' डटलक बेटाकेँ। बेटा बजलै किछु नइ, कनी मुस्काइत कहलकै, 'चल न, कैला आँती उठि जाइ हओ तोरा से नइ जानि।'

टेम्पो रुकलै। बेटा उतरलै। बापोकेँ ओरियाक' उतारलक। जेना बाप शीशाकेँ मुरुत होइक। देखैए मेला जकाँ लोक। सब धरफराएल, सब अगुताएल, कोन खेला हइ किछो बुझहेमे नइ अबै। बेटा बापक बाँहि पकड़ने ल गेलै स्टुडियोमे। जइमे हँसमुख छौड़ी सभकेँ पोज-पोजकेँ फोटो टाङ्गल रहै। कियो दाँत देखबैत, कियो आधा घोघक तरसँ अपन सुन्दर मुखराकेँ देखबैत, बुझाइक जेना मेघकेँ चीरिक' चान उगि अएलैए। कतौ नथिया आ जिन्सबाली फोटो सेहो टाङ्गल रहै। एक नजरि दुलरबाकेँ ओहि फोटोपर गेलै आ फेर लम्बा साँसक रुपमे जोरसँ फुफकार छोड़लक ओ, 'बहिं कोन-कोन घाट ई हमरा ल' जाएत से नइ जानि, 'रे एत' कैला ल' क' अएलेह ?' 'फोटो खिचएतो।' 'दुरे बहिं हम फोटो ल क' कथी करब, हट हम जाइ छी।' दोकनदारकेँ गहिकी हाथसँ निकलैत बुझएलै आ तपाकसँ बाजल, 'यौ बाबा बैसू न। अहाँके कथी बुझाइए, अहाँके बेटा कोनो देबालमे टाँङ्ग लए फोटो खिचबैए ? एकरा फोटो नइ बुझु ई बुझु जे जर्सी गाइ दरबजापर जा रहल अइ।' दिमाग घुमि गेलै दुलरबाकेँ, 'बहिं फोटो केना जर्सी गाइ भ' जेतै। एकबेर फोटो खिचौली तँ नगरित्ता देलकै, जेबीमे नोट गजगजाक धएने रही से सब झाड़ि लेलक। अइबेरकेँ फोटोमे केना लक्ष्मी बरसतै से नइ जानि।'

कनीकाल मोन मारि शान्त रहल। फेर जेना भितरसँ हड़होड़ मचलै बेटापर गुम्हरल, 'अइ रे घोड़ा अतेटा भ' गेले, अकिल न हउ। फोटोए खीचब'केँ छलौ तँ कहने रहिते ? धोती, कुर्ता आ गमछा तँ खींच लिती। मलि-झोलि पहिरि क' फोटो खिचबबै हय, भीखमंगा जिका देखेतै की नइ।' बेटा तँ अपना जीहकेँ घींच क' ल' गेल छल पेटमे। दोकनदार धरि बाजि उठलै, 'कैमरामे मैल नइ देखाइ छै। सब सफा देखाएत।' 'छोडू अपना टल्होकेँ लोक सोने कहै हइ। अहाँ से नइ कहबै तँ ढउवा केना कमाएब।' दोकनदार सुनियो क' ओकरा बातदिस ध्यान नइ देलक। भितर स्टुडियोमेसँ एकटा बुढ़िया निकललै। फोटोग्राफर दोसरकेँ पठा देबाक लेल कहलकै। दुलरबा चिन्ह लेलकै बुढ़ियाकेँ, 'भौजी अहू फोटो खीचब' आएल छलीय। अहूकेँ जर्सी गाई मीलत ?' 'हाँ, हमरो अही लए लेलकैए छौड़ा। फोटो देतै तँ जर्सी गाइ मिलतै।' स्टुडियोबला माथपर हाथ ध' लेलक। जर्सी गाइके बातो ओएह बाजल छल। कहुना दुलरबासँ पिण्ड छोड़ब' चाहै छल दोकनदार, जा न भितर, कथी भाषण कएने छा। दुलरबा एक नजरि दोकानदार दिस देलक आ फेर पैस गेल स्टुडियोमे।

निकलल तँ आँखि मिड़ते, 'बहिं से फोक्सिन मारलक जे आँखिए चोन्हरा गेल।' दोकनदार ओकरासँ पिण्ड छोड़ब' चाहै छल, 'बापकेँ ल जा दस मिनेट बाद अबिहा।' ल गेलै जलखैकेँ दोकनमे। दुलरबाकेँ बेन्चपर बैसा देलकै। नजरि दोकन दिस दौड़ौलक तँ देखैए रंग-बिरंगक चिउज-बउस। भितरे-भितरे जीह रसा गेलै ओकर। दोकानमे कियो जलखै तोड़ैत, तँ कियो रसगुल्ला भोकसैत। दुलरबा ओहि चिज सभकेँ स्वादक कल्पना क' क' तिरपीत छल। बेटा फारमपर फोटो साटि देने छलै। ओकरा संगे एकटा लेखनदास आएल

छलै। जकरा मुहसँ दूरेसँ गुटखाकेँ भाफ निकलै छलै। ओ स्टाम्पकेँ खोललक, दुलरबा औठा पकड़ि क' कए ने कए ठाम छाप ल' लेलकै आ बजलै, 'भ' गेलै आब।' दुलरबाकेँ मोनमे शंका फेर घुरमुरिया खेलाए लगलै, 'कथी भ' गेलै ? कहलकै जे बलु फोटो खिचउतै तँ जर्सी गाइ मिलतै आ अहाँ कहै छियै भ' गेलै।' फेर दुलरबा बेटा दिस कन्हुआ तकलक, 'आइ रे घराड़ीपर तँ ने छाप लगबा लेले ? बहिं ओहो नइ बेच क' खा जाइ।'

कनिए कालमे लेखनदास दूरेसँ शोर पारड़लकै, 'ल क' अबियौ।' बेटा बाँहि पकड़ने ल गेलै आफिसमे। फोटो देखलकै, आदमीके देखलकै, नागरिकताकेँ उमेर आ फारमकेँ उमेर मील गेलै। बस्स काम फत्ते। चारि हजार देलकै। दुलरबा कखनो पाइकेँ देखए आ कखनो आफिसक कर्मचारीकेँ, आँइ यो हाकीम, 'कहने छलै जर्सी मिलतौ।' हाकीम दुलरबाकेँ देखक' मुस्कएलै। ताबे फेर दोसर आबि गेल रहै ओ हाकीम बिना जवाफ दासर दिस आकांषत भ' गल।

जेष्ठ नागरिक सामाजिक सुरक्षा भत्ता पहिल बेर पओने छल दुलरबा। सब महिना भेटतै ओकरा चारि हजार, 'आ रौ बहिं, बाल्टिनकेँ बालिटन सब दिना दुहैत रह। माने जर्सी गाइ !' दुलरबा मोने-मोने सोचलक कते बकलेल छी हम। बहुत दिनपर ओकर मुह हरियाएल छलै, 'बेटा कहलकै लबहो न पाइ।' दुलरबा बेटाकेँ मुह ठिकियाक' तकैत रहल आ बाजल, 'जो तू। हम अबै छी।' 'फोटोबलाकेँ पाइ, टेम्पोकेँ पाइ आ लेखनदासकेँ पाइ होतै ने।' 'हम कैला दियौ, काम तू करौलिहिय तँ तू देबही किने।'

बेटाकेँ एको नेहोरा विन्ती नइ सुनलक दुलरबा। ने घर तक संगे गेलै। बेटा जखन अलोपित भ' गेलै तँ ससरल हटिया दिस। आधा सेर डेढ़बा किनलक। पन्नीबला झोड़ामे लटकौने जलखैकेँ दोकान लग आएल। कचरी निकलल गरमगरम सिंगहराक सोन्हगर सुगन्ध सिधे नाक तक अबै छलै। ओ एके क्षण सोचलक जकर सुगन्ध अते निमन हइ ओकर सवाद केहन होतै, 'दू गो दा, सिंगहारा।' कागजमे लपेटि क' पन्नीबला झोरमे ध' देलकै दोकनदार। बस्स डेगा-डेगी दैत बढ़ि चलल घर दिस।

धरक्का घरमे गेल। आइ घर ओकरा दोसरे रङ्ग लगै छलै, अपन घर जकाँ। जाँघ थुरएलाक बाद जेना ई घरो पराया बुझ' लागल छलै, देखैत रहल गौरसँ आ फेर आवाज लगौलक, बहुरिया। हनहनाइत अएलै, 'माछ हओ।' द' क' जखने घुमल। 'नइ जाथुन कतौ। घुरौड़ी क' देबनि, मच्छर नइ कटतनि, डाउसो देह दिस नइ अओतनि। बेटा एकटा पाउचो आनि देने हनि।' मुदा दुलरबा बिना सुनने ससरल छल। जा क' बैस गेल शुदोधनकेँ दलानपर। पन्नीकेँ खोललक। कागजमेसँ सिंगहरा निकाललक। हाथसँ तोड़िक' मुहमे धएलक आ मुहकेँ लाड़ैत रहल आ भभाक भभाक हँसैत रहल। बुझाइ छै जेना जीह जुड़ारहल छै दुलरबाकेँ। ओकर प्रशन्नताक आकलन करब कठिन छलै। जर्सीक रहस्यकेँ ठमियएबाक प्रयत्न ओकरा चेहराक भावमे आश्चर्यजनक परिवर्तन क' दैत छै।

•••

डॉ. अशोक कुमार मेहता

सम्पर्क : एल. एन. एम. यू., दरभंगा।
+91 94308 27941

मैथिली भाषाक कवि, कथाकार, आलोचक, समीक्षक एवं सम्पादक रूपमे यशस्वी अशोक कुमार मेहताक बीसम शताब्दीक नवम दशकक पूर्वार्द्धमे साहित्यमे प्रवेश भेलनि आ एखन धरि तात्पर्य, व्यक्तिवाचक, सम्प्रति (सम्पादन) तथा भाव भूमि रसवंत (संग संपादन) मैथिली आलोचनाक पोथी प्रकाशित छनि। प्रोफेसर महेन्द्र प्रसाद सिंहक उपन्यास 'फूलोरानी'क सम्पादन सेहो कएने छथि। 'जखन-तखन' आ 'मैथिली' पत्रिकाक सम्पादन कार्यसँ सम्बद्ध छथि। चेतना समिति, पटना द्वारा माहेश्वरी सिंह महेश निबन्ध पुरस्कार, अन्तरराष्ट्रीय मैथिली-सम्मेलन द्वारा मिथिला रत्न सम्मान, मिथिलांचल सर्वांगीण विकास संस्थान, बेनीपट्टी, मधुबनी द्वारा मिथिला गौरव सम्मान, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा मिथिला विभूति सम्मान, मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी,असम द्वारा राजकमल चौधरी मैथिली साहित्य सम्मान आदिसँ विभूषित राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय मंच पर लयात्मक काव्य प्रस्तुतिक लेल श्री मेहता ख्याति प्राप्त कविक रूपमे समादृत छथि। संप्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक विश्वविद्यालय मैथिली विभागमे प्राचार्य सह अध्यक्ष छथि। विश्वविद्यालयक अनेक विशिष्ट प्रशासनिक दायित्वक निर्वहन क' चुकल प्रोफेसर मेहता एखन सिंडिकेट सदस्य आ संकायाध्यक्ष छात्र कल्याणक महती भूमिकामे छथि।

खगता

आने दिन जकाँ आइयो हिनका चाह पीयल भ' गेल रहनि। हमर कप अधियाएले छल कि गलीमे एकटा मोटरसाइकिल रुकैत सन बुझाएल।

डोरबेल बजैत देरी पत्नी किछु खौंझाइत अपन कप आ चाहबला ट्रे ल' बरंडा परसँ भीतर चलि गेलीह।

हुनकर खौंझाएब वाजिब छल। दुनू गोटेक व्यस्ततम दिनचर्यामे चाहक समय थोड़ेक आफियत सन लगैए।कैक दिन वरुण बाबू सेहो बाजल छथि जे एहि समय नो मोबाइल नो एनी डिस्टर्बेंस। मुदा, से बेसी दिन अजुके सन प्रतिकूलता भोगै पड़ैए।

हम गुनधुनमे रही जे की करी ! चाह पीबितए रही वा हमहुँ कप राखि आबी, कि ता राधेश्याम पंडित आ हुनका संग एक व्यक्ति सोझामे ठाढ़।

'आउ आउ भाइ! कहैत मूड़ी कोठरी दिस घुमबैत थोड़ेक ऊँच स्वरमे बजलौं– यै ! राधे भाइ अएलाह अछि आ एक गोटे आरो छथि।"

अपरिचित व्यक्ति मनाही करैत बजलाह-"हम चाह नहि पीबैत छी।"

राधे जीक आग्रह रहनि– "आइ टा पीबि लेब !" दुनू गोटे सोफा पर बैसलाह। राधे जी ओहि व्यक्तिक परिचय देलनि–" ई छथि हमर मकान मालिकक सुपुत्र बरु आब मकान मालिके राधाकृष्ण मंदिरक पुजारी प्रोफेसर कृष्ण चन्द्र चौधरी।"

"अरे वाह!की मधुर संयोग– राधाकृष्ण मंदिरक पुजारी कृष्ण चन्द्र आ संगमे राधेश्याम !"

दुनू गोटे भभाकए हँसि पड़लाह।

राधे जी आगू कहलनि–"ई बिहारी कॉलेजमे फिजीक्सक गेस्ट टीचर सेहो छथि।"

एखन हमरासँ भेंट अथवा मोबाइल कएनिहार अधिकांश व्यक्तिकेँ एडमिशनक काज रहै छनि। यैह अवधारि चौधरी जीसँ आगमनक उद्देश्य पुछलियनि।

संक्षिप्त उत्तर देलनि–" बस भेंट घांट।"

राधे जी आगमनकेँ थोड़ेक फरिछाबैत कहलनि–

"भाइ! अक्टूबरमे हम रिटायर क' जाएब। तकर बाद एतए रहिकए की करब! गाम चलि जाएब। कतेक दिन सँ ई कहैत छलाह। कहलियनि चलू ,आइ परिचय करा दैत छी। बेर-कुबेर कतेक की ?"

"भाइ! ई तँ हमरा पर उपकार केलौं। ई लोकल छथि।हम सभ बहरिया। हिनकासँ बेसी प्रयोजन हमरे पड़ि सकैत अछि।" हम उचितिमे बजलौं।

"यौ सर!अहाँ की छी से...।"

चौधरी बजितए छलाह कि राधे जी बीच्चेमे लोकि लेलनि-"को नहि जानत है जगमे...।"

हमरा भेल जे राधे जी कने बेसी ने बाजि जाथि ! टोकलियनि– "आइ-काल्हि कमे लोक एहन छथि जे बिना जरुरति केर मात्र भेंट-घाट करए कत्तौ अबै जाइ छथि।"

ता दू गिलास पानि, दू कप चाह आ चारि टा बिस्कुट ट्रेमे आबि गेल। चौधरीजीक मनाहीक कारणेँ एकटा कपमे चाह भरि चारु बिस्कुट आ एकटा पानिक गिलास राधे जी दिस बढ़ा देलियनि।

एक दिस राधे जीक चाह बिस्कुट आ दोसर दिस रंग-बिरंगक गप्प तोड़ चलए लागल। गप्प आबिकए केन्द्रित भ' गेल पछिला सप्ताहक के एम कॉलेजक घटना पर। राधे जी चाह पीयब छोड़ि व्याख्यान देबाक मूडमे आबि गेल रहथि– "हौ महथा भाइ! युगे खराब भेल जाइ छै। पढ़ाइक नाम पर ई गढ़ाइए ने भेलै! मोबाइलमे जे खबरीलाल रहैये तकरा पर जँ विश्वास करी तँ कहाँदन ओ छौंड़ी विवाहो क' लेलकै आ छौंड़ा तँ दूरक संबंधिते छै। कह' तए कतेक घोल फचक्का भेलै। धन्यवाद दियै मुस्तफा साहेबकेँ जे एतेक हो हंगामाक बादो सिचुएशनकेँ कंट्रोल कएने रहलथि।"

"भाइ! आजुक तारिखमे एक दू टा काबिल प्रिंसिपलमे मुस्तफा साहेबक गिनती सेहो छनि।" हम कहलियनि।

"से तँ तों ठीके कहै छह"– बिस्कुटक अंतिम टुकड़ी मुँहमे दैत राधे जी बजला।

"भाइ! लड़कीक कृत्य हमरा ओतेक अप्रत्याशित नहि लागल। ई सभ अदौसँ होइत रहलैए आ कमोबेश होइत रहतै। अप्रत्याशित लागल लड़कीक सर-समांग द्वारा घटनाकेँ दोसर रंग देबाक प्रयास। आ सभसँ बेसी निन्दनीय रहल किछु संगठन एवं नेता लोकनि द्वारा कॉलेज आ पुलिस प्रशासनक विरोधमे दुष्प्रचार करब।"

राधे जी चाह घोंटैत बजला– "एकदम उचित बात कहै छह।"

मुस्तफा शब्द पर चौधरी जीक आँखि-मुँहक रंग थोड़ेक भटरंग भेल छलनि,से हम अकानने रही। ओ गप्पकेँ अपना दिस मोड़लनि– "सर! ओना जे कही लेकिन एकरा सभक रैकेट्स चलै छै।"

"ककर रैकेट्स चलै छै ?"

हमर जिज्ञासा पर चौधरी जी उत्फुल होइत बजलाह– "सर! जाहि सम्प्रदाय केर प्रिंसिपल छथि के एम कॉलेजमे।"

– "कोन प्रकारक रैकेट्सक ?"

चौधरी जी अपन पक्ष रखबाक लेल नहुं-नहुं साकांक्ष भेल जाइत रहथि।सोफा पर थोड़ेक पाछू घुसकि फेर शुरू भ' गेलाह– "सर! ई सभ अपना सभक लड़कीकेँ अपन माया जालमे फंसबै छै। विवाहक स्वांग करै छै। घुरबै-फिरबै अथवा नोकरीक नाम पर ल' जाइ छै। फेर ओ लड़की घुरिकए नहि अबै छै।" राधे जी अकचकाइत बजलाह– "अयँ! ई सभ होइत छै! सरबा सभ तँ महा अन्याय करैये।"

राधे जीक गप्पसँ चौधरी जीकेँ जेना अतिरिक्त ऊर्जा भेटि गेलनि। शोध-पत्र वाचक जकाँ बिन्दुवार विवेचन करए लगलाह– "सर! कैटेगरी वाइज रेट बनल छै। अपर कास्टक लड़कीक करीब बारहसँ पन्द्रह लाख, बैकवर्डक दससँ बारह आ सिडुल कास्टक आठ से दस लाख बान्हल छै। आ सर! ई सभटा फंडिंग सीमा पारसँ होइत छै।"

राधे जी बिस्फारित आँखिये चौधरी जीकेँ निहारैत रहथि। हमरा ई गप्प अरघि नहि रहल छल। होइ छल जे कहियनि जे ई सभटा राजनीतिक फंडा छी। मुदा, चौधरी जी पहिल बेर आएल रहथि। तँ चुप रहब बाध्यता सन छल। ओ अपन व्याख्यानकेँ जारीए रखलनि।

समय ससरि रहल छलए। पत्नी बरंडा दिस दू बेर हुल्की द' चुकल छलीह। संकेत बुझैत छलियनि। नओ बाजि गेल रहै। एगारह बजे हमरा सभकेँ गामक यात्रा निर्धारित छल। चौधरी जीक एकभगाह प्रवचनसँ मोन उचटि गेल। पुछलियनि– "ई सभटा गप्प सैद्धांतिके अछि कि कत्तौ किछु...!"

हमर वाक्य पूर्ण भेलो ने छल कि राधे जी लपकि लेलाह– "भाइ! बिनु कारणेँ टिटही नइ बजै छै। चौधरी जी फुसिए किए किछु कहताह।"

चौधरी जीकेँ जेना आरो बल भेटि गेलनि– "सर! हम एस पी एस केर सक्रिय कार्यकर्ता सेहो छी। हमरा सभक मुख्य काज अछि एहि प्रकारक रैकेट्सक भंडाफोड़ करैत अपन समाजकेँ पुनर्जागृत केनाइ।" हम जिज्ञासा केलियनि "ई एस पी एस की भेलै ?"

"जी। समाज पुनर्जागरण संगठन।"

"एखन धरि संगठनक कोनो उपलब्धियो ?"

"हँ सर ! शहरसँ गाम धरि हम सभ सक्रियतासँ काज क' रहल छी।"

"जेना !"

"मनसापुर बजारक एकटा घटनाक जनतब हमरा सभकेँ भेटल। बजारमे नित्यानंद पाठकक मकानमे अफरोज नामक लड़का रुम भाड़ा पर ल' क' मोबाइल रिचार्ज आ सिम अदल-बदल केर दोकान खोललक। हमर भागिनक दवाईक दोकान ओकरे सोझामे अछि। पछिला चौरचनमे भागिन आएल रहए। ओ कहलक जे चौधरी जीक बेटीकेँ अफरोजबा ल' क' पड़ा गेलै।"

ई सुनैत देरी राधे जी सुरफुराइत बजलाह– "यौ चौधरी जी, मोन पड़ैए जे एकर किछु गुलगाल हमरो कान धरि आएल रहए। हमर कॉलेजक बड़ा बाबूक गाम ओकरे पूब डुमरी छै। बड़ा बाबू कहैत छलाह जे पीअरका आ गेरुआ गमछा वला सभ बड़ हो-हल्ला मचौने रहै। कीदन तँ आरो कहने रहथि..."

"जी! लभ जेहाद।" चौधरी जी लपकैत बजलाह।

"कहू तँ एहनो कतौ होइ ! जाहि पातमे खाइ ताहिमे भूर करी! आखिर कोनो टेर चललै की नइ ओकर दुनूक ?" राधे जी जिज्ञासा कएलनि।

बड़ आश्वस्तिक संग चौधरी जी उत्तर रहनि– "हम सभ संगठनक किछु गोटे गेल रही मनसापुर बजार। पाठक जीसँ भेंट केलियनि। आग्रह केलियनि जे अहाँ थानामे एफ आइ आर करु। लड़कीक बरामदगी आ छौंड़ा सहित ओकर संपूर्ण परिवारकेँ जहल पठाएब हमरा सभक काज रहत। आ एहिमे अहाँक एको पाइ खर्चा नहि हैत। सभटा संगठन करत।"

"एकदम सही बात। एफ आइ आर भेलै ?" राधे जी टिपलनि।

"सैह तँ तैयार नहि भेलाह।' चौधरी जीक उत्तर छलनि।

हम पुछलियनि– 'किए ?'

"पाठक जीक कहब रहनि जे आब ओकरा लेल घरमे प्रवेश निषेध। हमरा लोकनि बबितियाक नाम पर नह-केश धरि कटा लेलहुँ।" ई बात कहैत चौधरी जीक पल थोड़ेक नीचा भ' गेल रहनि।

राधे जी सेहो हतप्रभ। बजलाह– "पाठक जीक ई सोच एकदम अनुचित छनि। माँ जानकीक हरणक बाद अयोध्या वापसी अपना सभ लग नजीर अछि। दुनिया कतए सँ कतए गेलै। पाठक जी केँ कहल जाए जे अपन निर्णय पर पुनर्विचार करथि।"

हम ठाढ़ होइत देबाल घड़ी पर नजरि दैत बजलौं–

"चौधरी जी! भंडाफोड़ करबाक संग-संग हमरा सभकेँ सोचबाक चाही जे खगता आनो चीज केर छै ?'

●●●

मुन्नी कामत

सम्पर्क : स्वरूप पार्क, साहिबाबाद।
+91 98188 32568

माता श्रीमती लक्ष्मी देवी आ पिता श्री दिलीप वर्माक आँगन परसा (मधुबनी)मे 17 जुलाई 1989कैं जन्म लेनिहारि मुन्नी कामत मैथिली साहित्यकार एकटा प्रमुख हस्ताक्षर छथि। स्नात्तकोत्तरसँ उपाधित मुन्नी कामत हिन्दी आ मैथिलीमे समान रूपँ रचनाशील छथि। हिनक 'सुखल मन तरसल आँखि', 'अंतत:', उपन्यास 'माटिक सुवास' आ बाल कथा-संग्रह 'चुक्का' विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। साहित्यक क्षेत्रमे हिनक उत्कृष्ट योगदानक लेल हिनका 'युवा कवयित्री सम्मान (2017)', चेतना समिति, पटना द्वारा 'डॉ. माहेश्वरी सिंह महेश ग्रंथ पुरस्कार (2024)' एवं कथा-संग्रह 'चुक्का' लेल 'साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार (2025)'सँ अलंकृत कएल गेल छनि। संप्रति गाजियाबादकैं अपन साधना स्थली बना निरंतर साहित्यक साधनामे रत छथि।

शोणित प्रेम

आइ बिमलाकैं चित अशांत छल। कातिक मास अनेरो मनकैं विरहनी बनौने रहैत अछि, आ बिमलाकैं देहमे तँ विरहक अगराहि जुआन होइसँ पहिने लागि गेल छल। कहाँ ओ बुझलक यौवनक उमंग। तेरह बरखमे बियाह भेल, सोलहम चढ़ैत-चढ़ैत कोइखो हरिया गेल। लाल सन सपूतक जननी बनलीह बिमला। कतेक खुश छल रामशोभित अपन पुत्रक जन्म पर। घरक छाइनकैं बंग्हिसँ लाँघैत काल बाँहिमे ऐहन हर्षक ऊर्जा दौड़ल जे अपन छाइन संगे बसबिट्टी वाली काकीकैं छाइन लाँघैत बँगहि हुनके अँगनामे खसल। भरि टोलबैया एहि बातक मजाक बनौने रहै जे पुत्र धनक खुशीमे रामशोभित अपना संगे पड़ोसियोकैं घर बान्हि देलक।

रामशोभित अपन बेटाकैं नाम श्रवण रखलनि। ओ सदिखन बिमलासँ कहैत रहैत छलाह जे अपन श्रवण, श्रवण कुमार जेका अपना दुनूकैं सेवा करत देखबै अहाँ। अखन खटि लिअ बुरहारीमे बउआ भगवती बना पूजत। पतिकैं एहि बातपर बिमला झट द' कहती— "आ अहाँकैं महादेव बना"। फेर दुनू प्राणीकैं हँसीसँ पूरा वातावरण मनमोहक भ' उठै। श्रवण तीन बरखक छल की बिमलाकैं पैर फेर भारी भेल। घरमे कोइ बुजुर्ग नहि छल। रामशोभित अपन माएक मुँहो नहि देखने छल। मूइल माएक संतान छल रामशोभित। हुनकर माए प्रसव पीड़ासँ दम तोड़ि देने रहथि। अधमरू अवस्थामे ऐकरो जन्म भेल। बड़की दाइ भूसा अनैत थाकि गेल आ चमैन पुरैन मिरैत-मिरैत। सबकैं भेल जे बच्चा-जच्चा दुनू हुसि गेल। मुदा भगवानक चमत्कार बच्चा चहा उठल आ ऐना कान' लागल जे सभकोइ कनैत कह' लागल— "रे अभागा कानि ले माएक सुखविहीन भेल।" रामशोभितक बाबू सेहो बहुत छोटेमे रामशोभितकैं अनाथ बना परलोकवासी भ' गेलाह। बाबा-बाबी रामशोभितकैं पालि-पोसि बियाह-उदम केलक। मुदा पाकल आम कतेक दिन डारिक संग देत टुहि गेल।

बिमलाकैं समय आ परिस्थिति अपन वयससँ बेसी समझदार बना देने छल। दोसर संतानक रूपमे लक्ष्मी हुनका आँचरक छाँहमे बैसि गेलीह। रामशोभितक छोट परिवार सुखी

परिवार छल। हँसी-खुशीसँ भरल-पूरल सभदिन होली आ दिवाली सन छल। मुदा विधाताकेँ मर्जीमे ई हँसी-खुशीयक समय पूर्ण भ' चुकल छल। एक दिन रामशोभित सूतल तँ सूतले रहि गेल। केओ कहलक जे भूइसप्पा डँसलक, तँ केओ कहलक माए हुनकर अपन बच्चाकेँ ल' गेल। असली ओजहकेँ थाह नहि लगल। रामशोभित अपन बाल-बच्चा आ पत्नी बिमलाकेँ छोड़ि गैय्या बैन गोसाइ घरक एकटा कोनमे फूल-अक्षत पाब' लगल।

दू बच्चाक जिम्मेदारी संगे बिमला अपन सब मनोरथकेँ रामशोभितक लहलहाइत अचियामे झोकि ओकर धिपलाहा छाउर सिउथमे हसोइत लेलक। बिमलाकेँ देह आब मात्र एगो यंत्र छल मानव तन नहि। ओ साँस तँ ल' रहल छल मुदा जिवि नहि रहल छल। आँखिक टघरैत नोरकेँ बिमला अपन दुनू बच्चा खातिर सुखा देलक। ओ अपन पूरा जीवन अपन बच्चाकेँ समर्पित क' देलक। बेटा-बेटी दुनू पढ़ि-लिखि अपन माएयक त्याग आ समर्पणक मान रखलक। बेटी माध्यमिक स्कुलक शिक्षिका भ' गेलथि आ सासूर बसैत छथि। बेटा कलकत्तामे पत्नी आ दू बेटा संगे रहैत अछि। ओतै कोनो कम्पनीमे काज क' नीक जेका अपन परिवारक निर्वाह करैत अछि। बिमला गाममे असगरे रहैत अछि। एक-दू बेर कलकत्ता गेल मुदा एक्के कोठरीमे सब ठूसम-ठूस ओकरा नहि नीक लागल। कहलक— "बउआ जाब' पैरूख अछि हमरा गामे म' रह' दे, ई हमरा ले' जहल सन अछि।" बेटा-पुतौह मानि गेल। तहियासँ बिमला गाममे रह' लागल। समयक संग बेटा-पुतौहक स्वभाव व्यस्तताकेँ नाम लेलक। गाम ऐनाइ-जेनाइ आ खर्चा-पानि देब सेहो कम भ' गेल। ओना पाइक कमि तँ नहि रहल बिमलाकेँ। मनखप बला पाय आ किछु खेती-बाड़ी असगर पेट लेल पर्याप्त छल। बेर-कुबेर बेटी आबि सम्हारि जइत छल। मुदा आइ जेना बिमलाकेँ असगर घर काटै छल' ओ घरसँ बाहर दरबज्जा पर जा बैसल। जे बाटपर लोग सभकेँ अबैत-जाइत देखत तँ मन बहैट जाएत। विमला जे सभदिन असगर काटि देलक ओ आइ केकरो बाट हेरै छल। अपना ल'ग बैसबै लेल। कतेको बेर बेटाकेँ किछु दिन लेल अबैकेँ

निहौरा सेहो केने छल, मुदा काजक जिम्मेदारी आ बच्चाकेँ पढ़ाइक बात कहि बेटा बात टारि देलक। आइ 70 वर्षक बिमला अपन लाठी ताकि रहल छल।

दरबज्जा पर बैसते किसुन बाबा सेहो टहलैत अएला। बिमला अपन कुर्सी हुनका दिस खिंचकेँ दैत बाजल बैसौउथ। बाबा कुर्सी पर बैसैत बाजल कि कहिअ श्रवण माए कतौ निक नहि लगैत अछि। जहियासँ सिरखरिया बाली गेलह घर आ मन दुनू सुन्न क' गेलह। तोरो मन उचटल लगै छह धिया-पुता सब ठीक छह ने?

— हँ सभ हँसी-खुशी छथि। देखथुन न गाम जेना बुढ़े-पुरानक भ' क' रहि गेलै। कतौ कोनो बेदराक किलकारी नहि, कोनो जुआनक हुरदंग नहि। सुन्न गाम साँचे मनकेँ सुन्न करै छैक।

— कि करबह' खेप' आब केनाहियो क'। गामक शांति तँ साँचे झरकाबै छै? मुदा बाल-बच्चा जे नहि बाहर जेतै तँ माटि फोरि खेतै ? पेट बान्हल मानतै ? अपने मनकेँ बुझब' पड़त'।

किसुन बाबा बिमलाकेँ दियाद नहि पड़ोसी छथि। हुनकर बाबा सब छपराकेँ बासी छल मुदा आब ओ ओहि गामक बासी भ' गेल छल। सिरखरिया बाली काकी संगे बिमलाकेँ बहुत मेल-मिलाप रहै छल। सिरखरिया बालीकेँ कोनो संतान नहि भेल। सभकेओ दुनू प्राणीकेँ बझिबा नाम रखने छल। सिरखरिया बाली ओहि सोगे दुनियासँ चलि गेलीह आ किसुन बाबा कहियो दोसर वियाह लेल नहि रजल। बिमला काकीकेँ घरबला आ किसुन बाबा दुनू संगी छलाह। किसुन बाबा उमेरक कारण बाबा नहि छलाह, संगी-तुरिया हुनका कहियासँ बाबा कह' लागल आ देखा-देखी भरि गाम ! से हुनको नहि खियाल अछि। छोट नमहर सभकेओ हुनका किसुन बाबा कहैत अछि। दुनू परिवार सुख-दुखमे एक दोसरक संगे हरदम ठाढ़ रहैत छल।

मनुहारी साँझमे किसुन बाबा अपन दलान पर बैसल छलाह कि एना लागल जेना साँझक झलफासि आँखिमे घुसि गेल, आ एकाएक सभटा बल्ब मिझा गेल। जखन कनी होस आएल तँ बिमला हुनका ल'गमे ठाढ़ भिजलाहा गमछासँ हुनकर मुँह पोछि रहल छलीह। दोसर कात भातिज आ भतिज पुतौहु सेहो ठाढ़ छली। सभहक मुँह पर चिंता किसुन बाबा स्पष्ट देखि रहल छल कि दोसरे पल हुनका भीतर जेना शक्ति क्षीण हुए लागल। पलक बेर-बेर बन्न होइ लेल आतुर छल। कंठ सुखा रहल छल हुनकर अवाज शुन्यमे विलीन भ' रहल छल। बिमला पानिक गिलास हुनकर ठोढ़ ल' सटबैत बजलीह— "एक घोंट पानि पी लथि"। किसुन बाबा पानि पिबि फेर अचेत भ' गेल। ताबत डॉक्टर बाबू सेहो एलखिन। बाबाकेँ परीक्षण क' बजलाह— सब तँ ठीक अछि कोनो चीजक चिंता छनि की? खाइ-पिबै नहि छथिन। कमजोरी छनि बहुत। दू टा सुइया दै छी भोर तक ठीक भ' जेताह। कनी-कनी काल पर नोन-चीनीकेँ घोल पिअबैत रहबै। आ देखैत रहबै देह शरद नहि हुए। नहि तँ लहसुन-तेलक मालिश क' देबनि।

बिमला बेस कहि डॉक्टर बाबूकेँ अपन स्वीकृति देलनि। ओहि राति बिमला, हुनकर भातिज आ भतिज पुतौहु तीनू भरि राति सेवा क' बाबाकेँ प्राण घुरा लेलथि। होइत भोर किसुन बाबाकेँ नजरिमे बिमला काकी देवी बनि गेलीह। आब बाबा आ काकीकेँ मेल जोल पहिनेसँ बेसी बढ़ि गेल। दुनू हरदम अपन सुख-दुख बतियाइत रहैत छल। हुनका दुनूकेँ एक-दोसरक संग नीक लाग' लगल। अतए शारीरिक आकर्षण नहि, भावनात्मक प्रेम पनपि रहल छल। दुनू एकांतक अवसादसँ मुक्त रहबाक प्रयत्न क' रहल छल। हुनका होइत साँझ घरमुहा हेबाक उदास करैत छल। ओ संगे रहबाक सपना जागले देखैत रहैत छल, मुदा लोक-लाज आ मर्यादा दुनूकेँ मुँह सिबि देने छल। एक दिन हिम्मत क' किसुन बाबा बिमलाकेँ हाथ पकैड़ बाजल— "हमर एहि थरथराएत हाथक लाठी बनब?

बिमला काकी किछु बजथि तहिसँ पहिने बहुत दिनसँ हियाबैत बाबाकेँ भातिज हुनका दुनूक माथ पर लाठी बजारि देलथि। देखते-देखते दुनूकेँ माथसँ शोणितक धार बह' लागल। दुनू शोणित एक संगे मिल ओहि ठामक माटिकेँ सिंचि रहल छल, हुनकर भातिजक लाठीक प्रहार अखनो जारी छलै।

•••

शंकर मधुपांश

सम्पर्क : स्वागत सिटी, गांधीनगर।
+91 88516 30134

मधुर स्वभाव एवं स्नेहिल व्यक्तित्वसँ सम्पन्न एक संवेदनशील साहित्यकारक रूपमे प्रसिद्ध शंकर मधुपांश गद्य आ पद्य केर अनेक विधामे रचनाशील छथि। मैथिली आ हिंदी दूनू भाषामे समान रूपेँ अधिकार रखनिहार मधुपांश, स्वनामधन्य "मधुप" जीक अंश छथि आ से पितामहक सम्मोहक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक प्रभाव पौत्रक रचनामे सभतरि स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत छनि। हिनक रचना सभमे विषयक मौलिकता, कथ्य केर गम्भीरता एवं शब्द सौंदर्यक संग-संग छंदबद्ध रहबाक कारण आएल नैसर्गिक लयात्मकता बहुत प्रभावित करैत अछि। शंकर मधुपांश जीक मैथिलीमे "फुलडाली" (कविता-संग्रह), "बिठुआ" (मधुमाछी कथा-संग्रह), 'शब्द शेष अछि एखन' (कविता-संग्रह) एवं हिंदीमे काव्य "विरह संदेश", "मधुयामिनी" आ "परिचय शतक" केर मैथिली सँ अनुवाद प्रकाशित एवं चर्चित छनि, संगहि हिनक अनेक रचना सभ मैथिली एवं हिंदीक विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित होइत रहल अछि। सम्प्रति पूर्णकालिक साहित्य साधनामे रत छथि।

अधिकार

मुनचुन कका हमरा सभक दियाद... आइ काल्हुक हिसाब सँ नीक चिक्कन खेती बारी छलन्हि आ पड़ोसक गाममे नौकरी सेहो करैत छलाह... सरकारी नौकरी, प्राइमरी स्कूलमे मास्टर छलाह... दू बरख भेलन्हिए रिटायर केना... दू टा बेटी छलन्हि जेठ आ ओकरा सबसँ छोट एकटा बेटा... इज्जति प्रतिष्ठा बला लोक... अपन ओकादि अनुसार नीक घरमे दूनू कुटमैती केलन्हि... बेटा एकटा पैघ कंपनीमे इंजीनियर छथिन्ह, हैदराबाद मे... ओकरो विवाह-दान भेलै आ अपन परिवार संग रहैए... आब तँ ओत्तहि अपन मकान सेहो कीनि लेनेए... धरि काका काकी गामेमे रहथि... से जखन रिटायर भेला अपने तँ पेंशनक कागज पत्तर सब सरिया कें किछु दिन लेल बेटा लग हैदराबाद चलि गेलाह... गेल तँ रहथि किछुए दिन लए मुदा आपस एबामे डेढ साल लागि गेलन्हि... काल्हि भेटला चौकपर पान खाइत तँ कुशल छेम भेल ... पूछि बैसलियन्हि हमहीं...

— कका, आब गाममे नहि रहैत छियैक ?

— नै यौ, गामेमे रहैत छियैक... ओना एखन डेढ साल सँ हैदराबादमे रही...

— ओह, अच्छा ! तँ बालक लग रही !

— नै यौ ! बालक लग हम किएक रहबन्हि !

— तखन कतय रहियै ?

— बालक हमरा लग रहथि...

— सैह तँ हमहूँ कहलहुँ... बेटा संग रही किने ?

— ना... उनटा बात... बेटा हमरा संग रहैत छलाह...

— अरे, एक्के बात तँ भेलै... बेटा ओतय घर किनने छथि तँ हुनके घरमे रहैत हेबै किने !

— हम किएक हुनका घरमे रहबन्हि... बेशक ओ मकान किनने छथि मुदा रहैत छथि हमरा घर मे...

आब ई बुझौअलि बूझब हमरा अबूह लागि रहल छल... चुप भए गेलहुँ... हमरा गुम्म देखि कहय लगलाह...

— नै बुझना गेल ? देखियौ... बेटा बालिग छथि... आब तँ घर परिवार चलबै बला छथि... आ चलबितो छथि अपना बुद्धि अनुसार... मालिक वैह छथि सबटा फैसला लेल... मुदा जाबत धरि हमरा दूनू बेकतीमे सँ एक्कोटा जीबैत छी तावत घर आ मकान केर अधिकार हमरे सबहिक... से गामक होइ आकि हैदराबादक... तैं कहलहुँ जे हमसब बेटाक आश्रममे नहि रहैत छी, बेटा पुतोहु हमरा आश्रममे रहैत छथि... आ से रहताह हमरा दुन्नूक जीबा धरि... ई हमर अधिकार नै छीनि सकैत छथि कियो...

ककाक ई आत्मविश्वास देखि बड़ प्रसन्नता भेल... हम मोने मोन भगवती कें कहलियन्हि जे हे जगजननी ! सब माय बापक ई अधिकार एहिना बनौने रहबै... जँ सब बेटा एहने होइक तँ हमरा मिथिलामे वृद्धाश्रमक कोन बेगरता ?

भूख

बलभद्र बाबू कें रिक्शा पर कतहु जाएब आएब नै नीक लगैत छलन्हि... बस आकि कोनो दोसर सवारी सँ यात्रा करैत छलाह... आ जँ सेहो सब नै भेटल तँ पैदले सही... मुदा ओहि दिन सकरी सँ गाम जाइत काल फँसि गेलाह... बसक हड़ताल रहैक... आ दोसर कोनो साधन उपलब्ध नै...से पाँच बजे भोरे ट्रेन सँ उतरि कें जखन स्टेशन सँ बाहर अएलाह तँ स्थिति केर भान भेलन्हि... हिनकर गाम एतय सँ तीन कोस पक्की जमीन... तै पर सँ जड़कालाक भोर... कुहेस लागल... ओना तँ चलियो जैतथि मुदा संगमे जे बड़का अटैची छलन्हि से समस्याक जड़ि... पाकरिक गाछ त'र मात्र एकटा बूढ रिक्शाबला सवारीक प्रतीक्षामे ठाढ रहय... कोनो उपाए नै देखि ओकरे शरणमे गेलाह... रिक्शा बिदा भेल... कने काल धरि तँ चुप्पे रहलाह फेर ओकरे सँ गप्प करय लगलाह...

— कतय घर छियह तोहर ?

— नेहरा

— एते भोरे सबदिन स्टेशन आबि जाइत छहक ?

हँ... ऐ पँचबजिया ट्रेन सँ पसिंजर भेटि जाइत छैक...

नक्शामे गाम

— कका, गोड़ लगैत छी !

— के ? बलदेव हौ ! खूब नीके रहू बाबू ! गाम कहिया एलहुँ ?

— काल्हि एलियै कका...

— अचछा... बहुत दिन पर एलिएयै किने ऐ बेर ?

— हँ पाँच साल भए गेलैक... 2017 केर दुर्गापूजामे आएल रहियैक...

— एना नै करियै... गाम आबैत जाइत रही... नै बेसी तँ सालमे दुइयो बेर... पाँचो-दस दिन लए... मुदा अबैत रही... एखन रहब किने !

— कहाँ ! शनि दिन ज्वाइन करबाक छै... तैं तँ असगरे (एकसरे) एलिऐ...

— से की ? परिवार नै अनलिऐ ?

— कका, जखन धियापुता पैघ भए जाइत छै तखन ओकरो सभक अपन अपन व्यस्तता ने रहैत छैक... संग प्रोग्राम बनाएब कठिन...

— तखन तँ कनिञो नै आएल हेतीह...

— नै, फेर ओतय खेबा-पिबामे दिक्कत ने होइतैक...

— हँ... मुदा हे ! तों भातिज छह... तैं एकटा बात कहैत छियह... बच्चा सबकें गाम-घर आनैत रहबाक चाही... आब पैघ भेलैक... अपन खेतोपथार तँ चिन्हतैक किने...

— एँह... कका ! अहूँ हद्द करैत छियैक... ओकर बाप कें तँ अपन खेत देखले ने छैक आ ओ देखैए...

— सेहो बात ठीके ! मुदा बलदेव ! एकटा बात कहियह ! तोहर बेटा खेत नै चिन्हतह... ओकर बेटा अपन घर नै चिन्हतह... आ जँ एहिना होइत रहलैक तँ ओकर बेटा मने तोहर प्रपौत्र अपन संगी सब कें भारतक नक्शामे देखेतैक..." मोनू ! देख, इसी जगह पर बिहारमे मेरा भी गाँव है... नाम अभी याद नहीं आ रहा है... पापा से पूछकर बताऊँगा... !

•••

शशि कुमार शशि

सम्पर्क : सिधपकला, लदनियाँ।
+91 85219 07184

शशि कुमार शशि ग्रामीण परिवेशक समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरसँ जुड़ल समर्पित मैथिली साहित्य प्रेमी, कवि आ शिक्षक छथि। हिनक साहित्यिक अनुराग छात्रे जीवनसँ अंकुरित भेल। वर्ष 2010मे बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर बिहारसँ मैथिली विषयमे स्नातकोत्तरक परीक्षामे यूनिवर्सिटी टॉपर रहल छथि। ग्रामीण विकास विभागक कार्य-अनुभव आ लोक-संस्कृतिसँ जुड़ाओ हिनक साहित्यिक संवेदनाकेँ आओर गम्भीर बनबैत अछि। शशिजी मैथिली साहित्यक रचनात्मक पत्रिका 'अनुप्रास'क सह-संपादक छथि। मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे हिनक रचना निरंतर प्रकाशित होइत रहैत छनि। संप्रति उच्च माध्यमिक विद्यालय, पद्मा लदनियाँमे मैथिली विषयक शिक्षक (PGT)क रूपमे कार्यरत छथि।

पेंशन

रामदीनकेँ प्रत्येक महिना पेंशन भेटैत छल, आ इएह पेंशन हुनका घरमे कलहकेँ सबसँ पैघ कारण छल।

रामदीनकेँ दुटा बेटा छल— रमेश आ सुरेश। दुनूक अपन-अपन परिवार छलै। दुनू भाइमे सम्बन्ध बहुत नीक नहि छल। कहा-सुनी होइते रहैत छल। आइ सेहो दुनू भाइमे पिताक ल' क' बातेचीते भ' रहल छल...

रमेश कहैत छल— "पिताजी हमरा संगे रहथिन! हम पैघ बेटा छियै, हुनकर दवा-दारूक ध्यान हमही राखब।"

सुरेश कनेक जोरसँ बजैत कहलक— "कियेक भाइ? कि हमर हक नै अछि? पिताजी एहि महिना हमरा ओतए रहता!"

मुदा यथार्थ तँ किछु अलगे रहैक। दुनू भाइमेसँ किनको पिताक दिनो-दिन द'ब होइत स्वास्थ्यसँ कोनो मतलब नै छल, हुनकर सभक नजरि तँ प्रत्येक महिनाक एक तारीख पर रहनि। पिता जकरा घरे रहथिन, पेंशनक टका ओकरे हाथ लगनि।

एहि खींचतानीक बीच घरक एकटा कोनमे बैसल रहैत छलि 'पार्वती काकी'— पार्वती काकी, रमेश आ सुरेशक दादी आ रामदीनक अस्सी बर्खक दुनू आँखिसँ आन्हर माए छलथि।

पार्वती काकीकेँ कोनो पेंशन नै अबैत छलनि। रामदीन बहुत दिन धरि ब्लॉक ऑफिसक चक्कर लगबैत रहलाह, किछु टको खर्च कएलनि मुदा संभव नहि भ' सकल। भोटर कार्ड आ आधार कार्डक नाममे एक अक्षरक टाइपिंग मिस्टेकसँ पार्वतीकेँ पार्वसी भ' गेल रहैक। बादमे आबि क' तँ अउँठा सेहो नहि काज करए लगलनि। तबाह भ' क' रामदीन छोड़ि देलकनि। रमेश आ सुरेशकेँ एहि सभसँ कोनो मतलब नहि रहैत छल।

पार्वती काकीकेँ सुनाइ सेहो कम छलनि, जोरसँ कहला पर सुनि पाबैत छलथि ओ। तेँ भोजन करबए बेरमे दुनू भाइ एक-दोसराक मुह ताक' लगैत छल।

भाइ, आइ दादीकेँ तोँही रोटी द' दहीक, "काल्हि हम देने रहियैक," सुरेश मुह बना क' कहैत छल।

"अरे! पिताजी तोरे ल'ग छथुन, तँ दादीक खर्चा सेहो तोँही उठाबही" रमेश गुस्सा क' जवाब दैत छल।

पार्वती काकी चुपचाप कोनामे पड़ल पुरान खाट पर बैसल सभ किछु सुनि रहल छली। जाहि दुनू बच्चाकेँ पेट काटि क' पोसलहुँ-पाललहुँ, आइ ओहि बच्चाक लेल हम बोझ भ' गेल छी। ई सोँचि हुनक आत्मा भीतरे-भीतर बहुत कनैत छल।

रमेश आ सुरेशक माए द्वनमुन करैत दुनू बच्चाकेँ सासुक जिम्मा लगा गोलोक बासी भ' गेल छलीह। दुनू भाइकेँ दादीये पोसने-पालने रहथिन। टोला-मोहल्लाक लोक सभक कहब रहनि— 'पार्वती काकी दुनू पोताकेँ कहियो माएक कमी महसूस नहि होबए देलकनि।' जा पुतहु रहनि बूढ़ीकेँ सेहो खुब सेवा करथीन। दुनू सासु-पुतहुमे खुब मेधा रहनि, माए-बेटी जकाँ रहथिन दुनू सासु-पुतहु। मुदा ई सुख पार्वती काकीकेँ बेसी दिन लिखले नहि रहनि।

आइ फेर घरमे नाटक शुरू भ' गेल छल। पेंशनक टका छोड़ा क' रामदीन पासबुक लेने घरमे प्रवेश केनहि छलाह—

"एहि महिना पिताजी हमरा घरे रहथिन!" रमेश पिताक हाथ धएलक।

"नहि, पछिला बेर अहाँ तीन दिन बेसी रखने रहियै, एहि बेर हमरा ल'ग रहथिन!" सुरेश दोसर हाथ खिँचि कहलक।

दुनू भाइमे गारि-फज्झति आ हाथापाइक नौबत आबि गेल। रामदीन नाचार भेल अपन बेटासभक किरदानी देखि रहल छलथि। एकाएक कोनासँ कँपैत स्वर आएल—

"ठहर!..."

पार्वती काकी अपन लाठीकेँ सहारे धीरे-धीरे उठि क' ठाढ़ भेलीह। अपन आन्हर आँखिकेँ घुमौलनि आ बजलीह— "अहाँ दुनू बापक सेवा करबाक लेल नहि! पेंशनक टका लेल कुक्कुर-बिलाइ जकाँ लड़ि रहल छी! हमरा पेंशन नहि भेटैत अछि तँ हमरा लेल एकटा सुखल रोटीक टुकड़ि सेहो भारी पड़ैत अछि? थू: एहन संतान पर!"

घरमे चुप्पी पसरि गेल।

काकी अपन कँपैत हाथसँ हँथोड़ि क' रामदीनक कान्ह पकड़लनि आ स्थिर होइत बजली— "रामदीन, हमर तँ छोड़ बेटा! हमरा ई सभ खाए लेल नहि दैत अछि। मुदा तोहर उपेक्षाक बात सुनैत छीयौ तँ बहुत दुख होइत अछि। हमरासँ कोन चूक रहि गेल एकरा सभक पतिबालमे जे एकरा सभक संस्कार एहन भ' गेल अछि। भदौर बाली जीबैत रहितै तँ एखन अपन कोखि पर कुही होइतै! भगवान भने उठा लेलखिन ओकरा! ने जानि हमरा लेल कतए चलि गेल छथिन भगवान! हमरो उठा लेने रहैत तँ आइ ई दिन नहि देख' पड़ैत।"

एतेक कहि पार्वती काकी अपन लाठी उठौलनि आ धीरे-धीरे घरक दरवाजाकेँ थाहैत आगु डेग बढ़ौलनि— रामदीनक धैर्ज टूटि गेल! ओ बेटा सभक हाथ झटकि, पासबुक आ पाइ जमीन पर फेकि! दौड़ि क' अपन माएक घारा लागि भोकासि पाड़ि क' कानए लागल।

रामदीन कनैत बाजल— "माए, तौँ एसगर कतहु नहि जेबही। जतए हमर माएक आदर नहि! ओतए हम की करब रहि क', चल... आइसँ हम सेहो तोरे संग रहब! मजदूरी क' दुटा पेट कोनो नहि भरल हएत हमरासँ। एखन हमरा देहमे हुब्बा शेष अछि माए, तौँ चिंता नहि क'र... चल!"

रामदीन अपन माएक डेन पकड़ने रसे-रस दरवाजासँ बाहर चलि गेल। पाछा जमीन पर छिड़िआएल छल बैंकक पासबुक आ पेंशनक पाइ!

ठकमुड़ी लागल दुनू भाइ एक-दोसरा दिस देखि रहल छल।

•••

गोपाल झा 'अभिषेक' केर पाँचटा कविता

सम्पर्क : सप्ता, मधुबनी।
+91 9122019246

अयोध्या

दू हजार चौबीस
राजा रामचन्द्रजीक
अयोध्या आगमनक वर्ष मानबै ?
कि मानबै
हुनक वनवास प्रारम्भ होएबाक वर्ष ?
अहाँ जे मानी
कोनोमे हमर असहमति नहि रहत
सेहो सहर्ष।

तँ कहि सकैत छी–
'अहाँ तँ भागि रहलहुँ अछि सत्यसँ
मुह चोरा रहलहुँ अछि तथ्यसँ'।
इहो कहि सकैत छी–
'बातकेँ कतहुसँ कतहु ओझरा रहल छी
एम्हरसँ ओम्हर घुमा रहल छी'।
नहि, नहि, हमरो कोनो आपत्ति नहि अछि
कतहु ने कतहुसँ हमहू गड़बड़ा रहल छी।

छोड़ू ई सब
मुख्ये बात पर अबैत छी–
पिताक वचन शिरोधार्य क'
सहर्ष स्वीकारलनि वनवास कौशल्यानन्दन
बसियैल अँगरखा जकाँ
त्यागि देलनि राजपाट।

अहाँ कहब–
'अहाँ तँ हुनक गुणगान ल' बैसि गेलहुँ'।
मुदा हम तँ अपन टेटर तकैत
सत्यक तकतानमे लागल छी।

राम स्वीकारलनि वनवासे नहि
अपन माता-पिताकेँ ढाढ़स सेहो बन्हौलनि
शोकाकुल प्रजाकेँ समझौलनि
एकसरे वोन जएबा लेल प्रस्तुत भेलाह'
ओ तँ भ्रातृधर्म निबाहैत सौमित्रेय
संग ध' लेलखिन्ह
सासु-ससुर आ पतिओकेँ कतबो बुझौला पर
मिथिलेशकुमारी संग छोड़बा लेल
किन्हु नहि तैयार भेलखिन्ह।

आब कहि सकैत छी–
'अहाँ तँ हुनक कथा ल' बैसि गेलहुँ'।
मुदा हम तँ
दू हजार चौबीसक अयोध्याक
बाटमे छी।

जखन चारि सौ वर्षसँ बेसीओ समय
कम पड़ैत रहल
सोझरा लेबाक लेल एकटा विवाद
तखन तँ चौदह वर्ष कम्मे छलैक तहिओ
अपन नियतिकेँ
आवामे पकयबाक लेल।

मुदा कैकयीनन्दन
तँ दोसरे माटिक बनल छलाह

ओ जन्मजाते पाकल आ निस्सन छलाह
उत्तरदायित्व बुझि सम्हारितो सभटा जिम्मेवारी
टससँ मस नहि भेलाह
स्पष्ट मन्तव्य रहलनि हुनकर
ज्येष्ठ होएबाक कारणे
राजगद्दी पर छानि
रामचन्द्रजीक जन्मसिद्ध अधिकार
चौदह वर्षक वनवासक उपरान्त
जहिया घुरि औताह ओ
उत्तरदायित्व हुनका करहि पड़तनि स्वीकार।

तखन अहाँ कहब–
'एहि तरहे कोना आबि सकब अहाँ
दू हजार चौबीस धरि ?
मुदा हम तँ समान दृष्टिए
अपन नजरि खिरेबा लेल
कोनो ऊँचास स्थान ताकि रहल छी।

वनगमन जँ हुनक आत्मीय सम्बन्धक निर्वहनक
उच्चादर्श प्रस्तुत कएलक
तँ वनवासक उपरान्त हुनक अयोध्या आगमन
मानवीय आर्दशक दृष्टांत बनि सोझा आएल।
लंका-विजय केर उपरान्त
जनकनन्दिनीकेँ
अग्नि-परीक्षा देबाक लेल ओ अपनाहि बाध्य केलनि
एक-तरहे बुझू अर्द्धांगिनी लेल
ओ अपनहि अग्नि-परीक्षा देलनि।

आब तहन कहब–
'अहाँ तँ हुनक अतिमानवीय चरित्रक
अढ़ ल' रहल छी'
मुदा हम तँ
कठिनसँ कठिन परिस्थितिमे
सकल समाज के संग ल' चलबाक
हुनक ध्येय दिस
ध्यान आकृष्ट क' रहल छी।

सम्बन्धक निर्वाह करब सिखबाक अछि
तँ सीखि सकैत छी हुनकासँ
बिनु अम्लान कएने मुखमंडल
कष्ट सहबाक हुनर बुझबाक अछि
तँ बुझि सकैत छी हुनकासँ।

नहि, नहि, एत' सीखब आ सिखएबाक
तँ कोनो बाते नहि अछि
केन्द्रमे अछि दू हजार चौबीसक अयोध्या
आ हमरो ओतहि पहुँचबाक अछि
से हाथ-पैर मारि रहल छी
कहुना-कहुना क' कविताकेँ सम्हारि रहल छी
अपन पूर्वाग्रहकेँ बेर-बेर झझकारि रहल छी
विचारसँ विचारकेँ अजबारि रहल छी।

तखनो विजय कि पराजय बोध के जँ
धाकिया नहि सकलहुँ
तँ दूरे रहत
हमरा कि अहाँसँ
अयोध्या।

बेरा-बेरी कहलानि तँ सभ–
'सबहक छथि राम'
तँ कहे ने पड़त–
'सबहक छैक अयोध्या'।

सैह तँ कहिओ रहल अछि तहिएसँ
'अयोध्या' अपनहु।

एतबो जँ प्रेम भेल त' की ने भेल

जिनका बेसी जरुरति
पाहिने से आबाथि।

किनसाइत कम पड़ि जाइ सामान
से बेसी खगता जिनका
पाहिने से पाबाथि।

देखबै पाछाँ
अपनासँ पछुआएल नजरि
जँ केओ आबाथि।

बुझाए बेसी आवश्यक
खिंचि केओ
हुनका आगाँ लाबाथि।

एतबो जँ प्रेम भेल
तँ की ने भेल
एतबो जँ नेत भेल
तँ की ने भेल।

लिखि लेब हमरो नाम

दुनियाकेँ
कने आर हँसमुख बनयबाक लेल
लिखाइत हो कतहु नाम
तँ लिखि लेब हमरो नाम।

भने नहि हो हँसयबाक लूरि
ताहि प्रयासमे
बनि अपनहि हँसी केर पात्र
जँ आनि सकल होइ
कोनो मुहपर
कनेओ मुसकान
तँ लिखि लेब हमरो नाम।

नहि धड़फड़ी
लिखि-तिंखि सभ नाम
बाँचल रहि जाए
जँ जगह कोनो ठाम
तँ लिखि लेब हमरो नाम।

जत' सभ लेल हो छबै भरि पानि

दृष्टि
हाव-भाव
बात-विचारेटा नहि
व्यवहारो जँ
खिचाएल प्रभुतामय परिधि संग
बनबैत रहलए अवांछित व्यूह
तँ कि बाँचल रहि सकलए
कतहु कोनो सीमा
ताल ठोकि जत'
नहि कएल जाइत हो
युद्धक उद्घोषणा।

संगे-संग रहब
तखनो नहि सहब
(एक-दोसराकेँ)
तखनहु कोनो जगह कि स्थान
कि कोनो बिन्दु तँ हेतैक एहन
जत' सभ लेल हो
छबे भरि पानि।

सिनेह सिक्त जँ होइत रहतै नेनपन

बूढ़प्पनक
कोनो टा बात नहि
तँ छोट भ' जाएबाक
सेहो नहि ओतए कोनो संभावना।

सम्बन्ध ल'
परिछारले रहलै
सभकिछु
सभ दिनसँ।

जेठ-छोटक बीच
आदर पाएबाक अधिकार
तँ आदर करबाक कर्तव्य
रहलै सभ दिनसँ बेकछाएले।

तँ सिनेह पएबाक हक
आ सिनेह करबाक दायित्वक
सेहो होइत रहलै निर्वाह।

सिनेह सिक्त जँ होइत रहतै नेनपन
तखन सहजहि
पैघक धाख
छोटके रोकैत रहतै निरंतर
अवांछित प्रवाह दिस जाएबासँ।
सिनेह सिक्त जँ होइत रहतै नेनपन

•••

बकध्यान

आभा झा

सम्पर्क : दिल्ली।
+91 79823 49106

दशमी तिथि
साँझक चारि बजे
मैयाक बिदाइक समय ऐल
घड़िघण्टा, शंख ध्वनि समेत
आजन-बाजन बजइत अनेक
गाइनि सभ गाबथि समदाउनि
युवजन लगबै छल जयकारा
लाउडस्पीकर, फुल वॉल्युम पर
झंकृत कयने चौहद्दीधरि।
एमहर घरमे
चद्दरि तरमे
थर थर कँपैत एकसरि करुणा
ज्वरसँ तपैत बड़ बड़ करैछ–
दिअ पानि केओ, लागल पिआस
रे मोनू! कतय गेलें बौआ!
दे पानि कने, लागल पिआस...!
फुजलैक भक्क, अयलै धिआन–
सभ गेल हयत मंदिर प्रांगण।
उठि ठाढ़ि भेलि कुहरैत खिन्न
चौखटिधए बहराएलि कहुना
भनसाघर पहुँचैसँ पहिने
लगलै घुरमा
खसलै धड़ाम।
भौतिक सुखमे भोतिऐल मनुख
बेबूझ बनै प्रज्ञा अछैत।
दुखिताहि रहै छै स्त्री बड़
सोहनकेँ सोह न छैक तकर
असनान-ध्यान जलखै क' क'
ललका कुरता धोती पहीरि
कयने ललाट पर लाल ठोप
लेपटौने गरदनिमे तौनी
नमहर मोबाइल टीपैत मुदित
बहराएल आठे बजे आइ
देखबै छै नित्तह लाइव आबि
मंदिर परिसरसँ मेलाधरि
छकड़ैत गप्प
कचरैत पान
अपडेट करै निज स्टेटस।
बाहर देवीक बनल सेवक
भीतर अवहेलित देवि तकर।
छथि बूढ़ि बेस थेहगरि परञ्च
गृहकार्य करब नहि छनि पसीन
पोखरि मोहारपर बैसलि नित
निंदा रसकेर आनन्द लेथि
घरमे पुतोहु
कहरैत किन्तु
घरबैआ लेखें धन्योसन।
अन्तर्विचार अरु संस्कार
व्यवहारहिमे झलकै सबहक।

जलमे भसाय देविक प्रतिमा
युवजन आपस घुरि घर आयल
अंगनामे पयर दैत सोहन
अकचका गेल...
हा!
एना किए?
छथि पड़ल अचेत भेल करुणा
शोणितसँ भीजल केश लाल
लारूबातू तन, खसल घाड़
भरि पाँज पकड़ि
झिकझोड़ि देह
करुणा! करुणा!
चिकरल कतेक
की सुनितै ओ !
साँसो चलैक मद्धिम-मद्धिम।
गाड़ी मंगबा झट उठा पुठा
होस्पीटल पहुंचौलक परञ्च
ओ राति भयाउनि होइत गेलै।
करितै ताकुति
पहिने यदि तँ
बजितथि नहि डॉक्टर खेद सहित–
कयलहुँ अबेर बड़ अएबामे
कए सकब न हम किछु मदति आब।

जतराक प्रात
उठलैक हाक
से 'हाक डाक' एकरे कहैछ
पैतिस बरखक ललनाक मृत्यु।
"साते सालक बच्चा अबोध
भ' गेल टुअर
च्च् ...च्च्...च्च्...च्च्... !"
मायक मुखमण्डलकें निहारि
माँ... माँ ...करैत कयलक विलाप।
कानल सोहन, चुप भेल त्वरित
पुनि बटन टीपि नमहर फोनक
देखबैछ लाइव
डेड बॉडीकेँ
क' रहल कमेंट्री ताहिसंग–
"ई हमर धर्मपत्नी थिकीह

गोलोकधाम चलि गेलि ओह!
अछि नम्र निवेदन दर्शकसँ
कामना करी हुनकर मुक्तिक।"

से धाँइ-धाँइ अयलै कमेंट
भीजल सहानुभूतिक रसमे।
पढ़ि पढ़ि एकहकटा पाँतीकेँ
नोरक पाँती पोछैत रहल।
भ' क' सचेष्ट बच्चा यद्यपि
सभ क्रिया कर्म कयलक मायक
जे काल्हि रातिधरि छल अबूझ
से आइ लगैछ सियान जकाँ।
सोहन एडिक्ट छै मीडियाक
चाहैछ एटेंशन घड़ी-घड़ी
द्वादशा धरिक सब क्रिया-कर्म
देखबैत गेल फौलोअरकें।
दुक्खक मार्केटिंग चरम चढ़ल
वा कही विचारक अधोपतन।

बैसल दलानपर मौन भेल
ऑब्जर्व करथि पढ़ुआ बाबा
अचरज लगैत छनि बूढ़ाकेँ–
'पत्नीक मृत्यु' कन्टेंट बना
बिलहैए ई सगरो दुनिया
कनियाँ कनियाँ माला जपैत
सिम्पैथी अर्जित करय आब।
कैएक तोरी
सोहनकें ओ कहने रहथिन
बुझबैत बेस–
उत्सव-मंगल विषयक चर्चा
आह्लादक सदा लगैछ मुदा
सोगक प्रदर्शनी लगा बाउ!
हरिअर करैत छह घाओ अपन
पपड़ी ओदरै अनको दुक्खक
संताप सुनगि धधकै पुनश्च
वेदना अनलमे जरय लोक।
ई क्षणिक एटेंशनसँ किंचित
नहि शांति पाबि सकबह अपनहु।
ई समय थम्हय नहि ककरहुलय
साकांक्ष लोक उपयोग करय।

जे चलि गेलथुन, घुरि औथुन नहि
जे बाँचल छह
सुधि लैह तकर!"
लति लागब कोनहु सहज होइ
छोड़ब ओतबे कठिनाह लगै।
भरना पर राखल खेत सगर
छै बिका रहल बेरा बेरी
से फिकिर तकर नहि छै कनिओं
चलि गेलथिन माय
आइ अचके
देलकैक खबरि मुखपोथीपर
देखबैत लहास अहल भोरे।
छनि मोन घोर बाबाक फेर–
"आरिज कयलक !
कहबै न किए?
विकृत छवि विलहब
पटल उपर
अपमान करब थिक मृतकाकेँ"
मानत किएक...?
परसैत रहल बेरा-बेरी
घरसँ मरघटकेर दृश्य सकल
तेरहा श्राधक सब क्रिया-कर्म।

बीतै जिनगी
सबहक परंच
क्यो काज मनुष्योचित करैत
कर्तव्यबोध सिखबै जगकेँ
क्यो फटकदलालीमे लागल
मनकेँ परतारि लिअय अहिना।
दहिना पयरक हड्डी टुटने
सोहन अशक्त अछि चलबामे
नहि बयस छैक बेसी तथापि
अति वृद्ध लगै छै कायासँ
पड़ले रहैछ अनुखन उन्मन।
भूखे बेचैन भेलै जेँ मन
केलकैक शोर
मोनू...! मोनू...!
मोनू न कान दै छै बातक
बकध्यान लगओने फोन उपर
बापक कुर्सी लेलकै सम्हारि।
सद्गुण सीखय वा नहि सीखय
दुर्गुण सीखय निश्चय नेना।
पढ़ुआ बाबा निहुरल निहुरल
एलथिन पुनि
हाल खबरि लेमय।
मन खिन्न भेलनि ओ दृश्य देखि
एक दिशि सोहन मरचुन्नी सन
निमुआन पड़ल असहाय जकाँ दोसर दिशि
मोनू घाड़ झुका
चलबैत फोन, मुसुकैत रहै।

नहि कहल सुनै छनि केओ, मुदा
भरिसक प्रयत्न करथिन बाबा
से नित्य आबि मोनू लगमे
गप शप करैत
बुझबैत रहथि–
"तकनीक नीक होइ छै ताधरि
जाधरि उपयोग करी सीमित।"
अनहद स्क्रीन एडिक्टशनसँ
बनि गेलहु पिता जेँ अकरमण्य
नहि ध्यान रखै परिवारहुपर।
औरदा अछैत
चलि गेलथुन माँ
सोना टुकड़ी सन खेत सगर
गेलहु बिकाय कौड़ीक भाओ।
मुइलौ मैंयों
घिसिओड़ काटि।
एहि तरहक 'टॉक थेरेपी' केर
भेलैक असरि नहुएँ नहुएँ
फुजलै कपाट मतिकेर स्यात
पड़लै पसीन बाबाक बात–
"उठि जाउ
करू पुरुषार्थ बाउ!"
दू बुन्न छिलकलै गाल उपर
बाबा सोहरौलनि माथ ओकर।

•••

परमानन्दक पतझड़

— धीरेन्द्र प्रेमर्षि

ओ शीतल छाहरि छल हमरे
डालामे चढ़ल, से फल हमरे
सँझुका ई अर्घ जे देलौँ अहाँ
से कमला-कोशी-जल हमरे
हम समय निरन्तर निर्झर छी
हम परमानन्दक पतझड़ छी

हम जेठक प्रिय बरसाइत रही
हर बीजमे हम अँकुराइत रही
पड़बा-पौड़कीक प्रेमक भाखा
हमहूँ मन-मन बतिआइत रही
सोचू तहिया छल महल केहन
देखू नहि- कतबा जर्जर छी
हम समय निरन्तर निर्झर छी
हम परमानन्दक पतझड़ छी

बस नेह-रङ्गसन गाढ़ छी हम
जँ यादक देहरि ठाढ़ छी हम
भरिपोखरि जल छी बन्हने तँ
ई सूखल मौन महाड़ छी हम
नव पुस्त-पुस्तमे किस्त-किस्त
हम घरघर छी, नइ एसगर छी
हम समय निरन्तर निर्झर छी
हम परमानन्दक पतझड़ छी

•••

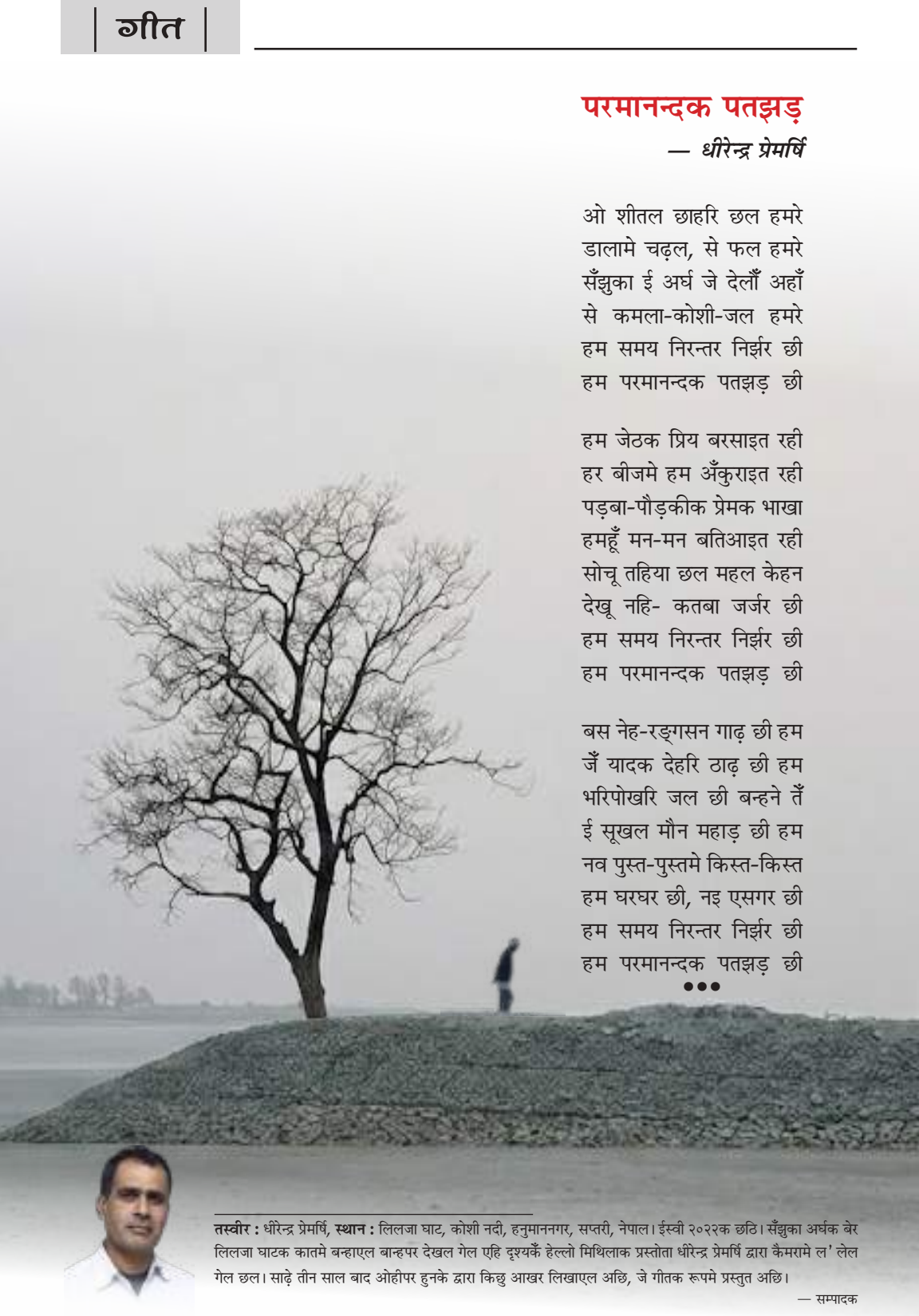

तस्वीर : धीरेन्द्र प्रेमर्षि, **स्थान :** लिलजा घाट, कोशी नदी, हनुमाननगर, सप्तरी, नेपाल। ईस्वी २०२२क छठि। सँझुका अर्घक बेर लिलजा घाटक कातमे बन्हाएल बान्हपर देखल गेल एहि दृश्यकेँ हेल्लो मिथिलाक प्रस्तोता धीरेन्द्र प्रेमर्षि द्वारा कैमरामे ल' लेल गेल छल। साढ़े तीन साल बाद ओहीपर हुनके द्वारा किछु आखर लिखाएल अछि, जे गीतक रूपमे प्रस्तुत अछि।

— सम्पादक

अर्जुन प्रसाद गुप्ता 'दर्दिला'क तीनटा गीत

सम्पर्क : लहान, नेपाल।
+977 9814714887

एक

जएबे करब हम नहि रोकब
आजु राति रुकि जाऊ,
नयनक हमर स्वप्न बनि,
बस यादि द' ल' क' जाऊ।
जएबे करब...

मनक बात किछु कहिदेब
किछु हमरो सुनबाक य,
दिलसँ निकलल गीत अहाँ
गीतक धुन बनबाक य,
देखि अहाँकेँ दिल धड़कल,
दिलक धड़कन बनि क' जाऊ।
जएबे करब...

जीवनक वसन्त बहल छी
मनक बागमे फुलल छी,
मनमे इजोर होइय,
नयनक गगनमे उगल छी,
समीप अहाँकेँ बड्ड नीक लगैय
बस कनी सटि क' जाऊ।
जएबे करब...

बहुत दिनक बाद मिलल छी
लगैय फूल खिलल छी,
गुलाबी अधर मुस्की भरल
सुन्न दिलमे लतरल छी,
आबि जीवनमे मुस्कैत रहू
दिलमे प्रीत फुलि क' जाऊ।

दू

आजुक राति रुकि जाऊ
अहाँ अइ बेर प्रिय,
हमर मनक बात
सुइन जाऊ कनी देर प्रिय
फेर कहियो आयब हम
सुनब दिलक बात,
दिलक हाल बुझि क'
बितायब पुरे राति प्रिय।
आजुक राति...

बिनु अहाँ मन नहि लागै
हरायल छी यादमे,
जान बनि दुर नहि जाऊ
फुलू प्रीतक बागमे,
बिनु अहाँ असगरे
रहैछी बतियाइत प्रिय।
आजुक राति...

बिनु जल जेना मछरी
बिनु प्राण ठाढ़ ठठड़ी,
बसि क' मनमे अहाँ,
विवसे किया बिछड़ल छी,
जीवनमे सजि क' रहै छी
दिलमे मुस्काइत प्रिय।
आजुक राति...

आजुक राति रुकि जाऊ
अहाँ अइ बेर प्रिय,
हमर मनक बात
सुइन जाऊ कनी देर प्रिय
फेर कहियो आयब हम
सुनब दिलक बात,
दिलक हाल बुझि क'
बितायब पुरे राति प्रिय।
आजुक राति...

तीन

बनि फूल हमहुँ फुलितिऐ
हमर अपने वागमे,
कहु की दु:खक बात
सड़ि रहल छी बाड़ीक सागमे।

मन उड़ैत क्षितिज नापैत
लक्ष्य खोजैत रहलिऐ,
नीरुद्देश्य बिहरि-बिहरि
जीवनक पल बितेलिऐ,
सुखक खोजी करैत-करैत
सजौलिऐ अंग दागमे।

देव बनबाक पत्थर बनि
माथ पैघ पगड़ी सजौलिऐ,
पावँ त'रक माटि दाबि क'
माथपर टीका लगौलिऐ,
मानवसँ दानव बनि क'
जीवन सजौलिऐ रागमे।

बनि फूल हमहुँ फुलितिऐ
हमर अपने वागमे,
कहु की दु:खक बात
सड़ि रहल छी बाड़ीक सागमे।

•••

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़रीक चारिटा गजल

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

सम्पर्क : भवानंदपुर, बेगूसराय।
+91 9934847941

हिंदी साहित्यसँ पीएचडी आ नेट, उर्दू, हिंदी आ मैथिलीमे लगातार लेखन कएनिहार डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री हिंदी ग़ज़लक आलोचकक रूपमे विशेष प्रसिद्धि छथि। 'खुले दरीचे के ख़ुशबू', 'ख़ुशबू छूकर आई है' आदि हिंदी ग़ज़ल संग्रह। 'ग़ज़ल लेखन परंपरा और हिंदी ग़ज़ल का विकास', 'हिंदी ग़ज़ल विचार और विस्तार', 'हिंदी ग़ज़ल महत्व और मूल्यांकन' आदि 15सँ अधिक पोथी प्रकाशित छनि। बिहार सरकार सहित अनेक संस्था सभसँ पुरस्कृत डॉ. जाफ़री संप्रति अध्यापन कार्यमे संलग्न छथि।

एक

हम तँ एखन गाममे छी
सच बाजू आराममे छी

नेना-भुटका खेल रहल अछि
हम लिखबाक काममे छी

दुख जहियासँ भेटि गेल अछि
ओहि दिनसँ कोहराममे छी

दिन वोटक जब आबि गेल अछि
हमहूँ तँ आब दाममे छी

काज हमर अछि रावण जैसन
कहबाक हम राममे छी

भाषणमे बस नशा विरोधी
ताड़ी, दारू जाममे छी

भ्रममे छी लिखि चारि गजल हम
मिथिलाकेँ आवाममे छी

दू

एक ग़ज़ल हम गा रहल छी
पियारसँ बतिया रहल छी

हमरा ई मंजूर नहि अछि
तहियो हम बतला रहल छी

हम कहब कटु सत्य किंतु
पर एखनसँ जा रहल छी

दुनू छी एक गामके हम
आइ पर भुतला रहल छी

ओना तँ हम एक छी सब
गप्पमे चिल्ला रहल छी

हम छी सूरज चान जैसन
रोशनी फैला रहल छी

नाम अछि मिथिलाकेँ भैया
गर्वसँ बतला रहल छी

तीन

हम बाजैत छी पियारक गप्प
कोनो शुभ संस्कारक गप्प

हमरा नहि समीचीन बूझैत अछि
दिन मे ई अन्हारक गप्प

एक स्वरमे हम मानै छी
संभव नहि उद्धारक गप्प

कन्याक संख्या कम जे होइत
बदलि जाइत इंकारक गप्प

राजनीतिकेँ हम जानैत छी
हत्या, खून, संहारक गप्प

हमरा जुनि अहाँ भेंटैत छी
भ' जाइत अखबारक गप्प

कोनो दशा नहि बाँकी रखलक
पापी ई संसारक गप्प

चारि

देखब हुनका रूप अपार
करब मुदा नहि हुनका पियार

राधा गोरी जाइ रहल अछि
जतए छथि बैसल नंदकुमार

बरखामे नहि पानी कनिको
की प्रकृति के व्यवहार

केवल हमहीं मैथिली बाजब
कनि करू तँ अहाँ विचार

झूठक दिल्ली की बाजैत अछि
रोज बढ़ैत अछि नरसंहार

हमहुँ दोषी हमहुँ दागी
सहि रहल छी अत्याचार

नहि सोचब हम भविष्यक लेल
नहि हमरामे कछु सुधार

घमंडी राजू

वन्दना झा

सम्पर्क : गांधीनगर, गुजरात।
+91 96016 83261

राजू पढ़यमे खूब तेजगर आओर बहुत नीक बच्चा छल। किलासमे हरदम ओ अपन काज सभ समयसँ पहिने क' लैत छल। सभ दिन समय पर इसकुल जाइत छल। घरमे सेहो भोर-साँझ अपनेसँ पढ़ाई लिखाई करैत छल। इस्कूलमे जतेक टास्क भेटैत रहय ओ सभटा टास्क समय पर बना लैत छल। इस्कूल जाएमे कहियो नागा सेहो नहि करैत छल। राजू अपन घर, गाम आ इसकुलमे अपनासँ पैघकेँ आदर आओर अपनासँ छोटकेँ दुलार करैत छल।

राजू केर नीक आदतिसँ घरमे आ इस्कूलमे सबगोटे खूब मानैत छलखिन्ह।

परीक्षा सबमे सेहो राजूकेँ अपन किलासमे सबसँ बेसी नम्बर आबैत छलै।

राजू पढ़य लिखयसँ ल' क' बात व्यवहारमे बहुत नीक छल तैं मास्टर साहेब राजूकेँ किलास केर मौनीटर बना देलखिन्ह।

राजू आब अपन पढ़ाई लिखाई केर संगे किलासकेँ बच्चा सभक कौपी किताब सभ सेहो जमा करबैत छल। मास्टर साहब जखन किलासमे नहि रहैत छलखिन्ह तखन सौंसे किलास केर बच्चा सबकेँ राजू चुप करा क' राखैत छल। किलासमे कियो हल्ला गुल्ला करैत छलै तँ राजू ओकर सभक नाम लिखि क' मास्टर साहेबकेँ दैत छलन्हि। जाहि बच्चा सबकेँ नाम ओहिमे लिखल रहैत छलै ओहि बच्चा सबकेँ मास्टर साहेब दबारैत-बिगरैत छलखिन्ह।

किलास मौनीटरके काज सभ करैत-करैत राजूमे आब घमंड आबय लागलै। राजू आब जखन-तखन मास्टर साहेब बला छौंकी ल' क' कखनहुँ काल बच्चा सबकेँ एकाध छौंकी सेहो मारि दैत छलै।

राजूमे घमंड एतेक आबि गेल लागल रहय जे भरि किलासमे सबसँ तेजगर आओर बुधियार ओ अपनाकेँ मानैत छल। एहि घमंडकेँ कारण राजूके बात व्यवहार सेहो आब खराब भ' रहल छलै। राजू अपन किलासक आन बच्चा सबकेँ सेहो आब मोजर नहि दैत छल। जाहिसँ किलासकेँ बच्चा सब आब राजूकेँ संगे नहि खेलाइत छलै। राजू अपन घमंडमे आब अपन पढ़ाई पर सेहो कम ध्यान दैत छल। ओकरा एहि बातकेँ घमंड होबय लागल रहय जे ओकरा सभ किछु आबिते छैक, तैं तँ परीक्षामे सेहो किलासमे सबसँ बेसी नम्बर आबैत छैक। जाहि कारण परीक्षामे आब राजूकेँ नम्बर सेहो कम आबय लगलै।

राजूकेँ एहन व्यवहारक कारणेँ मास्टर साहेब ओकरा किलास मौनीटरसँ सेहो हटा देलखिन्ह। राजू आब अपन किलासमे सबसँ अलग बैसैत छल। ओकरा संगे कोनहुँ बच्चा नहि तँ बात करैत छलै आओर नहि तँ राजूके संगे कियो खेलैत छलै। इस्कूलमे अपन संगी सभक द्वारा अपना संग भ' रहल एहि तरहक व्यवहारकेँ

कारण राजूकेँ आब इस्कूल जयबाक मोन नहि होइत छलै। राजू कोनहुँ ने कोनहुँ बहन्ना क' क' इस्कूल जायसँ नागा करय लागल छल।

राजूकेर एहि तरहक व्यवहारकेँ देखि क' राजूके माँ-बाबूजी आओर बाबाकेँ सेहो बहुत अजीब लागि रहल छन्हि। राजूकेँ बाबा आइ अपना संगे राजूके इस्कूल ल' क' गेलखिन्ह आओर मास्टर साहेबसँ राजूके बदलैत व्यवहार लेल बात केलखिन्ह। मास्टर साहेब राजूकेँ ओतय बजा क' सबटा बात पुछलखिन्ह तँ राजू सभटा बात मास्टर साहब आ अपन बाबा लग कहय लागल–

"हम जखन किलासके मौनीटर रहियै तँ अपन पढ़ाइके घमंडमे आबि क' किलासकेँ आन संगी सबकेँ मोजर नहि दैत रहियै। अपन घमंडमे आबि क' हम अपन पढ़ाइ सेहो नीक जेकाँ नहि केलियै। जाहिसँ हमरा बहुत कम नम्बर आयल। ओकर बाद किलासकेर मौनीटर आब दोसर बच्चाकेँ मास्टर साहब बना देलखिन्ह। आब किलासकेँ कोनहुँ बच्चा हमरा संगे बात नहि करैत अछि उल्टा हामरा हरदम खौंझाबैत रहैत अछि। अपना संगे हमरा नहि खेलय दैत अछि। तैं हमरा आब इसकुल नहि अयबाक अछि।"

राजुकेँ गप्प सुनि क' राजू केर बाबा कहलखिन्ह– "पहिले गलती तँ तोरेसँ भेल छह। घमंड करब नीक बात नहि होइत छैक। मात्र घमंड करबाक कारणेँ तूँ अपन पढ़ाइमे पाछा भ' गेलह। ओहि परसँ तोहर अपन संगी सभक संग पहिने एहन मित्रता नहि रहि गेलह। घमंड कखनहुँ नहि करबाक चाही।"

अपन बाबाकेँ बात सुनि क' राजू कानि क' हुनकासँ कहलक– "बाबा ! हमरा बुझयमे आबि गेल अछि जे एहिमे सबटा हमर अपन गलती अछि। हम अपन गलती मानैत छी। आब हम कहियो कोनहुँ बात पर घमंड नहि करब आओर सभक संग मिलि क' रहब।"

राजूकेँ सभटा बात सुनि क' मास्टर साहब कहलखिन्ह– "राजू तूँ तँ बहुत नीक बच्चा छह। आइ अपन गलती सेहो अपनेसँ मानि लेलहक। ई आओर नीक बात व्यवहारक लक्षण थिक। जखन तूँ अपन गलती मानि लेलह तँ हमरा संगे अपन किलासमे चलह।"

किलासमे जा क' राजू अपन खराब व्यवहार केर लेल अपन संगी सबसँ कहलकै– "हमरा माफ क' दे, हम अपन घमंडमे आबि क' तोरा सभ संग खराब व्यवहार केलियौ। आइकेँ बाद हम फेर कहियो घमंड नहि करब।"

राजूकेँ बात सुनि क' मास्टर साहेब किलासकेँ बच्चा सबसँ कहलखिन्ह– " राजू तँ तोरा सबसँ माफी माँगि लेलकौ। आब तूँ सभ सेहो नीक धिया-पुता बनि क' अपन संगी राजूकेँ माफ क' दहक आओर फेरसँ सभ गोटे एक संगे रहय जाह, एक संगे खेलय जाह।"

मास्टर साहेबकेँ बात सुनि क' किलासकेँ सब बच्चा आबि क' राजूसँ हाथ मिला क' दुलार करय लागलै। राजू आओर ओकर संगी सभकेँ एक दोसरक संग एना खुश देखि क' मास्टर साहेब बच्चा सबकेँ कहलखिन्ह– "राजूकेँ संग आइ खेलेबाक लेल हमरा दिससँ सौंसे किलासक लेल एखन खेलबाक घंटी।"

मास्टर साहेबकेँ बात सुनिते राजू आओर पूरा किलासकेँ बच्चा सब हो-हो क' क' खेलय लेल किलाससँ बाहर आबि गेल। राजू आइ बहुत खुश छल। राजूकेँ एना खुश देखि राजूकेँ बाबा मास्टर साहबकेँ धन्यवाद द' क' ओतयसँ विदा भ' गेलाह। अपन संगी सभक संग खेलि रहल राजू सेहो अपन बाबाकेँ जाइत देखि हँसि क' आओर हाथ हिला क' बाबाकेँ विदा केलकन्हि। राजूकेँ आइ बहुत पैघ बात बुझय आ सिखयमे आबि गेल रहय जे जीवनमे कखनहुँ घमंड नहि करबाक चाही।

सीख : जीवनमे कखनहुँ घमंड नहि करबाक चाही।

•••

कृष्ण मोहन झा 'मोहन'

हजारीबाग, झारखण्ड।
सम्पर्क : +91 98359 03711

सपना

ओहे दिन बौआ साँझे सुतला
देखलनि एगो सपना।
चंदा मामा पहिर लेने छथि
सुन्दर सन के चश्मा॥

चश्मा तरसँ नीचा तकलनि
लगलनि दुनिया दोसर रंग।
संगी संगे बौआ हँसला
देखि क' हिनकर अजबे ढंग॥

तखने बाबा खौँखी केलखिन
टूटि गेलनि सपना केर तार।
नहि छल संगी आ ने चश्मा
बौआक मन भ' गेल उदास॥

इजोरिया

चानक मुह-मुस्की
छिटकैत अछि इजोरिया।
मनक उमंगमे
उमकैत अछि इजोरिया॥

खेत-खरिहानमे
खेलाइत अछि इजोरिया।
कमलाक धारमे
नहाइत अछि इजोरिया॥

ठेहिआयली देह पर
औँघराइत अछि इजोरिया।
फट्ठी माचान पर
औँहाइत अछि इजोरिया।

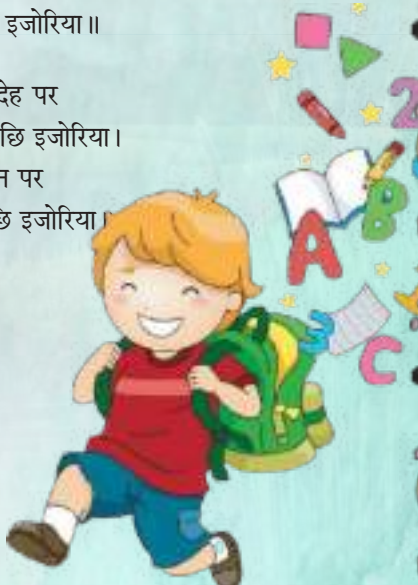

पीपरक गाछ

पातर-पातर
पीपरक पात;
बूढ़ झमटगर
पीपरक गाछ।

उड़ै चिड़ै तँ
डोलय पात;
आबै चिड़ै तँ
बाजय पात।

बाट-बटोही
केर ई आस;
जीबा-जन्तुक
एहि पर बास।

पुस्त-पुस्त केर
बहुतो बात;
सुनने अछि
ई पीपरक गाछ।

ज्ञानी, ध्यानी
तपसी बास
प्राण-शक्ति
बाँटय ई गाछ।

आम गाछी जेबै

आम गाछी जेबै
टिकुला बिछबै
कोइलीसँ
करबै विचार
कि कोन गाम
हेतै बियाह ?

बसनी ओरियेबै
ढकनी सरियेबै
रोटी पर
लेबै अचार
कि कोन गाम
हेतै बियाह ?

संगी संग खेलबै
हँसबै-ठठेबै
गाछ-पात
जीवन आधार
कि कोन गाम
हेतै बियाह ?

•••

पुस्तक सूची : हिन्दी-अंग्रेजी

अध्यात्म
1. श्रीमद्भगवद्गीता (भावानुवाद) : वन्दना झा 351/-
2. श्रीमद्भगवद्गीता (पद्यानुवाद) : विनोद कुमार झा 351/-
3. श्रीदुर्गासप्तशती : वन्दना झा HB 551/- PB 351/-
4. श्रीदुर्गासप्तशती : सतीश चन्द्र 'सजल' 451/-
5. अष्टावक्रगीता (भावानुवाद) : वन्दना झा 200/-
6. मैथिली चालीसा संग्रह : वन्दना झा 100/-
7. मैथिली सुन्दरकाण्ड : वन्दना झा 100/-
8. श्रीराम गीता : वन्दना झा 100/-
9. श्रीमैथिली रामायण : वन्दना झा HB 999/-
10. मिथिला माहात्म्य : वन्दना झा 200/-
11. सारथी संवाद : सुमन कुमार लाल 300/-

सम्पादन
1. पतियाक आखरमे गुंजइत भ्रमर : डॉ. महेन्द्र नारायण राम 500/-
2. अभिज्ञान महाप्रयाण : दीप नारायण 300/-

साक्षात्कार
1. गपसप : डॉ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' 300/-

मिथिलाक पारम्परिक पाककला
1. सिदहा बारी : डॉ. नीरा मिश्र HB 801/-

आलेख-संग्रह
1. शान्ति निबन्धावली : आचार्य पं. महेश झा 200/-
2. मैथिली आलेख संचयन II : प्रा. रामावतार यादव 500/-
3. मिथिला मंदार मंजरी : डॉ. रंगनाथ दिवाकर 300/-
4. मिथिला पारिजात मंजरी : डॉ. रंगनाथ दिवाकर 300/-
5. समय सन्दर्भ : डॉ. सुरेन्द्र भारद्वाज 300/-
6. आलेखिका : डॉ. सुनीता झा 300/-
7. नारी आत्मनिर्भरता आ लिली रे : डॉ. रागिनी रंजन 500/-

व्याख्यान
1. मैथिली गीत : परम्परासँ आइधरि : डॉ. चन्द्रमणि झा 250/-

गजल
1. जे कहि नञि सकलहुँ : दीप नारायण 'विद्यार्थी' HB 199/- PB 149/- *(दोसर सं.)*
2. प्रेम पूरित भाष : विजय इस्सर 'वत्स' 250/-

मधुप साहित्य
1. मधुप सप्तसुधा : कविचूड़ामणि मधुप 500/-
2. मधुप महेशांजलि : कविचूड़ामणि मधुप 300/-
3. मधुपक पत्र पुत्रक नाम : कविचूड़ामणि मधुप 300/-

शोध
1. महाकविक महाप्रयाण : डॉ. रंगनाथ दिवाकर HB 800/-
2. कबीर आ हुनक मैथिली पदावली : डॉ. तारानन्द वियोगी 500/-
3. नाट्य शिल्पी श्रीकान्त मंडल : डॉ. अजय मिश्र 250/-
4. विदेश्वर : डॉ. अजय मिश्र HB 800/-
5. विचार संहिता : हरिदेव झा 300/-

हिन्दी नाटक
1. प्रवास का प्रथम प्रहर : डॉ. रंगनाथ दिवाकर 200/-

हिन्दी उपन्यास
1. फूलो रानी : प्रो. महेन्द्र प्रसाद सिंह 250/-
2. अगम अगोचर : अर्जुन झा 150/-

हिन्दी अनुवाद
1. परिचय शतक : कविचूड़ामणि मधुप (अ. शंकर मधुपांश) 199/-
2. योनि का आत्मबोध : दीपा मिश्र (अ. प्रेरणा पारिश) 251/-
3. मैं बूढ़ा हूँ : प्रो. इन्द्रकान्त झा (अ. राहुल राज गुप्ता) 250/-

अंग्रेजी उपन्यास
1. HEFTY DELIGHTS : Samriti Jha 200/-

हिन्दी कविता-संग्रह
1. स्मृति : श्यामानन्द ठाकुर 150/-
2. अंतरंगी : श्यामानन्द ठाकुर 200/-
3. विरह संदेश : शंकर मधुपांश 160/-
4. मधुयामिनी : शंकर मधुपांश 151/-
5. नींव का पत्थर : जगमोहन चौधरी 201/-
6. मैं बिहार हूँ : दीपक वत्स 199/-
7. तेरे न होने से : कुमारी आरती 200/-
8. तुझे सूरज कहूँ या चंदा : लक्ष्मी देवी/स्मृति झा 100/-
9. अंगीठी पर गुलाब : संजय सरस 200/-
10. शब्द हूँ मैं : सुमन कुमार लाल 300/-
11. माँ नदी बन गई : दीपा मिश्रा 300/-
12. सुनो तो : शंकर मधुपांश 250/-

हिन्दी गजल
1. हँसती आंखों के आँसू : डॉ. हाजिक फरीद 199/-

हिन्दी दोहा-संग्रह
1.संरक्षण के दोहे : कुमार मनीष अरविन्द 200/-

शोध
1. दुसाध जाति का बृहत् इतिहास : डॉ. महेन्द्र नारायण राम 600/-
2. कबीर भक्ति रस सिद्धांत : महात्मा श्री योगेन्द्र दास 500/-

प्रेरक पुस्तक
1. सफलता का मार्ग : परमानन्द कुमार 500/-
2. भारतीय दर्शन में वाद-विवाद : डॉ. बिरेन्द्र कुमार चौधरी HB 800/-

पोथीसभ a पर सेहो उपलब्ध अछि।

अनुप्रास प्रकाशन समूह

किताब जाहिसँ नेहाल होइछ जीवन

'धनेश्वरीधाम' इन्द्र परिसर, लहेरियागंज, मधुबनी (मिथिला) बिहार- 847 211
www.anuprasprakashan.com, anuprasprakashansamuh@gmail.com
+91 91559 61356

अनुप्रास प्रकाशन

काव्यांश बुक्स क्रिएशन

अनुप्रास प्रकाशन समूहक उद्देश्य भाषा-साहित्यक श्रेष्ठताकेँ स्थापित करब थिक। स्तरीय साहित्यकेँ सर्वसुलभ करएबाक एहि सारस्वत प्रयासमे अपने लोकनिक सहयोग आ सलाह अपेक्षित अछि।